तूफान के बाद

श्री पहाड़ी

१९५२

प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद २

प्रकाशक : प्रकाशगृह, नया कटरा, इलाहाबाद २

प्रथम संस्करण

मूल्य : तीन रुपया, आठ आना

मुद्रक : इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लि०, जीरो रोड, इलाहाबाद।

प्रस्तुत संग्रह की कहानियाँ एक नए दौर की कहानियाँ हैं। 'कैदी और बुलबुल' जिन पाठकों ने पढ़ा है, उनको इस संग्रह की कहानियों को पढ़ कर यह शिकायत न रह जायगी कि मैं 'कहानी' के क्षेत्र से हट रहा हूँ।

कुछ कहानियों में युद्ध के खिलाफ एक नई मोर्चाबन्दी मिलेगी। युद्धों ने किस भाँति हमारे जीवन की गति में रुकावट डाल कर हमें मानव से हैवान बनाया, इसे कौन नहीं जानता है? फिर उसी युद्ध की आग को पूर्व में अमरीका ने अपने घर से हजारों मील की दूरी पर 'कोरिया' में सुलगाया है। वह आग आगे नहीं बढ़ी उसका कारण यह है कि दुनिया के अधिक नागरिक शान्ति चाहते हैं।

पहाड़ी जीवन में सैनिक जाति का अपना निराला स्थान है। वहाँ युद्धों के कारण कभी नई जिन्दगी नहीं पनप पाई है। कुछ कहानियों में इसका आभास पाठकों को मिलेगा।

इधर लिखने में बहुत सुस्ती आ गई है। पाठकों का तकाजा है कि अधिक लिखा करूँ। उनको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि शीघ्र ही उनको और रचनाएँ भी पढ़ने को मिलेंगी।

पहाड़ी

१ मई, १९५२

सूची

श्री रविन्द्रनाथ देव

और

श्री प्रकाशचंद्र गुप्त

को

तूफान के बाद

हरिसिंह ने अपने लद्दू घोड़े पर से सामान उतार लिया और पड़ाव के दूकानदार के पास पहुँच कर हुक्का गुड़गुड़ाने लगा। एक चिलम फूँक कर लौटा और घोड़े को पकड़ कर पास की झोपड़ी जिसमें और पशु भी बँधे हुए थे, एक खूँटे से बाँध दिया। दूकानदार के साले से चार पूले घास लेकर उसके आगे डाले, फिर एक बाल्टी में एक सेर दाना और कुछ भूसी भिगोई। अब के मेह पूस में बरसा और पिछले दिनों बरफ गिरी थी। दो रोज से तेज ठंडी हवा चल रही थी। उसने अपना गुलूबंद कानों पर ठीक तरह लपेटा और दूकान पर लौट कर भट्टी के आगे पड़ी बेंच पर बैठ कर आग सेंकने लगा। बांज और चीड़ की गीली लकड़ियों से चिड़चिड़ाहट के साथ धुआं उठ रहा था तथा बीच-बीच में वे लौ की लहरों में सुलग उठती थीं। यदा कदा उसकी आँखों में धुँआ भर जाता, पर वह एक गिलास चाय पी गरमा कर ही उठने की सोच रहा था। आज उसने बीस मील का सफर तय किया है, जिसमें कि सात मील बरफ से ढका हुआ रास्ता था।

वह दूकानदार पास के गाँव का महाजन है। उसके पास काफी खेत हैं। लड़ाई से पहिले उसने एक छोटी झोपड़ी डाल कर चाय तथा पकोड़ियों के साथ खेत और बाग की पैदावार बेचनी शुरू की थी। लड़ाई

के दिनों में लाम पर जाते तथा छुट्टियों में लौटते हुए फौजी यहाँ टिकते थे। इसीलिए उसने एक छोटा होटल चालू कर दिया। आगे बिसातखाना से बढ़ते-बढ़ते आज रोजाना की सब चीजें वहाँ मिलती हैं। इसके अलावा वह पन्द्रह से बीस प्रतिशत सूद पर रुपया उधार दिया करता है। उसकी दो पत्नियाँ जीवित हैं, फिर भी पिछले साल डेढ़ हजार रुपए दे कर एक गरीब परिवार की बालिका से उसने शादी की है। उसकी धारणा है कि घर का कामकाज नौकरों से भली भाँति नहीं चलता है; और काम बढ़ जाने पर उसी अनुपात से शादियाँ कर लेना उचित होता है। वह आज के जमाने को कोसता हुआ कहता है कलियुग आ गया है, अन्यथा वह अपने पिता की चौंसठ साल की अवस्था का सातवीं पत्नी का बेटा है।

उसका गाँव नीचे दो मील की दूरी पर नदी के किनारे है। रात पड़ने पर वह अपने घर चला जाता है तथा तड़के उठ कर चला आता है। मजाक में कहा करता है कि उसने अब अपने साले को वहाँ का मैनेजर नियुक्त कर दिया है। उसकी नई पत्नी का भाई अतिथियों के साथ जुआ खेलता है और उनके साथ शराब भी पीता है। वह मस्ती से रहता है और कहा करता है कि उसकी बहिन रानी की तरह रहती है। उसकी सौतें उसकी दासी का दरजा पाए हुए हैं। वह तो यह बात बताते भी नहीं चूकता कि उसकी बहिन अपूर्व सुन्दरी है। उसका पिता तो तीन हजार से कम लेने के लिए तैयार नहीं था तथा उसकी माँ सौत में लड़की देने के लिए तैयार नहीं थी, पर उसकी तिकड़म से सब कुछ हो गया। वह तो इस रिश्ते से पहले ही अपने जीजा को जानता था।

हरिसिंह बहुधा इस दूकान पर टिका करता है। सब कुछ सुन कर भी चुप रहता है। उसकी एक बड़ी बहिन थी। उसकी सास उसे बहुत परेशान करती थी। ऊब कर एक दिन वह न जाने कहाँ चली गई। कुछ लोग कहते थे कि वह नदी में डूब कर मर गयी है, जब कि कुछ का खयाल था कि किसी मठ की जोगनियों के पास वह भी जोगनी बन गई

है। वह उससे फिर कहीं नहीं मिली थी। उसकी याद न जाने वह क्यों नहीं भूल पाता था। बहिन को परिवार में कभी पेट भर कर खाना नहीं मिला था। मंडुवे की पूरी रोटी तक वह कभी न पा सकी थी। उसे आशा थी कि ससुराल में वह सुख से रहेगी, पर यह नहीं हुआ। उसकी सास बहुत गुसैल थी। बात बात में उसके सात पुश्त के पुरखों को गंदी गंदी गाली देती और उसे मारती थी। एक बार तो जरा से अपराध पर उसने उसे गरम चिमटे से दागा भी था। उसका पति माँ का बड़ा भक्त था; शहर में चार आना रोज पर कुलीगिरी का काम करता था। एक रोज एक मकान की छत पर से गिर पड़ने के कारण उसकी टाँग टूट गई थी। वह बेकार सा हो गया था। बहिन ने पहले तो उस गृहस्थी को संभालने की चेष्टा की पर असफल रही। वह अक्सर कहती थी, लड़कियों की जिन्दगी पशुओं से भी गई बीती है। जिस दिन उसने सुना था कि उसकी दीदी मर गई है, उसे बहुत दुःख हुआ था। बड़ी देर तक वह सिसक-सिसक कर रोया था।

उसका जीवन भी क्या सुखी रहा था? एक गरीब किसान के घर में पैदा हुआ। एक दिन पिता के मर जाने पर मालूम हुआ कि वे एक हजार रुपए के करीब कर्जा छोड़ गये हैं। वे दोनों भाई उस कर्ज के प्रति उदासीन थे कि एक दिन कचेहरी से नोटिस आई। वे फिर भी चुप रहे। लेकिन एक रोज पटवारी और अमीन आए। देखते ही देखते उनकी भैंस, गाय, बकरियाँ, पेड़ तथा और सामान नीलाम हो गया था। उनको बताया गया कि अभी तो केवल सूद ही वसूल हुआ है। खेतों पर भी बनिया का अधिकार हो गया था। उसका मुन्शी उनके खेतों को गाँव के एक व्यक्ति को ठेके पर दे गया। उनकी माँ की आँखों पर मोतिया बिन्दु छा गया था। वैद्य की दवादारू से कोई लाभ नहीं हुआ और लोगों ने सलाह दी थी कि शहर ले जाकर डाक्टर को दिखाना चाहिये। पर उनकी हैसियत सौ डेढ़ सौ खर्च करने की नहीं थी। अतएव मन मार कर चुप रहे।

घर की झंझटों से ऊब कर उसका बड़ा भाई इसीलिए शहर भाग गया था। वह अब लोगों के गाय, भैंस तथा और जानवरों को चरा कर पेट भरता था। उसकी माँ गाँव वालों का अनाज पीसती थी। सुबह उठती और बड़ी रात तक मेहनत करती थी। बहिन एक संभ्रांत परिवार का चौका बरतन करती, फिर भी पेट भर कर खाना किसी को नहीं मिलता था। माँ को उम्मीद थी कि लड़की की शादी में पाँच-छै सौ रुपए मिल जावेंगे तो एक भैंस खरीदेगी। पर दूर के एक रिश्तेदार ने धोखा दिया था। उस शादी में केवल दो सौ रुपए मिले थे, जो कि गाँव के रस्मी खाने-पीने तथा बरात के इन्तजाम में ही खर्च हो गए थे। इसके अतिरिक्त उसके चाँदी के गहने भी स्वाहा हो गए। शादी के समय उसकी बहिन की अवस्था केवल ग्यारह साल की थी।

एक दिन गाँव में पटवारी आया था, उसकी माँ उसके पास गई थी और आठ साल की अवस्था में वह कमाऊ पूत बन गया था। पटवारी ने उसे आठ आना मासिक वेतन तथा खाने कपड़े की नौकरी पर लिया था। गाँव वालों ने उसके भाग्य की सराहना करते हुए कहा था कि तीन-चार रुपए महीने तो वहाँ इनाम-किताब ही मिलेगा। वहाँ के जीवन की रंगीन तसवीर भी खींची थी।

सच ही पटवारी की चौकी पर काफी गम्मत रहती थी। दूसरे तीसरे रोज बकरा कटता और दारू की कई कन्टरियाँ पी जाई करती थीं। वह उसे शराब के नशे में अक्सर पीटा करता था। खाने-पीने की तकलीफ भले ही न रही हो, पर आठ साल बाद भी वेतन के नाम एक पैसा नहीं मिला था। वहाँ रोज व रोज कोई आसामी पकड़ कर लाया जाता था और पटवारी उसकी दुर्गति करता। लोग बताते कि वह पुलिस का काम भी वहाँ करता है। एक रोज उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ था कि उसने अपनी रखेल की हत्या कर के उसे दफनवा दिया था। वह जवान औरत पाँच साल से उसके साथ थी और पटवारी के कहने पर उसने अपना बच्चा पैदा होते ही मारा था। वह उससे बहुत डरती थी

और बार-बार मनाती थी कि उसकी मौत हो जाय। लोग बताते थे कि पटवारी अपनी पट्टी का मालिक होता है। किसी भी मामले की छानबीन वह इस बेरहमी से करता था कि यह सब देख कर उसके रोंगटे खड़े हो जाते थे। पटवारी के यहाँ का जीवन उसे पसन्द नहीं आया। वह यमराज की तरह लगता था, उसका काम घोड़े की देखभाल करना था। वह घोड़ा भी पटवारी की ही तरह बदमाश था, पर आगे उसकी टहल से पिघल कर सहृदय हो गया और उस पशु से आसानी के साथ दोस्ती हो गई थी। एक दिन भूटानी झबरा कुत्ता भी उसके परिवार में शामिल हो गया और अब वे तीन दोस्त हो गए थे। वह पटवारी चरित्रहीन और गुस्सेबाज था। बात-बात में उसे माँ बहिन और कई गंदी गालियाँ दिया करता था।

घर से खबर आई थी कि माँ की मृत्यु एक खड्ड में गिर जाने के कारण हो गयी। उस समाचार से उसे बहुत दुःख हुआ था। इन पिछले सालों में एक मात्र माँ ही उसका सहारा थी। बड़े होने पर वह माँ को सहारा देने की बात सोचता था। अब वह नाता टूट गया था। तभी एक दिन अचानक उसके भाई की चिट्ठी आई थी कि भरती खुल जाने के कारण वह फौज में आठ महीने से नौकरी कर रहा है। चिट्ठी गाँव के पते से आई थी और गाँव का मालगुजार उसे चौकी पर लाया था। भाई ने लिखा था कि उसे काफी वेतन मिल रहा है व राशन-कपड़ा मुफ्त है। पचास रुपये का अलग से मनिआर्डर भेजने की बात भी लिखी थी। सुझाव दिया था कि माँ की आँखों का इलाज करवा लिया जाय। इस ओर भी इशारा किया था कि पंडित जी से पूछ कर कहीं शादी की बातचीत चलाई जाय। वह आषाढ़ में एक महीने की छुट्टी पर आवेगा तथा तब तक चार पाँच सौ रुपया जमा कर लेगा। वह दो सौ रुपया से ज्यादा लड़की वालों को खर्चा देने का पक्षपाती नहीं था और अपने घर पर लड़की को गहने-कपड़े देने की बात कही थी।

उसने पटवारी से सदा के लिए लिए विदा ली और गाँव लौट

आया। उसके कमाऊ भाई के लिए अब लड़कियों की कमी नहीं थी। पड़ोस के गाँव में ही एक सयानी लड़की मिली। और समय पर शादी हो गई। उसका भाई एक माह घर रह कर चला गया था।

२

चाय का गिलास डकार कर हरिसिंह ने बाल्टी उठाई और घोड़े को दाना खिलाने लगा। यह घोड़ा उसकी आमदनी का सब से बड़ा सहारा है। वह उसकी पीठ मलता रहा और बार-बार उसकी गरदन भी सहलाता था। वह शहर कसबे और गाँवों के बीच बनियों का माल ढोता है। कभी-कभी तो चार-चार पांच-पांच दिन का बीहड़ पहाड़ी रास्ता उसे तय करना होता है। अकेले कभी तो डर लगता है। पहले उसके पास एक अच्छा कुत्ता था, जिसके गले पर कि वह मोटा टीन का पट्टा डाले रहता था कि बघेरा उसके गले पर नाखून न चुभा सके; पर एक रोज पट्टा ढीला हो कर कहीं गिर पड़ा और बघेरे ने गोधूली में पड़ाव पर पकड़ कर उसके गले पर नाखून चुभो दिए थे। कोशिश करने पर भी वह बच नहीं सका था। आज अच्छे कुत्ते को खरीदना उसकी शक्ति से बाहर है।

आमदनी इधर कम है और खर्च बढ़ते जा रहे थे। आजकल इसीलिए वह बहुत परेशान है। आज जिन्दगी की थकावट को मिटाने के लिए कभी-कभी वह दारू का सेवन करता है। इधर उसके मन में कई बातें उठती हैं। वह किसी के आगे सारी बातें उड़ेल कर मन हल्का कर लेना चाहता है। सच ही वह जिन्दगी से ऊब उठा है और जल्दी ही कोई रास्ता निकालना चाहता है।

पिता के मरने के बाद उनके परिवार की हालत भली नहीं थी, पर भाई की नौकरी के बाद भाभी घर में आई तो साथ अपने लक्ष्मी भी लाई थी। उसका भाई शादी के बाद एक माह घर पर रह कर चला गया था। आगे उन लोगों ने एक भैंस और कुछ बकरियाँ खरीद लीं।

वे कड़ी मेहनत करते थे। साल भर बाद जब उसका भतीजा हुआ था तो चार भेलियाँ फाड़ कर आसपास के गांवों में बांटी थीं। भाई बहुधा छुट्टियों में घर आया करता और उन लोगों के लिए तरह-तरह की चीजें लाया करता था। यह भाभी की ही योजना थी कि घोड़ा लिया गया। उसका भाई यह काम करता था और आमदनी काफी होती थी। उसने इसमें कोई आनाकानी न की थी।

वह भाभी की सलाह-मान कर चलता था। और पांच साल में वे अपने खेत छुड़वाने में सफल हो गए थे। भाभी कहती थी कि दो बच्चे, दो भैंस, घर का काम और तीस-चालीस बकरियों की देखभाल करना उसके वश की बात नहीं है। वह भी दो लद्दू के साथ बड़ी-बड़ी दूर का सफर कर थक सा जाता था। भाभी ने बात सुलझाई थी कि वह उसकी बात अपने मामा की लड़की के साथ चला चुकी है और वे लोग सहमत हैं। एक बार गंगा नहाने को जाते हुए वह लड़की इस परिवार में टिक चुकी थी और उसने उसे देखा था। उसने भाभी की बुद्धि की सराहना की थी। यह निश्चित हुआ था कि जब भैय्या छुट्टी पर आवेंगे तो यह कार्य निपटाया जायगा। भाभी की राय थी कि उसकी शादी में गाँव वालों को ठीक सी दावत न दी जा सकी थी, वह कसर इस शादी में पूरी की जायगी। वह एक हजार से ज्यादा उस अवसर पर खर्च करना चाहती थी। फेरी वाले बिसातियों से पसन्द की चीजें खरीदती, सुनार के यहाँ बैठ कर गहने गढ़वाती, उतने खर्चे की बात सोच कर वह झगड़ पड़ता था। वह पहले मकान दुमंजला बनाना चाहता था। डंगरों के लिए ठीक सा बाड़ा तक नहीं था। आँगन की दीवाल टूटी थी। मकान का पिछवाड़ा खाली अच्छा नहीं लगता था। उसके भाई का कहना था कि वहाँ बाग लग सकता है। वह आड़ू, खुबानी, अखरोट, सेब, नाशपाती तथा और पेड़ लगाना चाहता था। गुलाब की झाड़ियाँ तथा कुछ और फूल के पेड़ लग जाते तो शहद की मक्खियाँ ज्यादा मधु देतीं।

युद्ध सब लोगों के लिए खुशहाली सी लाया था। बेकार नौजवान

नौकरी पा गए थे। चीजों के दाम मँहगे होने पर भी लोगों के पास खरीदने के लिए पैसा था। उसने उतना पैसा पहले कभी नहीं देखा था। पटवारी के यहाँ आठ आना माहवारी की नौकरी, उसका बहनोई सिर्फ चार आना रोज कमाता था और महीने में दस बारह रोज बेकार रहता, साहुकार एक हजार में ही उनकी सारी जायदाद कुड़की करवा कर ले गया था। वे सब बातें आज झूठी लगती थीं। अब तो वह पाता आगे भविष्य में कोई मुसीबत न उठानी पड़ेगी।

भाभी उसकी शादी की तैयारी तेजी के साथ कर रही थी। जब कभी वह कसबे जाता तो वह सामान की एक सूची बना कर देती थी। आगाह करती कि सस्ती और रद्दी आवेंगी तो फेर देगी। भाभी की शक्ति देख कर वह दंग रह जाता था। उसका बड़ा भतीजा पांच साल का हो गया था। वह उससे बहुत हिल गया था। वे लोग उत्सुकता से भाई के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि एक दिन उसे एक सरकारी चिट्ठी मिली। लिखा था कि उसका भाई युद्ध में लापता है, युद्धबन्दी होने की संभावना है।

इस बात को उसने किसी से नहीं बताया, भाभी के नाम माहवारी वेतन के रुपए आते थे। भाभी को कोई शक नहीं हुआ। लेकिन उसका मन खिन्न रहने लगा, वह जानता था कि जो खो गए, वे फिर कम ही लौट कर आते हैं। कभी मन को समझाता कि शायद वे कैद हो गये हों। युद्धकाल जो खुशी लाया था वह काफूर हो गई। तभी उसे पहले पहल लगा था कि ये युद्ध भयानक होते हैं, इनमें कई निकट के संबंधी खो जाते हैं। रोज ही पोस्टमैन आता और सरकारी चिट्ठियाँ दे जाता था। सब में उनके प्रियजनों के खो जाने का उल्लेख रहता था। फिर भी हजारों रुपये प्रति मास गाँवों में आता और रोज के जीवन व्यापार में कोई अन्तर नहीं पड़ता था। वैसे सब परिवार किसी न किसी के लिये चिन्तित अवश्य रहते थे। एक साल से अधिक बीत गया पर उसका भाई नहीं आया, कुछ और महीने भी कट गए और देखते देखते दो

साल गुजर गये। कई सैनिक छुट्टी पर आए पर कोई ठीक समाचार न दे सका। उसकी चिन्ता बढ़ रही थी कि तभी सूचना मिली कि उसका भाई मर गया है। भाभी के नाम पेन्शन का पट्टा आया था।

अब तो लड़ाई के प्रति उसकी घृणा उभरी। लड़ाई के दिनों की खुशहाली विषभरी निकली। पर वह भाभी को कुछ नहीं बताना चाहता था। परेशानी में वह अपने घोड़ों पर माल लाद कर सात-आठ रोज की मंजिल पर चला गया था। लौटा तो उसे ठंड लग गई थी और वह बीमार पड़ गया। दो महीने के बाद भाभी की परिचर्या से वह स्वस्थ हुआ था। अब बार बार भाई की स्मृति आ आ कर परेशान करती थी। मन मार कर वह विश्वास कर लेता कि लाखों और सैनिकों की भाँति उसका भाई भी खेत रहा है। लड़ाई उसे जवानी में ही निगल गई।

लेकिन उसकी भाभी सारी बातें जान गई थी। बीमारी में न जाने कितनी बार बेहोशी में उसने अपने भाई को याद किया था। वह सच ही न समझ सका कि क्यों लड़ाई हो रही थी। पुराने बूढ़े फौजी बताते थे कि अंग्रेज के राज को छीनने के लिये पहले भी जर्मन वालों ने इसी तरह लड़ाई छेड़ी थी और हार गये थे। अंग्रेज की प्रजा होने के नाते उनका धर्म है कि अपने राजा के लिए लड़ें। पंडित बताते थे कि युद्ध में मरा हुआ व्यक्ति सीधे स्वर्ग जाता है। लेकिन उसका भाई तो परिवार से दूर परदेश में मरा था। उसकी मौत कैसे हुई यह कोई नहीं जानता है। भाभी पत्थर का दिल बना कर काम करती थी। उसके चेहरे का लावण्य मिट सा गया था। उसकी रक्षा का भार समझ कर ही वह बीमारी के दिनों में गतिवान रही थी।

बहुधा वह भाभी को अनमनी पाता था। वह दुबली पड़ गई थी। एक रोज गौशाला में ही भैंस दुहते-दुहते बेहोश हो गई थी। लेकिन उसके आगे उसने कभी आँसू नहीं बहाए थे। सदा कड़ा दिल करके ढाढस देती थी। एक रोज जब कि कानूनगोय ने सुझाव दिया था कि भरती हो जाय, तो भाभी ने इसका विरोध किया था। जब कानूनगोय

चला गया तो वह उसके आगे फूट-फूट कर रोई थी। लोग बताते थे कि जर्मनी वाले हार गये हैं फिर भी भरती खुली हुई थी। अधिकारी आकर लोभ देते हुए बताते थे कि लड़ाई के बाद सैनिकों के परिवार वालों को काफी सुविधा मिलेगी। उनके जीवन की सब कठिनाइयाँ हल हो जावेंगी।

भाभी का आग्रह था कि वह फौजी लिवास न पहना करे। वह उसे एक बच्चे के समान समझाती थी कि घबराने से कोई लाभ नहीं होगा। वह उसे दूर का माल ले जाने की मनाही कर चुकी थी। हर तीसरे चौथे रोज घर आ जाना चाहिए, यह उसका आदेश था। वह भाभी उम्र में उसी के बराबर थी, पर लगता था कि कुछ महीने में ही बूढ़ी हो गई है। जीवन में किसी चीज के प्रति उसका आकर्षण नहीं रह गया था। वह जानता था कि भाभी की भाँति हजारों युवतियों ने अपने प्रिय खोए हैं। पहले कभी ऐसी लड़ाई नहीं हुई थी कि इतने व्यक्ति मरे हों। भाभी का चाचा पिछली लड़ाई में मारा गया और पिता उसमें युद्धबन्दी हुआ था। तब सिपाही कम भरते थे। आज तो चारों ओर हाहाकर मचा हुआ था। यह पहले कोई नहीं सोचता था कि गाँव के गाँव उजड़ जावेंगे। रोज खबर आती थी कि अपना कोई निकट का संबंधी मर गया है। आँसुओं के निशान गालों पर पड़ गए थे।

वक्त कटा, पर वह स्वस्थ नहीं हो सका। दो साल कट गए। भाभी ने कई बार आग्रह किया कि शादी कर ले। भाभी के मामा के कई पैगाम आ चुके थे। उसने अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। अतएव भाभी की ममेरी बहिन की शादी एक रोज हो गई। वह तो अब पागलों की भाँति रहने लगा था। उसने भविष्य के निर्माण की जो योजना बनाई थी भाई की मौत ने उसे मिटा दिया था। वह घाव भरता ही नहीं था। भाभी उससे अधिक समझदार थी। वह उसे सुलझाने में लग गई। उसे फुसलाकर मानव के नए स्नेह बन्धनों की ओर मोड़ा। नए सिरे से गृहस्थी चलाने की योजना बनाई। भाभी की भावुकता में वह

बह गया। भाभी की बात मान कर वह जिन्दगी नए सिरे से चलाने लगा।

आज उस परिवार में चार बच्चे हैं, पर जीवन उतना सुखद नहीं है। वह इसे अपने जीवन की भारी भूल मानता है। परिवार पर युद्ध के बाद मँहगाई के थपेड़े लगे और उसकी गृहस्थी तो डगमगा कर टूट गई है।

३

हरिसिंह ने एक पव्वा कच्ची शराब पी और रोटी-गोश्त खाने लगा। आज शराब पीकर वह सारी चिन्ताएँ भूल जाता है। इसे वह अपराध नहीं मानता। नशे में वह अपने परिवार में जाता है और पत्नी तथा बच्चों को खूब पीटता है। आज वह कड़ी मेहनत करके भी अपने परिवार का पूरा पेट नहीं भर पाता है। वह अपनी भाभी को गालियाँ देता है कि उसने जादू-टोना करके उसे फँसाया है। वह अन्यथा किसी नवयुवती से शादी करता। आज वह सुखी नहीं है। उसकी औरत चालीस-पैंतालीस की लगती है। इसीलिए वह महाजन से कर्जा लेकर कसबे में वेश्याओं के यहाँ पड़ा रहता है। भाभी के चेहरे पर झाइयाँ पड़ गई हैं। घुन लग जाने के कारण चार दाँत टूट गये हैं। सिर के कुछ बाल भी सफेद पड़ गये हैं। उसके मुँह से बदबू चलती है।

कभी तो उसे इस महाजन के भाग्य पर ईर्ष्या होती है। वह उससे अवस्था में बीस साल बड़ा है फिर भी अठारह साल की लड़की से हाल ही में शादी करके मौज उड़ा रहा है। आज वह रुपये के बल से सब कुछ खरीद सकता है। उसने लड़ाई के जमाने में खूब कमाया है। उसका साला शराब पीता हुआ बता रहा था कि सुना अब फिर लड़ाई शुरू होने वाली है। उसका जीजा इसीलिए तीन-चार नई दूकानें बनवाने की सोच रहा है। अब की उनकी छतें टीन की पड़ेंगी। बिना पैसा लगाए रोजगार नहीं चलता है।

लड़ाई होगी रोजगार चलेगा। कुछ लोग लड़ाई की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उसके दिल में फौज में भरती होने की बात रेंकती रही। सुना था कि भरती खुलेगी......लेकिन वह तो उस लड़के से कहना चाहता था कि बहुत परेशान है। वह घोड़ा बेच कर एक दूकान खोलेगा। साथ में वह गहने चोरी करके लाया है। वह गाँव को छोड़ कर भाग आया है। अब वहाँ लौट कर नहीं जायगा। वह किसी जवान लड़की से शादी करके नई जिन्दगी बनाएगा। वह स्वयं खूब पीकर और अपने साथी को भी पिलाकर अपने मन का ताला तोड़ कर सब बातें कहना चाहता था। शराब के नशे में मन निर्मल हो जाता है। तब किसी बात को छुपाने की हिचक नहीं रहती है।

उस लड़के ने तो भरती और नई लड़ाई की बात सुना कर उसे डरा दिया था। वह भरती......! लाम पर जाना....!!

—आज से बारह साल पहिले उसके भाई का पत्र मिला था कि लड़ाई शुरू हो गई, वह भरती हो गया है। गाँव की भुखमरी और बेकारी से ऊब कर उसका भाई भाग गया था। लड़ाई में गया और मर गया। उनकी हालत फिर पहले जैसी ही हो गई थी। गृहस्थी उजड़ गई है। भाभी इस युद्ध से घृणा करती है। लड़ाई के जमाने की आमदनी में कोई बरकत नहीं हुई थी। यह महाजन ही ऐसा है कि जो घर बैठे फला-फूला था।

रात भर वह सो नहीं सका था। वह कायर की भाँति अपनी पत्नी के गहने और पैसे चोरी करके भाग आया है। उसकी पत्नी को विश्वास हो गया होगा कि वह लौट कर नहीं आवेगा! लेकिन जब वह सुनेगी कि भरती खुल गई है तो अपने भाग्य को कोसेगी। समझ जायगी कि वह जीवन से हार कर भरती हो गया होगा। वह आज भी जीवन में संघर्ष करके बच्चों की रक्षा करेगी।

सुबह उठकर हरिसिंह ने निश्चय किया कि वह अपने घर लौटेगा। जीवन में संघर्ष करेगा। वह तो बचपन से ही अपना रास्ता स्वयं बनाता आया है। इस भरती का विरोध करेगा जो कि तबाही लाया है। उसकी भाभी बेकसूर है। वह उसे सहारा देगा।

नये तरीके से गृहस्थी चालू करना है। उसे छोटी बातों से हार नहीं जाना है। अपने भगोड़े-पन का उसे क्षोभ हुआ हजारों नौजवान इसी तरह ऊब कर तो भरती होते हैं; वह उस लीक को मिटा देने का निश्चय कर चुका था।

चाय की केतली

प्यारी ने अनायास ही अपने जीवन की छानबीन शुरू करदी। पिछले पांच महीने से पति के साथ उसका तनाव बढ़ गया है। पति सनातन से पाए हुए अधिकारों को लागू कर के, उसे दासी से अधिक नहीं समझता है। वह यदि किसी से हँस कर बातें करती है तो उनके दिल पर साँप लोटने लगता है। एक बात से वह समझौता नहीं कर पाती। वह उनका उसके सहेलियों के प्रति वाला व्यवहार है। वे उनके पत्र खोल कर पढ़ते हैं। कोई मुँहफट सहेली मजाक में यदि कोई बात लिख देती है, तो वह बिच्छू के डंक की तरह उनको डसती है। बस जो कुछ उनके मन में आया बकना शुरू कर देंगे और दावा करेंगे कि उनको उसके जीवन की पिछली घटनाओं की पूरी जानकारी है। वे उसकी सहेलियों की चरित्र की व्याख्या करने में प्रवीण हैं और यदा-कदा उसे नीचा दिखलाने का षड्यंत्र रचा करते हैं।

गायत्री ने पत्र में लिखा था, 'रानी, ताजमहल की वह रात भूले नहीं भुलाई जा सकती है। तुम उस रात्रि पूर्णिमा की भाँति निखरी लगती थीं। यदि मैं पुरुष होती तो तुम पर अपना सर्वस्व निछावर कर देती।'

वह कई साल पुरानी बात है। वह विश्वविद्यालय के 'टूर' में आगरा गई थी। वह उसके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना है। वहाँ वह गायत्री

के भाई के सम्पर्क में आई थी और तय किया था कि उसी से विवाह करेगी। भावी जीवन का सुपना आँखों के आगे आया था। गायत्री ने आश्वासन दिया था कि वह पूरी चेष्टा करेगी और माँ को इस सम्बन्ध में पत्र भी लिखा था। उसकी माँ की चिट्ठी आई थी, वे लोग रिश्ता दूसरी जगह तय कर चुके हैं। उस चोट से तिलमिलाकर प्यारी ने आत्महत्या करने का निश्चय किया, पर गायत्री ने समझाया कि साधारण भावुकता के लिए जीवन नष्ट नहीं किया जा सकता है। जीवन तो संघर्ष की तेज आँच में तप कर बलवान बनता है। फिर भी इस कड़ुवे अनुभव के कारण वह कुछ दिन परेशान रही। काफी सोचने-विचारने के बाद इस नतीजे पर पहुँची थी कि वह उसकी हार थी। उसका आर्थिक दरजा समाज में उनकी बराबरी का नहीं था। समाज की पिछली रूढ़ियों का श्राप उसे निगल गया था।

वह उस घटना के बाद उदासीन रहने लगी थी। विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ पास करने के बाद उसने एक पाठशाला में नौकरी करली। परिवार वाले उत्सुक थे कि वह किसी अपनी जाति के युवक से शादी कर ले, उसने इसे स्वीकार नहीं किया। मोहल्ले के लोगों में कानाफूसी हुई कि वह किसी दफ्तर में नौकरी करने वाले युवक से प्रेम करने लगी है। इन चर्चाओं की ओर वह उदासीन रही। यह जान कर उसे आश्चर्य होता था कि जिन बातों की जानकारी स्वयं उसे नहीं है; पड़ोसी उनकी व्याख्या तक से परिचित हैं। इन कहानियों को कौन गढ़ता है; न जान कर भी वे उसे दिलचस्प लगती थीं। कभी वह सोचती थी कि कौन जाने उनमें कोई सच ही हो जाय, पर वह अवसर नहीं आया।

वह रोज कालेज जा कर लड़कियों को पढ़ाती थी। छोटी लड़कियाँ उसे बहुत भाती थीं। वातावरण में फिर भी कुछ अधूरा लगता था। न जाने क्यों छोटे बच्चे मन में कौतूहल लाते। कभी तो जीवन बहुत सूना लगता। वह सोचती कि दो तीन बच्चों को अपने परिवार में साथ रखले। अन्यथा उसका परिवार एक नौकरानी तक सीमित था। वहाँ

की सारी वस्तुएँ जड़ सी लगती थीं। रोजाना जीवन नीरस था। अकेले-अकेले वह ऊब जाती थी। उसकी और नौकरानी की अपनी-अपनी सीमाएँ थीं तथा उन दोनों की सामाजिक श्रेणी की दूरी ऐसी थी कि आपस में विचारों का आदान-प्रदान संभव नहीं था। कभी वह बीमार रहती तो उसका पति काम निपटा देता था। उनकी दो छोटी-छोटी लड़कियाँ थीं। वह पति बताता कि उसकी पत्नी की सेहत भली नहीं रहती है। वह कई डाक्टरों की दवा करके हार गया है। वह रोग उनकी गरीबी थी। प्यारी को इसका ज्ञान था। वह थोड़ी बहुत सहायता करने के लिए सदा तैयार रहती है। वह नौकरानी बहुधा अपने पति की बातें सुनाती थी कि वे उसका कितना खयाल रखते हैं। शराब नहीं पीते, जुआ नहीं खेलते और अपने सब खर्च कम कर के भी उसकी जरूरत को पूरा करते हैं। पर उस परिवार की आमदनी बहुत कम थी। उनका खर्च नहीं चलता था। मजदूरी में खास बढ़ती नहीं हुई थी; जब कि रोजाना जरूरत की चीजों के दाम तिगुने-चौगुने हो गए। और वे आसानी से मिलती भी नहीं हैं।

वह पाती कि उस निचले वर्ग में अभी कुछ मानवता बची हुई है। वह छोटा परिवार रोज जीवन में संघर्ष करता है। वे सजग हैं। जब कि वह स्थिर खड़ी है। अपना कोई भविष्य नहीं बना पाई है और जिस वर्तमान में चल रही है, वह भी अधूरा लगता है। उसने कई बार सोचा कि नौकरानी की बड़ी लड़की को अपनी स्कूल में भरती कर दे। मन में संकल्प किया कि उसके लिए वह सुन्दर कपड़े सिलेगी और अपने साथ रिक्शे पर बैठाल कर पढ़ाने ले जाया करेगी। अपने पिछले संस्कारों के कारण अड़चन पड़ती थी। अक्सर वह बाजार खरीददारी करने के लिए जाती तो नौकरानी को सीट पर अपने साथ न बैठा कर नीचे बैठाती थी। वह वर्ग की उस आर्थिक दूरी को आसानी से न भुला पाती थी। स्कूल में अनुशासन के मामले में भी काफी कड़ी थी। वहाँ के नौकर चाकर उससे डरते थे। वह जरा जरा अपराध पर जुर्माना करती, फिर

भी वे उसे प्यार करते। घर आकर अपनी मुसीबत सुना हरएक उससे सहायता पाता था। उसकी वह उदारता सब जानते थे।

एक दिन काफी उलझन के बाद उसने नौकरानी के आगे प्रस्ताव रखा, वह हँस कर बोली थी कि उसकी लड़की का जीवन बिगड़ जायगा कौन उसे 'मेम' बनना है। वह कहीं नौकरी करेगी तो चार पैसे कमावेगी। माँ अपनी पाँच साल की लड़की को एक दो साल में कमावू होने की बात सोच रही थी। तब भी वह माँ के साथ छोट-मोटा काम करती थी। आगे शायद कुछ बड़ी होकर किसी परिवार में बच्चे खिलाएगी। उनके परिवार का हरएक व्यक्ति समझदार होते ही कमाने की बात सोचता है। ताकि घर की आमदनी बढ़े और हरएक मुँह के खाने का सवाल हल हो जाय। रोटी के लिए बुद्धि आते ही संघर्ष करने की बात उसकी समझ में नहीं आती थी।

लेकिन वह तय कर चुकी थी कि उस लड़की को पढ़ावेगी। एक दिन सच ही वह उसके लिए बाजार से कपड़े तथा और सामान खरीद कर ले आई। अपने मकान पर उसके रहने का प्रबन्ध किया। उसके पढ़ने का कमरा सजाया और वहाँ खिलौनों का अम्बार लगा दिया। नौकरानी ठीक तरह से नहा धुला, कपड़ा पहना कर उसे कमरे में लायी तो उसने उसे गोदी पर उठा कर चूम-चूम लिया। उसे लगा था कि आज उसके जीवन की कोई बड़ी कमी पूरी हो गई है। उसका एकाकी जीवन आगे वह लड़की बाँटने में सफल होगी, ऐसा विश्वास मन में उठा था। उसे लगा कि इसी सुख के लिए तो न जाने वह कब से तड़प रही थी आज तक इस ओर उसका ध्यान नहीं गया। उस अपनी भूल पर सोच कर वह बहुत हँसी थी।

रात में उस लड़की को सुला कर नौकरानी चली गई थी। वह कुछ देर तक उसका मुँह निहारती रही। वह लड़की बहुत प्यारी लगी। सोने की चेष्टा करने पर भी उसे नींद नहीं आई। नौकरानी से उस बच्चे को पा लेना उसके जीवन की पहली सफलता थी। आधी रात को एकाएक उस

लड़की की नींद टूट गई और वह रोने लगी। काफी चेष्टा करके भी वह उसे न सुला सकी। वह किसी भाँति चुप नहीं हुई। लेमनड्राप, चाकलेट, फल, खिलौने आदि सब कुछ दिए, उस लड़की की माँ...माँ...माँ... की रट कम न हुई। वह जितना ही उसे पुचकारती लड़की माँ.. माँ...माँ ...की पुकार के साथ उतने ही ऊँचे स्वर में रोने लगती थी। एक बार वह लड़की उठ कर दरवाजे तक गई और चटखनी खोलने में असफल होकर वहीं फर्स पर बैठ गई। वह उसके समीप जाती तो वह दूर भाग जाने की चेष्टा करती। वह उलझन में पड़ गई कि क्या करे। यह अनुभव हो गया कि वह उसकी बच्ची नहीं है। वह हार मान कर चुप बैठी रही। लेकिन वह लड़की थक कर फर्स पर ही सिसकती-सिसकती हुई लेट गई थी। वह उठी और अधनींदी अवस्था में उसे उठा कर पलँग पर ले आई। उसे थपथपा कर सुलाया, पर अभी तक सोए हुए में भी वह गहरी-गहरी सुबकियाँ लेती रही।

प्यारी के लिए वह सब एक नया व्यवहार था। जितनी खुशी उस लड़की को पाकर अनायास हुई, अब वह एक कड़वी घूँट लगी। नौकरानी की लड़की अपनी गरीब माँ को मानवता के नाते प्यार करती है। वह अभी उसे अपना वाला विश्वास नहीं सौंप सकी है। उस लड़की का शरीर भी उसके शरीर से कब बना था। वह उसका दूध पी कर नहीं पनपी थी। वह उसकी माँ न थी।

अगली सुबह को जब नौकरानी आई तो वह लड़की माँ.. माँ.. कह कर उससे चिपट गई। वह उसे बिलकुल नहीं छोड़ती थी। उसे डर था कि माँ फिर चकमा देकर न निकल जाय। वह कड़ी शंकित निगाह से प्यारी की ओर देखती थी। उसका ख्याल था कि वह उसे कैद कर के रखना चाहती है। उसकी आँखों में व्याकुलता मिली। प्यारी ने चाहा कि उसे अपने साथ रिक्शे पर बैठा कर स्कूल ले जाय, असफल रही। वह लड़की अपनी माँ को छोड़ने के लिए किसी भांति तैयार नहीं हुई। आखिर हार कर वह अकेली ही स्कूल चली गई थी।

स्कूल में उसका मन पढ़ाने पर नहीं लगा। हर लड़की के चेहरे पर टकटकी लगा कर देखती और पाती कि उसका किसी से निकट का सम्बन्ध नहीं है। पढ़ाना तो उसका व्यवसाय है। कई और मास्टरनियाँ वहाँ पढ़ाती हैं। रोज दस से तीन बजे तक वह कई दरजे लेती है। मशीन की भांति वह सब चलता है। उसमें कोई भावुकता नहीं होती है। वह पाँच साल से यह काम कर रही है। आज उसे अपने जीवन के सही रूप का ज्ञान हुआ था। अपनी सही सीमा का पता चला।

स्कूल का समय बड़ी तेजी से बीता। वह बाजार गई और बहुत से कपड़े, मिठाइयाँ तथा खिलौने लाई। उसकी धारणा थी कि वह उसे फुसला कर अपना बनावेगी। उससे आसानी से हार मान लेने के लिए वह तैयार नहीं थी। उसने कई दांव-पेंच सोचे। पहले वह उसे बिस्कुट का डिब्बा देगी, फिर चाभी वाली मोटर फर्स पर चलाएगी। सब खिलौनों को मेज पर फैला कर रखेगी। जो चीजें मांगेगी एक-एक कर के देगी. . . भालू, कुत्ता, जीभ निकालने वाला बच्चा; जब वह पालतू बन जायगी तो मिठाई देगी और फिर बाग में घुमाने के लिए ले जायगी। वहाँ फूल तोड़ कर देगी। किताब की तसवीरें दिखलाएगी। वह बच्चों के मनोविज्ञान पर एक पुस्तक भी खरीद कर लाई थी।

जब घर पहुंची तो पाया कि वह लड़की उसके समीप तक नहीं आई। अपनी माँ के पास ही चौके में रही। उसने चाय नहीं पी, मेज पर धरी हुई मिठाइयों की ओर नहीं देखा। मोटर फर्स पर दौड़ती ही रही। खिलौने मेज पर धरे के धरे रह गए। वह तो अपनी माँ के पास चौके ही में रही। उसके साथ खाना नहीं खाया और उसे सहमी निगाह से देखा। उसकी माँ ने सुलाने की चेष्टा की तो उसका आग्रह था कि वह अपने घर जा कर सोएगी। माँ के समझाने पर कि वह वहीं रहेगी, वह सोई। माँ से फिर भी चिपकी रही। कुछ देर बाद माँ उसे छोड़ कर उठी थी।

आज प्यारी ने उसे प्यार नहीं किया। एक बार उसका चेहरा देखा

और रोशनी बुझा कर चुपचाप उससे चिपक गई। वह उसे यह मालूम नहीं होने देना चाहती थी कि वह अपने घर से दूर सो रही है, अपने परिवार से बड़ी दूर। यह भय फिर भी लगा रहा कि रात में न जाने वह कब जग जाय और परेशान करे। कुछ देर इस बात पर विचार किया कि बच्चे अपना-पराया जानते हैं। किसी आकर्षण के लिए लोभ नहीं बरतते हैं। आगे लेकिन उस स्नेह को जीवन की आंच में तपना पड़ता है। तब कभी-कभी ममत्व इकाई बन जाता है। कभी वह भी अपनी माँ को प्यार करती थी। जब कि पन्द्रह साल की अवस्था में घर छोड़ कर होस्टल गई थी तो उसे बहुत ही बुरा लगा था। उस अजनबी कमरे में पहली रात नींद नहीं आई थी। रात को नींद एकाएक टूट गई। घर का बुरा लगा और वहाँ की याद करके वह फफक-फफक कर रोई थी। गायत्री ने उसे समझाया था। हँसी उड़ाई थी कि यह क्या बात है। आगे फिर भी कई रातों रुलाई आती रही।

गायत्री उसे अपने पास बुला कर कई बातें सुनाती थी। उसने बताया था कि जब वह ससुराल पिछले साल गई तो उस नए घर को देख कर उसे भी रुलाई आई थी। लड़कियों का स्वभाव ऐसा ही होता है। परिवार के लोग बचपन से ही उनकी रक्षा इस सावधानी से करते हैं कि पींजरे से छूटने का दुःख सही सा लगता है, जबकि लड़कों की बात कुछ और ही होती है। गायत्री उससे चार साल बड़ी थी फिर भी दोनों सहेलियां बन गईं। गायत्री उसे अपना पूरा विश्वास सौंपती थी। अपने पति के पत्र दिखलाती। उनकी भाषा से वह अपरिचित थी। कई सवाल पूछने पर गायत्री अपनी बुद्धू सहेली को सब कुछ बता देती। गायत्री ने अपने पसन्द की शादी की थी। माता पिता ने उसका कहना मान लिया था।

आज तो गायत्री अपने पत्रों में न जाने क्यों पति की बुराई लिखती है। उसका कहना है कि नारी का कोई आर्थिक दरजा इस समाज में नहीं है, इसीलिए वह अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बना पाई है।

एम. ए. पास कर लेने पर भी वह दासी है और अपने चार बच्चों की माँ! पति कमाऊ वीर हैं। हजारों साल पुरानी व्यवस्था की भांति वह उससे बच्चों की फसल तैयार करवाता है। वह तो परिवार की देखभाल करती है। उसकी वही पुरानी सीमाएँ हैं। आज वह घर के भीतर बन्द सी ऊब जाती है, पर दूसरा चारा नहीं है। कभी भी उनके पास इतना पैसा जमा नहीं हो पाता कि गरमियों में पहाड़ चले जावें, वही अपने परिवार की चहरदीवारी है। वह वहां कैद है। हजारों साल पहले पुरुष ने उसे इस गृहस्थी का भार सौंप, लक्ष्मण वाली लकीरें खींच कर हदबन्दी की थी। आज भी वे रेखाएँ अमिट हैं। अपनी आर्थिक गुलामी के कारण विद्रोह की चाहना रख कर भी नारी वहीं मजबूरी में रहती है। उसे तोड़ना मानो कि कोई सामाजिक अपराध हो।

नारी की सीमाएँ......प्यारी आज स्वयं उनको तोड़ना चाहती है। सनातन से बनी उस मजबूत दीवार को जहाँ कि 'दासी' से अधिक उसका कोई दरजा नहीं है। आज तो विज्ञान के युग में भी वह केवल विलास की वस्तु समझी जाती है। आज सामाजिक उत्पादन की क्रिया में उसका कोई स्थान नहीं है। उसके पुरुष के बराबर अधिकार नहीं है। जीवन के सम्मिलित संघर्ष में वे एक दूसरे के सहायक नहीं हैं। उसे लगता है कि गायत्री भी इन ही अधिकारों के लिए छटापटा रही है। उसका वह प्रेम का उफान......! गायत्री कालेज में अपने एक सहपाठी का सामिप्य पा कर उन पर आकर्षित हुई थी। भावावेश में माँ को उसने वह बात बताई और पिता की स्वीकृति पा कर विवाह किया था। जीवन संग्राम में फिर भी वह घर के भीतर ही बन्द रह गई थी और पति बाहर। आज वह पत्रों में पति की ओर इशारा करती कि वे न जाने क्यों घर से भागे भागे फिरते हैं। सुबह आठ बजे उठेंगे, खा पी कर दफ्तर चले जावेंगे, वहीं चाय पी कर टेनिस खेलते हैं और वहीं से अक्सर सिनेमा जाकर रात के दस बजे लौटेंगे व जल्दी-जल्दी खाना खा सो जावेंगे। बच्चों के सो जाने के बाद ही वे चुपके घर पर आते हैं। गायत्री अस्वस्थ रहती है तो पड़ोस

का डाक्टर देख कर दवा दे जाता है व इन्जेक्शन लगाता है। वह डाक्टर पति से अधिक सहृदय है। चपरासी सुबह शाम जरूरत की चीजें खरीद कर ले आता है। वे कमाते हैं और वेतन उसे सौंप कर अपनी जिम्मेदारी से बरी हो जाते हैं।

गायत्री के घर का आर्थिक ढाँचा टूट गया है, इसीलिए वह सिनेमा जाने की बात नहीं उठाती है। उसने लिखा था कि आज वह नौकरी करना चाहती है, ताकि कुछ रुपए कमा सके। लेकिन चार बच्चों के साथ यह संभव नहीं हैं। एक दो होते तो दूसरी बात थी। उसे यह देर से ज्ञात हुआ कि परिवार का बढ़ जाना आसान बात है पर उसकी रक्षा करके निभ जाना कठिन है। पत्रों में इसीलिए यदा कदा पिछले जीवन के सुनहले पन्नों को खोल कर रखती है। अपनी उलझन के आवेश में लम्बे-लम्बे पत्र लिखती है। कभी पति, कभी मंहगाई, तो कभी समाज की व्यवस्था को कोसती है।

वह प्यारी से कुछ बातों की जानकारी चाहती है। क्या वह अपने जीवन से सन्तुष्ट है। वह आजाद पसन्द लड़की अभी तक नौकरी करती है। वह पति से ज्यादा वेतन पाती है और उसकी आर्थिक दासी नहीं है। फिर शादी हुए अभी दो साल से अधिक नहीं हुए हैं। वह मजाक करती पूछती है कि 'राष्ट्र का भावी नागरिक' कब तक जन्म लेने वाला है। पति का क्या हाल चाल है। वह उसके पति के कई दास्तानों की जानकारी रखती है, अतएव छेद-छेद कर सवाल पूछती है। वह उसके पति को "लप्पू" कह कर सम्बोधित करती है।

उसे गायत्री के पत्रों को पढ़ कर सुख मिलता है। वे पत्र पति को पसन्द नहीं आते हैं। वे गायत्री को अच्छी औरत नहीं समझते हैं। वे पत्र पति-पत्नी के बीच एक खाईं डाल रहे हैं। जिसे पाटने की चेष्टा वह नहीं करती है।

२

प्यारी ने सुबह का दैनिक पत्र उठाया। उसका एक समाचार अभी तक उसके दिमाग में चक्कर काट रहा था। एक सुसंस्कृत धनी युवती ने

भावुकतावश बचपन में अपने एक गरीब सहपाठी से शादी कर ली थी। दोनों अलग अलग सामाजिक वर्ग के थे। युवती अपने वर्ग से पाई स्वतंत्रता के साथ समाज में चलती थी, जो कि पति को पसन्द नहीं था। दोनों की नहीं पटी तो अलग-अलग रहने लगे। पति फिर भी सनातन से पाए हुए पति का दरजा न भुला कर उसे दोष देता था। आपस में कड़ी चिट्ठियों का आदान प्रदान हुआ। एक दिन किसी ने उस युवक की हत्या कर डाली। पुलिस का दावा था कि इसके पीछे उस युवती का हाथ है; न्याय कुछ विधानों की पुष्टी पर उसे कालापानी की सजा दे सकता है। समाज की यही रूढ़िवादी परिपाटी है। जब कि सचाई यह है कि नारी के लिए 'तलाक' की कोई व्यवस्था नहीं है। अन्यथा रोज ऐसी घटनाएँ न होतीं। नारी तो शादी के बाद पति की सम्पति का एक अंश बन जाती है। जीवन भर उसकी दासी का दरजा पा कर चलेगी और उसकी मौत के बाद भी दासता का पट्टा चालू रहेगा। नारी अपने अधिकार की मांग करती है तो उसकी कोई नहीं सुनता न न्याय बनाने में उसका हाथ है।

उस युवती का फोटो छपा हुआ था। जिसे कि वह बड़ी देर तक टकटकी लगाकर देखती रही। वह अपूर्व सुन्दरी थी, सुन्दर आँखों में आग्रह छुपा हुआ था। उसकी पैनी दृष्टि में उस समाजिक व्यवस्था के प्रति तीव्र विरोध था, जो कि व्यक्तियों को इस प्रकार अपराध करने के लिए विवश करता है। वह आज कई युवतियों की समस्या है। प्यारी को वह नारी के 'तलाक' की माँग का जरूरी सवाल लगा। आज नारी आवश्यकता पड़ने पर उस हथियार के उपयोग की माँग करती है। प्यारी ने पति से उस युवती का पक्ष लेकर यही सा कहा था, पर पति ने उस युवती को दोषी घोषित कर सच्चे न्याय की माँग का सवाल उठाया था कि फाँसी होनी चाहिए। उसकी दलील कि वह निर्दोष है को ताना मार कर उड़ा दिया था कि शायद प्यारी कोई नया घोंसला बना रही है।

दूसरा घोंसला बना लेने की बात अभी प्यारी ने नहीं सोची थी।

वह आज नौकरी करके अपना स्वतन्त्र आर्थिक स्थिति रखती है, यह सच बात थी। वह पति की आर्थिक दासी नहीं है। उसने यह विवाह कुछ उतावली में किया था। तब वह किसी के संरक्षण की भूखी थी। वह एक सबल आश्रय चाहती थी। उन दिनों वह एक भारी तूफान से गुजर रही थी। मन का ताला तोड़ कर किसी से अपने हृदय की सब बातें कह देना चाहती थी। अपने भावों के तिनकों को समेट कर किसी भावी निर्माण की आकांक्षा के लिए पंख फड़फड़ा कर उड़ी थी। क्या वह सब एक अनहोनी घटना थी!

—आज से बहुत पहले उसने अपनी नौकरानी की लड़की को अपना कर एक तरह दुनिया से नाता तोड़ लिया था। वह उसे लेकर स्कूल जाती, सुन्दर कपड़ों से सजा कर रखती। वह लड़की सब पुराने रिश्ते भूल कर उसे 'ममी' कहती थी। वह शब्द उसके हृदय में कुतूहल लाता था। वहाँ एक गुदगुदी सी उठती, आगे लगा कि वे दोनों एक हो गए हैं। उसके जीवन में स्थिरता आ गई थी। उस लड़की को पा जाना जीवन का सच्चा बरदान लगा। वह उसे प्राणों से अधिक प्यार करती, उसे अपने पास सुलाती। वह लड़की तो अपनी माँ को भूल सी गई थी। अपनी माँ को वह दाई कह कर पुकारती थी। लोगों के पूछने पर प्यारी को अपनी माँ बताती थी। वह पढ़ने में बड़ी तेज थी। प्यारी उसे अपने मन के माफिक गढ़ना चाहती थी। उसे स्वतन्त्रता से पनपने देने की धुन में थी। अपनी बेटी के जीवन में कहीं कोई रुकावट डालने देना नहीं चाहती थी। उसने बच्चों का साहित्य पढ़ा और उनसे चुन-चुन कर उसे परियों की कहानी सुनाती थी। वह छोटी लड़की परियों की रानी की चर्चा सुन कौतूहल पूर्ण आँखों से उसे देखती। दैत्य ने रानी को कैद कर लिया सुनती तो सहम कर उससे चिपट जाती, लेकिन जब राजकुमार राक्षस को मार कर रानी से शादी करता तो मुस्करा उठती। अपनी माँ से पूछती कि हम रानी के पास कब चलेंगे; तो वह बताती कि अगली स्कूल की छुट्टियों में जायेंगे, रानी बड़ी दूर रहती है। वह चुप हो जाती।

प्यारी की सहेलियों ने पाया कि वह उन सब से दूर रहती है। दरजे में लड़कियों को पढ़ाते हुए भी उसे अपनी लड़की का ख्याल रहता था। वह उसके साल गिरह पर एक अच्छी पार्टी आयोजित करती थी। उस दिन खासा उत्सव मनाया जाता था। यह जीवन दो साल तक चलता रहा। लेकिन एकाएक जाड़ों में उस लड़की को ठंड लग गई। काफी सावधानी बरतने तथा परिचर्या व दवा करने पर भी निमोनिया हो गया। कुछ अच्छी हुई तो लापरवाही से फिर निमोनिया हुआ और देखते ही देखते वह पन्द्रह दिन के भीतर मर गई थी। उसका मौत का अपने जीवन का यह पहला सदमा था, जिसमें कि उसके जीवन की सब से प्यारी वस्तु अनायास खो गई। उसकी आशाओं की एक मात्र प्रतीक ओझल हो गई थी। नव निर्माण के लिए जो ढाँचा वह गढ़ रही थी वह चकनाचूर हो गया था।

वह बहुत परेशान रहने लगी। रात को बड़ी देर तक नींद नहीं आती थी। वह दो महीने तक घर से बाहर नहीं निकली। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। डाक्टरों ने बताया कि वह सावधानी नहीं बरतेगी तो क्षय रोग हो जाने का अन्देशा है। उसने एक रोज सुबह को आइने में अपना चेहरा देखा तो काँप उठी। इन दो महीनों में ही वह कहानियों की नानी-दादी की भाँति बूढ़ी हो गई थी। उसके आँखों के नीचे तथा चेहरे पर काली झाँइयाँ पड़ गई थीं। वह घबरा उठी और गायत्री को तार देकर बुलवाया था। गायत्री आई और दुःख में काफी धीरज दिया। उसके बच्चों को देख कर दिल हरा हो आया। गायत्री एक हफ़्ते रह कर चली गई थी। जाते समय सुझाया था कि अब उसे जल्दी ही शादी कर लेनी चाहिए। अधिक दिनों तक अकेला रहना उसके बूते की बात नहीं है। आगे जीवन काटना भी दूभर हो जायगा। इस बात का अधिक समाधान नहीं किया था।

गायत्री के चले जाने पर स्वयं उसने अनुभव किया कि अब वह अकेली नहीं रह सकती। उसे कोई अपना सगा चाहिए। वह दैनिक

पत्रों का विज्ञापन पढ़ा करती और विवाह-विज्ञापनों पर अटक जाती, अपना मन टटोलती। एक विज्ञापन मन में उथल-पुथल मचाता। किसी युवक की प्रथम पत्नी अस्वस्थ थी और अलग रहती थी। वह एक साथी चाहता था। और वह भी तो स्वयं यही चाहती थी? स्कूल में एक सहेली से उसने चर्चा की। आगे उस युवक से अनायास ही नुमायश में भेंट हुई। वह अच्छा चित्रकार था और दैनिक पत्रों में उसके लेख निकला करते थे। वह तो यदा कदा उसके घर पर चाय पीने आया करता। उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं था। वह अपना पुराना इतिहास सुनाया करता और बताता कि वह अब तक दुनिया का एक बड़ा कलाकार होता यदि गलत शादी न करता। उसने विनीत भाव से प्रार्थना की थी कि वह उसे नवजीवन प्रदान करे। उसने सोचा कि वह दासी नहीं घर की मलकिन होकर जा रही है। अपनी महत्वाकांक्षाओं का जिक्र करते हुए वह बताता कि तीन चार साल में वह उसे साथ लेकर युरोप जायगा। उसे पाकर वह अपना 'लूला' जीवन सफलता पूर्वक चलाने की धुन में था। वह उसे अपने दिल की रानी बनाने का प्रण करता। बताता कि अब वह अपना सामाजिक दरजा बनावेगा और वह एक श्रेष्ठ कलाकार की पत्नी कहलावेगी।

प्यारी उसे देखती थी; दुबला-पतला शरीर, बुझी आँखें, बातें करते हुये उसके स्वर में एक कंपन सी उठती थी। उसका खास प्रभाव कभी भी उस पर नहीं पड़ा, वह अपनी योजनाएँ सुनाता था। वह पत्रों में उसकी चर्चा पढ़ती थी, सहेलियाँ उसके भाग्य की सराहना करती थीं, पर बिना गायत्री की सलाह के वह कुछ करने के लिये तैयार नहीं थी और उसे सरलता से वह बताया था। गायत्री को उसने विस्तार से पत्र लिखा और एक महीने तक उत्तर की प्रतीक्षा की। कोई जवाब नहीं मिला तो एक दिन आसानी से अपना भविष्य उसे सौंप दिया।

शादी के अवसर पर उसने अपनी सहेलियों को दावत दी। वह बहुत खुश थी। अपनी प्यारी लड़की की सब चीजें उसने बच्चों को बाँट

दीं। वह कोई पिछली दुःखद स्मृति अपने पास रहने देना नहीं चाहती थी। उसने अपना मकान सुरुचिपूर्ण चित्रों से सजाया। वह शादी के बाद पति के घर गई और आठ रोज रह कर लौटी थी। लौटने वाली शाम को जब वह कपड़े संभाल रही थी तो लगा कि किसी ने उसके सन्दूक को खोल कर चीजें इधर उधर की हैं। नौकर पर उसे शक हुआ पर कोई चीज नहीं खोई थी। अतएव सन्तोष कर लिया। अब कभी तो वह पति के साथ रहती तो फिर अपने यहाँ। पति के आग्रह पर निश्चय किया था कि अगले महीने से वहीं रहेगी।

उसकी समझ में अपने पति की बातें नहीं आती थीं। वे अक्सर उसके लिये उपहार भेजा करते थे। चपरासी बताता था कि साहब दौरे से लाए हैं। वे भी वक्त बे वक्त उसके यहाँ टपक पड़ते थे। वह उन उपहारों को अपनी सहेलियों को दिखलाया करती थी। एक दिन एक सहेली ने एक साड़ी को देख कर कहा था कि वह तो स्थानीय दूकान की लगती है, पर उसके पति ने तो सूचना दी थी कि वे दिल्ली से लाए हैं। सहेली ने शर्त लगाई तो वह उसके साथ दूकान पर गई तथा पता चला कि सहेली की बात सच है। उसके चले जाने पर वह बड़ी देर तक सोचती रही कि आखिर उसके पति झूठ क्यों बोलते हैं।

वह सीधे घर पहुंची तो बाहर से ताला बन्द पाया। अपनी तालियों का गुच्छा निकाल कर उसने एक ताली से उसे खोल लिया। वह चुपके भीतर पहुंची तो पाया कि पतिदेव भीतर बड़े कमरे में बैठे थे। सन्दूकों को खोल कर चीजें बिखरी हुई थीं। एक चिट्ठी पर गायत्री के हस्ताक्षर पा कर वह चौंकी। बस सावधानी से उधर बढ़ी और पाँव के नीचे दबा कर वहीं पर बैठ गई

पति तो मुस्करा कर बोले थे कि यहाँ लोग काम नहीं करने देते हैं, इसीलिए चार सौ बीस करना पड़ता है। तुम जब आना चाहो तो पहले सूचना दे दिया करो ताकि सब इन्तजाम रहे। एक लेख के लिए चित्रों

की जरूरत थी, वे न जाने कहाँ खो गए हैं। शायद नौकर बाहर ताला बन्द करके चला गया।

सामने उनकी पत्नी के पत्रों का ढेर पड़ा हुआ था। वह कुछ देर बैठी रही और गायत्री की चिट्ठी सावधानी से छुपाली कहा फिर, 'मैं पूछने आई थी कि वहाँ अकेले बुरा लगता है। कल परसों छुट्टी है, आप नौकर भेज दें तो वह मेरा सामान यहाँ ले आवेगा।'

वह पति की स्वीकृति पाकर उठी और चाय बनाने लगी। कुछ देर के बाद दोनों चाय पी रहे थे। उसने पाया कि उसका पति उसे पढ़ रहा है। वह अपनी भावना व्यक्त नहीं होने देना चाहती थी। बड़ी देर तक इधर उधर की बातें करके उसने रिक्शा मँगवाया और चलने को तैयार हुई तो पति ने अनुरोध किया कि वह रुक जाय, पर वह रुकी नहीं। वह अपने घर नहीं गयी और अपनी सहेली के यहाँ पहुंची। उससे बोली कि वह वहीं रात को रहेगी और खाना भी खावेगी। उसके नौकर से अपने घर की नौकरानी को सूचना भिजवाई कि रात को वह घर नहीं आ रही है।

अब उसने सुविधा से गायत्री का पत्र पढ़ा। वह उसकी शादी से एक महीने पहले उसके स्कूल के पते से आया था। गायत्री ने लिखा था कि वह एक गलत व्यक्ति से शादी कर रही है। उसकी पहली पत्नी जीवित है तथा स्वस्थ है। उसको नीचा दिखलाने के लिये वह दंभी व्यक्ति दूसरी शादी कर रहा था। उसके दो लड़के हैं। वह तो नीच और लम्पट है। वह उसकी शादी के लिये अपने मामा के लड़के को पत्र लिख चुकी है। आशा है कि उसकी स्वीकृति आठ दस रोज में आ जावेगी।

गायत्री के पत्र ने उसे डस लिया था। पति ने स्कूल के चपरासी को इनाम दे कर वह लिया था। पत्र की चोरी करके धोखे से वह शादी की थी। गायत्री शायद यह बात न जानती होगी। जो व्यक्ति कि इस भाँति नारी को केवल अपने दंभ का शिकार बनाता है, ऐसे पति के

साथ वह कै दिन चलेगी समझ में नहीं आया। वह खा पीकर सोई, पर नींद नहीं आई। न जाने क्यों दिल भर आया और वह फफक फफक कर रोने लगी।

आधी रात को उसकी सहेली ने उसे जगा कर बताया था कि उसके पति की तबीयत ठीक नहीं है। बाहर 'कार' खड़ी है। डाक्टरों ने उसे बुलाया है। वह अपनी सहेली के साथ वहाँ तांगे पर पहुंची तो पाया कि वे चारपाई पर पड़े थे। उनका चेहरा पीला पड़ गया था। डाक्टर ने बताया कि नरवसनेस के कारण गश आ गया था। अब ठीक हैं।

डाक्टर के चले जाने पर उसकी सहेली सो गई। वह चुपचाप पति के कमरे में गई थी तो पाया कि वे अपने पिता की तसवीर को जमीन पर रख कर जूते से पीट रहे थे। उसको देख कर अपनी पत्नी के पत्रों का बंडल उठा कर उसके आगे पटकते हुये कहा कि, यह उसके प्रेमी तथा उसके पत्र हैं। फिर आँखें फाड़ फाड़ उसे देखा और जोर से बोले, 'गायत्री की चिट्ठी कहाँ है। उसे मुझे दे दे नहीं तो आत्महत्या कर लूँगा।'

३

शादी के दो साल बाद आज प्यारी अपने जीवन की छानबीन कर रही थी। अब तक अपनी मर्यादा तथा सम्मान को बनाए रखने के लिये वह पति के सभी तरह के अपमानों को सहती रही है। इतने दिनों के बाद वह इस नतीजे पर पहुंची कि उसका पति किसी भयंकर मानसिक रोग का शिकार है। उसे अधिकार होता तो उसे किसी अदालत में सामाजिक अपराधी घोषित करने को तैयार है। वह यह जरूरी समझती है कि ऐसे पतियों को न्यायालय द्वारा दंड देने की व्यवस्था होनी चाहिए। अखबार का वह समाचार उसकी आँखें खोल बैठा। उस युवती ने अपने पति को मृत्यु दंड देने में सहयोग दिया था। सनातन से जिस पति को नारी देवता मानती आई है। समाज की उस पुरानी लीक पर यह तेज प्रहार था। नारी को सच ही आज

तो अधिकार होना चाहिए कि न्यायपूर्ण तरीके से अपने पति को त्याग दे। वह उसी अस्त्र को व्यवहार में लावेगी।

उसके पति कल रात को कलकत्ते से आये हैं। सुबह चपरासी को बुलाकर उन्होंने 'इनेमल की केतली' देते हुए कहा था कि बड़े साहब के यहाँ दे आवे। रात में प्यारी ने वह केतली देखी थी और उसे बहुत पसन्द आई थी। पति से उसने कहा था कि वह घर के काम के लिए ठीक है। जब वे नहीं माने तो झुँझला कर कहा था कि जिन्दगी भर 'बंगले बाजी' के अलावा और भी कुछ किया है। क्या फिर मीटिंग में वेतन बढ़ने वाला है। उसके पति साल में पाँच-छै बार कहा करते थे कि उनकी तरकी फिर चालीस की हुई है। वह यह सुनते-सुनते ऊब गई थी। नौ साल की नौकरी के बाद जब कि अभी केवल दो सौ के करीब वेतन मिलता था।

पति आज झगड़ने के मूड में थे। यह ताना असह्य हो उठा। गुस्से में बोले थे, "तू भी किसी यार से मिल कर मेरा गला कटवा दे। गायत्री की सब बातें मुझे मालूम हैं। ताजमहल में तू भी काफी खेल चुकी है।"

वे यह कह कर बाहर न चले जाते तो वह उनको तमाचा मार कर निकाल देती। वह उनकी दासी नहीं है। वह स्वतंत्र है। उसका समाज में अपना आर्थिक दरजा है। वह निश्चय कर चुकी है कि शाम तक उस घर को छोड़ देगी और किसी बलवान पुरुष के साथ रहेगी। उनका अपना गृहस्थ बनेगा और उसका मातृत्व निखरेगा। चाय की केतली से उठा अज्ञेय तूफान उसे नवजीवन देगा..........

कुछ पुरानी सी बात

आपको पाँच साल पुरानी बात सुना रहा हूँ। वैसे वह सब मुझे आज भी नई लगती है। नवीन को सभी लोग जानते हैं। कस्बे का बड़ा स्कूल अब उसी के नाम से पुकारा जाता है। सन् १९४५ में मेरी उससे एकाएक मुलाकात हो गई थी। मैं उन दिनों एक राजनीतिक दौरे के सिलसिले में आने वाले चुनाओं के सम्बन्ध में जानकारी हासिल करने के लिए पहाड़ गया था। वहाँ के गाँवों में उन दिनों दूर-दूर देशों के युद्ध क्षेत्र से फौजी लौट कर आये थे। वे हथियारों को कैन्टूनमेंन्ट में डिपो के अधिकारियों को सौंप कर युद्ध से थके माँदे लौटे थे और अब फौजियों का लिबास उतार कर किसान का नया रूप अपनाने के लिए उत्सुक थे। उनकी सरलता को देख कर कोई अनुमान तक न लगा सकता था कि वे फासिस्ट जापान और जर्मनी के तानाशाहों का मद चूर करके कई देशों की जनता को आजाद करके लौट आए हैं।

मैंने उन सैनिकों का एक नया रूप भी पाया था। वे आजाद हिन्द फौज के सैनिक अंग्रेजी हुकूमत से नफरत करते थे। उनकी धारणा थी कि ये अंग्रेज सदियों से उनको गुलामी की बेड़ियाँ पहना कर आज भी उनको आजादी नहीं देना चाहते हैं। उनको अपने नेताजी की बात याद थी कि अंग्रेज से देश को आजाद करना है। वे अक्सर गिरोह

बनाकर आजादी के तराने गाकर गाँव वालों को सुनाते थे। नेताजी का वर्णन करते कि वे कितने महान् हैं। उनको पूरा भरोसा था कि नेता जी जल्दी ही लौट कर आवेंगे और उनका देश आजाद होगा। कैंटून-मेन्ट में अंग्रेज के टुकड़खोर अफसरों ने उनका अपमान करते हुए कहा था कि उन लोगों ने देश के साथ गद्दारी करके अपनी सैनिक परम्परा पर धब्बा लगाया था। पर नेता जी तो बताते थे कि इस लड़ाई को जीतने पर अंग्रेज उनको गुलामी की नई बेड़ियाँ पहनावेगा। उसको तोड़ कर आजादी लेनी होगी। आज फौज से निकाल दिए जाने पर भी वे नेताजी की छोटी-छोटी बातें बयान करते हैं और नित्य छोटी-छोटी टुकड़ियों में कवायत करते थे। वे उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब कि नेताजी एक नई लड़ाई छेड़ेंगे। उनकी धारणा थी कि वह दिन बहुत दूर नहीं है।

मैं एक पहाड़ी पड़ाव पर ठहरा था। शाम हो आई थी। मैं एक ऊँचे टीले पर बैठकर नीचे की ओर देख रहा था। वहाँ कुछ धुन्ध सा था और टेढ़ी-मेढ़ी बहती नदी के ऊपर कुहरे की सफेद चादर सी बिछी हुई मिली। वह बड़ी दूर हिमालय के बर्फीले गिलेशियर से निकल कर देवदारू, बांज, चीड़ आदि के बनों को चीरती हुई बहती है। उस बेगवती नदी की धारा से एक नई शक्ति का बोध होता है। लगता है कि मानो वह निरंतर संघर्ष में तप कर नीचे मैदान में रहने वाले किसानों के लिए एक शक्ति संचय का साधन सुलझाने का सवाल हल कर रही हो। पर उस पहाड़ी जीवन के भीतर तो वह गुनगुनाती सी प्रकृति के सौंदर्य की मधुरता का वर्णन करती मिलती है। शायद वह जानती है कि वहाँ का किसान निरंतर जीवन में संघर्ष कर रहा है। उसकी वह सैनिक जाति की शक्ति महायुद्धों की परम्परा पर आज सन्देह करने लगी है।

रात पड़ रही थी। मैं पड़ाव पर लौट आया; दूकानदार ने मुझे खटमलों से भरी चारपाई सौंप कर कहा कि वह खास मुसाफिरों के लिए है। उसका एक रात का किराया चार आना बताया। रोटी और मिरचों

वाली तरकारी की खुराक बारह आना व एक कटोरी गोश्त छै आना। इशारे से समझाया था कि वह खास मुसाफिरों को 'रम' के एक दो पेग भी कीमत पाने पर देता है। यदि मैं शौकिन तबीयत का होऊँ, कुछ ज्यादा आराम की इच्छा हो तो वह भी संभव हो जायगा। हंसते हुए बताया था कि सामने वाले मकान पर पान-सुपारी का प्रबन्ध है। पिछले साल से वहाँ एक नाचने वाली लड़की आई है, जो कि साधारण मनो-विनोद के साधन जुटाती है। वह पक्के गेहूँ के रंग की और जवान है। रात के तीन रुपये लेती है। पहले सिपाहियों से कुछ रोग पकड़ा था; पर वैद्य की दवा से वह अच्छी हो गई है। मैं बेखटके वहाँ जा सकता हूँ।

लेकिन उस कांइयां बनिया के अतिरिक्त वहाँ कुछ गरीब मुसाफिर भी थे। उन्होंने सड़ा-गला आटा खरीद कर मोटी रोटियाँ बनाईं और पिसे हुए नमक मिर्च के साथ खा रहे थे। उनसे मालूम हुआ कि गाँवों की हालत लड़ाई के बाद बिगड़ गई है, वहाँ का आर्थिक ढाँचा टूट चुका है। लड़ाई के जमाने में काफी पैसा दिखलाई पड़ता था; अतएव हर एक गाँव में छोटी दूकान साहूकार ने खोली थी। वह कमा कर मोटा हुआ और आज वहाँ के जीवन में शतरंज खेला करता है; अन्यथा वहाँ तो भयानक गरीबी फैल रही है, लोग अपने परिवार को जीवित रखने के लिये घरेलू सामान बेच रहे हैं।

वह लड़ाई कई नये अध्याय भी जोड़ चुकी थी। समाज की सतीत्व वाली कड़ी बेड़ियाँ पिघल गईं और कुछ सैनिकों ने पाया कि लड़ाई के जमाने में उनके दूर रहने पर भी न जाने कैसे उनकी पत्नियाँ बच्चों की फसल तैयार करने में सफल हुई हैं। चरित्र की वह कसौटी कुछ पाखं-डियों ने तोड़ कर नारी का मनोबल छीन लिया था। नारी को उसकी भावुकता में छल कर उसकी गहरी अनुभूति की संज्ञा पर धावा बोला था। वह नया विद्रोह पतियों में 'हिंसा' की भावना प्रेरित करता। वे पत्नियों पर झुंझलाते हुए भी पाते कि उस युद्ध में वे रोटी कमाने भर

के लिए गए थे—पेट भरने के लिए। अपनी आकांक्षा की पूर्ति के लिए नहीं गए थे। पत्नी को भी वे युद्ध का उद्देश्य नहीं समझा गए थे।

उन गाँवों की बातें सुन कर मन मुरझा गया था। किसी को आने वाले चुनाव से दिलचस्पी नहीं थी। कांग्रेस और गांधी की बातों के प्रति तक वे उदासीन थे। कुछ नीच जाति के बूढ़े तो बोले कि बड़े ठाकुर, ब्राह्मण और साहूकार फिर भी राज करेंगे। उनको तो जूठा खाना ही लिखा हुआ है। कौन उनको चुनाव से राजपाट मिल जायगा। उस सब पर सोचता लौट आया। मन में कई बातें तेजी से उठ रही थीं। मैं ऊपर बरामदे पर पहुंचा। सामने के मकान से हारमोनियम के साथ कोई लड़की भद्दे स्वर में गा रही थी। चारपाई पर लेटा था कि खटमलों की एक फौज ने हमला कर दिया। वे छत पर से भी टपक रहे थे। लालटेन उठाई और देखा कि उनसे लड़कर सारी रात गुजारनी पड़ेगी। वहाँ सोना संभव नहीं था। सामने जमीन पर कई मुसाफिर सो रहे थे और एक तेजी से खुर्राटे भर रहा था।

मैं बिस्तर पर से उठ कर चुपचाप टहलने लगा। तभी पाया कि कोई नीचे से लकड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर आ रहा है। वह व्यक्ति तो पास आकर चुपके मेरे कान में बोला; "नवीन हूँ। मेरे साथ चलो।" ज्यादा शोरगुल ठीक नहीं होगा।

'नवीन!' वह शब्द मेरे कानों में गूँज उठा। वह नौजवान वहाँ के सामन्ती राजा के खिलाफ किसानों को उकसा कर विद्रोह करवा रहा था। एक साल से राजा की फौज परेशान थी। उसके बारे में कई किस्से चालू थे। जिस किसी गाँव में उसके ठहरने का संदेह होता, उस पर सामूहिक जुर्माना लगता, औरतों की इज्जत फौजी लूटते और भाँति-भाँति के अत्याचार करते थे। जनता का मनोबल तोड़ने में वे असफल रहते। उस नवीन को मैं बहुत दिनों से पहचान लेना चाहता था। आज उसका आमंत्रण पाकर मैं चुपचाप उसके साथ हो लिया। उस पड़ाव पर उस समय भी सैनिकों की एक टुकड़ी उसकी टोह में पड़ी थी। उनका नायक

वेश्या के यहाँ रम की एक बोतल लेकर शाम को चला गया था। वे सिपाही इस तरह मारे-मारे फिरने से परेशान थे और गुस्सा थे कि वे अफसर उनकी परवा नहीं करते। तनखा भी ठीक नहीं मिलती है। गुजर मुश्किल से होती है। इस नौकरी से ऊब कर भी अपने बाल-बच्चों का पालन करने के लिये मजबूर थे।

वह दुबला-पतला चौबीस-पच्चीस साल का नवयुवक लगता था कि कुछ अस्वस्थ रहा करता है। उसकी समीपता से मैं एक नया जीवन पा गया था। उसने अनुरोध किया था और सच ही उसके साथ बिना किसी हिचक के आ गया। हम लोग पगडंडी से उस पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। ठंढी हवा चलने लगी। आकाश पर चांद का टुकड़ा चमक रहा था और तारे टिमटिमाते मिले। सामने ऊँचे-ऊँचे पहाड़ चुपचाप खड़े थे। लगता था कि परदे पर बने हों और शीघ्र ही कोई नाटक शुरू होने को हो। कुछ दूर आगे कुत्तों के भूंकने की आवाज कानों में पड़ी और फिर गांव के पास की गन्दगी मिली। अब चुपचाप सोये हुये गांव का वातावरण मिला। वह एक मकान के पिछवाड़े गया और कुंडी बाहर से खोल कर भीतर पहुँचा। उस खटके को सुन कर किसी ने भीतर से कुछ कहा तो नवीन धीमे स्वर में बोला, "मैं लौट आया हूँ, माँ! मेहमान मिल गये। अब कल सुबह चला जाऊँगा। इनकी प्रतीक्षा ही इस गाँव में कर रहा था।"

भीतर से एक बुढ़िया दिया लेकर बाहर आई। मुझे सावधानी से पहचानती रही। उसका चेहरा गहरी रेखाओं के जाल से भरा था। कुछ उलझन में बोली, "खाना बना लाती हूँ।"

"नहीं माँ ये तो होटल में खाना खा आये हैं।" सरलता से नवीन ने कहा और वह बुढ़िया भीतर चली गई। अब मेरी ओर देखता बोला, "सच ही मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा था। अन्यथा यहाँ खतरा काफी है।"

मैं चुपचाप चारपाई पर बैठ कर कई बातें सोचता रहा। मैंने इन्हीं

पहाड़ों में जीवन पाया, पर पिता तथा परिवार के अन्य लोग मैदान में अच्छे ओहदों पर हैं। वहाँ आराम के काफी साधन हैं। ये पहाड़ निर्जीव से लगते हैं। इनका सांस्कृतिक स्तर अपने मन से मेल नहीं खाता और फिर यहाँ जीवन में पग-पग पर कठिनाई है। ये तो उन 'हिल स्टेशनों' की तरह सुन्दर कहाँ है; जहाँ आधुनिक विज्ञान के सब साधन हैं और सम्भ्रान्त परिवार वालों का समय वहाँ आसानी से कट जाता है। वहाँ जीवन है; उसमें गति मिलती है।

नवीन तभी बोला—"यह देश सैनिकों का है। उनकी माताओं, पत्नियों तथा भाई-बहिनों का है। यह उन नवजवानों का देश है जिसके लाखों फौजियों की आहुति साम्राज्यवादी, सालों से अफगान, ब्रह्मा, मेसोपोटामिया, सूडान, फ्रांस, जापान आदि की लड़ाई में देकर अपने साम्राज्य का विस्तार करते रहे हैं। सन् १८२५ से आज तक वे नवजवान युद्ध में मारे गये। यहाँ स्कूलें नहीं हैं, यातायात के साधन नहीं हैं और शासन का वही दो-सौ-तीन सौ साल पुराना ढाँचा है। आज विज्ञान के युग में भी इनका कोई सांस्कृतिक जागरण शासक नहीं करना चाहते हैं। यह मेरी माँ उन सारी पहाड़ी माताओं की प्रतीक है; जो अपने पति, भाई और बेटों को पिछली लड़ाइयों में खो चुकी है। इनके बच्चे ठीक तरह पनप भी नहीं पाते हैं कि लड़ाई शुरू हो जाती है। भरती के खुलने पर एक लम्बी कतार फौज में भरती होती है। वहाँ उनको आज से हजारों साल पहिले के कबीलों वाली हिंसा सिखाई जाती है। फिर नौजवानों की एक फसल नष्ट हो जाती है आठ-दस साल बाद फिर नई लड़ाई की तैयारियाँ साम्राज्यवादी शुरू करके भरती खोल देते हैं।"

वह अब चुप हो गया और मैंने पाया कि वह नवीन तो आसानी से मेरे हृदय में पसर रहा है। उसका वह रूखा चेहरा अब चमकने लगा। उसने बीड़ी निकाली और सुलगा कर पीने लगा। फिर कुछ देर खांसता रहा और कई कश खींच कर बीड़ी बुझा दी। मेरी ओर देख कर कहा, "तुम मुझे नहीं पहचानते हो; पर जब तुम मैट्रिक में पढ़ते थे मैं

उसी कस्बे के स्कूल में सातवीं में पढ़ता था। तुम्हारी वाक्य शक्ति ने मुझे प्रभावित किया था और मुझे विश्वास हुआ था कि तुम देश की जागृति में भाग लोगे। पर तुमने इस ओर ध्यान न देकर एक तरह इसे छोड़ दिया है। मैं तो जीवन के आंधी-तूफानों से लड़ता रहा। सन् १६४२ में कालेज छोड़ कर यहाँ सदा के लिये चला आया। तब यह सैनिकों का देश सूना पड़ा हुआ था। महायुद्ध सब नौजवानों को खींच कर ले गया। यह सब देख कर मैं परेशान हो उठा। बची हुई शक्तियों को जमा कर मैंने विद्रोह किया। उन दिनों ही मुझे अनुभव हुआ कि मेरा यह देश बहुत सुन्दर है और मैं इसे प्यार करने लगा। वह जो सामने नदी बहती है, मेरे गाँव को छूकर आती है। वह बचपन से मुझे नई जिन्दगी का पाठ पढ़ाती रही। वह बहती हुई दूर मैदान में चली जाती है और हमारा वहाँ के रहने वालों से नाता जोड़ती है। पिछले चंद सालों में मुझे लगा कि मेरा यह देश बहुत सुन्दर और सुहावना है। यदि ये लड़ाइयाँ न होतीं, अकाल न पड़ते और हमारे हजारों नौजवान उनमें नष्ट न हो जाते, तो हम प्रकृति से संघर्ष करके नई शक्ति का संचय कर देश को निर्माण की योजनाओं की ओर बढ़ाते। यह केन्द्र केवल एक भरती का केन्द्र है, हम आज विज्ञान से दूर हैं।

"सन् १६४३-४४ में सैनिक लड़ाई पर से छुट्टियों में लौट कर आते और चंद दिन यहाँ बसेरा लेकर चले जाते थे। यहाँ की बूढ़ी मातायें बतातीं कि ये लड़ाइयाँ उनके लाड़ले बेटों को छीन कर ले जाती हैं, पत्नियाँ कहतीं कि जीवन का कोई सुख वे नहीं पातीं। बच्चों के भविष्य की ओर तो सभी उदासीन रहते हैं। वे बच्चे अपनी माँ के साथ मजूरी भी करते हैं; गायें चराते, खेत तथा जंगल जाते, पशु चराते और इसी उम्मीद पर जीते हैं कि सैनिक, फौज और घरेलू नौकरी करने का पट्टा लिखा कर वे आये हैं। देश में राष्ट्रीय आँधियां उठीं तो यहाँ वह हवा नहीं पहुंचने दी गयी थी। कुछ सैनिक नौजवानों ने उसे यहाँ बहाने की चेष्टा की तो फौजी अदालत ने उनको सजायें दीं और उनके परिवारों

पर अधिकारियों ने जुल्म किये। ये आजाद फौज के सैनिक एक नई आशा का संचार करते हैं। वे साम्राज्यवादियों की फौजी परम्परा से नफरत करते हैं, जो बड़े खानदान के बेटे होने के कारण ऊँचे ओहदे पा गये और आज उनकी आजादी की भावना को कुचलना चाहते हैं। लेकिन उनका आजाद होने का मनोबल तो फौलाद की भाँति मजबूत है।"

अब एक अधेड़ युवती चाय के दो गिलास लिए हुए आई थीं। नवीन ने एक गिलास मुझे देते हुए कहा, मीठी तो न होगी।

वह चुपचाप चाय पी रहा था। अधेड़ भीतर चली गई। मैंने उस चाय को पीने की चेष्टा की, वह कुछ देर चाय पीता-पीता रहा। भीतर से किसी बच्चे के रोने की आवाज आई और फिर जैसे कि सोने से कोई दूसरा बच्चा भी उठ गया था। वह रोना जब न थमा तो वह उठकर भीतर गया और एक तीन साल के बच्चे को उठाकर ले आया। उसे कुछ देर अपनी गोदी में लिटा कर थपथपाया और जब सो गया तो उसे चारपाई पर लिटा दिया। फिर हँस कर कहा, यहाँ की नारी का सामाजिक उत्तरदायित्व आज भी हजारों साल पुराना है, फिर बीड़ी निकाल कर सुलगाई और उसे फूँकने लगा।

अब वह बड़ी देर तक खांसता रहा। मुझे उसका वह बीड़ी पीना अखरा। भय हुआ कि वह बहुत अस्वस्थ है। कुछ साहस कर कहा, "तुम अपने स्वास्थ्य की कुछ चिन्ता किया करो और बीड़ी पीना छोड़ क्यों नहीं देते।"

"कुछ आदत पड़ गई है जिसे वादा करके भी पीना नहीं छोड़ पाता। सेहत पहले ठीक थी। पिछले जाड़ों में एकाएक 'टाइफाइड' हो गया। बाहर इलाज कराना संभव नहीं था। फिर उस बीमारी में भी महीने भर के भीतर ग्यारह-बारह जगह बदलनी पड़ी हैं। कभी-कभी पाँच-सात मील पैदल चलना पड़ा। एक दिन पुलीस ने आधी रात गाँव पर छापा मारा था। मुझे अकेले ही भागना पड़ा, बदन पर तेज ताप थी,

पर बेवश था। अब आज तो स्वस्थ हूँ। फेफड़े खराब नहीं, कभी गहरी साँस लेने में दुःखते नहीं हैं।"

कुछ देर चुप रह कर नवीन खांसता रहा। अब मेरी ओर देख कर मुझे पढ़ने की चेष्टा की, बोला, "फिर तुम यहाँ लौट कर क्यों नहीं आ जाते। बहुत काम बाकी है। मुझे तुम्हारी शक्ति पर भरोसा है। यहाँ का हजारों साल पुराना सामाजिक ढाँचा है। पुरानी नैतिक मान्यताएँ और विश्वास हैं। साम्राज्यवादी युद्ध में मरना 'वीरत्व' प्राप्त करना माना जाता है। वही पौराणिक भावना चालू है कि युद्ध में मरा हुआ व्यक्ति सीधे स्वर्ग जाता है। फिर सामन्ती राजा का शोषण........! यह लड़की जो चाय लाई थी अधिक उम्र की नहीं है। दो हजार साहूकार से कर्जा लेकर माँ इस बहू को लाई है। यह एक स्वस्थ युवती थी। उसके पिता ने एक निपुण लड़की के लिये पन्द्रह सौ की माँग की थी। एक साल बाद पति युद्ध में मारा गया। वह अपनी स्मृति यह बच्चा छोड़ गया है। साहूकार के लड़के ने आगे इस पर डोरे डालने शुरू किए, झूठे स्वप्नों की चर्चा करके इसे अपने जाल में फँसाया। यह फिर माँ बनी। वह साहूकार का बेटा दो हजार का पट्टा फाड़ कर इसे अपनी रखेल कुछ साल के लिये बनाने को तैयार है। नारी का यह कैसा व्यापार है? वह पति मरते दम तक न जान सका कि वह क्यों और किसके लिये लड़ाई में मर रहा है। यह युवती कभी न समझ सकी कि उसके पति ने क्यों प्राण गँवाया! अपनी आजादी की किसी लड़ाई के लिये वह मरा होता तो यह पत्नी भी मजबूती से घर का मोर्चा संभालती। लेकिन युद्ध क्यों हो रहा है, सब अज्ञान उस ओर से है। आज भी नारी का व्यापार चालू है। उसको एक वर्ग अपने आराम के लिए खरीदता है। उसका शोषण होता है। वह विद्रोह करना तक भूल गई है, जानकर कि वह पुरुष की गुलाम है। यह समस्या हजारों साल से चालू सड़े-गले समाज की उपज है। ये लड़ाइयाँ आईं और मानवता को कबीलों वाली हिंसा से आगे नहीं बढ़ा पाईं।

वह अधेड़ युवती न जाने कब से दरवाजे पर खड़ी थी। अब पूछा, "क्या कल सच ही सुबह जा रहे हैं।"

"हाँ, गोबिन्दी !"

"भैय्या अभी तो तुम्हारा बुखार भी नहीं टूटा है।"

नवीन ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया। सही निश्चय जानकर वह युवती कुछ देर तक खड़ी रह कर भीतर चली गई। अब कमरे में सन्नाटा छा गया था। मैं नवीन के पास, उसके बहुत समीप बैठा था। जिसकी लाश के लिये पाँच हजार का इनाम वहाँ के सामन्ती शासक ने एलान किया था। पर वह वहाँ के किसानों का बेटा था। वे उसे प्यार करते थे। फौज और पुलिस के कुछ ईमानदार नौजवान भी जानकर कि वह कहाँ है, अनजान बन जाते हैं। उसे माताएँ अपनी हृदय में छुपाए रखना चाहती हैं। बूढ़े अपने इस बेटे पर जीवन निछावर करने को तैयार थे और युवतियाँ गीतों में उस भाई के नेतृत्व की महिमा गाती हैं। सुनातीं कि वह उनके देश का सबसे प्यारा बेटा है।

—नवीन एक सैनिक परिवार का बेटा था। एक दिन अपना हल छोड़ कर वह स्कूल गया, फिर उसने कालेज में पढ़ा; कुछ दिन तक वह एक फौजी डिपो में भी 'सिवीलियन हवलदार' रहा, एक अंग्रेज अफसर की बद-तमीजी पर उसने उसे डाँटा था तो फौजी अदालत ने उसे छै महीने की जेल की सजा दी थी। जेल से लौटकर वह फिर पढ़ने गया था पर वहाँ मन नहीं लगा। वह अब अपने देश का हृदय टटोलने लगा—वहाँ उसने जो सुहावना व भोलापन पाया उसी में पनपने लगा और वहाँ के लोगों की भावना समझकर नया जीवन पाता: वहाँ के नौजवानों को शासक के प्रति घृणा का पाठ पढ़ाता था। उसकी धारणा थी कि अपनी आजादी के लिये आज तक उन लोगों ने कभी लड़ाई नहीं लड़ी है। अब तक तो वे भाड़े के टट्टुओं की भाँति साम्राज्यवादियों की उपनिवेशों की जनता को गुलाम बनाये रखने वाली योजनाओं को

पूरा करते रहे हैं। आज अपने को खुशहाल और आजाद रखने की लड़ाई ही उनकी सच्ची लड़ाई है।

नवीन फिर कहने लगा, "तुम सोचते होगे कि मैं पागल हो गया हूँ; यह सच है, हमारे देश में सुन्दर-सुन्दर झीलें हैं, जहाँ कि बड़ी-बड़ी मछलियाँ तैरा करती हैं। वहाँ हंसों की टोली भी गरमियों में पहुंच जाती हैं। बरफानी चोटियाँ हैं; जहाँ कस्तूरी मृग, मुनियाल पक्षी, और कई जन्तु रहते हैं। देवदारु, सुरई, बाँज, रांगारासों, चीड़ आदि के घने जंगल हैं और हैं घास के चौड़े-चौड़े मैदान; जहाँ कि लाखों भेड़ें चरती हैं। हमारे पास सेब, खुबानी, आड़ू, दाड़िम, नीबू, नारंगी और हजारों फलों के बाग हैं। गांवों में मधु-मक्खियाँ छत्तों में भिनभिनाया करती हैं। सैकड़ों मन मोहक प्राकृतिक दृश्य हैं। काश कि मैं कवि होकर उनके गीत गा सकता! लेकिन हमने अपने देश को कभी प्यार नहीं किया है। हमारी सम्पूर्ण शक्ति तो साम्राज्यवादियों के मनसूबों को पूरा करने में नष्ट होती रही है। हम उनके उपनिवेशों की रक्षा के पहरेदार बने रहे। वह गुलामी हमने स्वयं अपनाई। आज भी तो उनके खिलाफ विद्रोह करके हम आजाद होना नहीं सीख रहे हैं। हमारे नौजवानों को यहाँ की प्राकृतिक छटा नहीं मोह पाती है। वे प्रकृति से रोजाना जीवन में संघर्ष करके नया ज्ञान नहीं पाना चाहते हैं। वे जीवन में प्रगति करने की भावना को भूल गए हैं। ये महायुद्ध हमारी सांस्कृतिक गति के बढ़ाव में सदा से ही रुकावट डालते रहे हैं। हम आगे बढ़ना चाहकर भी इस लिए स्थिर खड़े हैं और भरती खुलने पर युद्ध के मैदान में चोटें खाकर मिट जाते हैं। मैं महायुद्धों से इसीलिए घृणा करता हूँ।"

उसकी बातों ने मेरे हृदय के तारों को झंकारित कर दिया था। उसका देश प्रेम एक ऊपरी सम्मान नहीं था। उसके लिए उसने अनुभूति पाने की चेष्टा कर अपने को देश के अनुकूल ढाला है। उसने अपने वतन के चिप्पे-चिप्पे को प्यार करना सीखा है। आजादी सच ही केवल स्वतंत्रता के गीत गाकर ही नहीं मिल सकती थी। वह झूठी भावुकता

हैं, अन्यथा यह नवीन 'प्लेटफार्म' पर से कुछ लोगों को व्याख्यान देकर रिझाने का नाटक रचता ।

मुझे लगा कि आने वाले चुनाव जो कि 'राष्ट्रीय सरकार' के भविष्य का निर्माण करने वाले थे, केवल एक भारी भावुकता को छू पावेंगे । देश प्रेम की स्थायी ठोस नींव पर वे नहीं लड़े जा रहे थे । जब कि यह नवीन स्वयं यहाँ जीवन पाकर उसे अपनी वाणी से बखेरता है । वह वहाँ के लाखों व्यक्तियों की भावनाओं का सही प्रतीक लगा । वह मानवता की एक विशाल-शक्ति पर विश्वास करता जा रहा है । तभी तो उसने प्रतिक्रियावादी शक्तियों को अपनी ताकत से कुंद कर दिया है । उसके प्यारे देश का कोई ईमानदार युवक उसे गिरफ्तार नहीं करवाता, बल्कि वे दुश्मनों से उसकी रक्षा करते हैं ।

नवीन ने अपनी जन्मभूमि और वहाँ की प्राकृतिक छटा के बीच एक घनिष्ट नाता जोड़ा है । इसका ज्ञान पहले मुझे नहीं था । उसने मुझे बताया कि प्रकृति से संघर्ष करके ही इनसान बलवान बनता है । मैंने तभी पहले-पहल जाना था मनुष्य स्वयं एक बहुत बड़ी शक्ति है । उसके सामूहिक रूप का परिचय भी मुझे मिला था । वह हजारों हृदयों में आज बसा हुआ है । उसका वह स्वास्थ्य फिर भी मेरी आँखों में अखरा ! वह इस निर्बल शरीर को लेकर कै दिन जीवित रह सकता है । कहीं किसी भी वक्त चटख सकता है । यही सोच कर मैंने उसे सुझाव दिया कि वह कुछ दिन वहाँ से दूर जाकर रहे । उसे आश्वासन दिया था कि प्रबन्ध हो जायगा ।

लेकिन वह मेरी बात सुनकर हँस पड़ा था । बोला फिर, "यहाँ मैं स्वस्थ हूँ । मेरे आगे कोई उलझन नहीं उठती है । सब अपने लोग हैं । बूढ़े पिता आशीर्वाद देते हैं; माँएँ स्नेह बखेरती हैं और भाई-बहिनें सहयोग । मेरा पिता फ्रांस की धरती पर मरा था । जाने कहाँ उसकी हड्डियाँ मिट्टी बनी होंगी । मैं इन लड़ाइयों से इसीलिए तो घृणा करता हूँ । मैं उन लोगों से भी नफरत करता हूँ जो साम्राज्यवादियों के

पिट्ठू बन कर युद्ध के ऊँचे नारे बुलन्द करते हैं। हमें दुनियाँ में शान्ति चाहिए। तभी हम प्रकृति से संघर्ष करके बलवान बन, एक नये खुशहाल समाज का निर्माण कर सकते हैं। हम साम्राज्यवादियों के गुमाश्तों को भी अपनी शान्ति की लड़ाई में नष्ट कर देंगे। यह लड़ाई नई जिन्दगी लाने केलिए होगी।

वह उठा और खूँटी पर से उसने फटा-पुराना फौजी ओवरकोट उतार कर पहन लिया। अपने थैले पर जरूरी सामान जल्दी-जल्दी भरा और चलने को तैयार हो गया। गोविन्दी को पुकार कर बुला, उसे एक चिट्ठी दी और कहा, "उस साहूकार के छोकरे से कह देना कि आज नवीन की बहिनों की ओर आँख उठाकर देखने का साहस किसी को नहीं है। तुम्हारे बारे में माँ से बातचीत कर चुका हूँ। मायके भाग जाना ठीक नहीं होगा। आज जितना बाकी है उसी को जोड़ कर गृहस्थी का निर्माण करना है। हमारे पास आज भी ईमानदार सैनिक नौजवान हैं। तुमको भी कल आने वाली लड़ाई में हमारा साथ देना होगा। उसकी तैयारी करना व माँ की फिक्र रखना। वैसे बूढ़ी अभी बीस साल और जीकर सौ पूरा करेगी।.

वह दरवाजे से बाहर आ गया। हम दोनों चुपचाप उस पहाड़ी पगडंडी से नीचे उतर रहे थे। कहीं कोई चिड़िया घू.....घू.....घू... स्वर में बोल रही थी। एक चमकीला तारा सामने पहाड़ की चोटी को छूता लगा। हवा के सर्द झोंकों से शरीर में कँपकँपी फैल गई। वह एक जगह पर रुक कर बोला, "अच्छा दोस्त, वह सामने तुम्हारा पड़ाव है। एक बात याद रखना, जिस धरती में पैदा हुए उसे प्यार करना सीखो, तभी हम अपना भविष्य बना सकेंगे।"

उसका हाथ मेरी हथेली पर था। वह गर्म था। उसने जोर से हाथ मिलाया और आगे बढ़ गया। बड़ी देर तक सूखे पत्तों पर उसके चलने की आवाज सुनाई देती रही। अब लगा कि एक साथी बिछुड़ गया है। आगे भविष्य में वह मिलेगा, ऐसा विश्वास था। मैं उसकी बातों की

गहराई पर सोचने लगा। वह बड़ी दूर चला गया है। एक अभाव फिर उठा। लेकिन मैं चुपचाप नीचे उतरने लगा। पड़ाव के पास भेड़ों का एक गिरोह मैदान में पड़ा था। कुछ पशुओं के गले की घन्टियाँ अनायास बज उठती थीं। पास ही बनजारों के खच्चर लेटे हुए थे और पेड़ के नीचे भरी बोरियाँ सँभाल कर धरी थीं। वह पड़ाव कुछ सूना-सूनासा लग रहा था। अपने बिस्तर पर आकर लेट गया। लेकिन राहगीर तो उठ रहे थे। शायद सुबह होने वाली थी। कुछ देर में न जाने क्या सोचता रहा और फिर गहरी नींद सो गया था।

सन् १६४७ में शहर में नवीन को फिर देखा था। वह किसी गाँव में तीन-चार हफ्ते से बीमार पड़ा था। अधिकारियों ने पक्की मोर्चा बन्दी करके उस गाँव को घेर लिया। राजा के खास चुने अधिकारी इस मौके पर गए थे। लेकिन नवीन उस लड़ाई के लिए हजारों किसानों के साथ तैयार था। उसकी छाती पर तान-तान कर एक अधिकारी ने चार गोलियाँ मारी थीं। वे फौजी फिर भी किसानों के उस विद्रोह को दबाने में असफल रहे। हजारों किसान उसका गाँवों गाँवों में जलूस निकाल सौ मील चलकर राजधानी पहुँच कर राजा को गिरफ्तार करना चाहते थे; पर वह तो वहाँ से भाग गया था।

मैंने उसकी लाश को गंगा किनारे जलते देखा था। सोचा कि उसका पिता जिस लड़ाई में मरा वह पुरानी थी। नवीन एक नई परम्परा वाली लड़ाई में मरा है। वह चाहता था कि सब उसी की भाँति देश को प्यार करें। वह सैनिक जाति का सच्चा सिपाही था।

× × × आज पढ़ता हूँ कि पूर्वी एशिया को फिर युद्ध की ज्वाला में झोंक दिया गया है। उन पहाड़ों में सैनिकों के परिवारों में नई हलचल उठी है। साम्राज्यवादी फिर एक युद्ध की आग भड़का कर उपनिवेशों में अपनी खोई प्रतिष्ठा कायम रखना चाहते हैं। क्या वह लड़ाई आगे बढ़ेगी?

फिर ऐसा लगता है, नवीन ने जिस लड़ाई के लिए प्राण दिए; वही देश का प्रेम उन देशों की जनता में भी उमड़ पड़ा है। वहाँ के किसानों के बेटे भी नवीन की भाँति ही आजादी चाहते हैं।......

वह पुरानी सी बात आज अनायास याद आ गई मानो कि नवीन ने एक तमाचा मार कर मुझे जगाया हो कि सावधान रहना.....अपने देश की प्रतिष्ठा करना, वहाँ की जनता से प्रेरणा पाना.........

नाता रिश्ता

मैं सत्या के यहाँ गया था।

सत्या मेरी मौसी की लड़की है। वह बचपन में मौसी के साथ कई बार हमारे परिवार में आई। एक साल मैट्रिक की परीक्षा देने के लिये वह पाँच महीने हमारे घर पर रही थी। तभी उसे बहुत समीप से देखने का अवसर मिला था। मुझे उसे परीक्षा में पूरा सहयोग भी देना पड़ा था। उसके पिता बैंक में नौकर थे और पाँच बच्चों के परिवार में वह सबसे बड़ी थी। उनके परिवार की साधारण आमदनी थी अतएव आर्थिक स्थिति भली नहीं थी। माँ बहुधा इसकी चर्चा करती व समय-समय पर उनको सहायता देती थी।

इसीलिए सत्या ने हमारे परिवार में आकर अपने को बराबर का पहले पहल नहीं माना। हमारे आश्रय का आभार वह मानती रही। अतएव वह नौकरों के साथ छोटे मोटे काम करती थी, लेकिन माँ की दुतकार पाने के बाद ही उसने वह सब छोड़ा था। मुझसे भी वह शुरू में अपनपा बढ़ाने में हिचकती रही और अपना आत्मभाव न हटा सकी। यह देख कर मुझे बहुत दुःख हुआ और माँ से इसकी चर्चा की थी। आगे वह सहमी लड़की सुलझी और उसका व्यक्तित्व निखरने लगा। मौसी के परिवार की सत्या अब नए रूप में पनपने लगी। हमारे परिवार

के आजाद वातावरण में वह निसंकोच रहती और कोई हिचक न पाती।

वह बहुत तेज बुद्धि की लड़की थी। मिडिल में पाये हुए प्रथम श्रेणी के सम्मान को इस परीक्षा में भी बनाए रखना चाहती थी। उसकी सब बातों से समझौता करना चाह कर भी मैं कभी सुबह चार बजे उठकर नहीं पढ़ सका। भले ही शुरू में वह अपनी शरारतों से बाज नहीं आई। रोज सुबह साढ़े चार बजे गरम चाय की प्याली लेकर पहुंचती और कहती, "भाई साहब, बेड टी लीजिए न!"

मैं चुप रहता तो फिर रजाई उठा कर गुस्से के दिखलाव से कहती, "मैं कब तक प्याली पकड़े रहूँ, लीजिए"

मैं मजबूती से प्याली ले लेता और प्लेट पर चाय उड़ेल कर जल्दी जल्दी सात आठ घूंट में पी जाता। वह मेरी मेज पर बैठ कर पढ़ने लगती थी। पहले सत्या मेरे कमरे में आते हुए हिचकती थी तथा मेरी मेज, आलमारी तथा और चीजों के अधिकार का उपयोग नहीं करती थी, पर माँ के आदेश पर बिना मुझसे पूछे ही सम्पूर्ण अधिकार पा गई। मैं मूक दर्शक की तरह सब कुछ देखता भर रह गया।

मैं चाय की प्याली पी कर रजाई ठीक तरह से ओढ़, सो जाने की चेष्टा करता; पर उसकी शरारतों से वह संभव नहीं हो पाता था। वह दस पन्द्रह मिनट के बाद आकर कहती, "भाई साहब, अब तो आलस्य भाग गया होगा। "झट से टेबुल लैंप का स्विच दबा कर रोशनी कर देती। रजाई हटा कर, एक मोटी किताब देकर कहती, "लीजिये इसे लेटे लेटे पढ़िये। आपको भी तो एम० ए० का इम्तहान देना है।"

मेरी एम० ए० की पढ़ाई के प्रति उसकी बड़ी आस्था थी। साथ ही साथ मेरी विद्वता के प्रति भी वह बार बार आदर प्रकट करती थी। मुझे कभी तो ऐसा सा लगता कि वह अबोध बालिका है और मैं समझदार लड़का। अपना दर्जा छोटा मान कर भी वह कभी ऐसी चेष्टा न करती थी कि मैं बुरा मान जाऊँ। फिर भी वह मुझे सुबह उठाने की

आदत डलवाने में सफल नहीं हो सकी। उसकी धारणा थी कि सुबह उठने से सेहत बनती है, पर मैं बिना किसी समझौते के सात बजे ही उठता रहा। मेरी सिगरेट पीने की आदत से पहले अप्रतिभ हुई थी पर समझाने पर कि मोटी मोटी पोथियाँ चाटने के बाद थके हुए दिमाग की थकान मिट जाती है, उसने इस ओर ध्यान देना छोड़ दिया था।

उसका यह विश्वास था कि मुझे सुबह जगाने का सबक पढ़ा कर ही वह जायगी। असफल होने पर ही वह मुस्करा कर अपनी हार मान लेती। चिढ़ाने पर तकरार कभी न करती। लेकिन वह मुझे बहुत बड़ा मान कर जो अदब करती वह असह्य लगता। बार बार समझाने पर कि मैं बड़ा बुजुर्ग नहीं हूँ, बात को हँसी में उड़ा देती। पोथियाँ चाटने की आदत की जब मैं हँसी उड़ाता तो वह चुपके अपना विश्वास खोलती कि अच्छी श्रेणी आ जाने पर उसे वजीफा मिलेगा और वह कालेज में आसानी से भरती हो सकेगी। अन्यथा उस परिवार की इतनी शक्ति न थी कि उसे पढ़ावे। वह डाक्टरनी या अध्यापिका बन कर अपने भाइयों को अच्छी शिक्षा देने की योजना बनाती और मैं दंग सा उसकी महत्वाकांक्षाओं पर सोचता रह जाता था।

मौसी के खत उसके पास आया करते। वह हमसे छुपा कर उनको पढ़ा करती। कभी तो लगता कि वह बहुत परेशान है। पत्र की भेद भरी बातें जानना चाह कर भी चुप रहता। उस दिन वह सिर दर्द का बहाना बना कर पढ़ाई बन्द कर देती थी और एक दो रोज परिवार में भीतर छुपी रहती। उसकी उदासी मुझे डसती, पर मैं मनमान कर चुप रह जाता था। उस उलझन में पड़ी लड़की को दिलासा देने का इरादा एक बार किया तो आँसुओं के अलावा कुछ न पा कर मैं घबरा उठा था। उसकी लाल और सूजी हुई आँखों की वेदना ने मेरे हृदय को झकझोर दिया था। सच ही उसे कभी समझ नहीं सका था।

माँ ने कुछ ऐसा सा आभास दिया था कि उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वह सच्चाई ज्ञेय थी और सत्या पढ़ कर उसे

संभालने की योजना इसीलिये बना रही थी। माँ ने यह भी बताया था कि सत्या पन्द्रहवां साल पूरा कर रही है और मौसी अच्छे लड़के के लिये चिन्तित थी। उसने माँ के लिये लिखा था कि कोई अच्छा लड़का मिल जाय तो बैशाख में शादी कर देगी। यह बात सुन कर मैंने अपने दोस्तों की सूची बनानी शुरू कर दी और यह छानबीन अपने तक ही सीमित रखी। सत्या आगे पढ़ना चाहती थी और वह सुविधा हमारे घर में आसानी से प्राप्त थी। मैं आगे उससे सलाह लेकर उसकी शादी कराने के पक्ष में था। अभी व्यर्थ सत्या से इसीलिए बातें नहीं करना चाहता था। उसके भविष्य का निर्माण सफलता से करने की ओर निश्चित ही था।

परीक्षा की तैयारी में आगे मैं और सत्या इस तरह फँसे रहे कि दो तीन महीने तेजी से कट गए। उसकी परीक्षा समाप्त होने के दूसरे ही दिन सुबह को उसके पिता आकर उसे ले गए। जब तक उसे भली भाँति पहचान सकू कि वह चली गई। उसका इस प्रकार एकाएक चला जाना बहुत अखरा और जब माँ ने बताया कि उसकी शादी तय हो गई है तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था। एक अज्ञेय पीड़ा मन में उठी थी। लगा था कि मेरे सब मनसूबे बातों तक ही सीमित रह गए हैं।

शादी के अवसर पर मैं पाँच रोज उस परिवार में टिका था। मैंने वहाँ पाया कि सत्या की सेहत भली नहीं है। दो महीने पहले जिस लड़की को देखा था वह बिलकुल बदल गई थी। वह बहुत कम बातें करती। कभी मेरे मन में विश्वास उठा था कि वह सुघड़ लड़की गृहस्थी में अपना नया स्थान बनावेगी, लेकिन उसे देख कर न जाने क्यों चिन्तित हो उठा। दिल में रह रह कर बात उठती थी कि पाँच महीने पहिले जो सत्या भविष्य के बड़े बड़े मनसूबे गढ़ कर सोचती थी कि आगे 'मेडिकल कालेज' में जावेगी, क्या वह सब एक सुपना रह गया है। इनसान आदि काल से सुपने देखा करता है। पहले प्रकृति से संघर्ष करने के स्वप्न उसने देखे और अपनी महत्वकांक्षाओं और अधूरी लालसाओं का स्वप्न देख कर

बिना किसी संघर्ष के हार मान बैठा । अन्यथा समाज में पुरातन से पाए संस्कारों की बेड़ियों को अपनाने से पहले सत्या कुछ विद्रोह करती । उसने तो पिता की बात आसानी से स्वीकार कर अपने भविष्य को चुपचाप दूसरे पर छोड़ दिया । उसकी सामाजिक प्रतीष्ठा, उसका आर्थिक दरजा आदि सब पति की 'व्यक्तिगत इकाई' थी । मेरे मन में एक झूठा विश्वास उठा था कि शायद वह लड़की अपनी गृहस्थी का निर्माण सुचारु रूप से करेगी । उसके बल का ज्ञान मुझे था ।

मौसी के घर पर सत्या ने मेरे आतिथ्य का पूरा पूरा ख्याल रखा । सुबह पाँच बजे चाय पिलाना भूल कर सात बजे चाय दे जाती थी । उस भीड़-भाड़ में भी वह मेरी रुचि का खाना बना कर खिलाती थी । यदि कभी मैं मजाक करता कि, 'अब तो' वह अनायास मुरझा जाती थी । शादी के सारे समारोह से वह अलग रहना चाहती थी । ज्यों ज्यों पंडित मंत्रों के के बल पर उसे सजा कर दुलहिन बनाते, वह निर्जीव सी होती लगी । मौसी ने कई बार शिकायत की कि, 'लड़कियाँ पराया धन होती हैं । अच्छा लड़का मिल गया, पीला हाथ कर दिया । हम कौन बड़े आदमी हैं कि चार पाँच साल रुक कर शादी करते । पढ़ तो वह अब भी सकती है ।'

मैं मौसी की बात का उत्तर नहीं दे पाता था । न मैंने सत्या को समझाने की चेष्टा ही की । उसे कोई सांत्वना भी न दे सका । जब मैं खाना खाया करता तो पाता कि वह अपनी फीकी आँखों से मुझे ताक रही है । एकान्त में मिलती तो लगता कि वह कुछ कहना चाहती है । वहाँ के वातावरण में कई लड़कियों के बीच उसे मैं आसानी से पहचान लेता था । गहने कपड़े आदि के प्रति उसने कोई उत्साह नहीं दिखलाया । उस वातावरण से वह हटी अलग खड़ी मिलती । कभी तो उसकी चुपी अखरती थी । जिस लड़की को मैंने पाँच महीने पहले देखा था और जिसे कि मैं पहचान लेना चाहता था, वह एक अबूझी पहेली बनती चली गई । मैं उसके किसी आग्रह की अपेक्षित महत्वकांक्षा को जैसे कि सुलझाने की सोच रहा था ।

मौसी ने बताया कि सत्या ने हमारे घर से लौटने के बाद आगे पढ़ने की बात सुनाई थी तथा शादी की बात पर वह बहुत रोई थी। मैंने इसका उत्तर दिया था कि उसकी वह योजना ठीक थी। माँ स्वयं यही चाहती थी। मौसी अधिक चर्चा न बढ़ा कर घर के काम काज में जुट जाती थी। वह न जाने क्यों सत्या से डरती सी थी। वहाँ की भीड़-भाड़ से मैं भी ऊब सा गया था कि एक दिन सत्या की बारात आई, मेहमानों की आवभगत, सात भंवरे, और विदाई सब एक तूफान की भाँति गुजरा। वह विदा होते फूट फूट कर रोई। इतना रोई कि मुझे भी रुलाई आ गई। मैं इसी लिए पास जाकर उसे समझा नहीं सका। जब वह चली गई तो बहुत ही सूना सूना लगा। सब लोगों के वहाँ होने पर भी उसका अभाव अखरा। सोचा था कि लड़कियों का जीवन इस समाज ने क्या बना दिया है। मायके में सदा ताड़ना सहती हैं और अब ससुराल गई तो वहाँ फिर से नया जीवन शुरू करना होगा। वह सनातन जिसकी बातें मौसी ने की थी, अब समझ में आया कि नारी को अपने भविष्य के निर्माण का कोई अधिकार नहीं है और वह विद्रोह भी नहीं कर सकती है। सत्या की शादी का वह सौदा मुझे बहुत महंगा लगा और उसने मेरी आँखें खोल दीं। वह ससुराल चली गई पर कन्या और गाय-दान की वह प्रथा खोखली लगी।

दो दिन वहाँ और रह कर मैं लौट आया था।

२

समय बीतता चला गया और उसकी स्मृति धुंधली पड़ती चली गई। उसका कोई पत्र नहीं आया और न मुझे ही अवसर मिला कि उसे पत्र लिखूं। माँ उसके बारे में कई बातें सुनाती थी। पहले उसकी लड़की हुई और फिर लड़का और तीसरी लड़की। इस बीच लड़का मर गया, पर एक और कन्या का जन्म हुआ। इस लम्बे अरसे में उसने पाँच बच्चों की फसल दी और उनमें से दो मर गये थे। बच्चों के समाचार से पहले

मुझे कौतूहल हुआ था और मौत की बात एक चोट हृदय में लगते न चूकी। सुना था कि उसका पति किसी दफ्तर में बाबू है। तनख्वाह अच्छी मिलती है। उसी लोभ से मौसी ने उस होनहार युवक से शादी की थी।

युद्धकाल में दैनिक झंझटों के कारण सत्या को कुछ भूल सा गया था। सच पूछा जाय, युद्धकाल में आपसी अपनत्व की डोरी अनजाने आसानी से टूट सी गई थी। उन दिनों हमारा अपना परिवार एक नए संकट से गुजर रहा था। परिवार की पुरानी आर्थिक व्यवस्था टूट कर चकनाचूर हो गई थी। हम युग युग द्वारा स्थापित मान्यताएं तथा नाते रिश्ते भूल गये थे। वह मानव जो कि अपने परायों का ढांचा बना कर बड़े परिवार में रहता था, अब अपनी इकाई वाली सीमा में रहने का आदी हो गया।

सत्या का परिवार हमसे दूर हो गया। यह कहें कि हमारे सम्बन्ध उससे टूट गये तो इसमें आश्चर्य क्या है। युद्ध सदा तबदीलियाँ लाते हैं। नए विचार आते हैं, पुरानी भावुकता के कुछ पहलू भाप की भाँति उसमें उड़ जाते हैं। युद्ध कभी कल्याणकारी साबित नहीं हुआ है। जिस मौत से संघर्ष कर के मानव उस पर विजय पाना चाहता था या जिस निर्माण की ओर बढ़ कर सम्पन्न बनने की चिन्ता में था, जिस समानता के परिवार की ओर मानव बढ़ना चाहता था, वह सब इन महायुद्धों के कारण सफल नहीं हो सका है। अतएव मौसी के परिवार की दूरी कोई नई घटना नहीं है। मौसी ने अपनी दूसरी लड़की की शादी पर हमारे परिवार को न्योता दिया, पर अपनी परेशानियों के कारण हम में से कोई शामिल नहीं हो सका था। जिस सत्या के लिए मन में इतनी पीड़ा थी, उसको देखने का लोभ तक भूल गया। मैं उसे देखने कहाँ जा सका था। वह मेरे जीवन की कोई सबल घटना नहीं रह गई थी। माँ वहाँ के बारे में साधारण दिलचस्पी रखती थी। मायके का नाता था। वह उसे लेकर कोई विशेष आग्रह न करती और हम लोग स्वयं उस ओर अनजाने से उदासीन होते चले गये।

तो क्या सच ही सत्या के प्रति वह मेरा अन्याय था। जीवन में उसी लड़की से पहले पहल मेरी घनिष्ठता बढ़ी, उसका आग्रह, उसका रूठ जाना, उसकी हँसी, ढढोली, जो जितना उसने प्रकृति से पाया उसे मेरे साथ बाँट लेने में वह कंजूस नहीं थी। फिर वैसी कुशाग्र बुद्धि की लड़की आगे जीवन में मुझे नहीं मिली। माँ कहती थी कि सत्या जिस परिवार में जावेगी वहाँ सोना बरसेगा। अतएव उस 'सोना बने परिवार' को देखने की अपेक्षित चाहना तक को मैं इतने साल भुला बैठा था। लड़ाई ने दुनिया को बहुत फैला दिया था। रोजाना जीवन भारी भारी झंझटों के बोझे से दब गया। हर एक व्यक्ति प्रति दिवस की बातों में उलझ कर अपनी कल्पना और स्वप्नों को भविष्य पर छोड़ देता। वे स्वप्न कभी दिन की रोशनी नहीं देख सके। दिन, सप्ताह, महीने तथा कई साल आसानी से गुजर गए थे। बारह साल का फासला हम लाँघ चुके थे।

लेकिन मामा एकाएक आए थे और मैंने पाया कि माँ की आँखों से आँसू रोके नहीं रुके। मामा ने बताया था कि सत्या का एक मात्र लड़का मर गया है। यह सुन कर मुझे लगा कि इस लड़ाई ने हमें हैवान बना दिया है। मौत आज एक ठट्ठा भर रह गई है। बंगाल में अकाल पड़ा और लाखों भूख से तड़प-तड़प कर मर गए। पिछले महायुद्ध में ही साढ़े सात करोड़ मनुष्य मारे गए। इतना धन नष्ट हुआ कि जिससे दस करोड़ परिवारों के लिए दस-दस हजार रुपए की लागत के मकान बनाए जा सकते थे; सबको मिला कर पचास पचास हजार का सामान दिया जा सकता था; एक एक लाख रुपया नगद दिया जा सकता था; और इसके अलावा हरएक दस लाख आबादी वाले शहर में पचास रुपये की लागत से स्कूल अस्पताल तथा पुस्तकालय बनवाए जा सकते थे।

उस युद्धकाल ने सच ही हमारे दिल पत्थर के बना दिए। सत्या जिसे कि मैंने सबसे अधिक जीवन में प्यार किया इन दस बारह सालों में भारी भारी मुसीबत सहती रही है। मैं उसे कभी सांत्वना देने तक की

नहीं सोच सका । इस लम्बे अरसे में वह अकेले ही मुसीबतों से संघर्ष करती रही है । अपने दुख दरद की बात की कोई सूचना मुझे तक नहीं दी । मुझे अपने पर बहुत गुस्सा आया । सोचा कि यह हमारा कैसा बड़प्पन है कि झूठ ही अपनी पारिवारिक कठिनाइयों को फैला कर उन में उलझ जाते है और बाहर किसी से सहानुभूति नहीं रखते । यदि हमारा आपस में यही व्यवहार रहा तो मानवता नष्ट हो जायगी । वह सत्या अकेली कब तक उसकी रक्षा के लिए संघर्ष करती रहेगी । जब कि मैं दूर से वह नाटक देखने का आदी हो गया हूँ ।

सत्या के लड़के के मर जाने की बात सुन कर मैं तिलमिला उठा । सत्या माँ है, जो कई बच्चों के विछोह के घाव खा चुकी है । मैं उलझन में सा माँ से बोला, 'मैं सत्या के यहाँ दिन की गाड़ी से जाने की सोच रहा हूँ ।'

माँ पहले तो चुप रही, बोली फिर, 'वह बहुत अभागिनी है । शादी के बाद एक रोज भी सुख से नहीं रही है । गृहस्थी का ऐसा ही जंजाल होता है । हम ही क्या करें । पहले कुछ बचत थी तो उन लोगों की थोड़ी बहुत मदद कर दिया करती थी । आज तो अब अपना पेट भरना ही मुश्किल हो रहा है ।'

माँ को पहले कभी इतना परेशान नहीं देखा था । बीच-बीच में वह चुपचाप अपनी भीगी आँखें पोंछ लेती थी । वह सत्या माँ और मेरे बीच खड़ी लगती थी । माँ की संकुचित सीमाओं का आज मुझे पहले पहल ज्ञान हुआ था । वह युद्धकाल हमारे परिवार की दीवालों पर भी रोज टकरा कर उसकी नींव हिला चुका था । यदि हम संपन्न न होते तो मिट जाते । मौसी का परिवार शायद नष्ट प्रायः होगा । मैं न जाने क्यों माँ, मौसी और सत्या को लेकर नया नाता रिश्ता जोड़ना चाह रहा था । यह जान कर भी कि आज मौसी के परिवार के साथ हमारा कोई खास सम्बन्ध नहीं रह गया है । इस युद्ध ने तो हमें हैवान बना दिया है । इस बीच हम काफी जाल और फरेब रचना सीख गये हैं । हमारा नैतिक

पतन हो चुका है और जीवन की सच्चाई भूल गए। मानवता के कड़े बन्धनों से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं रह गया है।

सत्या को एक व्यक्ति की हैसियत से प्यार करना सही हो या गलत, मुझे विश्वास है कि वह कोई अपराध नहीं है। उस प्यार करने की प्रवृति को जीवन में सही तरह से लागू कर सकें तो जीवन की कई कठिनाइयाँ हल हो जावेंगी। आज तो अपने अधिकारों को सीमित करके हम समय की दूरी का अनुमान नहीं लगा पाते हैं। अन्यथा सत्या अकेली अपने जीवन में संघर्ष न करती होती। मैं उसे बल प्रदान करता। मौसी के परिवार के नष्ट हो जाने की भावना मन को पीड़ा पहुंचाती है। माँ और मौसी सगी बहनें हैं। हम अपने परिवार की सीमा बनाना जान कर ही दूसरे के दुख दर्द की चिन्ता नहीं करते हैं। पहले तो यह सब नहीं होता था। पिछले बारह साल हमारे विचारों में इतनी तेजी से तबदीलियाँ लावेंगे इसका ज्ञान आज ही मुझे हुआ था।

माँ से अधिक बातचीत न करके मैं सत्या के घर जाने की तैयारी करने लगा। माँ का उदास चेहरा फिर भी नहीं खिला। आज वह सत्या के लिए क्या दे ? जो माँ कि रिश्तेदारी में सबसे उदार मानी जाती थी, उसकी वह सहृदयता युद्ध के बादलों ने ढक ली थी। सन्दूक पर सन्दूक खोल कर वह कुछ कपड़े चुन सकी, साथ ही कुछ जरूरी सामान बाजार से भी मँगवाया। सन्तोष फिर भी नहीं हुआ। किसी तरह मन में समझौता कर वह मुझे सौंपा।

जब मैं रेल पर बैठा तो लगा कि आने वाली दुनिया के लिए, मानव के नये रिश्ते ढूँढ़ने सत्या के यहाँ जा रहा हूँ। युद्ध के बाद पुरानी टूटी लड़ियाँ जोड़नी हैं। अब नए स्नेह बन्धन बनाने हैं। मैं अपनी खुशी का अनुमान नहीं लगा सका। युद्धकाल के धुंध से निकल कर मैं मानव के नए नाते रिश्ते ढूँढने के लिए जा रहा था। जो कि कल नई रोशनी लावेगा।

३

मैं सत्या के यहाँ पहुंचा। गली में रिक्शे से सामान उतरवा कर सीढ़ियों पर रखा और दरवाजा खटखटाया। वह गली बहुत मैली थी। लगता कि वहाँ के परिवारों के कूड़े के समस्त भार को वही उठाए है। सड़ी गली से चीजों की दुर्गन्ध उठ रही थी। मेरा मन मतलाने लगा। दरवाजा न खुला तो एक बार फिर खटखटाया। अड़ोस पड़ोस की औरतें खिड़कियों से झाँकती मिलीं और एक बूढ़ी को कहीं से कहते सुनाई पड़ा, "सत्या, दरवाजा खोल दे, कोई मेहमान आए हैं।"

पांच मिनट बाद सत्या ने दरवाजा खोल दिया। उसकी आकृति देख कर मैं डर गया। वह बहुत दुबली हो गई थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। कुछ देर अवाक सा उसे देखता ही रह गया; फिर जल्दी जल्दी सन्दूक तथा हालडाल भीतर डाला। कमरे में तीन टूटी कुरसियाँ पड़ीं थीं। एक गन्दी सी मेज पर सूचीपत्र पड़ा हुआ था। सामने आल-मारी पर कुछ पुराने मासिकपत्र व मैली किताबें थीं। फर्श पर टूटा टाट बिछा था जो कि जगह जगह फटा था।

चुपचाप एक कुरसी पर बैठ गया। सत्या भीतर चली गई थी। बड़ी देर तक मैं एक कुरसी पर सावधानी से बैठा रहा। फिर उठ कर आलमारी की किताबें देखता रहा। सब किताबें सात आठ साल पुरानी थीं और उन पर सत्या के हस्ताक्षर थे। तब उसे अपनी लाइब्रेरी बनाने का शौक रहा होगा। किताबों पर कलेंडर से फाड़ कर नम्बर चिपकाए गए थे।

मैं सच ही सत्या की गृहस्थी को समझना चाहता था। परिवार का यथार्थ रूप विषाद की गहरी छाया से घिरा हुआ था। आज उसे पह-चानना कठिन लगा। वह तो पैंतीस चालीस साल की प्रौढ़ सी लग रही थी। अवस्था की वह दूरी इस तेजी से पार हो सकती है, पहले इसका अनुमान मुझे नहीं था। अब ज्ञात हुआ कि वह कल्पना और

स्वप्नों की दुनिया से दूर जीवन में लड़ाई लड़ती रही है। उसके चेहरे की झाँइयों में संघर्ष की साफ झलक मिलती थी। वह बहुत बीमार लगी। उसका शरीर बहुत कमजोर था, जो कि कभी चटक सकता है यह भय लगा।

तभी सत्या आई। उसकी गोदी में दो साल की लड़की थी। मैंने पूछा, "माधुरी कहाँ है।"

"स्कूल, अभी आने वाली है।"

"किस दरजे में पढ़ती है।"

"अबकी आठवीं का इम्तहान देगी।"

मैं चुप हो गया। वह इधर उधर हमारे घर की बातें करती रही। कई सवाल उसने पूछे नौकर, महरी, कुत्ते, बिल्ली, मिसरानी, बाग..... .....मानो कि आज भी हमारे घर से परिचित हो। उसकी बातों से लगा कि वह वहाँ की गतिविधि की पूरी ज़ानकारी रखती है। अपनी पत्नी की चर्चा सुन कर तो दंग रह गया। उन बातों को सुनाते लगा कि उसे सुख मिल रहा है। यह सा लगा कि हमने भले ही उपेक्षा की है, वह अपना हम से घनिष्ट नाता जोड़े है। वह मजाक में सी अपनी भाभी की और जानकारी चाहती थी।

लेकिन तभी माधुरी आ गई। अपनी माँ की पिछली ताजगी उसमें पाकर दिल में हरियाली भर आई। अपने कीमती कपड़ों को काट छाँट कर सत्या ने उसे खूब सजा रखा था। ऐसा भास होता था कि माधवी के भावी निर्माण को वह किसी पुरानी नीव पर रख रही थी। माधवी मुझे देखकर चुप थी। बार बार माँ की ओर देखती। माँ ने दुतकारते कहा, "मामा आए हैं।"

माधुरी ने हाथ ज़ोड़ कर अभिवादन किया। सत्या तो बोली, "अपनी माँ की तरह इसका मन छोटा नहीं करती हूँ। यह डाक्टरी पढ़ना चाहती है भाई साहब। हमारी हैसियत ज्यादा पढ़ाने की नहीं है, इस पर भी आश्वासन इसे दिया है कि आपके पास जाकर पढ़ लेगी।

हमारा तो पुराना जमाना था। माँ बाप ने जहाँ पल्ला बाँध दिया चुपचाप चली गई। लेकिन वह अनुभव काफी है। तब मैं चाह कर भी आपका आश्रय नहीं ले सकती थी। स्वयं पिता जी को डर था कि कहीं तुम विरोध न कर बैठो। इसी लिए जल्दी रिश्ता करदिया था।"

वह छोटी लड़की टुकुर टुकुर मुझे देख रही थी। सत्या ने तभी कहा, "अन्दर जाकर हाथ मुँह धो कलेवा कर ले; फिर चाय का पानी चढ़ा देना।"

वह लड़की भीतर चली गई। सत्या कुछ देर खड़ी रही; फिर न जाने क्या बात याद आई और अन्दर चली गई।

उसके चले जाने पर मैं सच ही उलझन में पड़ गया कि यह लड़की जीवन का सारा दुःख कहाँ छुपा कर रखती है। यदि उसके पाँवों में असमय ही बेड़ियाँ न डालदी गई होतीं और उसे अपने भविष्य के निर्माण का हक होता तो आज की भाँति थकी और असहाय वह न मिलती। एक सन्तोष की भावना भी थी कि वह मेरे आश्रय को जानकर ही ठुकरा आई थी। यदि मैं उस समय कुछ कहता भी तो वह मेरी बात की अवज्ञा कर जाती। उसका वह कथन मुझे सुलझाने में असफल रहा। मेरी आज भी यही धारणा है कि उसे विद्रोह करना चाहिए था।

——तीन दिन सत्या के परिवार में रहा। उसने बताया था कि इस गृहस्थी की रक्षा करने की चेष्टा वह आते ही करने पर तुल गई थी, पर असफल रही। वह ठीक तरह से परिवार में प्रवेश भी नहीं कर पाई थी कि लड़ाई आ गई। युद्धकाल की कठिनाइयों का उसे कोई ज्ञान न था और वह मंहगाई के दलदल में फँसती चली गई। राशन, कपड़ा, दाल ....चोर बाजार से चीजें खरीदने की उनकी हैसियत नहीं थी। पहले तो गहने बेच कर गुजर की। बच्चों की अस्वस्थता, उन पर आमदनी का बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता। फल, दवा, दूध भी ठीक तरह उनको नहीं दे पाते थे। रात दिन मेहनत करके उनकी रक्षा करनी

चाही पर असफल रही। किताबें रट कर परीक्षा पास करना आसान था। जिन्दगी का इम्तहान तो पैसे पर टिका है। एक दिन हार कर चुप रह गई। लड़ाई के बन्द हो जाने पर सोचा था कि उसके बाद कुछ खुशहाली आवेगी; पर मंहगाई कम नहीं हुई। आज तो वह बार बार मनाती है कि मर जाय।

सत्या मौत चाहती है। आज हजारों लाखों लोग अपने देवताओं से मनाते हैं कि मौत आ जाय, तो इस जिन्दगी की झंझटें दूर हो जावेंगी। सत्या की बातें कहीं आशाप्रद नहीं लगीं। पति की झुंझलाहट पर वह चुप रहती है। पति स्वयं परेशान है। बारह साल की टेम्परेरी नौकरी के बाद अब उनके यहाँ छटनी होने वाली है। सरकार कई महकमों में बाबू लोगों को निकाल कर किफायत करना चाहती है।

सत्या का पति बार बार पूछता था कि लड़ाई कब शुरू होगी। वह झूठी आशा लगाये हुए है कि शायद तब वह नौकरी पर लगा रहेगा। पर सत्या लड़ाई नहीं चाहती है। उसका कहना है कि वह कहीं मेहनत मजूरी करके पेट पालेगी। लड़ाई के जमाने की तनख्वाह से गुजर नहीं होती है। पिछली लड़ाई ने उनके परिवार को नष्ट कर दिया है। मायके वह बारह साल में केवल दो बार जा पाई थी। सुबह से आधी रात तक मेहनत करके भी वह अपने बच्चों को जिला न सकी थी। उसका लड़का मर न गया होता तो वह हिम्मत न हारती। लड़कियाँ तो पराया धन होती हैं, इस धारणा को वह बदलने को तैयार नहीं थी। माधुरी का भार मुझे स्वीकार करने को कह कर स्वयं अपने को चिन्ता-मुक्त होना बतलाती थी।

पड़ोसियों ने सलाह दी कि मैं कुछ दिन उसे अपने साथ ले जाऊँ। वह बहुत अस्वस्थ थी और उस परिवार में अधिक दिन तक जीवित रहना संभव न लगता था। पति को अकेले छोड़ना कहाँ संभव है, उसका यही तर्क था। कुछ ऐसा सा आभास मुझे मिला कि उसने अपना

पत्थर का दिल बना लिया है। अपनी गरीबी का इतिहास लेकर वह किसी के यहाँ अतिथि बन कर रहना नहीं चाहती थी।

जब मैं आने लगा तो सत्या फूट फूट कर रोई थी। उसके उन आँसुओं ने सच ही मुझे भारी चोट पहुंचाई थी। वे आँसू ससुराल की विदाई वाले आँसुओं से भिन्न थे। इनमें तो आज भारी पीड़ा छुपी थी। लगता था कि वह अपना समूचा जमा किया हुआ दुःख बहा कर दिल को हल्का कर लेना चाहती है।

माधुरी ने एक नई आशा का आभास मुझे दिया। वह माँ को नया रास्ता दिखलाती थी। सत्या ने स्वयं कहा था कि वह माधुरी के भरोसे जी रही है।

सत्या का पति नौकरी से अलग कर दिया गया है। आज वह बेकार है। माँ को मैंने राजी कर लिया है कि सत्या कुछ महीने हमारे घर पर रहेगी। वैसे मैं सत्या से नया नाता जोड़ रहा हूँ। वह मानवता वाला नाता है, जिसे कि मैं लड़ाई के दौरान में भूल गया था। सत्या का परिवार लाखों परिवारों की तरह उस लड़ाई के दौरान में नष्ट हो चुका है। ये आपसी नाते रिश्ते आगे अब मजबूत होंगे और महायुद्ध कभी नहीं होंगे।

सत्या से पहले पहल ज्ञात हुआ कि ये लड़ाइयाँ हमें नष्ट कर देती हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हम सब मिल कर आगे जंग नहीं होने देंगे।

इतिहास

गाय के रांभने, भेड़-बकरी तथा गाय-बैल की घँटियों की आवाज तथा एक तेज सर, सर, सर और खड़खड़ाहट की ध्वनि से गल्थू की नींद टूट गई। वह अपने पत्तों के बने हुए तम्बूनुमा अस्थायी झोपड़े में चारपाई पर कुछ देर लेटा ही रहा। अब आलस्य भरी अंगड़ाई लेकर उठा; सिरहाने से तकिया की तरह धरे हुए फौजी कोट को उठा कर पहन लिया। पलटनी बूट पाँव में डाले और आगे बढ़, झोपड़े के दरवाजे पर खड़े होकर चिल्लाया—हाड़ी ! हाड़ी !! हाड़ी !!!

बाहर तेज बरसाती मेंह की झड़ी लगी हुई थी। बीच बीच में हवा के तेज झौंके सीटी बजाते हुए से प्रतिध्वनित होते थे। एक तेज प्रकाश में बिजुली कड़कड़ाहट के साथ चमकती और धरती काँप उठती थी। फिर चारों ओर अँधेरा छा जाता। कई भयानक और विचित्र स्वर गूँज उठते और सां-सां-सां के साथ खटर-खटर-खटर की आवाज से लगता, कि मानो कई रेलगाड़ियाँ पटरियों पर चल रही हों। प्रकृति से वे लोग सदियों से इसी भाँति संघर्ष करते आए हैं। जाड़े के दिनों में बरफ के भारी तूफान आते हैं। बसन्त एक नया रुझान तथा भावुकता लाता है। वे बहादुरी के साथ लड़ाई लड़ते हैं और किसी भाँति हार जाना स्वीकार नहीं करते।

अपने जीवन में भी थक-कर वे नहीं बैठ जाते हैं। वह आज से साठ साल पहले इस गाँव में पैदा हुआ था। वहाँ का सामन्तवादी राजा अपने जुल्मों से वहाँ की जनता का शोषण करता था। पैंतीस साल पहले उन लोगों ने जंगलात के नए कानून के खिलाफ बगावत की थी। राजा ने उनके लकड़ी-घास काटने के जंगलों को रियासत के अधिकार में कर लिया और वहाँ के पतरोल और फौरेस्टर मनमाने अत्याचार किया करते थे। उनकी पट्टी के चालीस गाँव की जनता ने इसके खिलाफ बगावत की और भालों तथा कुल्हाड़ियों से लैस जनता पहाड़ों तथा घाटियों पर छा गई थी। वहीं उन लोगों ने राजा के हाकिम को गिरफ्तार कर लिया था। फौजों से आगे कई टक्करें हुई। खून की नदी बहाकर वह आन्दोलन दबाया गया। उसे छै महीने की सजा हुई थी।

जब वह छूट कर आया और घर संभाल रहा था तो एक और आँधी आई थी। जर्मनी ने लड़ाई शुरू कर दी थी। वह सैनिक जाति का युवक था। उस परम्परा को निभाने के लिये वह फ्रांस गया था। वह लड़ाई चार-पाँच साल चली थी। उसके हजारों साथी उस 'काली माई' के भेंट चढ़े थे। उसकी समझ में नहीं आया था, कि वह अपनी धरती को छोड़कर इतनी दूर किसलिये आया है। उनका राजा अंग्रेजों का गुलाम था और वे राजा के दास थे। राजा ने अपने मालिक को खुश करने के लिए भरती की और हजारों नौजवानों को गाजर-मूली की भाँति कटवा दिया था। वह राजा तो घर बैठे-बैठे फौजी ओहदे पा गया था। लोग कहते थे कि अंग्रेज जर्मन वालों से इसलिए लड़ रहा है, कि दुनिया का हर एक इनसान अच्छी जिन्दगी बसर करे। जर्मनी वाले यह नहीं चाहते। वे सारी दुनिया को गुलाम बनाना चाहते थे। पर वह उनका राजा तथा उसका परिवार भी तो उनको सदियों से गुलाम बनाए हुए है और अंग्रेजों का दोस्त है? यह सवाल अनजाने उन दिनों उठता था।

लड़ाई बन्द हुई और गाँवों में एक मुर्दानगी छा गई थी। हरएक

परिवार ने अपना कोई निकट का सम्बन्धी उस लड़ाई की भेंट चढ़ाया था। अनाथ माताएँ, युवती विधवाएँ; लगता था कि गाँवों में प्रौढ़ता आ गई और वे बूढ़े हो रहे थे। कहीं भी युवकों के चेहरे देखने को नहीं मिलते थे। एक बेकली और बेचैनी चारों ओर फैल गई थी। तीन-चार साल तक कहीं कोई उत्सव नहीं मनाया गया। राह, हाट-बाट, नदी किनारे, झरने के पास, खेत, खलिहान, जंगल आदि जहाँ कहीं माँ, बहिनें, पत्नियाँ मिलतीं; आँसू बहाती थीं। पुरुष थके-माँदे लौटे थे। अपने हल-बैल ठीक करने लगे। अपने पशुओं का गिरोह संभाला। प्रकृति से संघर्ष कर बलवान बनने लगे।

अकाल पड़ा, मंहगाई आई; यह एक नई तबाही देश पर छा गई थी। राजा की कुली-बरदायश, राज-कर्मचारियों की लूट खसोट! नए-नए कर...फौज से लौट कर आए उन किसानों के बेटों की कमर तोड़ने के लिए वह सामन्ती शासक नए-नए अत्याचार करने लगा। जमीन का राजा 'मालिक' था। लगान न देने पर पटवारी, पुलीस के साथ अफसर आते और लूटपाट मचाने लगते। किसान खून-पसीना बहा कर पथरीली बंजर जमीन तोड़ कर उसमें अन्न उगाता था, सरकार उससे नजराना माँगती; मुफ्त आटा, घी, शक्कर, दूध-दही आदि अफसर लेते; नजराना, बेगार, प्रभुसेवा के खिलाफ जनता एक नए संघर्ष की तैयारी कर रही थी।

गल्थू इस देश को प्यार करता है। यहाँ के प्राकृतिक नज़ारों ने उसे मोह लिया। इतना सुन्दर देश उसे और कहीं नहीं मिला है। प्रकृति की मौसमों के साथ संघर्ष करके उसने शक्ति संचय की है। उसकी हड्डियाँ विद्रोह की आँच में तप कर मजबूत बनी हैं। उसे अक्सर हँसी आती थी, कि किसान से वह विद्रोही बना और फिर सिपाही। आज तो वह अपने मक्का के खेत की रखवाली कर रहा है। बहुधा भालू आकर कच्चे भुट्टे खाकर पौधों को रौंध जाते हैं। वह उन पशुओं से अपने खेतों की रक्षा करता है। वह भालुओं के गिरोह से नहीं घबराता; कई

बार इकले जानवर से भिड़ कर वह उसे पछाड़ चुका है। आज तक उसने दो-सौ से ज्यादा भालू मारे हैं। पहले पटवारी-कानूनगो फोकट में उससे उनकी खालें माँग कर ले जाया करते थे। आगे उसने मना कर दिया तो वे चुप रह गए। यह अधिकारी जानते हैं, कि पड़ोस के राज से वह कभी मंहगे दामों पर खरीद कर एक बारूद भरने वाली बन्दूक ले आया था; पर डर के मारे कुछ नहीं कहते हैं। एक बार एक पटवारी की शामत आई और वह तलाशी लेने आया तो गाँव वालों ने चुनौती दी थी कि वह होश में आकर बातें करे। पटवारी जान छुड़ाकर लौट गया था। तब से किसी ने उससे छेड़खानी नहीं की।

बघेरा, भालू आदि पशु उसकी आवाज को पहचानते हैं। जानकर कि वह पहरे पर है, उसके पास नहीं फटकते; चुपचाप लौट जाते हैं। यह बात आस-पास कई गाँव के लोग जानते हैं। वह गर्व के साथ पशुओं, प्रकृति और राजा के अफसरों से अपनी भिड़न्त के किस्से नौजवानों को सुनाया करता है।

लेकिन साही उसे बहुत परेशान करता है। वह आलू के खेतों को नष्ट कर देता है; यही नहीं अपनी बहादुरी दिखलाने के लिए वह योधा कई काले-सफेद मिश्रित रंग वाले तीर छोड़ कर सावधान कर जाता है, कि वह काफी शक्तिशाली है। बड़ी दूर तक उसके पाँव के निशान मिलते हैं। वह कई बार उसे पकड़ने के लिए जाल बिछा चुका है। उसका बिल जो कि झाड़ियों के बीच छुपा है, उसे उसका पूरा-पूरा ज्ञान है। उस चालबाज जानवर को पकड़ने के लिए असाधारण दाँव पेंच चाहिए, फिर भी उसे विश्वास है कि हफ्ते भर के भीतर वह उसे पकड़ लेगा। गाँव वालों को वह उसके गोश्त की दावत खिलाने का पक्का वादा कर चुका है।

उसका लड़का इस जानवर को पकड़ने में उस्ताद है; पर वह कलकत्ते की एक मिल में आजकल चौकीदार है। सात-आठ महीने हुए 'भरती के दफ्तर' में कई पुराने फौजियों के साथ उसे बुलाया गया

था। वह 'आजाद-हिन्द फौज' का सिपाही था, उसका ख्याल था कि उसे फौज में लिया जायगा; पर यह सुनकर आश्चर्य हुआ था कि आजाद-विचार के लोग फौज में भरती नहीं किए जाते हैं। अनुशासन भंग होता है। लड़के ने लिखा था कि एक नैपाली चौकीदार के साथ वह 'मिल मालिक' के घर के फाटक पर तैनात किया गया है।

—उसने उस अँधियारे में दूर तक देखने की चेष्टा की; पर एक काले परदे के अतिरिक्त वहाँ कुछ भी नहीं था, वह चुपचाप लौट आया। मालू के पत्तों से बना हुआ खुला छाता उठाया और बाहर निकल गया। मक्का की फसल वाले खेत की पगडंडी से आगे बढ़ गया। वह स्वस्थ फसल उसे सदा से एक नई जिन्दगी देती आई है। सामने के पहाड़ पर घना जंगल है; वहीं से जानवर इधर आते हैं। उसने आँखें मूँद, कान में सावधानी से कुछ सुनने की चेष्टा की पर कोई आहट नहीं मिली। लगता था कि जानवर भाग गए हैं और वे काफी नुकसान कर गए थे। रात-दिन चौकसी करने पर भी यह हाल है। उसने प्रण किया कि वह कल रात भर जागता रहेगा और एक-दो का शिकार करेगा। कल वह एक और साथी को लावेगा जो कि आवाजें लगाएगा और जानवर धोखे में पड़ जावेंगे कि वह पहरे पर नहीं है।

आगे बढ़ कर वह गधेरे तक गया। उस नाले में तेजी से पानी बह रहा था। ऊपर पहाड़ी पर देवदारु, बाँज, बुराँश आदि का घना जंगल है। उन पेड़ों की जड़ों से फूट कर यह नाला निकलता है, इसका पानी बहुत मीठा है; उससे वे अपनी क्यारियाँ गरमियों में सींचते हैं। लेकिन बरसाती मेह तो जमीन से गोबर-मिट्टी बहा कर नीचे नदी में ले जाता है। इस पहाड़ की कंकरीली जमीन पर इसीलिए सेव, खुबानी, आड़ू, नासपाती, दाड़िम आदि फल कम होते हैं। यह नाला नदी में मिलता है और वह नदी समुद्र में। उसने सन् १६१८ की लड़ाई में उस अथाह समुद्र को जहाज से पार किया था।

अब वह अपनी झोपड़ी में लौट आया। बूट उतार लिए, चारपाई

पर बैठ गया। जमीन पर बिछे हुए पत्तों में से उसने दो-तीन जोड़ कर उनकी चिलम बनाई; फिर उसमें तम्बाकू भर कर, ऊपर कपास रख दिया। चकमक पत्थर और लोहे के टुकड़े की चिनगारी से कपास सुलगाई और तम्बाखू पीने लगा।

[२]

गल्थू ने पतबीड़ी फेंक दी। अब उसकी तलफ मिट गई थी और एक नया जोश उसमें आ गया था। यह पतबीड़ी सच ही भारी थकान को हटा देती है, लेकिन आज तो बहुत खराब जमाना आ गया था। मंडवा, भंगोरा; चना आदि मोटा नाज महीना भर हुआ चूक गया था। पिछले दिनों से वे जड़ें खोद, उबाल कर खा रहे हैं। बरसात के कारण रास्ते टूट गए हैं और गुड़, तेल, नमक तथा मोटा नाज जल्दी पहुंचने की कोई उम्मेद नहीं है। कस्बे के बनिया की दूकान में 'सौदा' मिलता है; पर वह सब खरीदना उसकी शक्ति से बाहर है। आलू की फसल कुछ नकद पैसा देती है; पर उसे तो वह बनिया बोते ही खरीद लेता है। उसका पुराना रुपया भी चुकाना पड़ता है और फिर साल-भर वे उसकी दूकान से उधार खाया करते हैं। वह बनिया बताता है कि वह गुमाश्ता है। बड़ा सौदागर तो मैदान में किसी शहर में रहता है।

उसे याद है कि आज से पचास साल पहले वह बनिया कस्बे में आया था। तब नमक एक बरतन में भर कर देता था और उसे भर कर घी लिया करता था। तब सेर-छटाँक के बाट नहीं थे। कपड़े वगैरह और चीजें भी उसी अपने हिसाब से बेचता था। किसी को उसका ज्ञान नहीं था। तब उसकी छोटी दूकान थी, आज तो सात-आठ सौ से ऊपर गाँवों में उसके आसामी हैं। उसका हजारों रुपया वहाँ फँसा हुआ है। अपने रुपये वसूल करने के लिये वह हर महीने पाँच-सात कुड़कियाँ करवा कर सन्तोष कर लेता है। वसूली खास नहीं होती और ज्यादा-तर कुड़की वापिस चली जाती हैं। वैसे कानूनगो, पटवारी और अफसरों को वह खिलाया-पिलाया करता है। इससे भी आज उसका कोई रौब

नहीं पड़ता। उसने पचास साठ खच्चरें पाल रखी हैं; जो कि उसका माल ढोते हैं। गाँव वालों से फसल पर उसका मुनीम आकर सस्ते दामों पर चीजें खरीद कर आगे मंहगे दामों पर उनके ही हाथ बेचता है। उस पर बनिया का तीन हजार रुपया कर्जा है। वह उससे कुछ नहीं बोलता। लोगों से कहता है कि जब सुविधा वे दे दें, पट्टा बदलवाने भी उसका मुंशी नहीं आया था। बनिए ने पटवारी से कहलवाया था कि वह उनका सेवक है, बिनती की थी कि और लोगों से वसूली करने में वे बीच-बचाव न किया करें।

वह उस मक्कार की बात समझता है। पचास साल पहले जिस कस्बे में नौ छोटी-छोटी दूकानें थीं और 'यात्रा लाइन' की एक छोटी चट्टी थी, वहाँ आज पचास साठ दूकानें हो गई थीं। गाँव की सब चीजें वहाँ बिकने के लिये चली जाती थीं। उन दूकानों की रौनक चकाचौंध कर देती थी। कई मकानों की छत्तें आज पत्थर की चौड़ी पठालों से नहीं छाई हुई थी। वहाँ तो सफेद टीन की मजबूत चादरें थी; दूकानों पर कपड़ा, नाज, नमक, लोहा, घी, तेल, गुड़, चाय, सब कुछ था। उसे खरीदने के लिए पैसा किसी के पास न था। गाँव तो श्रीहीन हो रहे थे और वह कस्बा एक नई जिन्दगी पाकर फल फूल रहा था।

फिर भी यह मंहगाई असह्य लगने लगी है। एक हफ्ते से उसका परिवार कच्चे मक्का के दानों को पीस कर उसको भून कर खा रहा है। नमक किसी भाव नहीं मिलता, कस्बे में सुना कि डेढ़ रुपये सेर नमक बिक रहा है। अनाज का भाव भी सत्तर-अस्सी रुपए मन हो गया है। उसका बड़ा लड़का अफ्रीका की लड़ाई में न मर गया होता तो यह कठिनाई न पड़ती। इस समय परिवार में दो बहू, पाँच बच्चे; उसें मिला कर आठ प्राणी हैं। बड़ी बहू कई बार धमकी देती है, कि वह अपने मायका बच्चों के साथ चली जायगी। उसका भाई एक पेनशनयाफ्ता सुबेदार है; पर उनका परिवार भी बड़ा है। वहाँ जाकर ही समस्या नहीं सुलझ सकती है। उसका कलकत्ते वाला लड़का दूसरे-तीसरे महीने

पन्द्रह-बीस रुपए भेजता है। उसका तो रोना है, कि फौज में राशन मिलता था; तनखा बच जाती थी। यहाँ तो सूखे पचास रुपए में काम नहीं चलता; वरदी भी नहीं मिलती। कपड़ा बहुत मँहगा है। दूसरा लड़का चार रुपए महीने और खाने पर मसूरी किसी परिवार में बरतन माँजता है। वह पत्र लिखवाता है कि बासी और जूठा खाना खाते-खाते वह तंग आ गया है। चार रुपये बीड़ी पीने में खर्च हो जाते हैं।

परिवार में दोनों बहुएँ आपस में झगड़ती हैं। इधर दोनों अलग होने की बातें करने लगी हैं। बार-बार कहती हैं कि बँटवारा कर दिया जाय, बूढ़ा एक-एक महीने के लिए उनके साथ रहा करे। बड़ी बहू की शिकायत है कि छोटी उसके बच्चों को पूरा पेट खाना नहीं खिलाती है; तो छोटी का उत्तर है, कि उसकी बड़ी लड़की तीन का हिस्सा अकेले ही खा जाती है। गाँव की बुढ़िया बड़ी बहू को न जाने क्या-क्या सिखाया-पढ़ाया करती हैं। पहले तो उसे डर था कि वह किसी के घर बैठ जायगी; पर इस मंहगाई के जमाने में दो बच्चों की माँ को घर डालना किसी के वश की बात नहीं है।

पहले बकरियाँ बेच कर व उनका ऊन कात कर काफी पैसा मिल जाता था। चीजें सस्ती थीं और थोड़े पैसे में गुजारा हो जाता था। आज तो किसी चीज में बरकत नहीं है। धरती पूरा अनाज नहीं देती है। पहले उन दिनों हर दूसरे-तीसरे रोज बकरा मारा जाता था। अब यदि किसी का बकरा कंकड़ियाँ खाने या किसी जानवर द्वारा मार दिया जाता है, तो वह उसे कस्बे में बेचने के लिए ले जाता है। आज छोटी-छोटी चीजें तक कस्बे में बिकने के लिए चली जाती हैं।

ऐसा ही अकाल और भुखमरी पिछली लड़ाई के बाद भी आई थी। साहूकार, पटवारी, अहलकारों की बरदायश, राज्य का टैक्स......! किसानों की कमर टूट गई थी, पटवारी हर फसल पर मनमाना चाँवल ले जाता और साहूकार का गुमाश्ता २५%, ३०% सैकड़ा सूद लेता व कुड़की कराता था। चुङ्गी, जंगलात, पुलीस हर विभाग का अफसर

अपनी जेबें गरम करता था। सरकार का पूरी रियासत पर आतंक छाया रहता। पुलीस किसी का हाथ-पैर तोड़ कर हत्या तक आसानी से करती थी।

वह उन दिनों कुछ साथियों के कहने पर मसूरी चला गया था। वहाँ सुना था कि पैसा कमाना आसान है। वह अपने साथियों के साथ रिकशा चलाता और अंग्रेजों के परिवारों, सेठों, नवाबों तथा राजाओं को रिकशा पर ऊपर चढ़ाई पर चढ़ाते थे। वहाँ का वातावरण चकाचौंध पैदा करता; पर एक चोट वह उसके दिल पर करता था। वह वैभवशाली नगरी कुछ लोगों को कबाब, अंडा, शराब और न जाने क्या-क्या सुख देती थी, जब कि वह एक बार खाना खाकर पैसा जमा कर रहा था। घर से पत्र आया था कि उनका बैल खड्ड में गिर कर मर गया है। उधर साहूकार के वकील का 'नोटिस' आया था कि रुपया तुरन्त चुका दिया जाय। घर उसे भला भी नहीं लगता था। उस साल उसकी अस्वस्थ पत्नी एक लम्बी बीमारी से मर गई थी। वह बहुत दुःखी था।

तभी उसने पाया कि मसूरी में गाँधीजी का झंडा उठा। वहाँ नौजवान सत्याग्रह करते थे। पुलीस के जुल्म की किसी को परवा नहीं थी। उसने अपने साथियों को बताया था कि वह वक्त अब गाँव जाने का है। यह 'सुराज' उनको एक नई जिन्दगी देगा। उसे बड़ी खुशी थी कि अब राजा का तख्ता वे लोग उलट देंगे और पटवारी-साहूकार के जुल्म से छुटकारा पा जावेंगे। वहाँ के नौजवानों से मिलता था और उनकी बातें चाव से सुनता। गाँधीजी को सरकार ने पकड़ लिया था। उसने एक झंडा खरीदा और एक दिन बड़ी सुबह उठकर अपने गाँव की ओर रवाना हुआ। रात-दिन पैदल चल कर वह अपने गाँव पहुंच भी नहीं पाया था कि कस्बे की पुलीस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसे छै महीने की सजा मजिस्ट्रेट ने करदी और वह जेलखाने भेज दिया गया। उसका जुल्म यह था कि वह बगावती तिरंगा झंडा अपने पास रखे था।

जेल में कई नौजवान उसे मिले। वहाँ वह कड़ी मेहनत करता

और पढ़ता लिखता। पहले उसका ख्याल था कि पढ़ना-लिखना बड़े घरानों के लड़कों के लिए है; पर वहाँ वह बात नहीं चली। वह छै महीने की पढ़ाई के बाद पढ़ने-लिखने लगा था और उसे विश्वास हो गया कि वे लोग किसी से कम नहीं हैं। छूटने के बाद बाहर आकर उसने पाया था कि एक मुर्दानगी सारे देश पर छा गई है। कस्बे के लोगों ने बताया कि गाँधीजी बाजी हार गए थे; पर गाँधीजी को वह देवता मानता था और उनकी छोटी फोटो एक अखबार से काट कर वह अपने पास रखता था। अँग्रेज के पास भी तो उनके राजा की तरह पुलीस-फौज थी। उनके गाँव और पट्टी वालों ने उसके पकड़े जाने पर विद्रोह किया था। कस्बे की पुलीस की चौकी पर हमला करके अपने को आजाद किया था। गाँधीजी की जय के साथ वहाँ की पहाड़ियाँ और घाटियाँ गूँज उठी थीं। राजधानी से दीवान फौज लेकर आया था। चार नौजवान गोली खाकर मरे थे। तीन सौ पर मुकदमा चला था और उनको जेल हुई थी।

उस आन्दोलन की असफलता से उसे दुःख हुआ था। राजा ने हजारों रुपया जुर्माना करके उनके गाय-बैल कुड़की करवा लिए थे। उनकी औरतों के गहने-कपड़े तक वे ले गए थे और जहाँ कुछ नहीं पाया तो वहाँ किसानों की जवान लड़कियाँ ही अफसरों की खिदमत में पकड़ कर कस्बे ले गए थे। कभी नैपालियों ने अत्याचार किए थे, पर उनकी बहू-बेटियों पर हाथ नहीं उठाया था। शर्म के मारे खून की घूंट पी कर वह चुप रहता। हफ़्ते में एक बार उसे कस्बे की पुलीस चौकी पर हाजरी देने जाना पड़ता था। उस जिन्दगी से ऊब कर एक दिन वह फरार हो गया। पुलीस को चक्मा देकर वह मसूरी पहुँच गया और कुछ आजादी-पसन्द नौजवानों के साथ रहने लगा था।

३

गल्थू चौंक उठा। बकरियाँ मिमिया रही थीं। उसने सावधानी से वह सुना और समझ गया कि बघेरा कहीं आसपास है। चुपके उसने अपनी बन्दूक भर ली, उसे हँसी आई कि आज उस खूनी जानवर के

सिर पर मौत नाच रही है। बाहर मेंह थम गया था। एक गुर-गुर-गुर की आवाज कहीं पास आ रही थी। उसने अन्दाज लगाया कि वह गधेरे के उस पार है, बड़ी देर तक वह उसके आने की प्रतीक्षा करता रहा। यह बघेरा शाम की गोधूली या बड़ी सुबह के धुंध में हमला करता है। पर अभी तो काली रात लगती थी। एक-दो घंटे से पहले वह हमला नहीं करेगा। अतएव वह लौट आया। उसे विश्वास हो गया कि आज वह उसे मारेगा। यह जीत की भावना उसके मन में शक्ति भरने लगी। अन्यथा जिन्दगी में आज कहीं सुख कहाँ था।

वह जिन्दगी उसने सन् १६३६ में मसूरी में पाई थी, जब कि सुना गाँधी जी का राज हो गया है; पर जब उसने अपने गाँव जाने की कोशिश की तो गिरफ़्तार कर लिया गया था। राजा नहीं बदला था। उसे एक साल की जेल वहाँ के अधिकारियों ने की थी। वहाँ फिर उसे कई नौजवान मिले। उसे खुशी हुई थी कि वह आराम से पढ़ेगा-लिखेगा। नई-नई बातें उसने सुनी कि 'आजदी' अभी नहीं आई है। घर से उसका लड़का मिलने आया था, बताया कि तहसीलदार गाँव आया है। उसने भरती होने के लिए नाम दे दिया है। खेती से गुजर नहीं होती है। कुछ दिनों में उसे फौज के दफ़्तर में जाना होगा।

यह फौज में भरती होने की बात उसकी समझ में नहीं आई थी। उसका ख्याल था, कि जब तक फौजी का पुराना 'पलटनी कोट' फट व 'बूट' टूट कर बेकार नहीं पड़ जाता; तब तक लड़ाई नहीं होती है। लेकिन सुनाई पड़ता था कि सच ही गाँवों में भरती खुल गई है। पर उसे भरती खुलने पर खुशी नहीं होती थी। उसका दादा नेपाल की लड़ाई में मरा था। उसका चचा अफगान युद्ध में खेत रहा। ये लड़ाइयाँ किसानों के नौजवान बच्चों को नष्ट कर देती हैं। उधर अंग्रेज और राजा मौज उड़ाते है। हरएक युद्ध के बाद अकाल पड़ता है, भुखमरी होती है। जिन्दगी की कठिनाइयाँ बढ़ जाती है। जीना हराम हो जाता है। रोटी और पेट के खातिर फौज में भरती होना पड़ता है। फौज, घरेलू नौकरी,

चौकीदारी, रिक्शा खींचना, कुलीगिरी; यह उन किसानों के लिए रोटी कमाने के जरिए थे। वह अपने लड़के को उस समय कुछ कहने के लिए तैयार नहीं था।

पर एक दिन लड़ाई आई थी। फिर जर्मन वालों ने लड़ाई छेड़ी थी। अब के तो गाँव के गाँव एकाएक सूने हो गए। हजारों सिपाही मर रहे थे। गाँवों में फिर हाहाकार मच गया। सब कहते थे कि इस लड़ाई के बाद दुनिया खुशहाल होगी। एक बार उसका लड़का छुट्टी पर आया, तो बताया था कि आज पुराने जमाने की तरह लड़ाई नहीं होती है। वह टीन के कई डिब्बे लाया था, जिनमें फल, दूध, मक्खन, मछली आदि था। पिछली लड़ाई में तो इनको अफसर ही खाया करते थे। फिर यह लड़ाई पिछली से भयानक लगती थी। हवाई जहाजों के बमों से शहर के शहर नष्ट होते। कोई नहीं जानता था कि कब तक लड़ाई समाप्त होगी। गाँव में सैनिकों के परिवारों में बेटों की तनखा आती और सब की गुजर चल रही थी। उसका दूसरा लड़का भी भरती हो गया।

और उसका तीसरा लड़का एक रोज 'बच्चों की पलटन' में भरती होकर चला गया था। अब तो गाँव में रहते हुए डर लगता। बूढ़, अपाहिज विधवाएँ...! कहीं कोई युवक नजर नहीं पड़ता था। फी सिपाही भरती करवाने के लिए एक रुपया इनाम मिलता था। इस लड़ाई की बात उसे चिन्तित रखती थी कि खबर आई, उसका बड़ा लड़का मर गया है। कुछ दिनों से दूसरा लड़का लापता था। वह तो मानो कि जानता था, इन लड़ाइयों में किसानों के बच्चे मर जाते हैं।

लड़ाई समाप्त होने पर उसका तीसरा लड़का लौट आया था; पर पता लगा कि उसका दूसरा लड़का 'कैदखाने' में है। ब्रह्मा में वह 'आजाद हिन्द' फौज में भरती हो गया था। अंग्रेज की फौज के खिलाफ वह आजादी के लिए लड़ा था। घर की हालत बिगड़ती चली गई। वह उसे संभालने की चेष्टा करके भी असफल रहा। एक रोज उसका दूसरा लड़का खाली हाथ, फटी वरदी और टूटा बूट पहन कर लौटा था। बताया कि

वह फौज से निकाल दिया गया है । उसने 'आजाद फौज' के कई किस्से बयान किए थे । नेता जी की बातें गर्व से सुनाई थीं । उस नौजवान की बातें सुनकर उसका हृदय हरा हो उठा था । उसे खुशी हुई थी कि उसके लड़के ने उस इलाके की आजादी की परम्परा को निभाया है ।

फिर भी परिवार की स्थिति डांवाडोल हो उठी और गरमियों में उसका लड़का रिक्शा खींच कर अपना खान्दानी पेशा अपनाने के लिए जाने वाला था कि 'भरती के दफ्तर' से पत्र आया और वह कलकत्ते चौकीदारी करने चला गया था । छोटा लड़का अपनी भाभी के झुमके लेकर एक दिन लापता हो गया । महीनों तक उसका कोई पता नहीं चला । अब खबर आई थी कि वह मसूरी में एक सेठ के परिवार में चौका-बरतन कर रहा है ।

गल्थू किसी बड़े परिवार में पैदा हुआ होता तो साठ साल में अब तक उसकी 'रजत जयन्ती' जरूर मनाली गई होती । अपनी जिन्दगी का लेखा-जोखा कर, अपने नाती पोतों के बड़े परिवार से घिरा रहता । लेकिन साठ साल तक वह राजा के अत्याचार, सेठ, पटवारी, कानूनगो आदि सब जोंकों से संघर्ष करता रहा । उसके पड़दादा, दादा, पिता; सब केवल धरती की गुलामी करते रहे हैं । पुरानी समाज की सड़न को फेंक कर वे मानवता को कोई स्वच्छता नहीं दे सके थे । वे तो प्रकृति से एकाकी व्यक्तिवादी संघर्ष करते थे । सैकड़ों-हजारों गाँवों के किसान राजा के जुल्म की चक्की में आजीवन घिसते रहे । प्रकृति से संघर्ष करके भी वे कभी अपना नया समाज बनाने के लिए कब आन्दोलन कर पाये थे । उन्होंने कभी जीवन का सुख, जवानी का सौन्दर्य नहीं पाया; प्रेम की नीरवता के स्वप्न नहीं सोचे । परिवार का सन्तोष नहीं मिला; गरीबी और बेकारी में मिट गए । जब कि उसकी पीढ़ी ने आजादी की कई टक्करें राजा के फौजियों से ली थीं ।

—फिर बकरियों के गले की घंटियाँ बज उठीं । सुबह का धुँधला प्रकाश फैलने लगा । वह संभल गया । वह बसेरा लगता था कि आ गया

है। उसने अपनी बन्दूक ठीक की और हँसिया उठाया; चुपचाप पशुओं के बाड़े में पहुंच कर घास पर लेट गया। तभी उसने भारी पाँवों की 'धप्प' सुनी। दो आँखों की रोशनी भी पाई। वह सावधानी से निशाना लगाने की सोचने लगा और उसने साध कर बन्दूक छोड़ दी। फिर बन्दूक छोड़ कर उठा और अपना हँसिया उठा कर, उस बघेरे के पीछे दौड़ा। वह बघेरा लंगड़ाता हुआ गधेरे की ओर भाग रहा था। किन्तु गल्थू उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। वह बघेरा भी उस दुश्मन को पहचानता है। उस शत्रु को मिटाना जरूरी समझ कर उस पर झपटा। दो घंटे तक दोनों मौत की लड़ाई लड़ते रहे। आखिर वह बूढ़ा उसे मारने में सफल हो गया। वह स्वयं घायल हो गया था। उसे वहीं छोड़ कर वह अपनी झोपड़ी में लौटा और लेट गया।

सोचा फिर कि आज वह किसी सामन्ती राजा का दास नहीं है। आज उसका गाँव आजाद हो चुका है। काँग्रेस का तिरंगा झंडा, पिछले साल उन लोगों ने धूमधाम से फहराया था। लेकिन आज भी बेगार चल रही थी; हाकिम तो वे ही पुराने थे। आज उनका व्यवहार वह कहाँ समझ पाता है। देश में नेता लोग अब अंग्रेजों की छोड़ी हुई कुर्सियों पर बैठ कर हुकूमत करते हैं।

उसके कलकत्ते वाले लड़के का पत्र आया था, कि फिर पूरब में लड़ाई शुरू हो गई है। अब के जरमन नहीं अमेरिका ने लड़ाई छेड़ी है। उसने तो यह भी लिखा था, कि उनके सेठ जी के मिल में एक महीने से हड़ताल चल रही है। स्वराज्य के बाद भी मजदूर पूरा पेट खाना नहीं पाता है। बरदी, सस्ता राशन, बोनस की माँग पर मजदूरों ने एका करके हड़ताल की थी। फौजियों की गोलियों से एक औरत तथा चार नौजवान मरे थे। यह भी लिखा था कि लड़ाई होगी तो वह भरती नहीं होगा। वह भी हड़ताल कर रहा है, इसलिए जल्दी रुपया न भेज सकेगा।

वह उस हड़ताल की बात पहले सुनता था। अपने लड़के को उसमें पाकर उसे खुशी हुई कि उसका बेटा एक पीढ़ी आगे वाली लड़ाई लड़

रहा है। लड़ाई की बात पर उसे विश्वास नहीं हुआ था। अभी उसका 'ओवरकोट' और 'बूट' मजबूत हैं। आठ-दस साल चलेगा, लड़ाई जल्दी नहीं हो सकती है। फिर भी कल से कानूनगोय गाँव में आया हुआ है। उसने शाम को लोगों को इकट्ठा करके बताया था, कि लड़ाई शुरू हो गई है, भरती जल्दी खुलेगी। कोई अफसर जल्दी ही इधर आवेगा। वही एक रुपया फी आदमी भरती करने पर मिलेगा। गल्थू की पीठ ठोक कर कहा था, "नेताजी, भाग्यवान हैं। दो बेटे हैं, पिछली लड़ाई में कमा कर मोटे हुए, अबके साहूकारा चल निकलेगा। ऐसा वक्त कब-कब आता है!"

कानूनगोय की बात की उसने परवा न कर बताया था कि वह लड़ाई में किसी को भरती नहीं होने देगा। वह कानूनगोय तो मालगुजार के साथ पीकर गम्मत मना रहा था। सुना कि नाचने वालियों से उसने कहा था, कि जल्दी ही कोई नेताजी इधर दौरे पर आवेंगे। इस बीच उनको झंडे और आजादी के गीत तैयार कर लेने चाहिएँ। मालगुजार को समझाया था कि एक बड़ा झंडा गाँव वालों से चंदा करके बनवाले।

गल्थू को आश्चर्य हुआ था कि, जिस झंडे को रखने के लिए उसे छै महीने की जेल काटनी पड़ी थी, आज उसका मूल्य चूक गया है। यह बात उसने मालगुजार से कही तो वह बोला था कि वह 'सठिया' गया है। जैसा राजा होता है, अधिकारी उसी के धर्म को मानते हैं। यही कानूनगोय कभी अफसरों को खुश करने के लिए अपने कुत्तों को नेताओं के नाम से पुकारता था। आज कांग्रेस का पक्का भक्त है और उनकी तावेदारी करके हुक्म बजाता है।

उसने एक बार उठने की चेष्टा की तो उसकी आँखों में धुंध छा गया। वह चुपचाप लेट गया। बाहर हवा के तेज झोंके चल रहे थे। वह सोचने लगा कि उसका बड़ा लड़का जिन्दा होता तो वह भी उसके मझले लड़के की भाँति किसी एक मोरचे पर खड़ा होता। तभी उसे कई नौजवानों के नाम याद आए। वे सब कहते हुए से लगे, 'चाचा, हम इस लड़ाई में बेकार मारे गए। ये लड़ाइयाँ बड़े-बड़े सेठों की तिजोरियाँ

भरती हैं। गरीब बेकार अपने प्राण गंवाता है। हम तो धोखे से उस दलदल में फंस गए थे।'

उसे याद आया कि लड़ाई के बारे में एक नौजवान ने उसे यह बात बताई थी। राजा के जेलर ने उसे जेलखाने में मार डाला था। फिर सरकारी करों, बेगार आदि के खिलाफ विद्रोह की चिनगारी सारी रियासत में सुलग उठी थी। राजा को गिरफ्तार कर लिया था। काँग्रेस ने तो राजा को छुड़ा कर उसे बहुत धन-दौलत और जायदाद दे दी थी। वह राजा जिसके दरबार में कभी कोई पीठ नहीं दिखाता था; आज गिरहकटों की भाँति मसूरी अपने बंगले में छिपकर रहता है।

उसने तय किया कि वह आगे की लड़ाई में किसी को भरती नहीं होने देगा। ये लड़ाइयाँ कल्याणकारी नहीं होतीं, इससे अमीर पनपते हैं और गरीब तबाह हो जाता है। वह तो अब अपनी क्रान्तिकारी परम्परा को आगे बढ़ावेगा। जिन शोषणों के खिलाफ उसका लड़का कलकत्ते में लड़ रहा है; उसी तरह वह यहाँ गाँव में लड़ेगा। पैंतिस साल पहले जो चिनगारी फूटी थी वह आज ज्वालामुखी बन कर बह जायगी। वह एक सैनिक जाति का किसान है।

वह जानता है कि ये पारिवारिक झगड़े यह लड़ाई, गरीबी; सब किसी सड़े-गले समाज की उपज हैं। उस समाज में सेठ, जमीदार और अफसरों के लड़के बड़े आदमी होते हैं; जब कि किसान का बेटा उनकी फौज का सिपाही, घरेलू नौकर,...! सच ही ऐसी मँहगाई पहले नहीं आई थी कि गाँव का आर्थिक ढांचा चकनाचूर हो जाता।

उसे लगा कि लड़ाइयाँ, पुराने समाज को ठीक तरह नहीं बदल पाईं। आज अब यह गरीबों की अपने अधिकारों के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई, नए इतिहास की नीव डालेगी।

अविनाश

मेरी मेज पर अविनाश का पत्र पड़ा हुआ है। अभी-अभी उसका नौकर मुझे दे गया है। पत्र में उत्तर की अपेक्षा है। मैंने नौकर को टाल दिया। नौकर के चले जाने पर पत्र को मैंने फिर पढ़ा और मुझे बड़ी हँसी आई। इस व्यक्ति को मैं पच्चीस साल से जानता हूँ। उसने कई पत्र मुझे इस अरसे में लिखे, भले ही मैंने एक का भी उत्तर नहीं दिया है। इस पत्र को अपना अन्तिम पत्र बताते हुए उसने इसमें मुझसे मित्रता तोड़ने का उल्लेख किया है मानो वह सचमुच कभी मेरा मित्र रहा हो। वह पत्र मुझे ऐसे रोगी का पत्र लगा, जो किसी भयंकर मानसिक रोग का शिकार हो। वह झूठ ही एकाकी जीवन व्यतीत करने का ढोंग रच कर एकान्त में अपनी महत्वाकांक्षाओं की गठरी खोल कर बैठ जाता है; स्वयं विधाता बना अपने भविष्य का निर्माण करता है। अकेले में कौड़ियाँ फेंक कर; सात-ग्यारह गिन, वह सोचता है कि जीवन का कोई भारी दांव जीत गया है।

बचपन में उसने एक निम्न-आत्मभाव वाला संस्कार अनजाने अपना लिया था। वैसे मैं उसे बहुत पहले से 'अजायबघर' का एक ऐसा 'जन्तु' मानता आया हूँ, जो इस समाज की समस्त विकृतियों को अपना कर पनपता है। यदि वह किसी छोटे घर में पैदा हुआ होता तो अवश्य

ही आज खून, डकैती या अन्य किसी गंभीर अपराध में जेलखाने में होता।

जब प्रथम योरोपीय महायुद्ध चल रहा था, तो वह टूटते हुए सामन्तवाद में टिमटिमाते हुए एक परिवार में पैदा हुआ था। पिता कस्बे के पोस्ट मास्टर थे और माँ देहात के स्वस्थ परिवार की एक युवती। संयुक्त परिवार की परम्परा को तोड़ कर, जहाँ सास-ससुर, जेठ-जिठानियाँ व एक बड़ी संख्या में लोग रहते थे, वे पति-पत्नी के परिवार तक सीमित थे। यहाँ सास-ससुर का अनुशासन नहीं, पति समीप रहते थे। युद्ध की साया उस परिवार को छू रही थी। मानवता के पुराने कोमल स्नेह-बन्धन टूट रहे थे। समाज की पुरानी मान्यताएँ नई केंचुली बदल रही थीं। युद्ध नये विचार और भावनाएँ ला रहा था। उसकी माँ पति से युद्ध के समाचार सुनती। भयभीत होती और कभी-कभी फूट-फूट कर रोती भी थी, तभी अविनाश का जन्म हुआ।

जब वह प्रायमरी स्कूल में मुझे मिला, तो वैसा सुशील और गंभीर स्वभाव का लड़का मैंने पहले नहीं देखा था। हम दोस्त हो गये। उसकी एक आदत थी, कि वह सुबह की डाक का खुलना देखता। एक दिन उसने अपने पिता के नाम एक पत्र देखा। उसमें उसके मामा के मरने की खबर थी। उसने पत्र छिपा लिया। उस दिन वह अनमना-सा कक्षा में बैठा रहा। शाम को 'गिली-डंडा' के खेल में वह हारता चला गया। पहले तो वह हँस-हँस कर गिली फेंकता रहा, फिर गंभीरता के साथ दौड़ कर उसे उठाता और अन्त में एक बारगी दौड़ कर उसने डंडा उठाया और खिलाड़ी को पीटने लगा। उसे गंदी-गंदी गालियाँ देकर भाग गया। सुना कि वह अगले दिन कहीं लोप हो गया। एक सप्ताह के बाद वह अपने पिता के साथ आया था। सारी बातों को सुनकर उससे सबकी सहानुभूति हो गई।

उसने अपने मामा का फोटो मुझे दिखलाया था। वे फौजी लिबास में थे। उसने बताया था कि वे युद्ध में घायल होकर लौटे थे। उनके

फेफड़े खराब थे। ठीक इलाज न होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। पत्र पाने पर वह वहीं गया था और अपने मामा का टोप अपने साथ लेता आया। उसने अपने पिता जी से कह कर नेकर और खाकी कमीज बनवा ली थी। उसे पहन कर टोप लगा, वह अकड़-अकड़ कर चलता था। उसका कहना था कि वह भविष्य में कोई बड़ा फौजी अफसर बनेगा। पढ़ने में उसकी तबीयत कम लगती थी। उन दिनों एक पेन्सनयाफ्ता फौजी तार-जमादार होकर आया था। उसने उससे दोस्ती गाँठ ली थी। वह उसके साथ दूर दूर जाता और टूटे हुए तारों को ठीक करता था। वह जमादार शराब पीता था और नीच कौम की लड़कियों के घर पर जाता था। वह उसे युद्ध की बातें सुनाता और 'कप्तान' कहकर पुकारता। वह उसके लिये पैसे चोरी करके लाता और पैसा न मिलने पर टिकट, लिफाफे, पोस्टकार्ड की चोरी भी कर लेता था। वह तार का 'गटर-गटर' चलाना भी सीखना चाहता। पर जमादार स्वयं उस विद्या से परिचित नहीं था।

उस वर्ष वह कक्षा में बड़ी कठिनाई से पास हुआ और आगे वह यदा-कदा लुढ़कता-पुढ़कता हाई स्कूल में पहुँच गया। एक दिन आधी रात को वह मेरे पास आया और बताया कि उसने गणित का पर्चा मालूम कर लिया है। अब की बार उसने निश्चय कर लिया था कि हिसाब में फेल नहीं होगा, इसीलिए हिसाब के मास्टर के घर पर पढ़ने जाने लगा था। वहीं से चोरी करके परचा निकाल कर लाया। किसी तरह बात खुल गई और दूसरे दिन उसकी अस्वस्थता का प्रमाणपत्र सहित प्रार्थना-पत्र आया। जुलाई में पाठशाला खुलने पर पिता के प्रभाव से वह अगली कक्षा में चढ़ा दिया गया; पर यह घटना उसके जीवन में एक 'प्रतीक' बन गई। अब वह बहुत कम बातें करता, हर एक को शक की निगाह से देखता और झूठ बोलने में प्रवीण हो गया।

अब अविनाश ने अपनी महत्वाकांक्षाओं की योजना बनाई, आध्यापकों की चापलूसी करके तिकड़म से वह परीक्षाएं पास करने लगा। वह

बड़े बड़े अफसरों की सलामी करता। १६३० में 'शान्ति सभाओं' में अपने पिता के साथ जाकर वह कविताएं पढ़ता था। अंग्रेज अफसर उसे होनहार बालक कहते थे। यदि वह दुबला-पतला व गरदन झुका कर न चलता होता, तो पुलिस या फौज में ले लिया जाता। 'कप्टेन' बनने की उसकी हवस पूरी नहीं हो सकी थी।

मैं यूनीवर्सिटी में आ गया और उसका साथ छूट गया। उसकी हरकतों की जिज्ञासा फिर भी मुझे थी। एक दो वर्ष बीत गए। तभी एकाएक उसका पत्र मुझे मिला, कि वह जंगलात के एक बड़े अफसर की लड़की से शादी करने की सोच रहा है। वह परिवार मेरा परिचित था। उसने लिखा था कि मैं उसके पिता की ओर से परिवार वालों से कह कर यह रिश्ता तय करवा दूँ। यह सुझाया था कि उसे उसके पिता 'इंग्लैंड' भेजना चाहते हैं और जाने से पहले शादी को अनिवार्य समझते हैं। अपने पिता के उस अनुरोध का वह पालन करना चाहता था।

पत्र पढ़ कर एक दिन मैंने उस लड़की से मजाक में बात की तो वह हँस कर बोली, कि उस 'बांगड़ू' से वह शादी नहीं करेगी। यह भी सुनाया था कि एक 'कला प्रदर्शनी' में उनसे मुलाकात व साधारण परिचय हुआ था। तभी से वे पाँच-छः पत्र उसे लिख चुके हैं। एक जाली खत अपने पिता के नाम से लिख कर भी वे उसके पिता के नाम भेज चुके थे।

उसकी इस हरकत पर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ था। पर पत्र का उत्तर मैंने नहीं दिया और उस लड़की की शादी इस बीच हो गई। मैं सोच रहा था कि, अब वह क्या करेगा ? तभी एक पत्र में मैंने उसकी कविता पढ़ी 'बसन्त के बाद'; उस ऋतु की नायिका के प्रति उसने अपना सम्पूर्ण स्नेह बखेर दिया था। वह यदि जीवन में प्राण डालती तो वह नवजीवन शुरू करता; पर बसन्त एक आशा छोड़ जाता है कि और ऋतुएं आकर चली जावेंगी और फिर एक दिन बसन्त आएगा। उस

नायिका को उसने विश्वास दिलाया था, कि वह अपना जीवन भावी निर्माण के लिए उत्सर्ग कर देगा।

आगे लंगड़ी खा-खा कर किसी तरह उसने एम० ए० पास कर लिया। पिता की सरकार-परस्त सनदों और बँगले बाजी के कारण वह सन् १६४२ में एक अच्छी नौकरी पा गया। लेकिन एक निम्न-आत्मभाव वह नहीं भूल सका। कोई अच्छा परिवार उसे अपनी लड़की देने के लिए तैयार नहीं था। एक घटना तभी घटी। वह गर्मी की छुट्टियों में 'हिल-स्टेशन' चला गया। वहाँ उसके जीवन में एक भूचाल आया। वह जिस होटल में टिका हुआ था, वहीं एक परिवार से उसका परिचय हो गया। उनकी बड़ी लड़की भले ही सांवली थी, पर उसे लुभावनी लगी। उसने उस लड़की से शादी का प्रस्ताव किया। पर लड़की ने बताया कि वह एक दूसरे युवक से प्रेम करती है और उसी के साथ शादी करेगी। वह बात उसे डस गई; पर वह हार मान लेने के लिये तैयार नहीं था। चुपचाप एक रात को चोरी से उसके कमरे में घुसा और उसे जगाया। वह अवाक् हड़बड़ाई उठी, तो उसने बताया था कि उसके हाथ उसके प्रेमी का पत्र लग गया है। पोस्टमैन को रुपया देकर उसने ले लिया था। फिर इधर-उधर छानबीन की और ताली उठाकर, सन्दूक खोला तथा और पत्र निकाल लिए। फिर गर्व से मुस्करा कर कहा था कि अब वह उसके चंगुल से नहीं छूट सकती; उसे उससे शादी करनी ही पड़ेगी।

अगली संध्या को वह परिवार के साथ चाय पी रहा था तो गृह-स्वामी ने बताया कि 'कृष्णा' ने शादी की स्वीकृति दे दी है, उसने देखा कि वह पीली पड़ गई है। उसकी आँखों में उसने एक हिंसक जन्तु वाला पैनापन पाया था। आगे उसने उसे कभी मुसकराते हुए नहीं देखा। वह अपनी इस विजय की बात चुपचाप छिपाकर रखना चाहता था। उसे घमंड था कि वह एक 'आधुनिका' से शादी कर रहा है। अपनी पत्नी के गुण तथा सौन्दर्य की चर्चा एक पत्र में करके, उसने अनुरोध किया था

कि मैं अवश्य उसकी शादी में सम्मिलित होऊँ। मैंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया था।

उसके बाद एक बार उससे अनायास भेंट हो गई। उसने बताया कि पत्नी अस्वस्थ रहती है। वह बीमारी क्या होगी, मैं जानता था। उसे अपनी पत्नी के चरित्र पर शक था और वह उसकी हिफाजत के सब मोर्चों की देखभाल करता। पत्नी को उसने नजरबन्द कर दिया था। यदि पत्नी विद्रोह करती तो वह पुरुष के सब अधिकारों का उपयोग करता था। पत्नी उस जीवन से ऊब उठी थी। उसने अपने पुराने प्रेमी को पत्र लिखा था। वह पति की उपेक्षा के बाद किसी का स्नेह चाहती थी। अविनाश के हाथ वह पत्र पड़ गया। उसने योजना बनाई कि पत्नी की हत्या कर दी जाय, पर एक कायर व्यक्ति जीवन में सैकड़ों बार मरता है। अतएव पत्नी का मानसिक शोषण वह करने लगा। पत्नी अब सँभली और एक दिन भाग कर अपने मायके चली गयी।

अविनाश ने सोचा था कि वह 'मकड़ी' का जाला तान कर कृष्णा को एक जीवित मक्खी की भाँति चूस-चूस नष्ट कर देगा; पर वह उस मकड़ी की भाँति निकली जो कि निकम्मे नर को खा जाती है। वह उसका मद चूर कर, उसे निर्जीव बना कर चली गई थी। वह घायल भेड़िए की भाँति पत्नी की बातें सोचता; उसका क्रोध उमड़ता और अन्त में अपने कलेजे का एक टुकड़ा खा कर थका पड़ा रहता। पत्नी सदा के लिए नाता तोड़ कर चली गई थी, उसे चेतावनी देकर कि वह अपना भविष्य बनाना जानती है। वह उसकी तरह कायर नहीं है, वह पुरुष द्वारा पहनाई बेड़ियों को आसानी से तोड़ना जानती है। वह उसके आश्रय की भूखी नहीं है।

उस दिन उसका नौकर यह संदेश लाया कि अविनाश बहुत बीमार है। मैं उसके यहाँ गया तो पाया कि वह पागल हो गया है। मुझे देख वह फूट-फूट कर रोने लगा। उसने मुझे पत्नी के प्रेमी के पत्र दिखा-कर कहा, कि शादी के बाद भी वह उसे नहीं भूल सकी थी। मेरे प्रति तो एक दिखलावा का भाव था। कभी उसने मुझे प्यार नहीं किया। सदा

कहती थी, कि वह उसी के पास चली जायगी।

बातें करते हुए उसका शरीर कांपने लगता था। वह तख्त पर लेट गया। उस पर मुझे रहम नहीं आया। इस व्यक्ति ने जानकर ही उस युवती से शादी की थी। शुरू में वह उसके साथ सभा-सोसायिटी में जाया करता था। पत्नी के अधिकारों पर उसने अपना अंकुश फेका, तो वह संभल गई। वह उसके प्रेमी से ईर्षा करने लगा था। उसकी पत्नी का दावा था कि वह व्यक्ति उस पर पाशविक-अत्याचार करता है। अविनाश ने यह भी बताया कि वह उस युवती से बहुत प्रेम करता था। बार-बार इसीलिए उससे समझौता किया। वह अपने पिता को कोसता था कि, वे उसे गृहस्थ बनाने में असफल रहे। वह न जाने और क्या-क्या कहता रहा। उसे डर था कि पत्नी कहीं उस पर दावा न कर दे। वह चाहता था कि किसी भाँति वह एक बार उसके चंगुल में पड़ जाय तो वह बदला चुकावे। मेरे समझाने पर उसने तय कर लिया था कि, वह उसे भूल कर अपना जीवन बनावेगा।

लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि उस गरमी में फिर वह 'हिल-स्टेशन' गया। वहाँ वह घंटों मालरोड पर खड़ा होकर अपनी पत्नी को देखा करता था। एक बार वह उसे अपने साथ सिनेमा ले जाने में सफल हो गया था। उसने पत्नी से समझौता करना चाहा कि वह साथ रहे। वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा नहीं खोना चाहता है। पत्नी ने उसकी माँग स्वीकार नहीं की तो उसने धमकी दी कि वह उसका खून कर देगा। लेकिन पत्नी ने आसानी से कहा कि वह कल पुलिस को 'फोन' कर देगी। अविनाश की घिग्घी बंध गई और वह अगले दिन पहली लारी से उस 'स्टेशन' को छोड़ने के लिए मजबूर हो गया। इस हार को वह आजीवन भूलने के लिए तैयार नहीं है। एक बदले की भावना बार-बार मन में उठती है।

—अविनाश के जीवन की छानबीन का प्रश्न मेरे सामने आज अनायास आया। मैं उससे कोई सम्पर्क नहीं रखना चाहता हूँ। उसकी

किसी यादगार को संवार कर रख, मैं अपना मन मैला नहीं करना चाहता हूँ। उस गुमराह युवक के प्रति मेरी सहानुभूति उठती है। उसके एकाकी 'व्यक्तित्व' को गढ़ने की धारणा कल्याणकारी नहीं है.। उसके रोग का उपचार होना ही चाहिए। वह रोग...! ताकि आफिस से लौट, अपने कमरे में वह छिप कर न बैठ जाय। नौकर को बाध्य न करे कि वह लोगों से झूठ कहे कि, उसके साहब घर पर नहीं है। अपनी व्यस्तता का बहाना बनाकर, वह समाज से दूर रहने का ढोंग रचता है। उसकी शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता का यह एक बड़ा कारण है, अन्यथा वह अपने मित्रों की सहानुभूति व स्नेह पाकर कभी का स्वस्थ हो गया होता। वह तो अपने मित्रों की मखौल उड़ाता है और परिचित परिवारों की 'कथित-घटनाओं' पर प्रकाश डालता है।

अविनाश के भतीजे ने एक रोज बताया कि उसके 'चचा' ने एक विज्ञापन समाचार पत्रों में छपवाया है कि, पहली पत्नी की अस्वस्थता के कारण, जिससे कि वह अपना सम्बन्ध विच्छेद कर चुका है, अब वह एक जीवन-संगिनी चाहता है। भतीजे साहब ने यह भेद प्रकट किया कि एक प्रौढ़ा कुमारी नर्स को वे 'चची' बनाने की सोच रहे हैं। चची का सौन्दर्य वर्णन करते हुए वह हँसा था। वह चची और चचा के बीच आज प्रेमपत्र चलाया करता था। उसकी बातों ने मुझे अचरज में डाल दिया, तभी मित्रों ने बताया कि अब अविनाश का नाम 'चचा' सच ही पड़ गया है। वह चचा यानी उस्ताद आदमी है अन्यथा उस तीस वर्षीय कुमारी की जीवन नौका का खेवनहार न बनता। उनकी राय थी कि 'चचा-चची' का एक अच्छा 'आयल पेंटिंग' बनवा कर म्युनिसिपल म्यूजियम में टंगवा दिया जायगा।

अविनाश ने इस नई शादी का निमंत्रण पत्र मुझे भेज कर अनुरोध किया था कि मैं जरूर शामिल होऊँ। मैं वहाँ नहीं गया। वहाँ उसकी जीवन में उठ कर चलने वाली बात पर मैंने सोचा। वह अपने और दुनिया के बीच एक परदा डाल कर सोचता है कि वह सब को बेवकूफ

चना रहा है। राह में यदि कभी वह साइकिल पर कहीं जाता हुआ मिल जाता है तो 'कुटिल मुस्कान' के साथ अभिवादन करता है। इधर वह कांग्रेस का पक्का भक्त बन गया है? अब वह मजिस्ट्रेट व पुलिस कप्तान आदि के बंगलों में न जाकर, खद्दर की टोपी व कुरता-धोती पहने हुए नेताओं के निवास स्थान में तख्त पर बैठा हुआ मिलेगा।

—कल की बात है, अनायास उससे 'सिविल लाइन्स' में भेंट हो गई, उसकी वे ही अपनी महानता की योजनाएँ सुनता रहा; किस तरह उसकी तनख्वाह अब इस बजट में बढ़ रही है। वैसे साल भर में वह कई बार मिलता है और हरबार बताता है कि उसे तरक्की मिल गई है, या फिर बताया करता है कि दफ्तर के नए सौदे पटाने में उसे कितना फायदा हुआ। ये सब बातें धुप्पल हैं, जानकर भी मैं चुप रहा करता हूँ।

तभी न जाने क्या सोच कर मैंने पूछा, "चची आजकल कहाँ है?"

"उसका हरदोई तबादला 'सालों' ने कर दिया है।"

"तबादला! कहीं चची भी मकड़ी वाला जाला बुन कर अपने 'नर' को नष्ट न कर दे।" मैंने कहा।

लेकिन वह बहाना बना कर कि एक जरूरी काम से जाना है, चला गया; और अभी-अभी सुबह को उसका नौकर पत्र दे गया है कि, वह मुझसे सम्बन्ध विच्छेद कर चुका है। अपने मित्रों के दायरे से उसने मुझे निकाल दिया है। भविष्य में मैं समझ लूँ कि वह मर गया है। बात यही नहीं, उनके योग्य भतीजे जिनका भविष्य वे गढ़ रहे थे, रात को उसे अकेला छोड़ कर बम्बई भाग गए थे।

फिर इस शहर में जो राममोहनराय रोड है, उसके पाँच नम्बर वाले बंगले में वह रहता है। उसका यह मौत का परवाना मुझे कोई जाल लग रहा है। शायद उसकी 'भावी निर्माण-योजना' का यह नया सबक होगा।

चचा का परिचय मैं पच्चीस साल से अपने में संवारे रहा हूँ, पर वह तो इस समाज की धरोहर है। उसे इसीलिए अपने से अलग हटा कर, पाठकों को सौंप अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ।

मैं शहीद बनूँगा

सेठ किशोरीलाल से मेरी मुलाकात सन् १९४३ में कलकत्ते में एकाएक हुई थी। मैं उन दिनों बंगाल के अकाल की जानकारी के सिलसिले में वहाँ एक फौजी दोस्त के यहाँ टिका हुआ था। एक दिन शाम को दोस्त ने चाय पर उनका परिचय देते हुए कहा था कि, मैं एक राजनैतिक कार्यकर्ता हूँ। सेठ यह सुनकर तपाक से बोला था कि उसकी हर एक पार्टी से हमदर्दी है। सन् १९४२ में उसने कांग्रेस को बीस हजार रुपया चंदा दिया था। खुफिया पुलीस ने इसकी सूचना देकर वाध्य किया था कि लड़ाई में चालीस हजार चंदा दिया जाय। वह तो आज भी सब पार्टियों को मिलाकर एक लाख से ज्यादा सालाना चंदा देता है। उन्होंने मायूस होकर यह भी बताया था कि कारोबार के सिलसिले में 'मुसलिम लीग' वालों को भी चंदा देना पड़ता है; अन्यथा उन्हें उस जाति से बड़ी घृणा है। एक बार फिर कलकत्ते में साम्प्रदायिक दंगा हो जाय तो वह अपनी मिलों में काम करने वाले सब मुसलमानों को कटवा देगा। यहाँ हिन्दुओं में दम नहीं है, इसीलिए वे पश्चिम से हिन्दू पहलवानों की भरती करते हैं।

मेरे हमदर्द दोस्त ने सेठ जी को बताया था कि, मैं एक अच्छे सरकारी ओहदे पर था और अपने स्वतन्त्र विचारों के कारण नौकरी से

त्याग पत्र देना पड़ा था। सेठ ने मुझे सावधानी से देखा और पहचान लेने की चेष्टा की, फिर चुपके से मुझसे बोले थे कि वे जब बचपन में स्कूल में पढ़ते थे तो उनको क्रान्तिकारी आन्दोलन से बड़ी दिलचस्पी थी। सन् १९३० में तो वे अपने साथियों के साथ पाँच घंटे हवालात में नमक कानून तोड़ने के लिये बन्द रहे थे। सन् बयालीस में उन्होंने तय किया था कि उस आजादी के आन्दोलन में कूद पड़ें, पर दोस्तों ने बाहर रहने की सलाह दी थी। स्कूल के जमाने में अलीपुर षड्यंत्र केस, खुदीराम बोस तथा अन्य क्रान्तिकारियों का साहित्य पढ़कर उनके मन में भी हूक उठी थी कि वे शहीद होंगे। उस साहित्य को पढ़कर उनका हृदय गदगद हो उठता था और वे घंटों रोया करते थे। फांसी के तख्ते पर झूलने की उनकी तमन्ना आज तक पूरी नहीं हो सकी है।

दोस्त ने सुझाया कि कुछ 'गरम पेय' मंगवाया जाय, तो उन्होंने सावधानी से मेरे चेहरे के भावों को पढ़ने की चेष्टा की और उनको समझाया कि मैं अपना खास व्यक्ति हूँ। फिर बैरे को बुलवा कर ह्विस्की, बियर, सोडा तथा तीन गिलास मंगवाए। मैं बियर की चुस्की लगा रहा था, पर सेठजी तो आसानी से चार पेग उड़ा चुके थे और अब उनकी चेतना खुली थी। वे तपाक से बोले, महाशय जी, ऐसा जमाना पहले कभी नहीं आया। आज तो मिट्टी भी सोने के भाव बिक रही है। लड़ाई आठ दस साल चलती रही तो बस सोना ही सोना दिखलाई पड़ेगा। मैं तो हार मान बैठा था, पर यह साहब की मेहरबानी है कि आज यह हैसियत बनी है। हम इनका अहसान कभी नहीं भूल सकेंगे। इनके तावेदार हैं।'

सेठ जी पाँचवां पेग चढ़ा कर बोले, कांग्रेस वाले तो पागल हो गये हैं। न जाने कहाँ से लुच्चे लफंगे उसमें भर गये हैं। यह स्वराज्य तो कभी नहीं आने का है। सालों से हल्ला सुन रहे हैं। हजारों आदमी अब तक मर चुके हैं। अंग्रेज की हुकूमत में कम से कम सब चैन से तो रहते हैं। किसी बात का कष्ट नहीं है। फिर कांग्रेस में दो चार ही भले

आदमी हैं। मैं उनकी रग रग पहचानता हूँ। उनमें दम होता तो सरकार इस तरह बन्द न कर देती। चार दिन में आन्दोलन दब गया है।'

ऑफिस के कमरे में टेलीफोन की घंटी बजी और दोस्त वहाँ चले गए। एक पेग और चढ़ा कर वे गदगद होकर बोले, 'साहब का अहसान मैं कभी नहीं भूल सकूँगा। कुछ दुश्मनों ने एक बार मुझे एक .खून के मामले में फंसवा दिया था। मैंने सब बातें इनसे कहीं और फिर 'जादूघर, की दावत में साहब ने पुलीस कमिश्नर से न जाने क्या कहा कि उसने सारा मामला दबवा दिया था। तब से आज तक पुलीस वालों ने मुझे कभी परेशान नहीं किया है।'

नशे में सेठ जी ने बताया था कि मेरे मित्र सच ही देवता हैं। उठ कर मुझे गले लगा कर कहा कि मैं बहुत खुश किस्मत हूँ कि उनके साहब का दोस्त हूँ। ऐसी बादशाह तबीयत का आदमी जिन्दगी में आज तक नहीं मिला था। इस बात का उनको दुख था कि मैं पीता नहीं हूँ। उनको एक लेफ्टनेंट ने पहले पहल पीना सिखलाया था। उसका कहना था कि विलायत में हर एक इंसान पीकर खूब मौज करता है। अंग्रेज सच ही बड़ा उदार होता है, थोड़ी बहुत आव भगत में ही खुश हो जाता है। हिन्दुस्तानी अफसर तो बड़े लोभी होते हैं। पैसा क्या पाई पाई तक अपना हिस्सा मुनाफे में मांगते हैं। फिर पहले का अंग्रेज आज से अच्छे खानदान का था। अब तो नीच कौम के अफसर आते हैं; जो कि उतने उदार नहीं होते। लेकिन हिन्दुस्तानी अफसर की नियत का तो कोई भरोसा ही नहीं है। जितना खिलाया पिलाया जाय उतना ही मुनाफा है।

फिर उसने अपने साहब का गुणगान शुरू कर दिया कि, 'ऐसा हीरा आदमी ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा। चाहते तो अब तक लाखों बना लेते। आजकल की मंहगाई को देखते हुए तनख्वाह कुछ भी नहीं है। सभी अफसर किसी न किसी तरह लेते ही हैं। साहब जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं है। परिवार की हिफाजत का कोई इन्तजाम तो होना ही चाहिए। मेरे यहाँ तो सभी लोग आकर टिकते हैं, कांग्रेसी, सोसिलिस्ट

मुस्लिम लीगी, अफसर आदि सभी की आव भगत करनी पड़ती है। बड़ा नाजुक जमाना है, सभी को मिला कर चलना पड़ता है।

लड़ाई से भी उनको दिलचस्पी थी और खास करके उनका पूछना था कि यदि अंग्रेज हार गए तो क्या सच ही जापानी आकर राजपाट संभालेंगे। तब गांधीजी का क्या होगा। क्या वे कारोबार में भी दखल देंगे। जापानी अफसर कैसे होते हैं। उनको किस तरह पटाया जा सकता है और कब तक जापानी यहाँ पहुँच जावेंगे। वे परेशान थे कि करोड़ों रुपया कमा रहे हैं: उसका क्या किया जाय। आजकल व्यवसाय तेजी से बढ़ रहा था और संभाले संभल नहीं रहा था। वे ठेकों के मारे परेशान हैं। सभी अफसर चाहते हैं कि वे काम संभालें। वे ठेके न भी लेना चाहें तो अफसर उनके सिर मढ़ देते हैं। कितना रुपया कमाया जाय समझ में नहीं आता है। इसीलिये साहब लोगों की बदौलत कभी कभी आनन्द उठा लेते हैं।

वे कुछ गुलाबी पड़ कर बोले, 'साहब सच बात यह है कि यदि रोज पीकर मन साफ न करूँ तो सच ही मर जाऊँ। इसीलिये सब तरह के आराम चाहिएँ। लेकिन इस दुनिया में लुच्चे कम नहीं हैं। जो कि दूसरों के सुख को देख कर खुश नहीं होते, अन्यथा एक छोटी बात का पहाड़ न बना देते। मेरा गुमाश्ता गाँव से एक सुन्दर लड़की लाया था। शहर में सच ही ऐसी खूबसूरत लड़कियाँ नहीं मिलती हैं। लेकिन उस बावली लड़की को न जाने क्या सूझा कि दो रोज के बाद साड़ी की किनारी से फाँस लगा कर आत्महत्या कर ली। पुलीस वाले तो फिर भी शरीफ होते हैं और भले आदमियों की इज्जत का ख्याल रखते हैं। पर जनाब ये अखबार वाले जो न छाप दें कम ही है। उस परेशानी से आपके दोस्त ने उबार कर मुझे नई जिन्दगी दी।'

अब उन्होंने सिगरेट सुलगा ली और कहते रहे कि वे मेरे भी ताबेदार हैं और दोस्त की खातिर आगे जब कभी कलकत्ते आऊँ उनसे जरूर भेंट कर लूँ। उनकी जबान नशे में लड़खड़ा रही थी। वे तेज

होकर बोले, 'देखिए महाशय जी, आपसे यह पहली मुलाकात है। साहब महीनों से आपका जिक्र कर रहे थे। वे आपकी इज्जत करते हैं। आपको चंदे के लिए कहीं भटकना नहीं पड़ेगा। हम लोगों ने खुद ही यहाँ हिन्दुओं के लिए कई लंगर खोले हैं, पर यहाँ तो न जाने क्या बात है कि लाखों भिखमंगे आ रहे हैं। न जाने लोग इतने बच्चे क्यों पैदा करते हैं। फिर साहब यह सब मुस्लिम लीग वालों की शरारत है। अनाज का सारा ठेका मुसलमानों के हाथ में है।'

अब तक दोस्त लौट आये थे। वे बैठ गए और सेठजी के गिलास में एक पेग और डाल कर बोले, 'क्यों सेठजी, दार्जलिंग में तो पिछले साल आपने सब ह्रस्की की बोतलें ही मोल ले ली थीं। आठ हजार का एक सप्ताह का सिर्फ उनका ही बिल था। चोर बाजार में मंहगे दामों सब कुछ आसानी से मिल जाता है। लेकिन अफसर आज तक याद करते हैं कि ऐसी कभी नहीं पी। सब इस साल भी वहाँ का प्रोग्राम रखने की बात सोच रहे हैं। कब तक इन्तजाम हो सकता है। मैं तो अगले महीने वहाँ दौरे पर बीस रोज के लिए जा रहा हूँ, अभी-अभी तय हुआ है।'

सेठजी यह सुन कर तत्काल बोले, 'मैं तो खुद ही आपसे यह कहने को सोच रहा था। इधर मेरे गाँव के गुमाश्ते आये हैं। वे बताते हैं कि गाँव की हालत अच्छी नहीं है। वहाँ लोग अपनी जवान लड़कियों को सस्ते दामों में बेच रहे हैं। सुना है कि अमरीकी सिपाहियों की मेहमानदारी के लिए सरकार लड़कियाँ भरती कर रही है। मेरा दूर रिश्ते का एक आदमी चाहता है कि यह रोजगार करे। इस रोजगार में भी काफी मुनाफा होगा। आप लोगों की खातिरदारी के लिए भी अच्छा माल आया करेगा।'

दोस्त इस पर मौन रहे। सेठजी भी गम्भीर बन कर सिगरेट का धुआँ उड़ा रहे थे। उनको कुछ ऐसा सा भास हुआ कि गलत बात वे कह गए हैं। और बात सुलझाने के लिए कहा, 'इनसे मैंने कह

दिया है कि चंदे के लिए कहीं नहीं जाना होगा। यहीं चार पाँच रोज में सब इन्तजाम बैठे-बैठे हो जायगा। यही साठ सत्तर हज़ार इनको फिलहाल काम चलाने के लिए चाहिएँ। आप ठीक समझें तो रात को किसी होटल में खाना रहे। वहाँ दो तीन और लोग भी रहेंगे।

सेठजी ने उनके कान में कुछ काना फूसी की। वे लोग उठे और दूसरे कमरे में चले गए। कुछ देर के बाद लौट कर सेठजी ने हाथ जोड़कर मुझसे विदा माँगी और कहा कि शाम को मुलाकात होगी। वे बाहर चले गए। कुछ देर के बाद कार चलने की आवाज़ आई।

—अब सुधीर मुझ से बोला कि इस लड़ाई ने हमारी सारी पिछली नैतिक मान्यताओं को तोड़ दिया है। यह अकाल सच बात तो यह है कि दैविक नहीं। इन्सान ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए पैदा किया है। बंगाल की क्रान्तिकारी परम्परा को मिटाने के लिए यह षड़यन्त्र सरकार ने यहाँ के बड़े-बड़े व्यापारियों के साथ मिल कर रचा है। सदियों पुरानी संस्कृति मिट रही है। माँ बाप अपनी लाड़ली बेटियों को वेश्याओं के दलालों के हाथ बेच रहे हैं।

सुधीर की बातें मैं सुनता रहा। वह सीनियर कैम्ब्रिज पास करके फौजी स्कूल में चला गया था। पढ़ने में तेज न होने पर भी पिता के ओहदे के कारण वह फौज में ले लिया गया था। तब अच्छे परिवारों के लड़के बन्दूक कंधे पर रखना अपनी तौहीनी समझते थे। पर द्वितीय महायुद्ध तो मध्यवर्गीय परिवारों के सैकड़ों हजारों नौजवानों को रोजी देने में सफल रहा था। लेकिन यह सुधीर बहुत बदला हुआ मुझे मिला। वह किसी तरह की घूसखोरी नहीं करता है और अपनी ईमानदारी के लिए उसकी धाक भी थी। पर वह खूब पीता है और चरित्र की किसी नैतिकता पर विश्वास नहीं करता। उसी ने मुझे बताया था कि सेठ आज कुछ ताजी लड़कियों को रात दावत पर लाएगा वे किसी मुसलमान परिवार की युवतियाँ हैं।

रात को दावत में सच ही पाया था कि वे लड़कियाँ सहमी बैठी थीं

और सेठजी अनुरोध कर रहे थे कि वे लेमलेड में जिन मिला कर एक पेग ही पी लें। वे गुलाम लड़कियाँ उनके आदेश पर मुँह बिचका कर यह पीने की चेष्टा करती हुई अपने को असलफल पा रही थीं। कुछ देर के बाद कुछ नशा चढ़ जाने पर सेठजी ने एक को आदेश दिया कि वह सुधीर के पास बैठ जाये। वे लोग बड़ी देर तक पीते रहे; वे असहाय युवतियाँ अपनी दासता के लिए मन ही मन न जाने किसे-किसे कोसती रही होंगी। लेकिन उनके अश्लील व्यवहार के प्रति कोई घृणा का भाव व्यक्त नहीं किया। इन्सान के उस वहीशाना बर्ताव के प्रति मानो कि वे उदासीन थीं। एक लड़की से मैंने पूछा कि वे कहाँ की रहने वाली हैं और उत्तर मिला कि वे मुर्शिदाबाद में खरीदी गई हैं और आज महीने भर से इसी भाँति होटलों-होटलों में,पहुँचाई जा रही हैं जहाँ कि वे इसी तरह का वातावरण पाती हैं। वे अकेली नहीं थीं हजारों लड़कियाँ इसी तरह का जीवन व्यतीत करने के लिए मज़बूर की जा रही थीं।

मैं जल्दी ही लौट आया था। सुधीर वहीं रहा। जब कार रुकी और ड्राइवर ने उसका दरवाजा खोला तो मैं चौंक उठा और उतर कर जल्दी-जल्दी अपने कमरे की ओर बढ़ा। मैं बहुत थक गया था। अभी तक शराब की बद्बू मेरे सिर पर चक्कर काट रही थी। बियर का भीना-भीना नशा नई खुमारियाँ ला रहा था और सेठ की बात याद आ रही थी जो कि उसने कार का दरवाज बन्द करते समय मुझसे कही थी, 'आप ने उस छोटी लड़की का दिल तोड़ डाला है। उसे तो मैं आपके लिए ही सौ रुपए में तय करके ले आया था। वैसी अच्छी चीज बड़ी मुश्किल से मिलती है। और फिर यही तो जिन्दगी है। इसी के लिए लाखों कमाते हैं।'

वे लड़कियाँ इस तरह की जिन्दगी बसर करने के लिए मजबूर की गई थीं। वह लड़की कितनी डरी थी। जिस होटल में वे ले जाई जाती हैं वहाँ यही शराब चलती है। अच्छे गोश्त की प्लेटें आती हैं और नारी के शरीर को कुचला जाता है। मुझे नींद नहीं आई थी।

कभी एकाएक मन में विद्रोह उठता था। खाने की महक से मन भर गया था।

अगले दिन शाम की गाड़ी से मैं लौटने को था। सेठजी और सुधीर मुझे स्टेशन पहुँचाने के लिए आये थे। सुबह को सुधीर ने रात की हरकत के लिए माफी मांगते हुए कहा था कि वह मुझे जान बूझ कर वहाँ ले गया था कि मैं उस जिन्दगी को भी अपनी आँखों से देख लूँ। अपनी कमजोरी के लिए माफी मांगते हुए कहा था कि जिस समाज में वे रहते हैं वहाँ यह सब चलता है और उसमें एक दिन में तबदीली नहीं हो सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि आज कई भयंकर रोग भी वहाँ औरतों द्वारा फैल रहे हैं। उन रोगों के कारण वहाँ की भावी सन्तान पर असर पड़ेगा। एक पूरी पीढ़ी मर रही है। दोस्त एक विवेकशील व्यक्ति थे और सेठजी ने चन्दा करके साठ हजार का चेक दिलवाया था। एक भेद की बात भी बताई थी कि वे केवल मुसलमान लड़कियों को ही आजकल अपना रहे हैं।

२

सन् १९४५ में पंडित नेहरू जब अल्मोड़ा जेल से छूटे और उन्होंने एलान किया कि वे चोर बाजारी करने वालों को फाँसी की सजा देंगे तो मुझे विश्वास हो गया था कि अब सेठ किशोरीलाल जी की शहीद होने की हवस जरूर पूरी हो जायगी। लड़ाई के दौरान में उन्होंने अरबों की सम्पति जमा कर ली थी। बंगाल के अकाल से फायदा उठा कर उन्होंने क्या-क्या नहीं किया था। लाखों इन्सानों को मरते दम तक उन्होंने चूसा। खाना, कपड़ा, दवा तथा जिस चीज में मुनाफा हुआ रुपया कमाया था। लाखों नौजवान लड़कियों को वेश्यावृति करवाने के लिए भी मजबूर किया था। सब ही व्यापार के फन में वे सफल रहे थे। यदि उनको फांसी हो गई तो उनकी जाति को अवश्य ही उनकी स्मृति में यादगार बनानी चाहिए।

कुछ साल बीते लेकिन उनके शहीद होने का कोई समाचार मुझे नहीं मिला। इस बीच कई शहीदों के स्मारक बने और जरूर सेठजी ने उनमें भी दिल खोलकर चन्दा दिया होगा। तभी एक दिन एक अखबार में मैंने उनका फोटो देखा। लिखा था कि किसी चुनाव में कांग्रेस वाले उस त्यागी वीर को खड़ा कर रहा है। लेकिन एक दिन फिर पढ़ा कि कलकत्ते में दंगा हो गया है, कई मिलों में मजदूरों की आपस में लड़ाई हो गयी है। सेठजी का स्वप्न एक तरह पूरा हुआ था। उनके पच्छिमी पहलवानों ने ऐसे मौके पर अवश्य ही अपना पूरा फर्ज अदा किया होगा। इस बीच सेठजी ने दो तीन दैनिक पत्र भी खरीद लिए थे। अब भविष्य में प्रेस से भी उनको कोई खतरा नहीं रह गया था। पर सबसे आश्चर्यजनक घटना तो यह हुई कि सेठजी को सरकार ने एक महीने के लिए 'राष्ट्रीय सेवक संघ' से सम्बन्ध रखने के कारण नजरबन्द कर दिया था।

उन सब चीजों का लेखाजोखा जमा करके मुझे सेठ जी से बड़ी दिलचस्पी हो गई थी। उनका सारा जीवन काफी कौतूहलपूर्ण लगा। तब ही एक रोज सेठजी का पत्र मिला, लिखा था : 'आपकी याद अक्सर आती है। आप बहुधा कलकत्ते आते हैं, पर न जाने क्यों हमें दर्शन नहीं देते। मेरे लड़के की शादी ११ अगहन को है, आप उस अवसर पर पधार कर हमारे घर की शोभा बढ़ावें। आप लोगों की मेहरबानी से आज यह दिन देख रहा हूँ। इधर ट्रान्सपोर्ट कम्पनी को मैंने लिख दिया है कि जिस दिन आप आना चाहें सीट बुक करदी जाय। उसकी नकल साथ है। यदि भूले कोई कसूर हुआ हो तो माफ करना। हम आपका इन्तजार करेंगे। साहब की चिट्ठी मिली है कि वे ५ अगहन को पन्द्रह रोज की छुट्टी पर आ रहे हैं।'

चिट्ठी पढ़ कर मैं उलझन में पड़ गया कि क्या करूँ। फिर भी ठीक सात साल के बाद मैंने उनसे मिलने का निश्चय किया। सेठ जी खुद मुझे लेने के लिए हवाई जहाज के अड्डे पर आए थे। मिल कर बोले

'पहले नेहरूजी को लेने यहाँ आया था और आज आपका स्वागत करने के लिए आया हूँ। सुधीर भी साथ था और मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ था कि आज भी वे उसे साहब ही कह कर पुकारते थे। सुधीर ने बताया कि आज वे व्यापार ही नहीं करते राजनीति में भी सतरंज की गोटियाँ चलाया करते हैं। दो मन्त्री उनके खास आदमी हैं और मेम्बरों का एक दल भी उनके साथ है।

सेठजी ने बताया कि अपनी सरकार से उनको काफी सहयोग मिल रहा है। पिछले साल वे एक इन्कमटैक्स के मामले में फँस गए थे। उनके मुनीम ने उस अफसर की खातिर करने की सोची पर उसका दिमाग ठिकाने ही नहीं था। आखिर एक मन्त्री जी ने छुटकारा दिलाया। उस अफसर पर सरकार ने एक मामला चला रखा है और वह मजबूर होकर लम्बी छुट्टी पर चला गया है। उनका कहना था कि अंग्रेज उनके काम की कदर नहीं जानता था। आज तो भलाई इसी में है कि अमरीका या रूस किसी का साथ न दिया जाय। लड़ाई तो होकर रहेगी और हमारा देश दोनों को अपना माल बेंच कर अपना कारोबार मजबूत करेगा। यह बात सच है कि चीजों के दाम बढ़ रहे हैं, पर पाकिस्तान के बन जाने के कारण यह सब हुआ है। आज भी कारखाने चलाने में काफी कठिनाई उठानी पड़ रही है। मंत्री तो हुकूमत करना जानते नहीं हैं; अभी कुछ दिन फाइलों पर दस्तखत करना सीखलें, फिर राष्ट्रीयकरण की बातें करें। इन मजदूरों की बात आप कहते हैं। इनसे ज्यादा हरामखोर कौन होगा। आठ सौ साल के बाद हम आजाद हुए हैं। अब तो हमें सब कुछ भूल कर ज्यादा पैदावार बढ़ानी चाहिए थी, पर आज तो हर एक सोचता है कि काम क्यों किया जाय। सरकार भी उनको मुंह लगाती है कि उनको चुनाव में वोट मिल जावेंगे। वे तो बस व्याख्यान देना ही जानते हैं। हुकूमत करने के लिए तो फौलाद का दिल चाहिए। और चुनाव कांग्रेस क्या जीत सकेगी उसकी कुन्जी तो हमारे हाथ में है।

सेठजी को मैंने पहले से ज्यादा चतुर पाया। वे बताने लगे कि अब

कांग्रेस वाले उनका बहुत समय नष्ट कर रहे हैं। इन लोगों के रोज व रोज झगड़े चलते रहते हैं। वैसे कोई अच्छा राजनीतिज्ञ भी इनके पास नहीं है। काश्मीर के मामले में ही सरकार ने बड़ी कमजोरी दिखलाई है। डट कर लड़ाई हो जाती तो कभी का वह हमारे हाथ में आ गया होता। शरणार्थियों का मामला भी वैसे ही लटक रहा है। उसको सुलझाने का एक ही रास्ता है कि हिन्दुस्तान से सब मुसलमानों को पाकिस्तान जाने के लिए मजबूर किया जाय।

शाम को मैं, सेठजी व सुधीर बैठे हुए थे। सेठ जी के पेग चालू थे। वे मुझसे मुस्कराते हुए बोले, 'इन फौजी अफसरों की बदौलत इस चीज का लुत्फ जाना है। वरना पैसा तो सभी कमाते हैं।' अब उनके बात करने के तरीके में काफी शालीनता आ गई थी। वे बता रहे थे कि काफी दांव पेच के बाद नेता लोग उनके जाल में फंसे हैं। सच बात तो यह थी कि लड़ाई बाद देश की सारी आर्थिक कुन्जी उन लोगों के हाथ में आ गई है। उनके अपने आदमी सभी जगह हैं। सरकार को डालर की कमी हो सकती पर उनको कोई कमी नहीं है। आज बाहर के व्यापारियों के साथ मिल कर वे व्यापार चलाते हैं। इसीलिए उनके हाथ बहुत मजबूत हैं। अगले चुनाव में वे जिसे चाहेंगे गद्दी नसीन करेंगे और फिर चुनाव कहाँ होंगे। लड़ाई दरवाजे पर खड़ी है।

रात को हम फिर होटल खाना खाने गए थे। वहाँ कुछ शिष्ट लड़कियाँ हमारे साथ खा रही थीं। सेठजी ने चुपके मेरे कान में बताया था कि आज बिना बाहरी रुपया कमाए परिवार का खर्चा नहीं चलता है और निम्न मध्यवर्ग के परिवारों की लड़कियाँ अपनी इच्छा से आती हैं। पहले शरणार्थी लड़कियाँ वे मंगवाते थे, पर वे ज्यादा आवारा होती हैं। वे अपनी योजना भी बता रहे थे कि नारियों के विशेष गुप्त रोगों के लिए वे एक अस्पताल खोल रहे हैं। आज उसकी बड़ी आवश्यकता है।

वे लड़कियाँ बेहयाई के साथ मजाक कर रही थीं और सेठ जी से अनुरोध कर रही थीं कि सिनेमा वे खाने के बाद जावेंगी। सेठजी कुछ

चिन्तित भी थे कि देश में बेकारी बढ़ रही है। उनका ख्याल था कि सन् १६३८ में लड़ाई से पहले भी यही हाल था। जरूर लड़ाई होगी उनका विश्वास था। इस लड़ाई में वे सारे पूर्वी एशिया के बाजार को अपने में मिला लेने की बात सोचते थे।

मैं खाना खाकर लौटा तो मेरे दिमाग में लड़ाई की बात चक्कर काट रही थी। एक लड़ाई के बाद तो अभी तक राशन कार्ड से छुटकारा नहीं मिला था। चीजों के दाम पंचगुने हो गये थे। बंगाल में अकाल पड़ा था; माँ बहिनों को वेश्यालयों के दरवाजे खटखटाने पड़े थे। यह जो नई लड़ाई की बात चल रही थी, वह तो मानवता को हमेशा के लिए नष्ट कर देगी। उस भयंकर स्थिति की बात सोच कर मैं काँप उठा था। रात भर मुझे नींद नहीं आई। मुझे लगा कि ये महायुद्ध हमारी सभ्यता को नष्ट कर देते हैं और हमें इसका विरोध करना चाहिए। सेठजी सरीखे व्यक्तियों के हाथों से हमें मानवता की रक्षा करनी होगी।

सुबह मेरी आँख खुली तो आठ बज रहे थे। मैं उठा और अपना सामान संभाल कर किसी से बिना पूछे ही वह घर छोड़ दिया था।

३

मेरी मेज पर सेठजी की चिट्ठी पड़ी है। उनका अनुरोध है कि अस्पताल के शिलान्यास के अवसर पर अवश्य आवूं। यह भी लिखा है कि कोई मंत्री उसकी नींव रखेंगे। दोस्तों के अनुरोध पर विवश होकर उनको अपना एक बस्ट भी बनवा कर इटली से मंगवाना पड़ा है, जो कि बाहर बरांडे में स्थापित की जायगी।

मैंने सेठजी को पत्र भेजा है कि मैं न आ सकूँगा। एक बात जरूर मन में उठी कि भले ही खुदीराम बोस पिस्तौल चला कर सही शहीद अपनी हिंसा वाली प्रवृत्ति के कारण गांधीवादी नेताओं द्वारा न माना जाय, पर सेठ सच्चे माने में अहिंसा के पुजारी और शहीद आज हैं।

उनको शहीद होने के लिए अपने प्राण नहीं गंवाने पड़े।

कान्ता

हमारी कार आधी रात को काले नाग की भाँति रंग लिए तारकोल से पुती उस टेढ़ी मेढ़ी सड़क पर ऊपर 'हिल स्टेशन' की ओर बढ़ रही थी। बरसात का मेंह तेज़ी से बरस रहा था और ड्रायवर बार बार सामने के आइने की सफ़ाई करता हुआ, आवश्यकतानुसार स्पीड घटा-बढ़ा रहा था। कभी तो चढ़ाई पर कार थकी सी बढ़ रही थी या फिर समतल भूमि पाकर सीधी चलती और मोड़ पर जब मुड़ती तो हम एक धक्का खा कर चैतन्य हो जाते थे।

पहले 'गेट' का दरवाज़ा बन्द था और काफ़ी देर तक भोंपू बजाने के बाद पहरेदार के कान पर जूं रेंकी और वह एक फटा सा छाता लेकर ड्रायवर के पास आया। उससे 'विशेष आज्ञा पत्र' लेकर ग़ौर से उसे पढ़ा। फिर चुपचाप आगे बढ़ कर फाटक का ताला खोल कर कार को जाने दिया।

मेंह शाम से ही बरस रहा था और मन में घबराहट उठती थी कि कहीं रास्ता टूट गया होगा तो फिर सुबह आठ-नौ बजे से पहले वहाँ पहुंचना संभव नहीं होगा। जगह जगह पर पहाड़ से पत्थर और मिट्टी बह कर सड़क पर फैली थी और होशयारी से ड्रायवर उसे बचा कर आगे बढ़ रहा था। छोटे गधेरों में पानी के बहने की आवाज कानों में पड़ रही थी

और कहीं कहीं तो झरने इतनी ऊंचाई से गिर रहे थे कि, अनायास ही उनका भारी शब्द एक गूंज में परिणित हो जाता था। एक भय मन में उठता था कि अनायास जिस यात्रा को विवश होकर पार कर रहे हैं, क्या वह सफल होगी? हवा के तेज झोकों से लगता था कि मानसून का पूरा वेग है और शायद पाँच सात घंटे से पहले उससे राहत नहीं मिलेगी। तभी एकाएक आगे कई बड़े बड़े पत्थर गिरे और ड्रायवर ने कार रोक दी।

मैंने नीचे की ओर दृष्टि डाली। हम पहाड़ी की काफी ऊंचाई पर पहुँच चुके थे और नीचे वाले शहर की रोशनी झिलमिला रही थी। कई लाख की आबादी वाला वह शहर सिकुड़ सा गया था और वहाँ केवल प्रकाश की एक धुली चादर भर दीख पड़ती थी। हम उस शहर को छोड़ कर चार हज़ार फीट की ऊंचाई पर पहुँच गए थे तथा तीस मील का सफ़र तय किया था। आगे अभी बीस मील की दूरी और तय करनी थी। ड्रायवर ने बरसाती ली और नीचे उतर कर बड़े बड़े पत्थरों को हटाने लगा। मैं चुपचाप उसको देख रहा था। कार की छत पर पानी की बूंदें अजीब तड़तड़ाहट के साथ पड़ रही थीं और उस अंधियारे में वह ड्रायवर टार्च की रोशनी में पत्थर हटाने में मशगूल था। उसने वादा किया था कि वह किसी भी तरह हो मुझे ऊपर समय से पहुँचावेगा। वह सात आठ साल से इस सड़क पर कार चलाया करता है। पहले उसकी अपनी टैक्सी थी और सीजन पर वह काफी रुपया कमाया करता था। पर पिछले दो साल से रोड-वेज ने यह सड़क ले ली है और मजबूरी में वह नौकरी कर रहा है। पिछले साल वह मेरे पास आया था और जब मैंने उसके आगे यह प्रस्ताव रखा कि वह इधर उधर न भटक कर हमारे साथ रहे, तो उसने आनाकानी नहीं की थी। वैसे वह महसूस करता है कि वह अनजान नहीं है। उसकी भावना समझ कर भी मैं कोई समाधान नहीं करा पाता हूँ। वह अक्सर कहा करता है कि अपनी गाड़ी अपनी ही होती है।

शेरसिंह को मैं कई साल से जानता हूँ, वह इस सड़क के अच्छे

अच्छे ड्रावरों को मात देता रहा है। सीजन पर सदा उसकी गाड़ी कई सप्ताह पहले लोगों द्वारा बुक हो जाया करती थी। वह बताता था कि राजा, महा-राजाओं, रानी, महारानियों, राजकुमारियों और न जाने कितने रईसजादों को उसने नहीं पहुँचाया है। इस गर्व की बात को वह आपस में किया करता था और यह सच है कि उसे सभी लोग जानते थे। जब उसने राजा-महाराजाओं की नौकरी न करके हमारे यहाँ काम करना स्वीकार किया, तो सब को बड़ा आश्चर्य हुआ था।

शाम को वह छुट्टी लेकर चला गया था, किन्तु जब रात को मैंने उसका दरवाजा खटखटाकर उसे पुकारा तो वह सकपका कर उठा और मेरे कहने पर कि अभी ऊपर चलना है, बिना किसी आनाकानी के तैयार हो गया। मैंने गदगद होकर कहा था, "शेरसिंह सच ही यह हमारा इम्तहान है। मुझे क्या मालूम था कि कान्ता की हालत एकाएक इतनी बिगड़ जायगी। इस आँधी पानी वाली रात में 'प्लाज्मा' की बोतलें कहाँ से लाई जावें; फिर कान्ता को हर हालत में जिन्दा रहना चाहिए। उसके मर जाने की बात न जाने मन में एक अज्ञेय बेचैनी क्यों फैलाती है। वहाँ एक धुंध फैल कर पीड़ा पहुँचाता है। सुबह डाक्टर ने बताया था कि उसकी हालत सुधर रही है। अन्यथा मैं उस हिल स्टेशन को कदापि न छोड़ता। अभी अभी उसने फोन किया है कि कोई आशा नहीं है। मौत अनिवार्य है और उसने निश्चय किया है कि कल सुबह आठ बजे वह ऑपरेशन करेगा। इस ऑपरेशन की सफलता पर निर्भर है कि वह जीवित रहेगी या नहीं।

कान्ता मेरी कौन है और मेरा उससे जीवन में क्या संबन्ध है? यह स्वयं मैं नहीं जानता हूँ, फिर भी जीवन में अपने हृदय के किसी कोने में उसके लिए न जाने क्यों मोह बटोरा है। उसे मैंने कभी प्यार किया है या नहीं यह सवाल भी अभी सही तरह हल नहीं हुआ है। उससे मेरी पहली भेंट जीवन में तब हुई थी जब कि वह एक छोटी लड़की थी और जीवन के सभी व्यवहार से अनभिज्ञ थी। अपनी किसी स्थिति की जानकारी उसे

नहीं थी और वह आज से बीस साल पुरानी बात हो चुकी हैं। उस बात को मैं भूल ही जाता, पर समय समय पर उसे देखता रहा हूँ और आज से पाँच साल पहले तो वह एक रोज न जाने किस भरोसे आश्रय माँगने आई थी। उसे पूरा पूरा विश्वास था कि उस सुन्दरी को अपनाने में मुझे कोई आनाकानी नहीं होगी। अपनी सुन्दरता की बात का उसे घमंड था और यह बात सब जानते थे कि उसे हरएक व्यक्ति अपनाने के लिए उदार होगा। मुझ से कोई उत्तर न पाकर वह मुरझा गई थी। मैंने उससे पूछा था कि आखिर वह मेरे ही पास क्यों आई है। तो उसका सीधा साधा उत्तर था कि, आज उसकी हैसियत एक रखैल की ही है। उस कलंक को वह मिटा नहीं सकती। वैसे उसके पास धन दौलत की कमी नहीं है और वह आराम से रह सकती है। लेकिन न जाने क्यों उसे वह भला नहीं लगता है। और उसने अपने हृदय की बात बताई थी कि आज तक जिन महाराजा की वह रखैल थी वहाँ उसका बहुत बड़ा सम्मान था। वहाँ कोई उसकी ओर आँख उठा कर नहीं देख सकता था। उनकी मृत्यु न हो गई होती तो वह आराम से रहती। वह ग्यारह सौ रखैलों में से एक थी, पर महाराज की प्रियपात्र थी। वह पन्द्रह साल की अवस्था में वहाँ गई थी और अठारह साल वहाँ रही। इस लम्बे अरसे में महाराज के दर्शन उसे मुश्किल से अठारह बीस बार हुए थे। वह तो वहीं रहना चाहती थी, पर राजकुमार पिता की उस वसीयत की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं था, जिस पर कि रियासत का तीन लाख से अधिक सालाना खर्चा था। अतएव उसने सबकी सम्मान पूर्वक विदाई की थी और अपने पिता द्वारा दिए गए खास-खास उपहारों को वापिस ले लिया था कि उसके स्वर्गीय पिता की प्रतीष्ठा को आँच न आए।

और इस तरह जब कान्ता रियासत की नौकरी से पेन्शन पाकर लौटी तो एक नामी तवायफ ने उसे सलाह दी थी कि अभी कुछ साल वह जम कर व्यवसाय करे तो बुढ़ापे के लिए कुछ कमा कर रख सकती है।

उसके अस्वीकार करने पर उसका मजाक उड़ाया था, कि बुढ़ापे में दर दर भीख माँगेगी। एक छोटे मोटे राजा के सिक्रेटरी भी उसके पास गए थे कि एक हजार माहवारी वेतन पर वह उनके महाराज के यहाँ रह सकती है। छोटे ताल्लुकेदार तो रोज ही खुद वहाँ पहुँच कर खुशामद करते थे। उन सबकी बातों को ठुकराकर जब वह मेरे पास सरलता से प्रस्ताव लेकर आई तो सच ही मुझे बड़ी हँसी आई थी, कि वह बावली तो नहीं हो गई है। मैं चार बच्चों का पिता था। मेरे मना करने पर भी उसने न जाने क्यों मेरी पत्नी से वह बात कही और उस दिन से मेरी पत्नी जो रूठी बैठी, तो आज तक उसे नहीं सुलझा सका हूँ। कान्ता ने फिर मसूरी में एक कोठी खरीदी तथा कुछ रुपया शेयरों में लगाया और बची पूँजी को बैंक में जमा कर के वहाँ रहने लगी। आज भी मेरे परिवार में वह आया करती है और पिछले साल मेरी बड़ी लड़की की शादी पर उसने महीने भर इतनी मेहनत से काम किया कि वह अस्वस्थ हो गई। वह जान कर भी कि मेरी पत्नी उसका बात बात में अपमान करती है; चुप रहती है। मेरे कहने पर कि वह उन सब तानों को सहने की शक्ति कहां से पा गई है। उसका फीका सा उत्तर होता है कि हममें पुरुषों का हृदय नहीं होता है। हमने इस समाज में नारी को बन्धन में जकड़ कर उसे बेड़ियाँ पहना दी हैं। हम उसे आज भी तो गुलाम से अधिक नहीं समझते हैं। वह मेरी पत्नी का पक्ष लेकर कहती है, उसका सन्देह सही है। आज पुरुष के अपने अधिकार क्या कम हैं?

उसमें फिर भी मैंने कोई जीवन नहीं पाया, लगता था कि वह काफी दुःखी रहती है। कभी उसे खिलखिला कर हँसते हुए मैंने नहीं पाया था। वह बातें भी बहुत कम करती थी। यह बात मेरे मन में उमड़ घुमड़ कर रह जाती थी। उससे फिर भी मैंने एक रोज पूछा कि वह इतनी उदास क्यों रहती है, तो पहले उसने बात टालने की चेष्टा की। लेकिन जब कि मैंने वह बात फिर दोहराई तो उसने कहा कि इस सवाल का उत्तर तो स्वयं मैं अपने दिल से पूछ सकता हूँ। मैंने इस पर भी कहा कि

उसे सब कुछ खोल कर बताना होगा तो गंभीर बनकर उसने सवाल उठाया था कि मैं इसके लिए कसूरवार हूँ। उनकी सामाजिक परम्परा में मैंने एक रुकावट डाली थी और आज तक वह उस बात को बिसार नहीं पाई है। वह यदि महाराजा के आदमियों के द्वारा रनवास में रखेल की हैसियत पाने के लिए न चुनी गई होती तो वह किसी ऐसे परिवार की स्वामिनी होती जहाँ कि कम से कम पाँच पति सदा उसके आदेश का पालन करने के लिए तत्पर रहते। वह अपने उस परिवार की बात आज भी सोचा करती है।

पाँच पतियों की एक पत्नी......? सच ही जहाँ उसने जीवन पाया था वहाँ उसके जीवन में किसी प्रकार का बन्धन नहीं था। मायके में उसे अधिकार था कि वह उच्छृङ्खलता पूर्वक युवकों के साथ रहे। वहाँ उसकी सब बातें समाज स्वीकार करता। वह मायका आजीवन उसकी आजादी का एक ऐसा प्रतीक होता कि ससुराल से थक कर वहाँ विश्राम करने आती तो अपने मन के व्यक्ति के साथ रहती, और ससुराल में भी वह दासी न होती; पुरुष एक नहीं, सारा परिवार उसका होता। यदि वह पुरुष की उपेक्षा पाती तो अपने पिता से कह कर उस परिवार से तलाक लेने की व्यवस्था को अपनाती। पिता इसे अपना कर्त्तव्य समझता कि उसे छुटकारा दिलवादे। बिना किसी झगड़े के उसको मुक्ति मिल जाती और फिर वह नए सिरे से जीवन चलाती और उस परिवार में शादी कराती, जहाँ कि वह सात आठ भाइयों की पत्नी बन कर रहती। वह जितनी रूपवती थी उसके हिसाब से कम से कम पन्द्रह सोलह बार वह जरूर छूट करती और सभी परिवार उसे अपनाने को तैयार होते।

उसने सच ही प्रकृति से एक सरलता पाई थी। कहीं कोई कपट की भावना उसमें नहीं मिलती थी। अपने बचपन का जीवन वह बहुत याद करती थी। उनके गाँव में सेव, खुबानी, आड़ू, नाशपाती, दाड़िम आदि के बड़े बड़े बाग हैं। वह गाँव नौ हजार फीट की ऊँचाई पर था और जाड़ों में वहाँ कई महीने बर्फ पड़ती थी। ऊँचे ऊँचे देवदारु, सुरही,

रांगारासो, चीड़ आदि का घना जंगल गाँव के चारों ओर था। जहाँ कि वह बकरियाँ चराती और सुन्दर गीत गाती थी। वह अपनी माँ से भाँति भाँति की शराबें; जूर, घिंटी, राबण, लाल पांखुरी आदि बनाना सीख चुकी थी। नाचने में वह प्रवीण थी। नीले तथा लाल गोटे वाला घाघरा उसे बहुत पसन्द था। वह मछली मारने के मेले में कई परिवारों के युवकों को रिझाया करती थी। उसके सौंदर्य की दूर दूर तक शोहरत थी। किन्तु उसका वह जीवन सफल नहीं हुआ। उस स्वतन्त्र जीवन से हटा कर उसे राजदरबार में बेड़ियाँ पहनाई गई थीं।

कान्ता को अभी भी मैं अपने मन से नहीं हटा सका हूँ। आज भी वह मेरे हृदय की एक कोमल भावना है। वह मुझे गुलाब के फूल की भाँति सुन्दर लगती है। उसके जीवन की एक एक बिखरी हुई पंखड़ी को आज मैं बटोर कर संवार लेना चाहता हूँ। उसके समूचे जीवन पर अपना मत उसे बता देना चाहता हूँ कि वह व्यर्थ निराश रहा करती है। उसका जीवन अपनी सीमाओं के भीतर सफल रहा है। जिस संघर्ष की कसोटी पर वह पनपी है, उससे उसका हृदय विशाल बना है। तभी तो वह आज मानवता की पीड़ा को समझने में इतनी उदार है।

लेकिन वह बहुत अस्वस्थ है और डाक्टर ने फोन पर बताया था कि दिन को एक बजे एकाएक बेहोश हो गई। वह डाक्टर हार न मान कर भी चाहता है कि कल ऑपरेशन किया जाय। उसका विश्वास है कि वह उसे सफलतापूर्वक निभा लेगा। आज सुबह जब उसने एक सप्ताह की बेहोशी के बाद आँखें खोली थीं तो मुझे बड़ी खुशी हुई थी। मुझे लगा था कि कई सालों की वह दूरी सिकुड़ कर उस क्षण की खुशी में सीमित हो गई है मैंने उसे विश्वास दिलाया था कि वह मरेगी नहीं। उसने भी बताया था कि कभी मरने की कल्पना तक वह नहीं करती है। उसे सन्तोष हुआ था कि उस बीमारी में मैं उसके साथ हूँ। जब वह सो गई तो मैंने एक जरूरी काम से एक रोज के लिये वह हिल स्टेशन छोड़ दिया था।

२

मैं आज से बीस साल पहिले उसके गाँव गया था। मेरे पिता उन दिनों वहाँ मजिस्ट्रेट थे। कान्ता के पिता वहाँ के माने हुए सयाने, प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उनका काम सैकड़ों गाँवों से लगान जमा करके सरकारी खजाने तक पहुँचाने का था। वे सरकारी नौकर नहीं थे व लगान जमा करना एक तरह ठेके पर होता था। वहाँ के सारे शासन की व्यवस्था के भी वे एक प्रमुख अंग थे। मेरा अनुरोध था कि मैं उनके गाँव देखने चलूँगा और उस साल बसन्त में एक मेले के अवसर पर वे मुझे अपने साथ ले गये थे। वे तीन भाई थे और तीनों की एक पत्नी। उस प्रथा के बारे में मैं सुन चुका था, फिर भी मुझे बड़ा कौतूहल हुआ था। किसी ने बताया था कि पुराने इतिहास में इसे पांचाल देश कहते थे और द्रौपदी यहीं की कन्या थी। वह पत्नी परिवार की सामूहिक संपति है, उसे पहले पहल मैंने देखा था।

गृह स्वामिनी को देखकर मैंने पाया कि सच ही वह मोहनी है। उसके व्यवहार ने मुझे मोह लिया था। जब मैंने आदर के साथ उसे 'ममी' कह कर सम्बोधित किया तो उस आदर के प्रति वह कृतज्ञ हो गई। उसने मुझे अपना मकान दिखलाया जो कि निराला ही था। दीवारों के बीच में देवदारु या और मजबूत लकड़ी वाले पेड़ों की टहनियाँ चुन कर डाली जाती हैं। उनका मकान चार मंजिला था। नीचे वाली मंजिल में बकरियाँ, भैंस, गाय तथा भेड़ें बंधी थीं। उसके उपर का कमरा गोदाम का था। तीसरी मंजिल के कमरे में रसोई का सामान और शराब ढालने की भट्टी थी। सबसे ऊपर का कमरा सोने का था और उसके बाहर नक्काशी की हुई थी, तथा अजीब अजीब तसवीरें भी वहाँ बनी थीं। ठंडी जगह होने के कारण कमरे में कोई खिड़की नहीं थी व हवा आने जाने के लिए दो बड़े बड़े सूराख थे। इस मंजिल के चारों ओर पत्थर का चौड़ा छज्जा था। यही सारे परिवार के सोने का कमरा था।

रसोई के कमरे में उसने मुझे अपनी लड़की कान्ता का परिचय

दिया था और वह बारह-तेरह साल की लड़की बिना किसी हिचक के मुझसे पूछ बैठी कि क्या मैं कस्बे से आया हूँ। फिर सरलता से उसने कहा था कि वह मुझे अपना बाग दिखलाने ले जावेगी। बिना किसी खास हिचकिचाहट के वह मेरा हाथ पकड़ कर बाहर ले गई थी। बाग में नाशपाती के पेड़ फूल रहे थे और वहाँ शहद की मक्खियाँ गूँज रही थीं। शहद की मक्खियों के पाँच छत्ते थे और उसने बताया था कि एक महीने बाद वे शहद निकालेंगे। उसके उस व्यवहार पर मैं दंग था कि तभी उसने एक सिगरेट की माँग की थी और बताया था कि उनके यहाँ सिगरेट पीना बुराई नहीं समझी जाती है। मैंने उसे सिगरेट निकाल कर दे दी थी। वह वहीं घास पर लधर कर उसे फूँक कर धुँआ उड़ाती रही और फिर एकाएक पूछा कि मैं उसके लिए सिर पर बाँधने के लिए काला रेशम का रुमाल भी लाया हूँ या नहीं। मुझे याद था कि उसके पिता ने कोई वैसी चीज खरीद कर मेरे कपड़ों में रखी थी। उसे बताया था कि घर पर है, वह जब चाहे ले सकती है। वह बड़ी देर तक न जाने क्या गीत गाती रही। उसे खुशी थी कि मैं पहला अतिथि था जो उस परिवार में उसके होश आने पर टिका हूँ। उसकी सहेलियों के यहाँ अक्सर अतिथि आया करते हैं और वह उनके रंगीन किस्सों को सुन कर उस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी जब कि उसके परिवार में भी कोई अतिथि आवेगा और वह उसकी सेवा करेगी। उसने बताया था कि यह मायका का जीवन उनके लिए कई सुनहली कल्पनाओं का भांडार है। अन्यथा ससुराल तो एक बन्धन है। स्वयं उसकी माँ अधिकतर अपने मायके ही रहा करती है। वहाँ आज भी उसे नवयुवकों से उच्छृङ्खलता पूर्वक जीवन व्यतीत करने का अधिकार है। उसकी शादी चार साल की अवस्था में एक छै साल के लड़के से हुई थी। उनके यहाँ की प्रथा यह थी कि लड़की की बारात लड़के के यहाँ जाती है। और अधिकतर लड़कियाँ आजीवन मायके ही रहना पसन्द करती हैं।

कान्ता की अतिथि की वह प्रतीक्षा तथा उसके आगमन के प्रति

वाला आग्रह सच ही मेरे जीवन की एक नवीन घटना थी। उसका पिता अपने उस समाज की पिछली परम्परा को जैसे कि तोड़ चुका था अन्यथा वह भोली लड़की किसी अतिथि की चाह में इस भाँति स्वप्न न देखती होती। लेकिन वह रूढ़िगत रिवाज, जहाँ कि पिता अपनी पुत्रियों को पाहुनों की सेवा के लिए समर्पित कर देते हैं! उनकी वह सदियों पुरानी प्रथा जब कि माँ परिवार की स्वामिनी होती थी; आज जब कि परिवार की परिधि सीमित हो गई थी, कुछ अजनबी सी लगी। और हिल स्टेशन को गोरों की छावनी बना कर साम्राज्यवादियों ने रूढ़ियों से पीड़ित उस जाति को विज्ञान के युग में भी घने अन्धकार में रख कर उस पाहुने की पूजा का शोषण किया था। कैन्टूनमेंट के अधिकारी, सौदागर, तथा नारी को गुलामी का पट्टा सौंपने वाली पुरुषों की जाति का नारी का सौदा करने का विभत्स रूप सच ही मानवता के पतन की आखरी सीढ़ी थी। दूर-दूर से लोग उस आतिथ्य सत्कार का उपभोग करने आते और वे आदिम निवासी सभ्यता के आडम्बर भरने वाले अतिथियों का सत्कार करते थे। वह आतिथ्य आज गोरों की जाति द्वारा लाये गए घृणित रोगों के श्राप से उस सम्पूर्ण जाति पर एक अन्धेरा छा रहा था और हर एक परिवार में कोढ़ी 'दाई भाई' के रूप में विद्यमान थे। हरएक चार व्यक्ति में एक कोढ़ी को पाकर मैं दंग रह गया था और जब कि कान्ता ने बताया कि उसके दो बाप भी कोढ़ी हैं तथा उनके साथ रहते, खाते-पीते हैं, तो मेरा शरीर एक अज्ञेय छी-छी से भर गया था।

लेकिन कान्ता बहुत रूपवती थी। उसका शरीर लांबा था। उसकी आँखें कागजी बदाम सी फैल' थीं। उसका चेहरा उस ग्रीस की सुन्दरियों की भाँति था जो कि दुनिया की सर्व श्रेष्ठ सुन्दरियाँ होने का गर्व करती थीं। वह एक बलवान लता की भाँति दुबली पतली थी और उसका रंग पकी खुबानी की भाँति दिखता था। वह पहली पहचान में ही बिना किसी खास भावुकता के मेरे बहुत समीप आ लगी थी। वह किसी भी अतिथि को

इसी भाँति अपनाती। वह प्रेम के खास गीत नहीं जानती थी और न किसी आगन्तुक के आगमन से उसके हृदय में हिल्लोरें उठतीं। वहाँ युवतियाँ निराशा के बादल ओढ़ कर आत्महत्या नहीं करती हैं, और न वे किसी अतिथि के लिए मोह ही बढ़ाती थीं। वहाँ के युवक प्रेम की किसी व्याख्या की आग में भी भस्म नहीं होते थे। प्रकृति ने उनको एक सरल जीवन दिया था। वे अतिथि भी प्रकृति की ही देन थे, जिन्हें कि वे युवतियाँ किसी खास भावावेश में अपना कर, आगे उनको भूल जाती थीं। वह भोलापन आगन्तुक के लिए एक आकर्षण भले ही हो, पर विवेक के साथ कि सौदागरों तथा और लोगों ने वहाँ की नारी का शोषण करना शुरू किया तो वह एक ऐसा रोजगार हो गया कि मानवता की वे बेटियाँ धोखा खाने लगीं और सभ्य कहलाने वाला वह इन्सान अपने को भूल कर सामन्ती वेश्याओं की भाँति उनको अपनाने के लिए पागल हो उठा।

वे अतिथि आते और वहाँ कुछ दिन रहते। वे युवतियाँ बिना किसी भावुकता के उनके साथ रहतीं। मायके में वहाँ की हरएक युवती को वह कुमारी हो चाहे विवाहिता अतिथि की सेवा करने का सौभाग्य मिल जाता। वे नारियाँ तो मानव के आज के लोभ की शिकार न थीं और न कभी उनके मन में किसी ईर्षा का कांटा ही चुभ कर पीड़ा पहुँचाता था। वे रमणीक पहाड़ गवाह थे कि वह जाति आज से हजारों साल पहले खैबर के दर्रे से आकर वहाँ बस गई थी। उनके सौन्दर्य में आज भी वही मध्य-एशिया के लोगों वाली ताजगी थी। हिन्दुस्तान के इतिहास ने न जाने कितनी करवटें बदलीं। माना कि दिल्ली की नींव सात सल्तनतों की मिट्टी नींव पर पड़ी है। पांडव, मौर्य, चालुक्य, गुलाम वंश, मुगल और अँग्रेज़ आदि कई साम्राज्य वहाँ पनपे और मिट गए थे। जब कि इस देश में आज भी पाँडवों के बाद केवल गोरों ने प्रवेश पाया था। बीच का हज़ारों साल का इनका कोई इतिहास नहीं है और द्रौपदी का वह पंचाल देश गोरों के

प्रवेश से पहले अपने उस पुराने जीवन में मस्त था। दुनिया की किसी तबदीली से उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहा है।

कान्ता ने बताया था कि उसे अपनी माँ खास सी पसन्द नहीं है। वह बताती थी कि उसके पिता नहीं चाहते कि आज उसकी माँ ज्यादा मायके में रहे। लेकिन माँ को मायका का जीवन पसन्द है। कभी-कभी तो वह धमकी देती है कि उस परिवार को छोड़ कर चली जायगी। माँ असन्तुष्ट है कि यह छोटा परिवार है। लेकिन मैंने तो पाया था कि उसकी माँ पक्की गृहस्थिन थी। परिवार को चुन चुन कर उसने अच्छी मदिरा पिलाई। आज उसने अपनी दस साल पुरानी बनाई हुई निकाली थी। उसे खुशी थी कि आज उनके घर में सालों से एक अतिथि टिका है। उसका रोना था कि कान्ता का पिता उसकी लड़की का जीवन नष्ट कर रहा है। कुछ उसने ऐसा भी बताया था कि वे किसी के बहकाने में आ कर अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाने के लिए उसे राजदरबार की भेंट चढ़ाने की बात सोच रहे हैं। उसने आज एक बकरा मरवाया था और कई तरह के गोश्त बनाए थे। वह आसपास के गाँवों में श्रेष्ठ तथा मीठी शराब बनाना जानती थी। उसके मायके में किसी साधू ने उसे कुछ जड़ी बूटियाँ बतलाई थीं। वह उनको उसमें मिलाती है। पनीर भी ताजा उसने बनाया था। शहद को मोटी रोटी के साथ खाने में बहुत आनन्द आया।

अब गृह स्वामिनी ने परिवार के लोगों में काम का बँटवारा किया। हरएक रात को वह इसी तरह काम बाँटा करती है। वे पति उस अनुशासन को स्वीकार करते हैं। घर का काम निपटा कर सुन्दर खालें बिछा कर उसने मेरा बिस्तर लगाया और मैं बहुत थका था, बस लेटते ही नींद आ गई। मैं न जाने कितनी देर सोया रहा कि किसी ने मुझे उठाने की चेष्टा की। वह कान्ता आई थी। आज उसके जीवन की सब से महत्वपूर्ण रात्रि थी। उसे आज अतिथि की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह बिना किसी भावुकता के अपने को समर्पण करने के लिए आई थी। उसका हृदय प्रेम की किसी भावना से हिल्लोरें नहीं ले रहा था। उसका

बिना शायद अतिथि की उस पुरातन वाली प्रथा से छुटकारा पाना चाह कर भी आज उसे अपनाने तुला है। यदि मैंने उससे यहाँ आने का आग्रह न किया होता तो शायद वह स्वयं यह भार न लेता। किसी भी स्थिति में हो घर में आए हुए अतिथि को वह अपनी बेटी की आहुति देकर हजारों साल पुरानी परम्परा को निभा रहा था। वह प्रथा जो कि एक पिछड़े समाज की उपज थी। उस समाज की जहाँ नारी केवल पुत्रों की सृष्टि करनी थी। पर वह स्वस्थ पुत्रों की फसल आज वहाँ की नारी नहीं दे पा रही थी। वे लड़के माता पिता की बीमारी के शिकार बचपन में ही हो कर अकाल मृत्यु अपनाते थे। वह जाति तो मर रही थी। वहाँ कोढ़ी, अन्धे तथा और तरह तरह के अस्वस्थ लोग थे। और मैंने पाया था कि वह सुन्दर जाति गोरों की छावनी बन जाने के बाद नष्ट हो रही है। वे सभ्य कहलाने वाले, वहाँ कई बुराइयाँ फैला गए हैं। और असभ्य कहलाने वाले वहाँ के निवासी जिन्होंने कि प्रकृति से भोलापन पाया है, सभ्यता की उस आँधी में नष्ट होकर मर रहे थे। आगे शायद वे सदा के लिए नष्ट होकर मिट जावेंगे।

कान्ता टकटकी लगा कर मुझे देख रही थी। उस बारह तेरह साल की लड़की ने अपनी सहेलियों से सुना था कि अतिथि परिवार में टिक कर एक नया जीवन देते हैं। वे सहेलियाँ कभी कुछ नहीं छुपाती थीं। जब तक अतिथि पास रहता उसकी चर्चा करती थीं और उसके चले जाने पर उसे भूल जातीं तथा नए अतिथि के आगमन की बाट जोहती थीं। वे रंगीन रातें किसी के मन को कहाँ छू पाती थीं। वह सब तो आज की बात भर रह जाती और उनका दैनिक जीवन कहीं किसी खास उपेक्षा की बात न सोच पाता था। उन युवतियों का वह जीवन अपनी सीमा के भीतर चुपचाप व्यतीत होता। अतिथि और अप्सराओं की वे बातें किसी नए पुराण की धरती आज बनाने में असफल रहीं। आज तो बाहर लोगों की दृष्टि केवल उनके सौंदर्य का उपभोग करने तक लागू थीं। वे अनजाने ही उनके लिए साधन बन जाती थीं। वे अतिथि फिर जीवन

के किसी दूसरे मोड़ को अपनाने के लिए लालायित रहते थे।

वह लड़की चुपचाप बैठी अपने सहेलियों की बातें कर रही थी। वे अतिथि क्या क्या कहते थे। उपहार क्या देते थे और सदा ही वादा करते कि आगे भी लौट कर आवेंगे, पर वे फिर कभी नहीं आए और न किसी को उनसे दिलचस्पी ही थी। मैं तो चुपचाप उसकी बातों को सुन रहा था। वह बार बार आँखें उठा कर मुझे देखती थी कि मैं उसकी बातें सुन भी रहा हूँ या नहीं। लेकिन मुझे उन बातों से कोई दिलचस्पी नहीं थी और दुख था कि मैं कान्ता का सही अतिथि वाला दरजा न पा सकूँगा। इसके लिए भले ही मुझे कान्ता जीवन भर कोसे, मुझे अफसोस नहीं होगा। वह तो बातें करते करते ऊँघने लगी और न जाने क्या सोच कर उसने अपने दोनों हाथ मेरे गले में डाल कर बताया कि उसकी सहेलियाँ इसी भाँति अतिथियों के गलों में हाथ डाल कर गोदी में सिर रखती थीं। फिर उसने बताया कि वे सहेलियाँ नग्न होकर सो जाती हैं। वह मुझसे पूछने लगी कि यदि मैं चाहूँ तो वह उसी तरह मुझे खुश कर सकती है। सरलता से बताया था कि मेरी खुशी ही उसकी खुशी है और वह मुझे अपना सब कुछ अर्पण कर सकती है। वह मसीन की तरह सब बातें करती थी। अपनी सहेलियों से सुनी बातें नाटक के किसी पात्र की भाँति असफलता से दुहरा रही थीं। कई बार उसने मुझे चूमने का निरर्थक सा प्रयास करते हुए बताया कि सुना अतिथि इससे बहुत खुश होते हैं। उसने अब सिगरेट सुलगाली थी और आधी पीकर मुझे दे दी। फिर उसने अपनी काली रेशमी रूमाल सिर पर बाँध लिया था।

बिना किसी भावुकता के अतिथि को अपना सर्वस्व दे देना, जब कि पुरुष सदा से नारी की इस निर्बलता की मखौल उड़ाया करता है। किसी सुघड़ यन्त्र की भाँति सारे प्रदर्शन में एक भारी पीड़ा मुझे महसूस हुई। कान्ता मेरे व्यवहार पर चुप थी। वह तो अतिथि के प्रति अपना वह कर्तव्य निभा रही थी जो कि उसकी पड़दादी, दादी, माँ तथा वहाँ की नारी जाति सदियों से अपनाती आई है। मैंने उसे बताता कि मुझे उसका

वह आतिथ्य मान्य नहीं है तो उसने सरलता से जवाब दिया था कि वह अपनी सहेलियों को क्या बतावेगी। वह प्रश्न सच ही मुझे अजीब सा लगा। फिर भी मैंने उससे अनुरोध किया था कि वह चुपचाप सो जाय। यह भी कहा था कि अभी तो मुझे वहाँ कई दिन रहना है। वह चुपचाप सो गई थी।

फिर मैं उस सोई हुई लड़की के बारे में सोचने लगा था, जिसे बाध्य किया गया था कि मेरी सेवा करें। लगा था कि वह उस मेमने के बच्चे की तरह है, जिसे कि भूखे भेड़िये को सौंप कर बलिदान की प्रथा निभाई जाती है।

और दूसरे दिन मैं वहाँ से चला आया। मेरी उस हरकत पर गृह-स्वामिनी को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने सुना कि सारा दोष कान्ता पर मढ़ा था। सच ही वहाँ की सामाजिक प्रथा के अनुसार उस जाति की पुत्री का यह सब से बड़ा अपमान था। यदि मैं एक अधिकारी का पुत्र न होता तो लड़की का पिता मेरी हत्या कर डालता।

चार महीने के बाद पिता जी का वहाँ से तबादला हो गया था। हम जब विदा होने लगे तो उसके पिता ने बताया था कि कान्ता राज-दरबार में रखेल की हैसियत से चली गई है। यह सम्मान कम लड़कियों को मिलता है।

३

कान्ता की यही छोटी सी कहानी है। जब वह राजदरबार से लौट कर आई थी तो अक्सर मेरा मजाक उड़ाती हुई कहती थी कि उसकी सहेलियों ने मुझे बहुत कोसा था। उनका कहना था कि कान्ता ने मुझे लुभाने की कोशिश नहीं की, अन्यथा मैं उस भाँति न चला आता। मैंने भी स्वयं जीवन में कई बार सोचा कि क्या वह आतिथ्य ठुकराना उस प्रथा के खिलाफ मेरा सही विद्रोह था। और जब वह हाल में बीमार पड़ी तो उसने बताया था कि उसकी यह भूल थी कि वह अज्ञेय ही मेरी तसवीर को अपने दिल में सदा रखे रही है। यदि वह उस तसवीर को नष्ट कर सकती तो आज भी लौट कर पाँच सात भाइयों के किसी

परिवार की स्वामिनी बन कर शासन चला सकती है। जिस परिवार को वह चाहे साधारण इशारा करते ही उसके पुरुष उसके चरणों में झुक जावेंगे। यह तो मजबूरी में पिता के कहने से उस दरबार में रखैल बनने गई थी। उसने तो अपने पिता को बताया था कि वह मेरे साथ रहने की बात सोचती है; पर उसके पिता ने अपनी विवशता प्रकट की। और उसकी माँ ने कहा था कि यह संभव नहीं है। आज भी वहाँ सब लोगों में यह बात प्रचलित थी कि कान्ता अपने अतिथि को रिझा कर वश में नहीं रह सकी। उसका उतना बड़ा अपमान और क्या हो सकता था।

मैंने एक रोज पूछा था कि वह मेरे उस व्यवहार पर क्या सोचती है। क्या उसने आज तक मुझे माफ नहीं किया है। तो उसने सरलता से कहा था कि सच ही उस चोट को वह कभी भूल नहीं सकेगी। उसे दुख है कि वह अपनी सहेलियों की तरह चतुर नहीं थी। लेकिन वे सहेलियाँ यह सुन कर आश्चर्य करती थीं कि वह एक अतिथि की याद बार बार करती है। रोज ही वहाँ के जीवन में अतिथि आते रहे हैं और कभी किसी ने उनकी याद नहीं की। उसकी माँ ने भी इसका विरोध किया था कि वह उस तरह क्यों परेशान रहती है। सच ही किसी व्यक्ति से प्रेम करना यह उस प्रदेश में नई बात थी। लेकिन वह उसे अपनी भूल कभी नहीं मानती है।

उससे राज-दरबार की बातें भी होती थीं और वह बताती कि वह महाराजा अधेड़ थे और उनकी दाढ़ी से पहले तो उसे बहुत डर लगता था। उसका कमरा बहुत सुन्दर था और जब वे आने को होते तो वहाँ की सजावट मनमोह लेती थी। उसकी दो दासियाँ थीं। वह उस व्यक्ति से सदा भयभीत रहती थी। वह तो एक सुन्दर चिड़िया की भाँति उसे देखता था। वह गुलाम थी और वे उसके मालिक थे। कभी वह उनसे कोई बात नहीं कर सकी थी। वह सुन्दर थी और राजा ने खरीद कर राजमहल में उसे कैद किया था, जहाँ से कि वह शायद कभी छुटकारा

न पाती यदि वह मर न गया होता। फिर भी उसके मरने पर वह बहुत रोई थी। पन्द्रह साल के जीवन में एक नया मोड़ आया था। उन दिनों वहाँ तरह तरह की बातें सुनाई देती थीं। उसकी दासी बताती थी कि कई सरदार उसे अपनाने के लिए तैयार हैं। यह सुनकर वह बहुत दुखी होती थी। एक बार घर छोड़ने के बाद फिर उसने अपने माँ बाप को कभी नहीं देखा था। बाहर की दुनिया की केवल इतनी खबर मिली थी कि उसकी माँ मर गई है तथा पिता के तीन भाइयों में भी केवल एक 'दाई भाई' बचा हुआ था। उसे बाहर के किसी व्यक्ति की जानकारी नहीं थी और इसीलिए जब कि उसे राजमहल से विदाई लेनी पड़ी थी तो अपनी दासी के साथ वह मेरे पास आश्रय लेने के लिए आई थी।

अपनी बीमारी के दौर में वह न जाने क्यों भविष्य के सुनहले सपने देखा करती थी। कभी तो बताती थी कि अच्छी हो जाने पर वह किसी से शादी कर लेगी। वह अकेले-अकेले ऊब जाती है। कभी कहती कि रात सपने में वह एक सुन्दर बच्चे के साथ खेलती रही है और सवाल पूछती थी कि क्या उसे माँ बनने का अधिकार नहीं है। उसकी अवस्था अभी केवल तैंतीस साल की है और वह अपने भविष्य को अँधकारमय पाती है। मैं उसके चेहरे को ताकता हुआ सोचता था कि आज से बीस साल पहले वाली वह लड़की आज भी तो उतनी ही सरल है। समय के साथ वह मुरझाई भी नहीं थी। फिर मैं पाता कि वह सदा पूरा श्रृंगार करके ही मेरे सामने आती है। मेरे पूछने पर कि इसका क्या कारण है उसने बताया था कि उसे डर है उसकी कुरूपता को पाकर मैं वहाँ आना छोड़ सकता हूँ। यह डर न जाने उसे क्यों सदा लगा ही रहता था। इसका कारण वह बताती थी कि क्या बीस साल पहले मैं झूठ कह कर उसे नहीं छोड़ आया था।

एक बार उसने माँग की थी कि मैं अपने छोटे लड़के को उसके आश्रय में दे दूँ। यह जान कर भी कि मेरी पत्नी इसका विरोध करेगी वह प्रस्ताव आगे रखा था। मैंने अपनी पत्नी से इसकी चर्चा की तो

उसका कोरा जवाब था कि वह वेश्या औरत तो कल इस घर में बैठ सकती है। फिर भी क्या समाज में उसे कोई जगह बनाने का अधिकार नहीं था ? मैंने उसे आश्वासन दिया था कि स्वस्थ हो जाने पर मैं उसके लिये कोई ठीक सा साथी ढूँढ दूँगा। यह बात उसे मान्य नहीं हुई। आखिर कुछ सोच कर मैंने आश्वासन दिया था कि स्वस्थ होने पर मैं उसके साथ कुछ दिनों के लिए उसके देश चलूँगा। यह बात सुन कर वह खिल उठी थी। अपने देश की याद भी वह अक्सर बीमारी में किया करती थी। पर बीस साल बाद भी तो वहाँ सौदागर अतिथि बनते थे। आज वहाँ के लोग चतुर हो गये हैं और वह सत्कार अब एक आर्थिक पहलू रखता है। वे युवतियाँ सौदागरों के गुमारतों और अधिकारियों का मनोविनोद करती थीं। वहाँ के लोग घृणित रोगों से गल कर कोढ़ी हो रहे थे। युद्ध की काली परछाँई वाले दिनों में आराम करने के लिए अमरीकन, आस्टरेलिया, इङ्गलैंड के टामी उस कैन्टूनमेंट में आए थे। वहाँ के जंगलों में फलों, दूध तथा और टीन के डिब्बे लुट-कर आए गए थे। टाफी, चाकलेट, तथा और मिठाइयों तथा नई-नई तरह की सिगरेटों का चलन हो आया था। आलू, अखरोट, शहद, घी आदि के बड़े व्यापारियों के गुमाश्ते वहाँ प्रवेश पा रहे थे। जंगल के अधिकारी आज पहले से ज्यादा शोषण वहाँ कर रहे थे। लड़ाई के दिनों की उस नई सभ्यता ने वहाँ के लोगों को आधुनिक छल कपट सिखला दिया था। नारी के व्यापार का एक नया ढाँचा उस समाज ने तेजी से अपना लिया था।

कान्ता के देश के लोग उसे नई-नई बातें सुनाया करते और वह उनको सुनकर मुरझा जाती थी; फिर भी वह एक बार वहाँ जाने का संकल्प कर चुकी थी। वहाँ के मेलों में जाकर मन भर नाचने की बात वह करती। उसका मन फिर भी उड़ा उड़ा सा रहता था। कभी तो वह कहती थी कि शायद वह बचेगी नहीं। अपनी मौत के बाद की बात वह उठाती तो मैं उसे टोक देता था। वह उसकी मौत, स्वयं मैं नहीं सोच

पाता था। कहीं वह सच ही मर जाय तो उस स्थिति से समझौता करना मेरे लिए संभव नहीं था। कान्ता को भयभीत देखकर स्वयं परेशान रहा करता था। बार बार सोचता कहीं वह सच ही मर गई तो एक अभाव सा मानों कि जीवन में आ जायगा। उस पर अधिक न सोच कर मैं उसके जीवन के लगाव पर विचार करता और पाता कि वह मेरे जीवन में आ लगी है। भले ही मैं समाज की किसी मान्यता के लिये उसे ठुकरा दूँ, पर वह उसकी उपेक्षा होगी।

दो महीने हुए उसे टायफाइड हुआ था। वह ठीक होकर स्वस्थ बन रही थी कि उसकी आंतों पर न जाने क्यों सूजन आ गई। उसे टेम्परेचर रहने लगा था। डाक्टर रोग का निराकरण करने में असफल रहे। आखिर एक अनुभवी डाक्टर ने उसे 'नरसिंग होम' ले जाने की सलाह दी। वह कुछ खा नहीं पाती थी। डाक्टरों ने हाथ की इन्टर वेनस को पंचर करके उससे गुलूकोस शरीर में पहुँचाने की व्यवस्था की थी। उसका जीवन केवल इन्जक्सनों पर निर्भर था। वह चुपचाप पड़ी रहती थी। उसका चेहरा सुफेद पड़ गया था। रबड़ तथा काँच की नलियों का एक पूरा जाल वहाँ फैला हुआ मिलता। उनका कहना था कि आँतों पर खून की पत्थरी जम गई है। कुछ स्वस्थ होने पर उसका ऑपरेशन करने का निश्चय किया गया था।

४

मैंने घड़ी देखी चार बज गए थे। हमारी कार दूसरे 'टोल' पर खड़ी थी। बाहर उसी भाँति तेज मेंह की झड़ी लगी थी। शेरसिंह ने सिगरेट माँगी। मैं बरसाती ओढ़ कर नीचे उतर पड़ा। कुछ देर चुपचाप नीचे की ओर देखा। चार हजार फीट नीचे वाला वह शहर केवल बिजुली के बल्बों की झिलमिलाहट में सीमित भर था। वह सच ही बड़ी डरावनी रात थी। कोई न जाने क्यों मेरे मन में बोल रहा था कि कान्ता इस रात मर जायगी। मैं उस मौत से कभी उदासीन नहीं रहा हूँ और जानता था कि जब वह युवती अभी मरना नहीं चाहती और वे डाक्टर आज

के विज्ञान के युग के सब साधनों को उस पर बरत रहे थे, तब वह मरेगी नहीं। पहाड़ों के वे पुराने विश्वास कि ऐसी ही रात में रोगी की मृत्यु होती है, मुझे झूठा लगा। ये अन्धविश्वास हमारी अज्ञानता को व्यक्त करते हैं। कुछ देर मैं वहाँ खड़ा ही रहा। अब हमें दस मील का रास्ता और तय करना था और अच्छी सड़क थी। ऊपर की ओर हिल-स्टेशन में दूर दूर पहाड़ पर रोशनी चमक रही थी। सड़कों पर फैली छोटे छोटे बल्बों की कतारें प्यारी लगती थीं। मैं चुपचाप लौट कर कार पर बैठ गया। शेरसिंह मौन सा सिगरेट फूँक रहा था।

शेरसिंह ने अब कार के भीतर की रोशनी खोल दी थी। उसने मेरी ओर देखा और सवाल पूछा, "बाबू जी, आप बाई को साथ क्यों नहीं रख लेते हैं।"

मैं चाह कर भी उसके सवाल का जवाब नहीं दे पाया। कुछ देर के बाद उसने आखिरी कश खींच कर सिगरेट का टुकड़ा बाहर फेंक दिया। फिर नीचे उतर कर चौकीदार की कोठड़ी की ओर बढ़ गया। मैं शेरसिंह की बात सोचने लगा। वह इस आँधी पानी वाली रात में मुझे सच ही हिल स्टेशन पहुँचाने में सफल हो गया था। अब तो वह चौकीदार को जगाकर ले आया और गेट का ताला खुल गया था। शेरसिंह ने अपनी सीट पर बैठ कर फिर कहा, "आप उन्हें अच्छी होते ही नीचे कोठी में ले आइएगा। बाई को अकेले वहाँ बहुत बुरा लगता है। आप शायद औरत का दिल नहीं समझते हैं। यह बात तो मैं न जाने कब से कहने की सोच रहा था। अब वे अधेड़ हो गई हैं और आगे के लिए कोई ठीक सा ठिकाना चाहती हैं। वैसे तो यह छोटे मुँह बड़ी बात है।"

कार तेजी से चढ़ाई पर बढ़ने लगी। शेरसिंह की बात सच ही विचारणीय थी। वह खुद सुना कि एक रखेल रखे हुए है। उसे वह कहीं से भगा कर लाया था। उसकी पत्नी पहाड़ में है और उसे वह छोड़ चुका है। कभी-कभी घर के लोग आकर धरना दे देते हैं तो वह

उनको कपड़ा-लत्ता व और सामान दे कर बिदा कर देता है। मन में आ जाने पर वह कभी घर पैसे भेज देता है। घर की वैसे उसे कोई चिन्ता नहीं रहती है। उसका कहना है कि पहाड़ की औरत मर्द से ज्यादा काम करती हैं। उसे इसीलिए खाने-पीने के लिए किसी का मुँह नहीं ताकना पड़ता है। वह फक्कड़ तबीयत का आदमी है और अक्सर पी कर मस्त रहा करता है। अपनी रखैल के साथ वह सिनेमा जाता है और नुमायश आदि में भी उसे ले जाया करता है। उसके लिए नए नए डिजाइनों के कपड़े सिलवा कर वह सजा-धजा कर रखता है। उसका कहना है कि वह औरत काफी पाएदार है।

अतएव शेरसिंह की बात मन में ठीक तरह नहीं पैठ सकी। वह तो बताता था कि वह औरत उस पर जान देती है और भाग कर जब उससे आश्रय मांगा तो वह आनाकानी नहीं कर सका था। कान्ता भी तो असहाय सी मेरे पास आश्रय माँगने आई थी और मैंने उसका भार लेना अस्वीकार कर दिया था। मुझमें सच ही वह ताकत नहीं थी कि जिसे पा कर शेरसिंह अपनी रखैल को साथ रख कर समाज में सिर उठा कर चलता है। वह किसी की परवा नहीं करता और उसकी ओर कोई उँगली भी नहीं उठाता है। शेरसिंह की कान्ता से गहरी सहानुभूति है। उसका कहना है कि ऐसी सुन्दर औरत को दुनिया में कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। कई बार वह उसे हिल स्टेशन पहुँचा चुका है। उसका कहना तो है कि ऐसी सुन्दरी आज तक उसने कहीं नहीं देखी है।

वह चुपचाप कार चला रहा था। हम उस हिल स्टेशन के पास पहुँच गए थे। उसकी ड्राइव करने की कुशलता पर मैं दंग रह गया था। वह जरा भी चूकता तो हमारी कार दो तीन जगह नीचे खड्डे में पहुँच गई होती। जब कार चौड़े मैदान में खड़ी हुई तो अभी मेंह बरस रहा था। मैं उतर पड़ा। नीचे लगभग पाँच हजार फीट की दूरी वाला वह शहर देखा। अभी तक वहाँ बिजुली की रोशनी वाली झालर झिलमिला रही थी। मोटर स्टैंड पर रोड-वेज की कई लारियाँ चुपचाप खड़ी थीं।

सुबह होते ही वे मुसाफिरों को नीचे मैदान की ओर ले जावेंगी। रोज इसी तरह वे नीचे से मुसाफिरों को ऊपर लाती हैं तथा फिर यहाँ से नीचे उतारती हैं। यह हिल स्टेशन गरमियों में नया जीवन पाकर जाड़ों में पत-झड़ की भाँति वीरान लगता है।

लकड़ी के बने छोटे-छोटे घरों पर बुकिङ्ग आफिस, होटल, रेलवे का दफ़्तर, पोस्ट आफिस आदि थे। जो कि उस गोलाकार तप्पड़ के नीचे वाले छोर पर बने थे। उनकी टीनें नीले रंग से पुती थीं। वे एक मंजिले घर खिलौनों की भाँति सुन्दर लग रहे थे। मैंने होटल का दरवाजा खटखटाया। बड़ी देर के बाद एक पहाड़ी नौकर ने दरवाजा खोला। मैंने उससे अनुरोध किया कि वह एक ट्रे चाय तैयार करे और फिर शेरसिंह को पुकारा। मैं बड़ी देर तक चुपचाप सिगरेट फूँकता रहा। कभी शेरसिंह की ओर देखता था। वह उस नौकर से न जाने क्या-क्या बातें कर रहा था। बाहर सुबह का प्रकाश चमक रहा था। उसको देख कर सन्तोष हुआ। लगा कि मन में जो जगह खाली खाली रात को लगती थी वहाँ यह फैल कर हृदय को स्वस्थ बना रहा था।

कुछ देर के बाद नौकर ने चाय की केतली मेज पर रखदी। मैंने एक प्याला चाय बना कर शेरसिंह को दी और नौकर से उसके लिए चार अंडों का आमलेट बनवाया। शेरसिंह ने चुपचाप चाय पी और बाहर चला गया। वह कार में कुछ देर बैठा रहा। जब लौट कर आया तो मुझे लगा कि वह कम से कम एक पव्वा चढ़ा कर आया है। उसका यह इस तरह का पीना कोई नई बात नहीं थी। वह चुपचाप बैठ कर आमलेट उड़ाता रहा। उसे उसी तरह बैठा छोड़ कर मैं बाहर चला आया।

मैं कुलियों के पास पहुँचा। अब मेंह थम गया था, पर हवा के तेज झोंके चल रहे थे। मैंने कुलियों को जगाया और रिक्शा तैयार करने को कहा। फिर कार से अपना सामान उतरवाया। 'प्लाज्मा' की

बोतलें बरसाती की जेब पर डालीं। ठीक तरह बैठ कर उनसे कहा कि वे अस्पताल की ओर ले चलें।

हमारा रिक्शा चढ़ाई की ओर बढ़ रहा था। चारों ओर घना कुहरा छाया हुआ था। कुहरे को चीरते हुए हम बढ़ रहे थे। बड़ी-बड़ी इमारतें काली-काली उस सुफेद चादर से ढकी-सी लग रही थीं। वे रिक्शे वाले हाँफते हुए भी दौड़ रहे थे। उन चक्करदार सड़कों को चीर कर रिक्शा आगे बढ़ रहा था। ऊपर पहाड़ी पर वह अस्पताल की इमारत देवदारु के घने जंगल के बीच चुपचाप खड़ी थी। वहाँ कान्ता है और उसी के लिए तो मैंने आधी रात को यह सफर तय किया था। उसकी बातों में आज भी लोच है। वह बहुत प्यारी लगती है। उसका वह रूप मन मैला नहीं करता है। वह पिछले दिनों बहुत खुश थी कि मैं उसके साथ गाँव चलूँगा। लेकिन एक सवाल उसने अनजाने सा पूछा था कि क्या आज मैं उसका अतिथि बनूँगा या उसी तरह धोखा दे कर भाग आऊँगा। वह अब मुझे भाग कर नहीं आने देगी। और उसने सरलता से यह भी पूछा था कि क्या वह वहाँ रह कर अपना मातृत्व पूरा नहीं कर सकती है। उसकी बातों का जवाब मैं हँस कर यही देता था कि यह सब तो उसी समय सोचा जायगा।

उसने कहा था कि वह मुझे दूर दूर पहाड़ों की चोटी पर ले जावेगी। जहाँ कि अप्सराएँ रहा करती हैं और जादू टोना करके मुझे पशु बना कर रखेगी। तब मैं भाग कर नहीं आ सकूँगा और वह अपनी सहेलियों से गर्व से कहेगी कि उसका अतिथि सदा के लिए उसके साथ आ गया है। कभी कहती थी कि, मैं पेड़ के नीचे बैठा रहूँगा और वह पेड़ पर चढ़ कर पके फल गिरावेगी। उसने वादा किया था कि वह देवदारु के बीजों को भून कर उनको छील कर मुझे खिलावेगी। वह कहती थी कि वह शराब में फूलों को मिलावेगी और जड़ी बूटियाँ मिला कर अपनी माँ से अच्छी पेय देगी। उसका कहना था कि वह नाशपातियों के बाग के बीच में अपना मकान बनावेगी। वह मकान पिछले मकानों की भाँति नहीं होगा

उसने वादा किया था कि वह मुझे अपने मातृत्व की सफलता के बाद सदा के लिए छुटकारा दे देगी। आगे जीवन में उसे कोई अभाव नहीं घेरेगा।

वह बीमारी में इन सवालों को उठाया करती थी। मैं चुपचाप उसकी बातों को मान लेता था। सोचता कि बीमारी से वह एक बार छुटकारा पा जाय तो फिर आगे उसे समझा बुझा लूँगा। उसके किसी प्रस्ताव पर अधिक इसीलिए नहीं सोचा करता था। अब वे बातें तो कल्पना सी लगती थीं। लोग बताते थे कि मरने से पहले मानव अपने जीवन की सारी व्यथा को व्यक्त करता है; तब शायद वे सब भी कान्ता की इच्छाएँ भर रह जावेंगी। जिनको कि कभी वह पूरी करने के स्वप्न देखा करती थी। इस समाज में उसे पूरा मौका नहीं मिला था। अन्यथा वह इस तरह उस गठरी को लेकर मौत के दरवाजे पर खड़ी नहीं मिलती।

रिक्शा अस्पताल की इमारत के बाहर खड़ा हो गया। मैंने कुलियों को पैसा देकर बिदा किया। बहुत थक गया था। अतएव चुपचाप बाहर पड़ी कुरसी पर बैठ गया। कुछ देर के बाद लेडी डाक्टर बाहर आई तो उसने मुझसे पहला सवाल पूछा कि क्या मैं 'प्लाज्मा' ले आया हूँ। मेरे हाँ करने पर वह बोली, "मरीज की पल्स सुबह से गिर रही है। हम आपका ही इन्तजार कर रहे हैं। इस बार ऑपरेशन करने का हमने निश्चय किया है। यदि बीच में ही पल्स धोखा न दे गई तो हमें विश्वास है वह शायद जीवित रहेगी।"

वह तेजी से भीतर चली गई थी। फिर मैंने सुना कि वे उसे ऑपरेशन के कमरे में ले गए हैं। एक घन्टे के बाद डाक्टरनी ने मेरे हाथ में जमे हुए खून के दो सख्त टुकड़े देकर बताया था कि "ऑपरेशन सफल हो गया है। मरीज की पल्स ठीक है। अब घबराने की कोई बात नहीं है।"

मेंह बन्द हो चुका था। बादल भी छंट गए थे। धूप चमक रही थी। और नीचे का वह शहर हरी-भरी घाटी में फैला हुआ था। उसमें खड़ी इमारतें खिलौनों की भाँति लग रहे थे। वह दृश्य मन को मोह रहा था।

शेरसिंह को मैंने बताया था कि यदि वह मेरी सहायता न करता तो शायद कान्ता न बचती। उसका जीवित रहना मन में एक नई उमंग लाया और मैंने निश्चय किया था कि स्वस्थ होने पर उसकी किसी भी माँग को नहीं ठुकराऊँगा।

—अब मैं कान्ता के पास खड़ा था। वह चुपचाप आँखें मूँदे सो रही थी। मैं उसे मूकता से सुझा रहा था कि मैं उससे प्रेम करता हूँ।

रामेश्वर बाबू

बीड़ी की कस खींच कर बहुत सा धुँआ उड़ाते हुए परेशानी के साथ रामेश्वर बाबू बोले, "अब जिन्दा रहने की कोई आशा नहीं है। समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय। लड़की की शादी में दो हजार फंड से लिया था। अब जा कर उसकी किश्तें पूरी हुई हैं। तुमको सुनकर आश्चर्य होगा कि पिछले दो साल हमने पचहत्तर रुपए में गुजर की है। और परिवार में एक दो नहीं सात प्राणी हैं। कार्ड का राशन महाजन लेता है और हम उससे मंहगे दामों पर उसी राशन को खरीदते हैं। चार साल से परिवार के लिए एक भी कपड़ा नहीं खरीदा है।"

कैलाश ने सावधानी से रामेश्वर बाबू की ओर देखा। उमर अधिक नहीं, यही पैंतालिस साल के लगभग होगी। बीस बाईस साल से नौकरी कर रहे हैं। सात आठ साल तो कभी कोई बाबू छुट्टी पर जाता तो साल में तीन चार महीने नौकरी पा जाते थे। कुछ ट्यूशन करते और आगे चार साल टेम्परेरी रहे। तब कहीं जाकर चालीस से एक सौ बीस के ग्रेड की पक्की नौकरी मिली थी। इस समय मंहगाई मिला कर एक सौ तीस मिलता है, पर काट कूट कर हमेशा पहली को सत्तर-अस्सी से अधिक कभी नहीं लाते हैं। वह उनको पन्दरह बीस साल से जानता है और अपना सुख दुख वे उसे बताते नहीं चूकते हैं। वेतन का बड़ा

भाग महाजन पहली को वसूल करके ले जाता है और साथ ही अपनी लाल बही खोल कर बता जाता है कि अब कितना हिसाब बाकी है। उस बही को देख कर उनका खून सूख जाता है। लेकिन वे उस महाजन का अहसान नहीं भूल सकते हैं जो कि किसी भी तरह क्यों न हो उनकी गृहस्थी को चलाने में मदद तो दे रहा है।

लेकिन उसने रामेश्वर बाबू को कभी इतना उदास नहीं देखा था। वे चुपचाप बीडी फूंक रहे थे और अपने मन को कुरेदते से लगे। उनका चेहरा उदास था और शायद वे किसी भारी चोट के कारण अपनी परेशानी को छुपाने से असमर्थ थे। तभी उनका छोटा लड़का बाहर सड़क से आया। उसके हाथ में आइसक्रीम था और वह उसे चूस रहा था। उसके पीछे फेरी वाला आया। चुपचाप उसे एक आना दे कर विदा किया और फिर लड़के के कान उमेठते हुए वे उसे भीतर ले गए और एक चाँटा रसीद कर बोले कि वह अवारा हो गया है। बच्चा चीख रहा था। उसकी बड़ी बहिन आइसक्रीम न पा सकने पर गुस्सा थी ही उसने मौका पाकर कहा, "पिताजी परसों यह दूकानदार से लेमन ड्राप माँग रहा था और एक दिन इसने महेश के यहाँ तस्तरी पर छूटी जूठी मिठाई भी खाई है।"

यह सुन कर वे कुछ देर तो चुप रहे और फिर उठ कर उस लड़की के कान पकड़ कर बोले, "और तू ही सब से भली है। स्कूल में दूसरे की चुगली खाना ही सीख रही है।"

लड़की भीतर माँ के पास शिकायत ले कर पहुँची तो माँ ने दरवाजे की आड़ में आकर ताना मारा, "बच्चों के लिए कभी एक पैसे की चीज तो लाते नहीं हो, उल्टे रोज आ कर डाँट डपट करते हैं। न जाने क्यों इन्होंने मेरी कोख में जन्म लिया है। मोहल्ले में कई औरतें एक बच्चे के लिए तरस रही हैं और यहाँ यह हाल है कि उनको पेट भर खाना भी नसीब नहीं है।"

रामेश्वर बाबू पत्नी से कुछ नहीं कहते हैं। फिर भी घर में बच्चों के

रोने से अजीब सी मायूसी छा गई। पत्नी चुपचाप रसोई बनाने लगी। अब तक बड़ा लड़का खेलने से लौट आया था और उसके पाँव पर चोट लगी थी। पड़ोसियों के लड़के ने फुटबाल खेलते हुए उसे लंगड़ी दी थी जिससे कि वह धड़ाम से गिरा था। और रोज की बात होती तो वे पड़ोस में उलाहना देने जाते कि क्या गरीब के लड़कों में जान नहीं होती है। पर आज वे चुप रहे और लड़के को हिदायत दी कि कल से वह खेलने न जाया करे। मोहल्ले में वे बेकार का झगड़ा मोल नहीं लेना चाहते हैं। लड़के को डाँटा कि भीतर जाकर चुपचाप पढ़े। वे उठे और भीतर से छोटे गोदी के लड़के को लाकर खिलाने लगे।

अब वे कुछ देर तक न जाने क्या सोच कर बोले, "ऐसी जिन्दगी भी कभी आएगी विश्वास नहीं था। पहले तो सात आठ रुपया में सारी गृहस्थी का सामान आ जाया करता था। दो इन्सोरेन्स भी करा रखे थे। घर में भी वक्त बे वक्त के लिए कुछ जमा रहता था और आज तो पूरा पेट खाना नहीं मिलता है। सावित्री की माँ शायद ही कभी तीन साल में पूरा पेट खाना खा पाई हो। उस पर रोज ही कोई न कोई रोग लगे ही रहते हैं। घर की बीमारी का इलाज कराने को भी तो पैसा चाहिए और जिस चीज का दाम देखो बढ़ता ही जा रहा है। इस पर तुक्का यह है कि सरकारी नौकर कहलाते हैं। गाँव वाले सोचते हैं कि यहाँ मौज उड़ा रहे हैं। हर एक चिट्ठी भेजता है कि उसे कुछ कर्जा दे दिया जाय।"

कैलाश ने रामेश्वर बाबू की ओर देखा। उनके सिर के बाल बिलकुल सफेद पड़ गए थे। दाँत भी दो टूटे थे और एक टूटी कमानी का चश्मा डोरी से बाँध कर आँखों पर लगाए हुए थे। चेहरे पर झुरियाँ पड़ी थीं। बदन की हड्डी हड्डी बनियाइन पर उभरी लगती थीं। लगता था कि मानव का एक भद्दा स्वरूप वे हों। आज की सारी मुसीबतों के वे प्रतीक लगते थे। उनमें कोई उत्साह इस गाड़ी को चलाने का नहीं मिला। वह वेतन आज परिवार को पूरा पेट खाना तक नहीं दे पा रहा था। वह सारा

परिवार सच ही नष्ट हो जायगा। शहर के भीतर किसी गली में वह परिवार रहता है। वह एक एकाई नहीं है। न जाने कितने और परिवार इसी भाँति शहर की गलियों में अपने दिन पूरे कर रहे हैं।

तभी मकान मालिक का लड़का आयाऔर कह गया कि उसके पिताजी ने कहा है कि एक सप्ताह के भीतर यदि सारा पिछला किराया न चुका दिया जायगा तो वह वकील से नोटिस दिलवा कर मकान खाली करवा लेगा। वह लड़का चला गया तो वे हँस कर बोले, "सारी दुनिया ही नोटिस दे रही है पर पैसा कहाँ से लाया जाय। पहले जान पहचान वालों से कुछ उधार भी मिल जाता था, पर आज तक जिससे लिया पिछले तीन साल में किसी का नहीं चुका पाया हूँ। अब किससे पैसा माँगा जाय समझ में नहीं आता है। अपने दिल की बात बता दूं, जिन लोगों से पैसा लिया उनके आगे शर्म से गरदन झुक जाती है। पर क्या किया जाय बिलकुल लाचारी है। अब आगे तो वह रास्ता भी बन्द है। महाजन का भी इतना बढ़ गया है कि यदि उसने राशन देनी बन्द करदी तो फिर सारा परिवार मर जायगा। इसीलिए तुमको बुलाया है कि कहीं कोई काम मिल जाय तो ऑफिस के बाद करूँगा। कुछ पैसा तो मिलेगा। कुछ टाइप का काम हो या किसी सिनेमा में दूसरे शो पर टिकट बेचने का काम।"

रामेश्वर बाबू की बातें, उनकी अधीरता सच ही एक परेशानी की बात थीं और वह परिवार सच ही अब अपना आर्थिक भार नहीं संभाल सकता है। न जाने किस समय चरमरा कर गिर पड़े। फिर उनका यह सवाल कि आफिस के बाद काम करेंगे, इधर उनकी तबीयत ठीक नहीं रहती है। सुबह साढ़े आठ बजे दफ्तर के लिए रवाना होते हैं और साढ़े तीन मील की दूरी पैदल नापते हैं। शाम को तो सात बजे से पहले कभी नहीं लौटते हैं। जाड़े और बरसात में तो यह नहीं अखरता, पर गरमियों में काफी कष्ट होता है। किसी जमाने में वे और सवारियों के साथ एक्के पर जाते थे, पर सात आठ साल हुए खर्चे की कमी में यह मद भी काट

देनी पड़ी थी। आज तो ऑफिस से लौट कर वे बहुत थक जाते हैं। कभी कभी तो यह कहते हैं कि उनका शरीर निर्जीव हो गया है। एक बार तो वे तीन घंटे तक बेहोश रहे थे। डाक्टर ने आकर बताया था उनको कोई टौनिक लेना पड़ेगा। यह भी सुझाया था कि उनको ज्यादा मेहनत नहीं करनी चाहिए। लेकिन आराम का सवाल कहाँ है। जब तक साँस चल रही है, नौकरी करनी है। नौकरी से पैसा मिलता है और आगे पेन्शन के हकदार भी वे होंगे। फिर सरकारी नौकरी है, जिससे कि मोहल्ले में कुछ इज्जत बनी है। लेकिन इस सब सन्तोष से पेट नहीं भरता है।

फिर उन्होंने भेद की बात बताई कि महीने भर में सात व्यक्तियों के उस परिवार में एक प्राणी और आने वाला है। जिसके स्वागत के लिए कम से कम सौ रुपए की थैली चाहिए। यह रुपया कहीं न कहीं से लाना ही पड़ेगा अन्यथा परिवार पर भारी मुसीबत आने वाली है जो कि टल नहीं सकती है। यह सच है कि एक लड़की की शादी के बाद पाँच बच्चे बचे और नए अतिथि के बाद फिर छै बच्चे हो जावेंगे। बच्चों की इस पैदावार को वे ईश्वर की देन मानते हैं। यदि कोई सलाह देता है कि अब उनको संयत से रहना चाहिए तो वे हँस कर कहते हैं कि यह उनके हाथ की बात नहीं है। बात यहीं पर निपट नहीं जाती है। उनका दामाद अलग नाखुश है कि वे उस ओर उदासीन रहते हैं। दो बार वह पत्र भेज कर माँग कर चुका है कि पचास रुपया भेज दिया जाय। अपने पत्र का उत्तर न पाकर वह उलूल जलूल बातें लिखकर भेजता है। सास भी सुना बहू को ताना मारती है कि बाप की हैसियत नहीं थी तो शादी क्यों की, लड़की को घर पर ही रख कर तिजारत चलाते। यह बात तीर की तरह उनके दिल पर चुभती है। यह भी सच बात है कि आज तक दो साल में वे उसे एक बार भी नहीं बुला पाए हैं। और सच पूछा जाय तो एक तरह उससे उनका सम्पर्क टूट सा चुका है।

बात यहीं पर निपट नहीं जाती है। दूसरी लड़की चौदह की हो गई

है और वह इस तरह बढ़ रही है कि मानों सोलह सत्तरह साल की हो। आधे पेट खा कर भी वह खिलती जा रही थी, यदि गरमियों में उसे टायफाइड न हो गया होता। उस रोग के दौरान में एक बार उन्होंने मनाया था कि वह मर जाती तो पिंड छूटता। मानव के ममता वाले बन्धनों पर आज उनकी कोई आस्था नहीं रह गई थी। वे स्वयं पाते हैं कि आज इस समाज में उनकी सामाजिक स्थिति नहीं है। फिर यह भी सच बात है कि आज से सात आठ साल पहले उनका अपने मित्रों का एक दायरा था। सब सुख दुख में एक दूसरे की मदद करते थे। खुद उनकी बैठक में हर इतवार को चौपड़ जमती थी और उनकी पत्नी अतिथियों को चाय पकोड़ी खिला कर विदा करती थी। लड़ाई के दिनों में बहुधा संध्या को बैठक में ब्रिज जमती थी और हिटलर की बहादुरी की चर्चा गूँज उठती थी। रोजाना अखबार के समाचारों की आलोचना में हरएक शरीक होता था। आगे फिर कन्ट्रोल का जमाना आया और धीरे धीरे उनकी बैठक फीकी पड़ने लगी। देखते देखते ही उनकी वह बिरादरी छिन्न भिन्न हो गई थी। आगे आफिस में हरएक अपना दुखड़ा रोता था। आपस में न जाने क्यों सहानुभूति का दौर भी चूक गया था। हरएक अपनी परेशानियों को फैला कर उनमें छुपा रहना चाहता है। चौपड़ के वे खिलाड़ी और ब्रिज के माहिर सुबह-शाम को राशन की दूकान, मिट्टी तेल के, कपड़े के चक्कर, अच्छे नमक की तलाश, लकड़ी के ठेकेदार की खुशामद व महाजन की चापलूसी में रहते थे। जो आर्थिक सूत्र हरएक को एक में गुँथे हुआ था, उसके टूट जाने पर वे ऐसे बिखरे कि फिर कभी आपस में एक साथ नहीं जुड़ सके।

लड़ाई समाप्त होने पर रामेश्वर बाबू ने एक बार फिर चौपड़ की गोटियाँ ढूँढ़ ढाँढ़ कर जमा कीं, अपना हुक्का भी ठीक करवाया। पुराने साथियों को फिर समझाया था कि अब बुरे दिन बीत गए हैं। लेकिन बैठक फिर भी नहीं जमी। लड़ाई के दिनों वाला राशन कार्ड वैसे ही बरकरार था। खाने पीने की व रोजाना जरूरत की चीजों की तलाश में

सुबह शाम चक्कर काटना पड़ता था। इतनी फुरसत किस को थी कि थोड़ा वक्त निकाल शाम को किसी जगह बैठ कर एक बाजी ताश की खेलते। लेकिन रामेश्वर बाबू ने हार नहीं मानी थी। पन्दरह अगस्त को जब कि आजादी मिली तो उन्होंने एक बार अपने यहाँ कुछ लोगों को जमा करके फिर चेष्टा की कि उनका क्लब चले। दो चार रोज नई अपनी सरकार की आलोचना-प्रत्यालोचनाएँ चलीं। आने वाले जमाने में दिन अच्छी तरह कटेंगे व मुसीबतें हल हो गई हैं, इस बातकी सबको उम्मीद थी। लेकिन एक सप्ताह से ज्यादा दिन तक वह कार्यक्रम नहीं चल सका। आगे सब अपने अपने परिवार की सीमाओं के भीतर खो गए और हरएक दिन प्रति दिन महसूस करता रहा कि वह किसी भारी मुसीबत में फँस गया है। जिससे छुटकारा पाने के लिए उसे न जाने क्या बलि चढ़ानी पड़े। जिस पुरानी धरती पर कि सदियों से कुछ आपसी स्नेह बन्धन पनपे थे, आपस में जो अपनत्व की एक मजबूत डोरी मानव इतिहास के साथ मजबूत हुई थी। वह सब मिट गया था। वे नाते रिश्ते टूट गए थे। न जाने क्यों एक नाउम्मेदी सब को घेरे हुए थी। उस युद्ध काल वाली जिच को तोड़ने में रामेश्वर बाबू स्वयं असफल रहे थे। सच ही वह उनके जीवन की एक बड़ी हार थी।

वे पाते कि आज आत्म-सम्मान नाम की कोई स्थिति समाज में नहीं है। एक निम्नआत्मभाव यदा-कदा उनके मन को घेर लेता और वे मन मसोस कर रह जाते थे। अब तो लगता था कि वे अकेले ही अपने परिवार के साथ इस दुनिया में है। किसी से सहारे की आकांक्षा करनी एक मृगतृष्णा थी। वे अकेले-अकेले कई योजना बनाते थे कि कुछ रुपया कमाया जाय। कभी कन्ट्रोल के बाबुओं से ईर्षा होती कि वे कैसे दोनों हाथों रुपया कमा रहे हैं। एक उनका कार्यालय है कि उससे किसी का सीधा सम्पर्क ही नहीं है। जब कि रुपया कमाने का कोई और रास्ता नहीं सूझा तो उन्होंने एक रुपये वाली पहेलियाँ सुलझाकर अपनी आर्थिक दशा सुधारने का सस्ता नुस्खा सोचा; पर चार पाँच साल में

एक रुपया भी उनको नहीं मिला था। हर बार वे जब पहेली भेजते थे तो भविष्य की एक कल्पना करते थे। बड़े उत्साह से उस दिन नतीजा देखने जाते और ज्यादा गल्तियाँ आने पर अखबार वालों को कोसते कि वे बेईमानी करते हैं। कभी-कभी वे ललचाई आँखों से इनाम पाने वालों की तसवीरें देखते। पत्नी को भी वे उन तसवीरों को दिखा कर बताते थे कि एक दिन वे इनाम ले कर ही छोड़ेंगे। पत्नी पहले तो चुप रहती थी, पर आज तो परिवार की रक्षा करने के लिए एक-एक पैसा चाहिए। अतएव वह इस तरह जुआ खेलने की पक्षपाती नहीं है। और यह पहेलियाँ सुलझाना अब पति-पत्नी में मनमुटाव ले आता है।

उनके मन में एक बात फिर भी चोट करती है। उनके साथ के मेट्रिक पास आज बड़े-बड़े ओहदों पर हैं। उनके कुछ नालायक साथी भी अच्छी कमाई कर रहे हैं, पर एक अकेले वे ही हैं कि जिनकी हालत ठीक नहीं है। उनका रोना है कि सामान्य घरानों के लड़के मौज उड़ा रहे हैं। इस लड़ाई ने सब की कायापलट कर दी थी। नालायक लड़के जमादार-सुबेदार हो गए थे। लड़ाई के दिनों में वे भी फौज में जाने की बात सोच कर एक दिन दरख्वास्त देने का निश्चय कर रहे थे कि पत्नी के आँसुओं के कारण चुप रह गए। यह पत्नी सच ही उनके लिए एक परेशानी शुरू से ही रही है। पहले सास बहू में नहीं पटी। सास का कहना था कि बहू बहुत चटोरी है। रोज ही सास बहू लड़ा करती थीं और मोहल्ले में एक तमाशा हो जाता था। बहू सास के दादा-पड़दादा को वह खरी खोटी सुनाती थी कि सब लोग चुप रह जाते थे। पहले तो उन्होंने भी माँ का पक्ष लेकर अपनी बहू की पिटाई की थी, पर एक दिन बहू ने पैंतरा बदल कर जब उनकी एक डंडे से मरम्मत की तो फिर उस दिन से वे चुप रहे। सास-बहू संग्राम फिर भी चलता ही रहा। चार साल पहिले सास की मौत के बाद घर में कुछ शान्ति आई थी।

अपनी बहू से उनको सन्तोष नहीं है। वह मोहल्ले की औरतों के साथ बहुधा लड़ा करती है। आज भी वह जानपहचान की औरतों से

पैसा कर्जा ले लेती है। झूठ बोलने में उस्ताद है, हजार वे उससे गुस्सा रहते हैं। मोहल्ले की बूढ़ियाँ यदा-कदा उनसे उसकी शिकायत करती हैं। एक रोज इसीलिए ताव में आकर उसकी पिटाई करके अपनी सारी झुंझलाहट उतारनी चाही थी। लेकिन पत्नी तो उनके पाँवों में बेहोश हो कर गिर पड़ी थी। आध घंटे के बाद होश आया तो बताया कि कई रोज से वह पूरा पेट खाना नहीं खा पाई है। बच्चे सब खाना खा जाते हैं और उसके लिए कुछ नहीं बचता है। इस बात से उनके दिल पर बड़ी चोट लगी थी। एकाएक ख्याल आया था कि यदि कहीं पत्नी मर गई तो क्या होगा। वह भविष्य सच ही काफी परेशानी ले आया और उस दिन उनको ज्ञात हुआ था कि वह परिवार मर रहा है। आज परिवार की प्रतिष्ठा का सवाल नहीं है। उनको तो उसे जिन्दा रखना है। पर वे तो असमर्थ हैं, कुछ नहीं कर सकते हैं। वह एक बड़ी चोट थी। उस रात भर वे परेशान रहे। कभी कहीं उन्होंने स्वर्ग और नर्क की तसवीर देखी थी। लगा कि उनका सारा परिवार मर कर नर्क की ओर जा रहा है। यहीं इस दुनिया में वे क्या सुख लूट रहे हैं। यह नौकरी आज उनका पेट नहीं भर पा रही है। उनके बच्चे तिल तिल कर मौत की अंधेरी घाटी की ओर बढ़ रहे हैं। बाजार में खाने पीने की सभी चीजें हैं, पर उनके पास पैसा नहीं है। वेतन और मँहगाई मिला कर भी खाने पीने का अन्न वे नहीं खरीद पाते हैं। कपड़े का तो सवाल उठाना ही गलत होगा। आज सच ही अब वे हार गए थे।

२

अब रामेश्वर बाबू उठे और लड़की को भीतर दे आए। फिर लड़कों को सुझाया कि पढ़ने बैठ जावें। फूल पुष्प बरसाए कि सब हरामजादे हैं। पढ़ाई पर किसी का मन ही नहीं लगता है। सेंत का खाना खाना और मटरगश्ती करना। बड़ा लड़का पिछले साल मैट्रिक में फेल हो गया, दूसरा पिछले दिनों खेलने से लौटा तो हाथ तोड़ करके ले आया था और तीसरे के बारे में अड़ोसी-पड़ोसी कहते थे कि वह चोरी करने लगा है।

कई परिवार वाले अपने बच्चों को उसके साथ रहने पर एतराज करते थे। एक पड़ोसी ने तो एक रोज आकर कहा था कि उनके लड़के को बहका उसने एक अंगूठी चोरी करवा कर बाजार में बिकवा दी और फिर दोनों कई रोज तक सिनेमा देखते रहे और होटलों में खाना खाते रहे हैं। पड़ोसी ने कहा था कि यदि यही हाल रहा तो वह आगे नामी डाकू होगा। पड़ोसी की इस बात पर वे चुप रह जाते पर पत्नी ने भीतर से तेल छिड़का था कि डाकू-बदमाश होंगे कहने वाले। इस पर उनको चेतना आई तो पड़ोसी को समझाया था कि यदि उनके घर की बात न होती तो वे इस अपमान का बदला चुकाते। तब से सच ही वे अपने हमदर्दों और दुश्मनों की सूची बना कर रखने लगे थे।

कामता बाबू की पत्नी उनकी बीवी की बुराई करती है। उसका कहना है कि यदि बहू समझदार होती तो आज घर की यह दशा न होती। पहले तो चार पैसे क्या मिलते थे कि मोहल्ले पर अपना बड़प्पन दिखलाया करती थी कि बिना दो तीन तरकारी के खाना अच्छा नहीं लगता है। पहनने के लिए भी नए डिजाइन के कपड़े चाहिएँ। और कामता बाबू अपनी पत्नी की तारीफ करते हैं। सुबोध बाबू का खयाल है कि उनके लड़के होशियार हैं। अफसरों की खुशामद करके बड़े लड़के को राशन की इन्सपेक्टरी क्या दिला दी है कि दिमाग चार आसमान पर हैं। अक्सर उनके घर आ कर बच्चों को समझाया करते हैं कि इम्तहान जल्दी पास करलें। और उनको लगता है कि यह उनके फेल होने वाले लड़के के प्रति व्यंग है। रमेश की माँ की शिकायत है कि लड़की को अच्छे घर में नहीं दे सके हैं। यदि थोड़ी कंजूसी न करते तो यह बात न होती। रमेश की बहिन की शादी एक सब इन्सपेक्टर से हुई है। पर आज मोहल्ले का बच्चा बच्चा जानता है कि रमेश के बाप ने सब रजिस्ट्रारी के जमाने में मुरदों के अंगूठे तक जाली वसीयतनामों पर लगा कर लूट मचाई थी। लेकिन सुरेश बाबू का कसूर यह है कि कारोबार में हजारों कमा रहे हैं और रामेश्वर बाबू उनसे बीस रुपये कर्ज मांगने के लिए गए तो साफ

कह दिया कि आज कल उनकी अपनी हालत ठीक नहीं है। बात यहीं पर निपट नहीं जाती है। उनकी पत्नी ने सारे मोहल्ले की औरतों से कहा कि पाँच साल हो गये, अभी तक पिछले चालीस रुपए चुकाए नहीं हैं और ऐसे बेशरम हैं कि दुबारा कर्जा निकालने के लिए आ बैठे हैं। इस तरह की तौहीनी की बातों से उनके मन में प्रतिहिंसा की आग सुलगती थी। वे सोचते थे कि यदि एक पहेली में पाँच सात हजार रुपया आ जाय तो वे सब का कर्जा चुका कर एक छोटी मोटी दूकान खोल लेंगे। अब नौकरी पर मन नहीं लगता है। बिना रुपए की आज उनकी कोई हैसियत नहीं है।

वे कैलाश को कई बार बता चुके हैं कि उनकी नियत खराब नहीं है। वे जब कभी कर्जा निकालते हैं; तो यह निश्चय कर लेते हैं कि किसी तरह उसे चुकावेंगे। पर वेतन का पैसा तो इस तरह खर्च हो जाता है कि उनका नेक इरादा कभी पूरा नहीं हो पाता है। वे यह मान लेते हैं कि आज अब इतने बेशरम जरूर हो गए हैं कि अपने कर्जदारों के आगे जाते हुए झेंप नहीं उठती हैं। फिर भी यह सच बात है कि आज कहीं जाने की तबीयत नहीं करती है। लेकिन यह घर भी काटने को दौड़ता है और बीबी बच्चों किसी का मोह नहीं रह गया है। आफिस जाता हूँ और चुपचाप काम करता हूँ। हेडक्लार्क अक्सर काम से सन्तुष्ट नहीं रहता है, पर काम करने को मन भी तो नहीं करता है। भारी थकान वहाँ लगती है। कुछ भी शक्ति शरीर में नहीं बची हुई है। कभी तो झुँझलाहट उठती है कि नौकरी छोड़ दूँ। आज किसी की बात सुन कर सिर से पाँव तक आग सुलग उठती है। कहीं चैन नहीं है। कुछ अच्छी स्थिति होती तो बच्चों की ठीक तरह पढ़ाई चलती। वे गवे नहीं हैं और उन पर थोड़ी मेहनत की जाय तो आसानी से आगे कम्पीटिशन में निकल कर नौकरी पा जाते। पर दुर्भाग्य है कि इस घर में पैदा हुए हैं।

कमरे में मिट्टी के तेल की डिबिया जल रही थी, कारण कि तेल

फिर बाजार से लोप हो चुका था। वे बच्चे उसके चारों ओर बैठे तोते की तरह कुछ रट रहे थे। रामेश्वर बाबू अब कुछ संभल कर बोले, "सुनती हो, एक गिलास चाय तो बना दे।"

कैलास के ना ना करने पर भी चाय को कहा गया और कुछ देर के बाद एक दुबली पतली लड़की एक प्याले पर चाय ले आई। कैलाश ने एक घूँट पीकर प्याली रख दी। लगता था कि पुराने चाय के पत्ते सुखा कर डाले गए थे और उसमें भीनी-भीनी सी तुलसी के पत्तों की मँहक थी। गृहस्वामिनी की चतुरता की वह मन ही मन सराहना कर रहा था कि वे बोले, "क्यों क्या चाय में मीठा कम है।"

उसके मना करने पर भी वे नहीं माने और एक चिम्मच चीनी मँगवा कर डलवाई। वह तो जल्दी से चाय पीकर प्याला नीचे रख बैठा। एक बार गौर से कमरे के चारों ओर नजर डाली। दो टूटी सफरी कुरसियाँ थीं। जिनका कैनवस बहुत मैला था। एक बाँस की मेज बीच में बिछी थी। तख्त पर लड़के पढ़ रहे थे। सामने खूँटी पर शेरवानी और पायजामा लटक रहा था। चाय कम्पनी का एक कैलेंडर तथा कुछ अखबारों से फाड़ी हुई तसवीरें दीवालों पर चिपकी थीं। वह उस वातावरण को समझने की चेष्टा कर रहा था। तभी गृहस्वामिनी बाहर आई और बोलीं, "तुमको हमारा फैसला करना ही पड़ेगा कैलाश। ये चाहते हैं कि मुन्नी की शादी ज्ञान बाबू के लड़के से हो। वे अपनी जाति के नहीं हैं। उस घराने की बात भी किसी से छुपी नहीं है। पैसे के लोभ में क्या छोटे घराने में लड़की दे दी जाय।"

और जवाब दिया रामेश्वर बाबू ने, "तुमसे बार बार कह दिया है कि तू बाहर न आया कर। लड़की की शादी की बात करीब-करीब तय सी है। अब टूट नहीं सकती है।"

"मैं मर जाऊँ तब यह शादी कर लेना। मेरे जीते जी यह नहीं होगी तुम तो दिन भर दफ्तर में कुरसी तोड़ा करते हो। यहां मोहल्ले की औरतें

दिन भर में हजारों बातें सुना जाती हैं। कहती हैं कि वे चंदा करके रुपया जमा कर कोई कुलीन लड़का ढूँढ़ देंगी।"

वे तो भीतर चली गईं, पर इस घटना से उनका गला भर आया। वे गद्‌गद स्वर में बोले, "आज कुलीनता कहाँ बची हुई है। आज कोई किसी की मदद तो नहीं करता, उल्टी चार बातें करने के लिये सब तैयार हैं। वे लोग छोटे कुल के भले ही हों; बड़े आग्रह से लड़की माँग रहे हैं। लड़का बी० ए० में पढ़ रहा है। अपना गहना कपड़ा लेकर आयेंगे और पान सुपारी के सत्कार से सन्तुष्ट हो जावेंगे। आखिर नाक कहाँ साबुत है कि कट जायगी। इन औरतों की बुद्धि समझ में नहीं आती है।"

उनकी यह बात कुछ सच सी लगी। समय काफी हो गया था। कैलाश उठ गया। रामेश्वर बाबू उसे कुछ दूर तक पहुँचाने के लिए आए थे। उससे फिर बोले, "कैलाश कहीं कोई रोजगार जरूर ऐसा ढूँढ़ देना कि थोड़ी आमदनी हो जाय। तुमसे इस घर की कोई बात छुपी नहीं है। और यह जो मुसीबत सिर पर खड़ी है, उसका भी ख्याल रखना। तुम्हारे लिए सौ पचास बड़ी बात नहीं है। किसी दोस्त से कहोगे तो मिल जायगा। अगले महीने फिर फंड से कर्जा लेने की दरख्वास्त दूँगा। उधर दो महीने में मंजूरी आ जायगी और किसी का रुपया हो न हो तुम्हारा जरूर चुका दूँगा।"

कैलाश ने चुपचाप वह बात सुनी और आगे बढ़ गया। गली पार कर वह अब चौड़ी सड़क पर पहुँच गया था। सड़क पर दोनों ओर बन्दनवार टँगे थे। आजादी के तीसरी साल गिरह के वे अवशेष अब फीके पड़ गए थे। कहीं रेडियो पर गीत का स्वर सुनाई पड़ रहा था। "वैष्णव जन तो तेंड़ कहिए जो पीर पराई जाणे रे.................."

कुछ आगे बढ़ कर उसने पाया कि सामने के चौड़े मैदान में कोई नेता जनता को अपनी कठिनाइयाँ बता रहे थे कि किन मुसीबतों में उनको कांटा भरा ताज पहनना पड़ा है।

वह और आगे बढ़ कर पान वाले की दूकान पर खड़ा होकर पान बनवाने लगा। पान वाले ने पान का बीड़ा सौंपते हुए पूछा, "बाबू जी यह मुसीबत कब हल होगी। राशन से पेट नहीं भरता है। चक्की वाले से सड़ा गला आटा डेढ़ सेर का लेते हैं और कपड़े के दाम तो चोर बाजार में एक दम तिगुने हो गये हैं। अगले चुनाव में कोई कांग्रेस को वोट नहीं देगा। हमारी वोट से गद्दी पाकर हमी को अँगूठा दिखला दिया है। अब तो समझ में नहीं आता कि कैसे दिन कटेंगे।"

और कैलाश अपने घर की ओर लौट रहा था जहाँ कि उसका बच्चा सात आठ रोज से बीमार है। बच्चों की दवा तक चोर बाजार में चौगुने दामों में मिलती है। वह भी आज कल परेशान है। उसकी पत्नी की सेहत भली नहीं है और जीवन में पग पग पर आज रुकावट सी मिलती है।

एक बात वह समझ रहा था कि जनता आज अब नेताओं का मुँह न ताक कर अपनी एक ऐसी सरकार चाहती है जो कि चोर बाजारी बन्द कर दे और सब की रोजी और रोटी देने का भार ले ले।

सन्तरे की फाँकें

सत्या के इस आगमन पर कौशल कुछ उलझ सा गया था। यह सच बात है कि वह उनकी पत्नी है और पति-पत्नी में कितना ही झगड़ा क्यों न हो फिर भी पत्नी का एक मात्र आधार वही तो है। पिछले दिनों उसके मित्र रामानुज और वाजपेयी ने बताया था कि सत्या दिवाली की छुट्टियों में अपने मामा के घर आयी हुई है, तो उसने घायल भेड़िए की भाँति 'हूँ' किया था। उसकी पत्नी उसी शहर में है और एक का दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है, यह बात बार-बार उसके मन में उठती थी। वे मित्र तो ऊपर से तूल कसते थे कि उनको वह सिनेमा में मिली थी और वहाँ उसने बी० ए० पास होने की खुशी में रेस्तोरां में चाय भी पिलायी थी। रामानुज तो बेतकल्लुफ है ही, उसने बताया था कि उसकी योजना है कि किसी 'कम्पीटिशन' में बैठकर सरकारी नौकरी करे। सबसे आश्चर्यजनक घटना तो यह थी कि उसकी सहेलियाँ, जो कि वहाँ पर थीं बार-बार चुटकियाँ लेती थीं कि, "अपने मित्र से कह कर कभी हम लोगों की दावत क्यों नहीं करवा देते हैं।" उस मित्र की चर्चा करती हुई हँसी उड़ाती थी कि, "हम भी तो उस सिंहल बाला को देख लें जो उनसे प्रेम का दम भरती है?" उसे वे 'मजनूं' कहकर सम्बोधित करती कहती थीं कि, "उस दिन आजाद पार्क में जो चारखाने की सूट और मंगनी

की टाई पहनकर आए थे, उसी को पहनकर अपनी सूरत तो देख लें कि हजरत कैसे लगते हैं या हमें आज्ञा दीजिये कि उस 'लंका-वाला' की तरह हम ही पत्र लिख कर उनको बेवकूफ बनाया करें।"

इस रामानुज से वह परेशान है। जहाँ उसके मन में आया अपनी बातें कहते नहीं चूकता है। वह कितना ही बात उड़ाकर कहे कि आजकल 'पेट्रोल' उधार आ रहा है और कार की हालत ठीक नहीं है। यानी आजकल रामानुज की कमाई-धमाई खास नहीं है, तो रामानुज बेहयाई से खीसें निकाल कर कहेगा, "चचा, हमें तो हर तीसरे महीने नौकरी में तरक्की नहीं मिलती है और न हमारे लेखों को पढ़कर ही आज तक किसी सुन्दरी को हिस्टीरिया हुआ है।"

बातें कुछ गरम होने लगती हैं, तो बाजपेयी मजाई लगाते हैं, "चचा, छोड़ो भी ये सब बातें, नयी चाची कब तक आ रही है। यह घर तो वीरान लगता है। न हो समझौता करके ही उसको बुला लाओ। बिना चची के घर-गृहस्थी उजड़ रही है। कहो तो मैं बनारस हो आऊँ और उनसे हॉस्टल में मिलकर आपकी ओर से सुलह का पैगाम दे आऊँ।"

कौशल को यह सब बातें उलझा देती हैं। वह जानता है कि यह सब सत्या की शरारत है। इस घर को छोड़ते हुए वह चेतावनी दे गयी थी कि अब उसका दासी वाला पद मिट गया है। आज अब उन सात भंवरों को भी वह भूल चुकी है। आगे वह समझदारी के साथ दुनिया में अपने लिए रास्ता ढूँढ़ लेगी। चार साल उसने इस परिवार में एक कैदी की भाँति काटे हैं। अब वह एक मुक्ति की सांस लेकर जी रही है। जिन बेड़ियों को सनातन से पुरुष ने बाँधकर नारी को बराबर का अधिकार न देकर उसे दासी बनाया था, आज वह उन बन्धनों को काट रही है।

कौशल में शक्ति होती तो वह उसके आगे खड़े होकर कहता, "सत्या तू यह क्या कर रही है? मैं रोगी हूँ। बचपन से ही मैंने एक निम्न आत्मभाव अपना कर एकाकी रहना स्वीकार कर लिया। मैं चाहता

हूँ कि समाज में मेरी प्रतिष्ठा हो, बड़े नेताओं की भाँति मेरे फोटो समाचार-पत्रों में छपें। दुनिया पर मेरा अहम् छा जाय और चुपके अपने कमरे के एकान्त कोने में बैठकर हम वह सब देखें। मैं लोगों की भीड़ से घबड़ाता हूँ, लेकिन मेरी महत्वकांक्षाओं की अपनी सीमाएँ हैं। मैं अपने मित्रों के आगे भी अपना बड़प्पन भूलता नहीं हूँ। यहाँ अपने एकान्त कमरे में बैठकर भावी जीवन की योजनाओं की गोटियाँ खेलना मेरी बहुत पुरानी आदत है। एक शक्तिशाली नारी के विद्रोह को अपने में समाने की उदारता मुझ में नहीं है। यह सब मैं तुम से नहीं छुपा सकता हूँ। तुमको मेरी आलोचना करने का पूरा अधिकार है। उसके बाद संभवतः मतभेद का प्रश्न नहीं उठेगा।"

लेकिन वह तो एक दंभ को अपनाकर झूठी प्रतिष्ठा का शिकार था। बाहरी जीवन के बड़प्पन की महत्वकांक्षाएँ मन में सदा एक छोटापन का उद्गार खोल रहा है। सत्या के आगे हार जाना; उसे अपना सही परिचय दे देना, यह तो उसकी अपने अहम् की मौत थी; जिसके नष्ट हो जाने पर उसे अपना भविष्य मिटता सा लगता था। वह तो मुर्दों से जीवन पाता है। उसके कान में तो अजीब-अजीब स्वर गूँजते हैं। कभी लगता है कि कोई उसके कान में चुपके कह रहा है: 'दीवाली के दिन जब सारी दुनियाँ नवजीवन की आकांक्षा करती है तुम उस उजाड़ नगर में जहाँ कि हजारों साल पहले की सभ्यता छुपी पड़ी थी, क्या ढूँढ़ रहे थे? पुरातन..... वहाँ भाग जाने पर कुछ भी नहीं मिलेगा।'

उस पुरातन की सत्या भी मजाक उड़ाती थी। एक किताब के खिलौने देखकर जब उसने बताया था कि ये हमारी सभ्यता के नमूने हैं। हड़प्पा और मोहन-जो-दाड़ो हमारी संस्कृति के आदि स्तंभ हैं; वहाँ के कारीगर उन नारियों के लिए सुन्दर आभूषण बनाया करते थे, तो बात काटी थी सत्या ने "आप अपने अतीत में ही रहा करें, मुझे तो आज का वर्तमान प्यारा है। मुझे तो सपनों से अधिक जीवन से प्रेम है।"

कौशल सत्या के 'जीवन से प्रेम' करने की आजादी को पसन्द नहीं

करता था। उसे उस लड़की का आधुनिका वाला रूप पसन्द नहीं था। वह फक्कड़ स्वभाव की लड़की पाती कि पति अपना झूठा दायित्व न जाने क्यों उस पर लागू करते हैं। पहले-पहल उसने उनको समझाने की चेष्टा की कि नारी के बारे में वे गलत धारणा बनाए हुए हैं। उनका पुरुष वाला दरजा अपनी कुछ मान्यताओं तक सीमित है। वह उनकी गृहस्थी की ओर उदासीन नहीं है। उसने यह भी बताया था कि उनका शक्की स्वभाव उसे नापसन्द है। वह उनसे बराबरी का दरजा माँग कर अपने विचारों का आदान-प्रदान चाहती है। वह लक्ष्मण की उन रेखाओं पर विश्वास नहीं करती है, जो कि देवर की हैसियत से वन-वास में सीता की कुटी के बाहर खींचकर आशीर्वाद दे गये थे कि, वह वहाँ सुरक्षित है; यदि वह उन रेखाओं को पार करेगी तो उसका अकल्याण होगा। सीता ने मोहवश वे रेखाएँ पार कीं तो उसे पराधीनता में रहना पड़ा था।

कुछ भी क्यों न हो, सत्या के प्रति वह कभी उदार न जाने क्यों नहीं रहा है। उसको सावधानी से भांप कर वह पाता था कि वह नारी न जाने क्यों अपना 'एक बड़प्पन' लेकर उसे यदा-कदा नीचा दिखाने की चेष्टा किया करती है। वह चाह कर भी उससे समझौता करना नहीं चाहता था। लगता कि वह उस पर शासन कर रही है। उसे किसी के अनुशासन में रहने की आदत नहीं थी। उसकी माँ ने बताया था कि बचपन में जबकि एक रोज उसने मुहल्लों के बच्चों के साथ अस्तबल में आग लगायी थी तो उसके पिता ने उसे मारा था। वह स्वयं नहीं जानता था कि इस तरह आसानी से आग लग जायगी। उस दिन उसे जीवन में पहले-पहल एक भरी दियासलाई की डिबिया कहीं पड़ी मिल गयी। उसके साथियों में से कोई चोरी करके 'पेडरू' की सिगरेट कहीं से मार कर ले आया था। सिगरेट पीने का श्रीगणेश करने के लिये वे सब चुपचाप अस्तबल में घुसे थे। वहाँ सिगरेट पीने की खुशी में जलती दिया-सलाई घास पर पड़ गयी थी। इससे पहले कि वे कुछ संभले घास-फूँ-

धूँकर सुलग उठी थी। अपनी असमर्थता पाकर वे वहाँ से भाग गये थे। बात कुछ दिन छुपी रहती पर उसके एक कमजोर दोस्त ने जो कि सिगरेट चुरा कर लाया था अपने भाई को बता दिया कि किस भाँति कौशल सिग-रेट पी रहा था और आग लग गयी। उसके पिता ने चेतावनी दी थी कि वे उसे 'अपराधी बच्चों वाली स्कूल' में भेज देंगे। उनकी भविष्य-वाणी तो यह भी थी कि आगे वह खूँनी व डकैत बनेगा।

उसकी माँ का कहना था कि उस दिन के बाद वह बहुत जिद्दी हो गया। आगे जीवन में वह परिवार में किसी व्यक्ति पर भरोसा नहीं करता था। पिता के सामने कभी नहीं पड़ा और यदि उसके मन की नहीं होती थी तो उस दिन भूख-हड़ताल करता था। किसी के मनाने पर भी वह सम-झौता नहीं करता था। परिवार में एक दिन उसके बड़े भाई की शादी हुई तो सावधानी से उसने अपनी भाभी को भाँपा था। लेकिन सास और बहू में नहीं पटती थी। माँ बहू की शिकायत लड़के से करती कि बहू को कोई सऊर नहीं है। छोटे घर की लड़कियों का यही हाल होता है। वह बहू पहले तो चुप रहा करती थी, जब वह एक पुत्र की माँ बनी तो उसने अपनी सास की उपेक्षा करनी शुरू कर दी और उसे एक दिन यह जानकर आश्चर्य हुआ था कि भाई और भाभी बंटवारा करके अलग हो गये हैं। माँ ने उस रात कौशल को गले लगा कर कहा था कि वह उसके लिये छाँट कर एक सुशील बहू लायेगी। भाभी को खरी-खोटी सुना कर कहा था कि उसका भाई अपनी औरत का गुलाम बन गया है। भाभी को वह भी न जाने क्यों कमीना समझता था। वह भाभी तो मोहल्ले के लोगों से कहती थी कि उसकी सास को न जाने किस बात का घमंड है। उसका भाई नायब तहसीलदार क्या हो गया, सोचती है कि सारी दुनिया उसकी ताबेदारी करेगी। उसका कहना था कि सास ने उसके मायके की पूरी चीजें तक नहीं दीं और उसका सोने का हार भी गायब कर दिया।

माँ की बातों से उसने यह नतीजा निकाला था कि औरत की जात बिना लात के नहीं मानती है। पर सत्या तो उसकी भाभी से एक कदम

आगे बढ़कर बातें करती थी। मैट्रिक का इम्तहान देकर वह कुछ दिन ससुराल रही और फिर पढ़ने चली गयी। सास-ससुर ने कितना ही कहा था कि अब घर-गृहस्थी संभालनी चाहिये। पर वह तो बोर्डिङ्ग से हर माह खर्चे की माँग करती थी। वह लिखती थी कि अब अपने पिता पर वह पढ़ाई का भार नहीं डालना चाहती है। कौशल ने एक बार उसे समझाया तो वह दलील करने लगी। सब से ज्यादा गुस्सा तो उसे उस रोज आया जबकि उसे ज्ञात हुआ कि उसकी भाभी से पटती है। उसने तो यह भी कहा था कि ज्यादती सासजी की है। माँ के खिलाफ उस मोर्चे की बात सुनकर वह दंग रह गया था। उसने उसे समझाने की कोशिश की तो पत्नी ने वे घटनाएँ बतानी शुरू कर दीं जो कि सास ने उस पर लागू की थीं। यह भी आखिर में कहा था कि, "जीजी का कसूर यही है कि वह नये जमाने में पैदा हुई और आपकी माँ के पिछले पचास साल पुराने विचारों से समझौता नहीं कर पायीं।"

इसके बाद तो कौशल ने आव देखा न ताव एक तेज चांटा मार कर कहा था कि वह कमीना है। फिर वह चुपचाप अपनी जीजी के पास पांच दिन रही। उसने अपने भाई को तार दिया और उसके साथ मायके चली गयी थी। कौशल अपनी हार को स्वीकार करने के लिये उसके होस्टल मनाने के लिये गया। पर वह बदला लेने की भावना नहीं बिसार सका था। वह उसे मना कर लाया और अपनी माँ के साथ मिलकर सलाह की कि अब उसकी पढ़ाई छुड़ा दी जाय तथा मायके एक-दो साल न भेजा जाय। सत्या ने सारी स्थिति पर सावधानी से विचार किया और दिखलावे में झुक गयी। सास उस परिवर्तन पर खुश हुई और जब छः महीने के बाद उसका भाई छोटी बहन की शादी में बुलाने आया था तो उसने चुपचाप स्वीकृति दे दी। लेकिन शादी के बाद मालूम हुआ कि वह अब 'प्राइवेट' इम्तहान देकर ही ससुराल जायेगी। बशर्ते कि उसकी ससुराल वाले वादा करदें कि उसे पढ़ाने के लिये कॉलेज भेजेंगे।

कौशल को नौकरी मिल गयी थी और वह कुछ दिन उसके साथ

रही थी; लेकिन दोनों के बीच एक खाई पड़ गयी और अंत में जब वह चेतावनी देकर एक दिन उसे छोड़ रही थी तो उसे बहुत क्रोध आया और अपना पुरुष वाला दावा आगे रखकर वह बोला था, "सत्या, तू जा रही है, पर यह भली-भाँति समझ ले कि परित्यक्ता को समाज सन्देह से देखता है। तू जीवन में भीख मांग कर फिर आखिर में यहीं शरण लेने के लिये बाध्य होगी। आज तेरी शेखी बढ़ गयी है और शायद तू जब रास्ता नहीं पायेगी तो आत्महत्या करेगी।"

लेकिन सत्या ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया था। वह मौन हो चली गयी थी। कौशल चुपचाप बैठा हुआ था। शाम हो आई थी। तभी कार के रुकने की आवाज सुनायी दी। वह उस समय चुपचाप अकेला रहना चाहता था; लेकिन रामानुज तो दरवाजा खटखटा ही रहा था। नौकर ने दरवाजा खोल दिया था। वह भीतर आया और सावधानी से चारों ओर देखकर पूछा, "चची चली गयी है क्या, चलो छुटकारा मिला। अब वह फोर्थ इंटरनेशनल वाली सिंहल महिला कब तक पदार्पण करने वाली हैं।"

कौशल के मन में आया था कि वह एक तमाचा उसे मारे; लेकिन रामानुज ने तो दूसरी चुटकी ली, "सुना है कि आपकी कोई किताब लण्डन की फर्म छाप रही है। कब तक निकल जायगी?"

वह उस समय भी चुप नहीं रहा। तत्काल उत्तर दिया कि वह अब चैन के साथ कोई काम तो करेगा। घर के झगड़ों में उसके चार साल खराब हो गये। बिना किसी आनाकानी के रामानुज के साथ बाहर घूमने निकल गया था। सत्या को वह आगे जीवन में चैन से नहीं रहने देगा। प्रतिशोध की भावना मन में उठी। उसका दिमाग तेजी के साथ कई स्कीमें बना रहा था।

२

और तीन साल बाद यह सत्या आज एकाएक क्यों आयी, वह न जान सका था। वह उलझन में उसे देख रहा था। वह सादी वाइल की

सुफेद साड़ी और काला ब्लाउज पहने हुए थी। उसने कितनी बार यह कल्पना नहीं की थी कि यदि वह अकेली बनारस में मिल जाय तो वह उसका गला घोंट कर मार डालेगा। वह उसे समाज में अपमानित करना चाहता था। उस लड़की के लिए क्या-क्या दुर्भावनाएँ उसने अपने मन में नहीं बटोरी थी। वही आज आगे बैठी थी। आज उसकी सेहत पहले से भली लगती थी। वह तो सुन्दर खिली सी लगती थी; लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ था कि सुहाग की वह सिन्दूर की लाली जो नारियाँ अपने माथे से ऊपर तक रेखांकित करती हैं, वह उसने पोंछ डाली है। उसके घर पर तो वह सदा ही नहाने के बाद उसे माथे पर भरती थी। आज वह उस नाते को आसानी से तोड़ करके भी तो उसके आगे बैठी है। वह किस तरह बातचीत करे। क्या वह उसे अपने घर से निकाल दे, कि सत्या बोली, "वाजपेयी ने कहा था कि आपने मुझे बुलाया है।"

तो सत्या किसी के अनुरोध पर आयी है। उसे वाजपेयी पर गुस्सा आया कि क्यों वह उनके बीच इस तरह के खेल खेला करता है। जब उसके दोस्त ने कहा था कि वह चाहे तो सत्या यहाँ आ सकती है तो उसने वह बात मजाक में उड़ा दी थी; लेकिन वाजपेयी अपनी शरारत से बाज नहीं आया था। और अब सत्या आयी है तो एक बार उसे सावधानी से परखना होगा। सोच कर बोला वह, "सत्या तूने मेरे पिछले एहसानों की कोई चिन्ता नहीं की। जब तुझे टायफाइड हुआ था तो मैंने चवालीस रातें जाग-जागकर तेरी सेवा की थी। और एक छोटी सी बात पर तूने झगड़ा करके मुझे समाज में बदनाम कर डाला है। तुझसे तो मुझे यह आशा नहीं थी।"

तुरन्त ही उत्तर दिया सत्या ने "आप अपनी झूठ बोलने की आदत छोड़ दें तो जीवन में सफल रहें। यदि डाक्टर मुझसे दिलचस्पी न लेता तो शायद मैं मर गई होती। आप तो कई बार मुझे दवा में जहर तक देने की बात सोच रहे थे। यदि डाक्टर से मैंने सारी स्थिति न बतादी

होती तो शायद मैं कभी की इस दुनिया से कूच कर गयी होती। डाक्टर का एहसान मैं आजीवन न भूल सकूँगी।"

यह कौशल की हार फिर हो रही थी। यह सत्या तो बहुत चतुर है। उस डाक्टर ने ही यह बात उसे बताई है। उसने सत्या को सावधानी से भांप कर उत्तर दिया, "सत्या, सारी दुनिया कहती है कि तू उस डाक्टर के साथ उच्छृंखलता से घूमती है। तू उसे चिट्ठी लिखा करती है। लोग कहते हैं कि इस घर को छुड़ाने में भी डाक्टर का हाथ है। मैं डाक्टर से एक दिन मिला था। उसने मेरी बातों का उत्तर देने से इन्कार कर दिया है। तू मेरी पत्नी है और समाज में आज तेरे बारे में तरह-तरह की बातें फैल रही हैं, इसीलिए मैं चाहूँगा कि अब सारी पिछली बातों को भूलकर हमें नये सिरे से जीवन शुरू कर देना चाहिए। कुछ गलतफहमियाँ आपस में हो गई हैं और उनका निवारण किया जा सकता है।"

यह कह कर कौशल उठा और बाहर चला गया। दीवाल पर टँगी घड़ी ने टन्, टन्, टन् करके आठ बजाए। नौकर चाय का सामान मेज पर लगा रहा था। उसने एक बार बहूजी की ओर देखकर, चुपके से पूछा, "बहूजी आप अच्छी तरह तो हैं। बाबूजी कह रहे थे कि अब आप यहीं रहेंगी। क्या इम्तहान हो गया है!"

सत्या ने कोई उत्तर नहीं दिया। कौशल आ गया था। उसने चाय का प्याला बनाकर उसे सौंपते हुए कहा, "सत्या, मैंने जीवन में क्या-क्या योजनाएँ नहीं बनाई थीं। सोचा था कि तुम मुझे बल प्रदान करोगी। मैं जल्दी ही अमेरिका टूर पर जाने की सोच रहा हूँ। मेरी एक किताब लण्डन तथा एक अमेरिका से छप रही है। कलकत्ता विश्वविद्यालय अगले कन्वोकेशन में मुझे 'डाक्टरेट' दे रहा है। पर मुझे जिन्दगी में कोई उत्साह नहीं है। तेरे बिना ज़ीवन में अंधेरा रहता है। क्या तू अपने पुराने निश्चय को नहीं बदल सकती है? मैं तेरा स्वागत करूँगा। तुझे समझने में सच ही भूल हुई है। मैं बहुत अस्वस्थ हूँ। डाक्टरों का

कहना है कि मुझे एक हमदर्द साथी चाहिए। तू मुझे भली-भाँति जानती है। अधिक मैं और कुछ नहीं कहूँगा।"

लेकिन वह तो चुपचाप समोसा दाँत से कुतर रही थी। अब उसने एक चमचम का टुकड़ा दांत से तोड़ा और चबाने लगी। फिर उसने एक प्याला चाय बनाई और चिम्मच से चीनी मिलाती रही। कुछ देर के बाद चाय की सात-आठ चुस्कियाँ लेकर प्याला मेज पर रख दिया। अब वह आँखें मूँदे कुछ सोच रही थी।

उसने उस सत्या को देखा। यह सत्या कितने रुचिपूर्ण कपड़े पहनती है। वह भले ही चिट्टी गोरी न हो फिर भी असाधारण सुन्दरी लगी। वह उस सत्या को अपना कर, फिर उसके पंख काट देगा और कुछ ऐसी व्यवस्था करेगा कि वह फिर भाग नहीं सकेगी। यह सत्या यदि माँ बन गई होती तो इस परिवार के प्रति उसका मोह अवश्य बढ़ गया होता; लेकिन सत्या इतनी अस्वस्थ रही कि यदि माँ बनती तो चटक जाती। वह तो अभी भी उसी भाँति आँखें मूंदे हुए थी।

कौशल ने कहा-"सत्या, चाय ठंडी हो रही है। शाम को सिनेमा चलेंगे। कल तेरा सामान ले आयेंगे।"

लेकिन वह तो हँस पड़ी और बोली, "तुम्हारी उस मुसलमान लड़की का क्या हुआ जो कि तुम पर प्राण देती थी। और वह इसायन जिसे तुमने बी० ए० की हिस्ट्री पढ़ाई थी। तुमको तो गर्व था कि लड़कियाँ तुम्हारा पीछा किया करती हैं। मैं तो एक दो घंटे के लिये तुम्हारी गृहस्थी का ऐश्वर्य देखने के लिये आई थी। यहाँ तो कुछ भी नहीं है। इन सालों में दो-तीन मूर्तियाँ तुमने और जरूर जोड़ी है। फिर तुम ही न कहा करते थे, ये मूर्तियाँ और ढाँचे तुमको जीवन में सबसे ज्यादा पसन्द हैं। मोहन-जोदाड़ों की नारियों के सौंदर्य से तुम उस मुस्लिम युवती की तुलना करते हुए कहते थे कि वह यदि तुम्हारे परिवार में आ जाती तो तुमको काम करने में और प्रेरणा मिलती। मैं तुम्हारा उज्वल भविष्य बनाने के लिये ही तुमको छोड़कर गयी थी।"

सत्या फिर चुपचाप चाय पीने लगी। प्याला समाप्त कर मेज पर रख दिया और आँखें मूँद लीं। कौशल कुछ देर तक उसे देखता रहा। सोचा फिर कि यह सत्या काफी मुलझी हुई है। उसे फिर भी किसी न किसी भाँति अपनाना ही होगा। उसका दूर रहना एक कलंक है, जो कि आज घाव की भाँति दुखता है। हर घड़ी उसे डर रहता है कि न जाने वह कब सत्या के बारे में क्या सुनेगा? वह एक असाधारण प्रतिभा वाली रमणी है। उसने समाज में अपने लिये सहानुभूति भी बटोरली है। इसीलिये वह भी हँसा। उसकी उस खिलखिलाहट को सुनकर सत्या ने आँखें खोलीं। वह तो उठ गया और उसके पीछे कुरसी पर खड़ा होकर बोला, "सत्या, वह मुसलमान युवती अपने परिवार के साथ पाकिस्तान चली गयी है। फिर वह सब तो एक मजाक था, तुझे चिढ़ाने के लिये। तू बावली है कि इन बातों में रूठ गयी थी। और मैंने यही तो कहा है कि हमें सारी पिछली बातें भूलकर अब आगे के लिये नये जीवन पर सोचना है। यह अच्छा ही हुआ कि तू आ गयी है, अन्यथा मैं खुद ही तुझे पत्र लिखने की सोच रहा था। अब हम बच्चे भी नहीं रह गये हैं कि जरा-जरा बातों पर तकरार करें। मैं सोचता हूँ कि इस बहस करने का सवाल नहीं उठता है।"

वह उसी भाँति सत्या की कुरसी के पीछे खड़ा ही था। कुछ देर तक उसके बालों से खेलता रहा और उसके गले में दोनों हाथ डाल कर उसकी ठोड़ी ऊपर उठा, उसकी आँखों में अपनी आँखें फैलाईं। सत्या तो मूक रही, मानों कि वह उसके सवालों का कोई उत्तर ही न देना चाहती हो। वह टकटकी लगाकर उस व्यक्ति की ओर देख रही थी जो कि क्षण-क्षण भर में कितने रंग नहीं बदला करता है। वह जानती है कि आज वह उसे नष्ट करने की चाहना रख कर भी अपने को असहाय पाता है। अपनी सहेलियों से वह सुन चुकी है कि वह किसी धनी युवती से शादी करने की चिंता में है; लेकिन वह सच ही नाटक का एक कुशल पात्र था। अन्यथा उसकी आँखें गीली न हो जातीं। वह तो सच ही रो रहा

था। उस निर्बल व्यक्ति पर उसे तरस आया जो कि अपनी कमजोरी को छुपाने के लिये क्या-क्या करतब नहीं रचा करता है। उसकी एक सहेली जो अबके मेडिकल कालेज के फाइनल में पढ़ती थी उसकी बातें सुनकर कहा करती थी कि, उसका पति एक खास रोग का मानसिक मरीज है। उसे किसी सिनेटोरियम में चला जाना चाहिये। अभिजातवर्ग के युवक ऐसे रोगों के शिकार अधिकतर होते हैं। अक्सर उनकी महत्व-कांक्षाएँ पूरी नहीं हो पाती हैं; फिर भी वे कल्पना की उड़ान लेने में नहीं चूकते। ऐसे व्यक्तियों का दैनिक सामाजिक जीवन में सबके साथ रहना समाज के लिये हितकर नहीं है। उनकी बातों में एक अतृप्त घृणा का पुट मिलता है। वे दुनिया के शोरगुल से दूर रहकर अकेले में अपने चारों ओर योजनाओं का जाल बिछाया करते हैं। उनकी दृष्टि किसी कल्याणकारी भावना पर नहीं पड़ती है। वे तो जीवन की विध्वंसकारी धारणाओं का पोषण करते हैं। अपने अलावा और लोगों को वे कीड़ा-मकोड़ा समझते हैं। ऐसे रोगियों का एक मात्र इलाज यह है कि वे प्रकृति से संघर्ष करना सीखें। अन्यथा एक दिन वे स्वयं ही अपने को नष्ट करके इस बड़ी दुनिया में छुप जाते हैं।

सत्या में शक्ति है कि वह उस रोगी का उपचार करे; लेकिन वह पति उसे एक खिलौने से अधिक नहीं समझता है। नारी के बारे में उसकी धारणा है कि वह बहुत कमीनी होती है। वह कौशल को अपना निश्चय सुनाने ही यहाँ आयी थी; लेकिन कौशल तो फिर बोला "सत्या, तू अपूर्व सुन्दरी है। यही कारण था कि मैंने तुझसे शादी की थी। मुझे विश्वास था कि ऐसी सुन्दर नारी का हृदय विशाल होगा। आज भी मैं जानता हूँ कि तू इस परिवार में लौटकर एक नयी दुनिया बसा सकती है। तुझमें वह शक्ति है।"

उसने सत्या की ठोड़ी को और ऊपर उठाया। फिर उसके सामने खड़ा हुआ और उसे टकटकी लगाकर देखा; लेकिन सत्या तो चुपचाप रही। तो वह बोला "दुनिया की दृष्टि में हम आज भी पति-पत्नी हैं।

यह इस तरह का नारी का रूठ कर चला जाना, आज हमारे समाज में कोई नयी बात नहीं है। तुमको कई बार में रुपया भेजने की सोच रहा था। मुझे यह अच्छा नहीं लगता है कि तुम और रिश्तेदारों से चंदा करके अपनी पढ़ाई चालू रखो। तीन साल का अरसा काफी होता है। अब हमें ज्यादा लड़कपन नहीं करना चाहिये। आशा है कि तुम मेरी भावना की रक्षा करोगी।"

सत्या तो अनायस मुस्करायी और बोली "लेकिन कौशल, मैं तो तुम्हारे पास एक विनती लेकर आई हूँ, और मुझे पूरा भरोसा है कि तुम उसे स्वीकार करोगे। उसी में हम दोनों का हित भी है।"

"क्या सत्या ?

"चाहती हूँ कि तुम मुझे मुक्त कर दो। मैं तुम्हारे जीवन को सफल बना सकती तो अवश्य लौट आती; लेकिन हम तो आज एक दूसरे से बड़ी दूर हट गये हैं। तुमने जो सद्भावनाएँ प्रकट की हैं, उनसे ही मेरे प्रति तुम्हारा अविश्वास हट नहीं सकता है, और जिन बेड़ियों को मैं तोड़ चुकी हूँ आज तुम्हारे हाथों पहनना मेरी मौत होगी। तुम चाहते हो कि मुझे भी अजायबघर की 'ममी' बनाकर रखो। मैं गूँगी सी अपना व्यक्तित्व बिसार कर तुम्हारे साथ रहूँ। फिर तुम होशियारी से अपने अहंकार में मुझे नष्ट कर दो। मैं इतनी बेवकूफ नहीं हूँ। यह भी तुमको बता दूँ कि मैंने डाक्टर से शादी कर लेने का निश्चय कर लिया है। एक सामाजिक बन्धन है कि आज भी तुम्हारी पत्नी घोषित की जाती हूँ; लेकिन मैं उस व्यक्ति से प्रेम करती हूँ। हम एक सबल गृहस्थ का निर्माण करने की शक्ति रखते हैं। सच पूछा जाय तो यह कसूर तुम्हारा ही था कि मैं यह निश्चय करने के लिये विवश हुई हूँ।"

कौशल एकाएक घबरा उठा। यह सत्या आज उसे एक भारी चोट लगा रही है। उसे अपने जीवन से हटाकर चाहती है कि, अपने लिये सही रास्ता बनाले। क्या वह उसकी चुनौती को स्वीकार करले। वह तो

सावधानी से बोला, "सत्या यह तुम क्या कह रही हो। डाक्टर से शादी! वह तो मेरी मौत के बाद ही संभव हो सकता है।

उसकी आखें लाल हो गयीं। यह सत्या उसके घर पर आकर ही उसे अपमानित कर रही है। यह उसे सही न्याय नहीं लगा। वह कमरे में इधर-उधर गंभीरता के साथ घूमता रहा। फिर लौटकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। सारी स्थिति को संभाल लेने की चेष्टा करता हुआ बोला, "तुम यह क्या मजाक कर रही हो!"

सत्या ने अपनी साड़ी का आँचल ठीक तरह संभाला और सरलता से बोली, "मैं अपना जीवन बनाना चाहती हूँ। यह इसीलिए मेरा दृढ़ निश्चय है। तुम नारी की भावना को नहीं पहचाते हो। तुमने नारी की इज्जत करनी नहीं सीखी है; और यह जानती हूँ कि पति की नाग-फांस, भले ही मैं उसे तोड़ चुकी हूँ, तुम उस कमजोर फन्दे के बल पर आज भी मेरे जीवन में रुकावट डालना चाहोगे। सच बात तो यह है कि तुम्हारे साथ रहते हुए सदा ही मैंने अपना जीनव सूना पाया। मेरा हृदय सदा ही पुरुष की सहानुभूति के लिए खाली रहा है। तुमने सदा मेरे हृदय के सूनेपन में जहर उंड़ेलने की कोशिश की। तुम्हारा दावा था कि तुम पति हो और तुम्हारा स्वामी वाला दरजा है। मैं केवल एक दासी की हैसियत से तुम्हारे साथ रहा करती थी; लेकिन एकाएक नर्स ने बताया था कि मैं माँ बनने वाली हूँ। उन परिस्थितियों में मैंने सोचा था कि आगे अब कोई समझौता हो जायगा; लेकिन मैं बीमार पड़ गई और मेरा वह मातृत्व असफल रहा। जब कि मैं बहुत अस्वस्थ थी तुम रोज मनाया करते थे कि मैं मर जाऊँ। मेरा दिल उन दिनों किसी अज्ञेय को प्यार करने के लिए तड़पता था; लेकिन तुमने कभी कोई सहानुभूति नहीं बरती। मैं सच ही मर जाना चाहती थी, पर डाक्टर ने मुझे बल देकर जीवित रहने की प्रेरणा दी। उसने आगे मेरे जीवन में प्रवेश करके मेरे हृदय को कुरेदना शुरू कर दिया। लेकिन मैंने कुछ संस्कार पाये थे उनकी रक्षा का प्रश्न सदा आगे आया। मैं इन तीन सालों काफी

उलझन में रही; लेकिन डाक्टर बार-बार सवाल पूछा करता है कि मैं क्या उसे बल प्रदान नहीं करूँगी और मैंने यह जान कर भी कि तुम छुटकारा नहीं दोगे, एक बार तुम्हारे पास आकर आज्ञा मांगने का निश्चय किया। जब तक तुम छुटकारा नहीं दोगे तब तक हम पति-पत्नी के रूप में समाज में नहीं रह सकते है। फिर भी मुझे विश्वास है कि आगे नारी को भी कुछ सामाजिक अधिकार मिल जायेंगे कि वह भी अपने भविष्य का निर्माण कर सके।"

एक गहरी सांस लेकर वह चुप हो गई। उसने देखा कि कौशल सिर नीचा किये न जाने क्या सोच रहा है। कुछ देर तक वह उसे देखती रही। इस व्यक्ति के साथ उसने कई साल काटे थे। वह आज उसके जीवन में कहीं नहीं है। वह आज उससे डरती नहीं है। वह अशक्त है। उसमें आज किसी तरह का बदला लेने की शक्ति भी नहीं है। सत्या तो फिर बोली, "देखो कौशल, आज पति का कर्त्तव्य है कि वह पत्नी की भावनाओं को समझे। उसकी आलोचना न करके ही उसे आगे बढ़ने में सहायता दे। डाक्टर ने पहले-पहल बताया कि मैं एक अच्छी चित्रकार हूँ। पिछले साल हम पहाड़ गए तो उसकी प्रेरणा से मैंने कई लैंड-स्केप बनाये, वह मेरे लिए सुन्दर-सुन्दर किताबें भेजा करता है। अपनी लाइब्रेरी में बैठकर मैं एक नया जीवन पाती हूँ। जब कि तुम मेरी बातों का केवल मजाक उड़ाया करते थे।"

सत्या इस भाँति चोट करेगी, कौशल यह नहीं जानता था। क्या यह सच है कि उसने सत्या के अपने व्यक्तित्व को पनपने नहीं दिया। वह सत्या पहले-पहल जब आई थी तो हरएक बात में अपना मत दिया करती थी। उसने आते ही अनजाने बराबरी का दरजा मांगा था। वह उसकी आलमारी से किताबें निकालकर चित्र देखा करती थी। एक बार वह बाजार से चित्रकारी का सामान भी लाई थी। वह उस लड़की की आजाद प्रकृति से घबराया करता था। वह उसकी अनुपस्थिति में भी उसके मित्रों के साथ मजाक किया करती थी और उसके यहां किसी भी

समय कोई मित्र आकर चाय की मांग किया करता था। उसने कई बार चेतावनी दी थी कि यह घर है, होटल नहीं। सत्या ने इसकी परवा नहीं की थी। उसकी सहेलियाँ जब मन में आता चली आतीं और बहुधा वह उनको दावतें भी खिलाया करती थी। वह देखता था कि परिवार में उसकी कोई हैसियत नहीं है। नौकर-चाकर सब सत्या की आज्ञा पर चलते थे। वह तो उसके वेतन पर भी नियंत्रण करती थी। आज तक इस भाँति किसी ने भी उस पर अधिकार नहीं जमाया था। एक रोज उसने सत्या से इस पर बातें कर बताया था कि वह अपनी हैसियत से आगे बढ़ रही है। आगे भी जब वह नहीं मानी तो उसने घर का सारा प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया था; लेकिन सत्या ने अपनी जरूरतों के लिये कभी भी उससे पैसे की मांग नहीं की थी। एक दिन वह बिना उसकी स्वीकृति के अपनी सहेलियों के साथ सिनेमा चली गई थी तो उसने कहा था कि वह बहुत बेहया हो गई है। सत्या आगे परिवार में इस तरह रहने लगी कि मानो उसका पति से कोई सम्बन्ध नहीं हो और एक दिन मनमुटाव इतना बढ़ा कि वह वहाँ से चली आई थी।

क्या कौशल उसे रोकने की अन्तिम चेष्टा करे। वह सोच ही रहा था कि सत्या उठी और बोली, "आप मुझे पत्र द्वारा सूचना दे दीजियेगा। और जिस सद्भावना के साथ आपने यह सब सुना उसके लिये भी आपकी आभारी हूँ। एक मित्र के नाते कभी आप कोई सलाह या मदद चाहेंगे तो मैं सदा उसे पूरी करूँगी। आज मैं आपसे झगड़ कर नहीं जा रही हूँ। मेरी सलाह तो यह भी है कि आपको किसी 'हिल स्टेशन' जाकर कुछ दिन अपना इलाज कराना चाहिए। साथ ही मेरा निवेदन यह भी है कि आपको दुनिया में रहकर संघर्ष करने की ओर अग्रसर होना चाहिये।"

लेकिन एकाएक कौशल उठा और उसने अपनी भुजाएं फैला कर उसे समेट लिया। वह चुपचाप उसी भाँति बड़ी देर तक खड़ी रही। पन्द्रह मिनट बीत जाने पर कौशल के हाथ एकाएक हट गये। कहा

उसने, "सत्या, यह तुम्हारा मेरे प्रति सरासर अन्याय है। तुम मुझको घायल करके सुझाती जा रही हो कि मैं एकांत में अपने कलेजे को खाया करूँ। यह हिंसा वाली भावना शुभकर नहीं है। यह तुम्हारा अपना परिवार है। तुम्हारा वह डाक्टर चरित्रहीन व्यक्ति है।"

वह आगे क्या कहता। सत्या तो दरवाजे से बाहर चली गई थी। इससे पहले कि वह संभल जाय, वह फाटक से बाहर निकल तांगे वाले को बुलाकर उस पर बैठ गई थी। कौशल जल्दी ही आगे बढ़ा और पाया कि तांगा तेजी से जा रहा था। सत्या ने दोनों हाथ जोड़ कर उसका अभिवादन किया और तांगा मोड़ की ओर ओझल हो गया था।

कौशल चुपचाप लौट आया। सत्या ने बाजी जीत ली थी। आज वह फिर हार गया था। यह सत्या तो दावा करती थी कि वह उसे एक रास्ता दिखला गई है। कमरे में लौट कर वह सत्या की पुरानी चिट्ठियाँ सन्दूक से निकाल कर उनको पढ़ने लगा। उन पत्रों की भाषा में एक बार वह फिर सत्या को समझ लेना चाहता था।

पुन्ना

आज से सौ साल पहले टेहरी रियासत के सामन्ती राजाओं के पास गढ़वाल तथा टेहरी दोनों जिले थे। उनकी राजधानी श्रीनगर का इतिहास बहुत पुराना है। मुगल राजकुमार दाराशिकोह अपने भाई औरंगजेब के विद्रोह करने पर यहाँ पनाह लेने आया था। राजा ने शाहनशाह औरंग-जेब की धमकियों की परवाह न करके उसे आश्रय दिया था। राजकुमार का राजकन्या के प्रेमपाश में फँस जाने के कारण उसे उस देश को छोड़ने पर विवश किया गया था। फिर गोरखों का आक्रमण हुआ। नेपाल के राजा का झंडा सालों तक वहाँ गड़ा रहा। गोरखों के अत्याचारों की कहानियाँ आज भी गाँव-गाँव में प्रचलित हैं। अंत में अंग्रेजों की सहायता से राजा ने गोरखों को हराया। पर अंग्रेज सौदागरों की जाति के थे। उन्होंने उस सुन्दर देश के दो टुकड़े करवा दिये और गंगा के इस पार के देश पर गोरा कलक्टर हुकूमत करने लगा। गंगा के उस पार का देश उस राजा के अधिकार में था।

वह वैभवशाली नगर जो सदियों तक प्रमुख हलचलों का केन्द्र रहा, एक दिन वहां गंगा की बाढ़ आयी और सब कुछ बहाकर ले गयी। प्रकृति से मानव संघर्ष करने में असफल रहा। इमारतें टूट गयीं, राजमहल मिटा और वहाँ रेत भर गयी थी। आज रेत के उस मैदान में जगह-जगह खंड-

हर दिखलाई पड़ते हैं और राजमहल की नींव के काले-काले पत्थरों के ऊपर से गंगा बहती है। वे चट्टानें काई से ढकी हुई रहती हैं। वहाँ पानी काफी गहरा है और भारी-भारी भंवरें उठती हैं। अक्सर मछुवे अपना जाल डालकर राजमहल के खंडहरों में रहने वाली शौकीन मछलियों का शिकार किया करते हैं। कभी-कभी कोई मनचला कारतूस दागकर भी मछलियाँ मारा करता है। किनारे की रेतीली जमीन दूर तक फैली हुई है। वहाँ झड़बेरियाँ, आँक, नागफनी और कंटीली झाड़ियाँ उगी रहती हैं। कहीं-कहीं किसानों ने सफाई करके छोटे-छोटे खेत बना डाले हैं, जिनमें बाजरे की खेती होती है। रात को वहाँ सियारों के झुन्ड हुआ-हुआ का शोर मचाया करते है।

उस रेतीली ऊबड़-खाबड़ जमीन के बीच जहाँ माफीदारों, वजीरों तथा और धनियों की हवेलियों के खंडहर हैं, वहाँ कभी-कभी उनके नाती-पोते कौतूहलवश जाते हैं। पर अधिकतर वहाँ नीची जाति की लड़कियाँ और उनके मनचले प्रेमी ही आँख-मिचौनी खेलते हुए मिलेंगे। उस चौड़ी धरती को चीरकर पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट की चौड़ी सड़क जाती है। यह सड़क ऋषीकेश से शुरू होकर बद्रीनाथ तक जाती है। गरमियों में भारत के विभिन्न देशों के यात्री इसे तय करके बद्री-केदार की यात्रा करते हैं। सड़क के दोनों ओर ऊँची-ऊँची कंटीली झाड़ियों की बाढ़ है। नीचे की ओर वह सड़क खेतों से हटकर पहाड़ के किनारे-किनारे जाती है। दूसरी ओर गंगा बहती है। वहीं शंकराचार्य ने सदियों पहले कभी श्रीयंत्र के पत्थर को गंगा की धारा में उलट कर उल्टा कर दिया था। किंवदन्ति यह है कि उस देवता पर पहले-पहल जिस मानव की दृष्टि पड़ती थी वह उसकी बलि ले लेता था। अब मूर्ति किसी का अनिष्ट नहीं कर पाती है। कभी-कभी जब मेंह नहीं बरसता और आषाढ़ बीतने लगता है तो किसान इस यंत्र की पूजा करते हैं। उनका विश्वास है कि पूजा से खुश होकर देवता पानी बरसायेगा।

वहाँ से कुछ हट कर एक पहाड़ी नाला गंगा में गिरता है। ऊपर

पहाड़ी पर अँग्रेजों का कब्रिस्तान है। जो कि कई हरी-भरी झाड़ियों से सदा ढका रहता है। अक्सर गाय चराने वाले बच्चे, लकड़ी घास काटने वाली नारियाँ रोज ही वहाँ की पगडंडियों को पार करती हैं। वे पत्थर जो मौत की यादगार हैं अब उसका कोई महत्त्व उनके लिये नहीं है। फिर भी संध्या के बाद वहाँ कोई नहीं जाता है। लोगों का खयाल है कि वहाँ प्रेत रहते है। कुछ बूढ़े तो बताते हैं कि पहले वहाँ अँग्रेजों के लिवास में भूत घूमा करते थे। आज वे किसी को नहीं दीख पड़ते हैं। भय फिर भी सब को लगता ही है। लेकिन गाय चराने वाले बच्चे इतमिनान से उनके ऊपर खेला-कूदा करते हैं और वहाँ की झाड़ियों से जंगली फल जमा करके खाया करते हैं।

वह कुदरती नाला जहाँ पर गंगा में गिरता है, वहीं एक बूढ़ा बरगद का पेड़ है। आज से पचास साल पहले उस पर बिजली गिरी थी, जिससे उसका आधा हिस्सा सूख गया था। आधे पर आज भी हरियाली है। पुन्ना उसी की दाँयी ओर की झोपड़ी पर रहता है। उसकी झोपड़ी से कुछ ही नीचे गहरायी है, जिस पर आगे बढ़ कर गंगा बहती है। ऊपर की ओर पास के गाँव के एक महाजन ने कुछ मकान बना दिये हैं, जिनमें गर्मियों में यदा-कदा यात्री बसेरा ले लिया करते हैं।

पुन्ना उसी पेड़ की भाँति बूढ़ा है। वहीं उसकी दूकान और घर है, जहाँ कि न जाने वह कब से रहता है। सब यही कहते हैं कि वहीं उसे देखा है। वह चमार है और जूते बनाया करता है। अब उसके पास खास कोई काम नहीं है और अधिकतर वह उधर गुजरते हुये मुसाफिरों के जूतों की मरम्मत करके ही अपना पेट पाला करता है। जाड़ा, बरसात और गरमी हर मौसम में वह वहीं रहता है। उसे न भूत-प्रेत का डर रहता है और न जंगली जानवरों का। बघेरे से वह नहीं घबराता है और कई बार उसने गाय तथा बकरी की जिसे बघेरा उस ओर खदेड़ कर ले आया रक्षा की है।

ऊपर पहाड़ पर गाँव भी है, जहाँ कि पाँच-सात परिवार रहते हैं।

वहाँ से एक बटिया उसकी झोपड़ी से थोड़ी दूर हटकर गंगा में मिलती है। सुबह और शाम उससे गाँव की रमणियाँ पानी लेने के लिए गंगा की ओर बढ़ती हैं। दिन को लड़के अपनी भैंसों को पानी पिलाने के लिये वहाँ लाते हैं और गङ्गा में बरसाती पानी वाला जो तालाब है, उसमें भैंस तैरा करती हैं। वे बच्चे भी पहले वहाँ तैरने की शिक्षा लेकर बाद में गङ्गा की धारा में कूद पड़ते हैं। शाम को भी उस घाट पर काफी रौनक रहा करती है। लेकिन रात को बिलकुल सूना हो जाता है। केवल पुन्ना की झोपड़ी में धुँधली रोशनी टिमटिमाया करती है और वह चमड़ा ठोकता रहता है।

पुन्ना चमार है। उसके पुरखे पास के गाँव के बाशिन्दे थे। वे अच्छे कारीगर थे। अतएव उनको राजा के द्वारा सम्मान दिया गया था। वे राज-परिवार के लिये सलीमशाही जूतियाँ बनाया करते थे। दिल्ली के मुगल दरबार का सामन्ती असर छोटे रजवाड़ों के कलाकौशल पर भी पड़ रहा था। यहाँ के चित्रकार मुगल कला को अपनाकर उसमें अपना प्राकृतिक सौंदर्य भी दे रहे थे। पुन्ना के दादा विशाखू ने पहले-पहले दिल्ली के नमूने की सलीमशाही बनाकर राजा को भेंट किया था। उसमें सल्मे-सितारे जड़े थे और उस नक्काशी में पहाड़ी लताओं का शृंगार भरने में भी वह सफल रहा था। राजा उसे देखकर प्रभावित हुआ और एक दिन खास दरबार करके उस कलाकार को सम्मानित किया गया था। फिर वह गाँव छोड़कर शहर चला आया। गाँव की धरती जहाँ वे सदियों से, न जाने कितनी पीढ़ी रहे, उसे छोड़ते हुये भावुकता से उसकी आँखें गीली हो गयीं थीं। लेकिन राजदरबार का सम्मान साधारण कारीगर के लिये एक नया जीवन था। अपनी धरती जहाँ उसकी कला को प्रेरणा मिली थी छोड़कर, वह शहर की दुनिया की ओर बढ़ गया।

विशाखू को आसानी से राजमहल में जाने की आज्ञा मिल गई थी। उस राजमहल में जो प्रजा के लिये सदा से कौतूहल की दुनिया रहा है। और स्वयं उसने भी वहाँ की न जाने क्या-क्या कहानियाँ नहीं सुनी थीं।

उसने चमड़े में पक्का रंग देने के नये-नये प्रयोग किये। राजदरबार में जो पिछली जूतियाँ दिल्ली से आयी थीं, उनको सावधानी से परखा। नयी नक्काशी के लिए नये डिजाइन निकाले। पहले राजपरिवार के लिये जूतियाँ दिल्ली से आया करती थीं, पर अब वह उसकी पूर्ति करने लगा। दिल्ली से जब एक उमरा कुछ दिनों के लिये वहाँ आया था तो उससे भी उनके बारे में पूछा करता था। उसे उस व्यक्ति का व्यवहार बहुत पसन्द था। एक रोज जब कि वह वहाँ से जाने लगा तो उसे बहुत दुख हुआ था। वह चाहता था कि एक बार दिल्ली जाकर इस काम की और परख कर आये। निकट भविष्य में किसी अधिकारी के साथ वह वहाँ जाने की बात सोच भी रहा था।

राजदरबार के बाद वजीरों के परिवार का काम उसे करना पड़ता था। लेकिन वह उनके लिये कुछ घटिया जूतियाँ बनाया करता था। पहले तो उसका काम आसानी से चलने लगा, पर एक बार वजीर की लड़की ने रूठकर अपने पिता से शिकायत की थी कि उसे बड़ी राज-कुमारी की डिजाइन की जूतियाँ चाहिएँ। वजीर ने विशाखू को बुलाकर हिदायत की थी कि उसे यह छोटापन नहीं करना चाहिये। राजा तो केवल नाम-मात्र का शासक होता है। सही माने में तो उनका ही आदेश चलता है। राजकुमारियों से अधिक उसकी पुत्रियों का ध्यान उसे रखना चाहिए। यदि वह राजा के घमंड में रहेगा तो किसी भी दिन राजदरबार से निकाल दिया जायेगा। चेतावनी दी थी कि वह नीच कौम का है और अपनी औकात की बात नहीं समझता है।

उसे उस दिन बहुत दुख हुआ था। वह राजदरबार की राजनीति से परिचित था। रोज ही व्यक्तियों का भाग्योदय और पतन हुआ करता था। उन्हीं दिनों एक सेनापति लड़ाई पर गया और एकाएक उसकी मृत्यु हो गई थी। यहाँ के वातावरण से वह ऊब-सा उठा था। वह सुन चुका था कि वजीर ने जान बूझकर उस सेनापति को कत्ल करवा दिया था। गाँव की याद उसे आती थी। वहाँ के वातावरण में मानवता,

फलती-फूलती थी। वहाँ जीवन किसी फरेब पर नहीं चलता था। उस सेनापति के एक समर्थक को किसी दावत में जहर दे दिया गया था। लोगों ने बताया था कि सेनापति की एक सुन्दर नेपाली रखेल थी, जिसे वजीर अपनाना चाहता था। वह युवती एकाएक लोप हो गयी और उस घटना की चारों ओर चर्चा थी। उस युवती को अपनाने के लिये ही एक बड़ा षडयंत्र रचा गया था।

राज्य की स्थिति भली नहीं थी। विशाखू पाता था कि चापलूसों का एक दल जाकर राजा से वजीर की बुराई करता हुआ बताता था कि उनका रहन-सहन, खान-पान तथा सारा ढंग राजा से ऊँचा है। उनकी लड़कियाँ और नारियाँ राजपरिवार से अच्छा पहनती हैं। वजीर तो मजाक में कहा करता है कि राजा तो दर्शन के लिए हैं। फिर वे ही चापलूस झूठी-झूठी बातें राजा के बारे में वजीर से कहते थे। राजा और वजीर के बीच एक खाई पड़ रही थी। दोनों ही अपने-अपने दल को मजबूत कर रहे थे। सेनापति की हत्या के बाद वजीर के आदमियों ने उड़ाया था कि वह नेपाली युवती राजपरिवार में रहती है।

विशाखू के मन में फिर भी राजा के लिये आदर था। उसकी धारणा थी कि राजा भगवान का अंश होता है। वह वजीर परिवार की कुमारियों के लिये इसीलिये अभी भी घटिया सलीमशाही बनाया करता था। उसने निश्चय किया था कि मौका पाते ही वह राजा से विनती करेगा कि उसे गाँव जाने की इजाजत दे दी जाय। लेकिन उसी बीच एक घटना घटी; एक दिन रात को वह घर लौट रहा था तो उसने पाया कि एक युवती उसका पीछा कर रही है। वह उसके घर आई और निडर होकर भीतर हो ली। दरवाजा बन्द कर उसने बताया कि वह सेनापति की नेपाली पत्नी है। उसने सारी बातें बतायीं कि किस तरह वह आज कई दिनों से छुपी-छुपी अपनी रक्षा कर रही है। साथ ही और कई रहस्यपूर्ण बातें भी बताई थीं।

उस युवती की बातों से उसका हृदय भर आया और उसने आश्वासन

दिया कि वह उस की रक्षा करेगा। वह एक विश्वस्त नेपाली सौदागर के पास गया और उस युवती के भाग जाने का सारा प्रबन्ध कर दिया। उसने उस युवती को बहुत सी मोहरें जेवरातों को बेच कर दीं। वह युवती जाते समय उसकी पत्नी तथा दस साल के बच्चे को कई जेवरात भेंट स्वरूप दे गई थी। वह उसे भगाने की बात सोचकर खुश हुआ था कि उसकी रक्षा कर रहा है। दो महीने बीत गये तो उसने चैन की साँस ली। इसी बीच उसे समाचार मिला था कि वह युवती कुशल पूर्वक नेपाल पहुंच गई है।

कुछ दिनों तक राज्य में कशमकश चलती रही। फिर एकाएक समाचार मिला कि नेपालियों ने उस युवती की बेइज्जती करने के अपराध पर राजा से दंड स्वरूप कई हजार अशरफियों की मांग की है। साथ में चेतावनी दी थी कि मंत्री को हटा दिया जाय और उस हत्या की जांच हो, अन्यथा युद्ध छेड़ने की बात का हवाला दिया था। मंत्री ने खुले दरबार में उस चुनौती को मानकर लड़ाई की तैयारी शुरू कर दी। इसी बीच एक घटना और घटी। उसकी पत्नी एक दिन राज दरबार में गई थी तो गलती से नेपाली औरत द्वारा उपहार में पाई हुई अंगूठी पहिन कर चली गई। वजीर की लड़की को वह बहुत पसन्द आई और उसने उससे वह अंगूठी यह कह कर ले ली कि नमूना बताकर वह लौटा देगी। जौहरियों ने बताया था कि वैसी अंगूठी केवल नेपाल में बनती हैं। वजीर ने जब सुना तो विशाखू के यहाँ तलाशी ली गई। उस पर मुकदमा चला और उस युवती को भगाने के अपराध में उसे मौत की सजा दी गई। विशाखू ने राजा के आगे सारा अपराध स्वीकार कर लिया था।

राजा ने उसकी मौत की सजा तो माफ करदी, पर वह राज दरबार से बेइज्जती के साथ निकाला गया। उसका सब कुछ जप्त कर लिया था। वह देशद्रोही के रूप में अपने घर लौटा था। गाँव में ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह सका था। राज दरबार से निकाले जाने का कलंक वह न बिसार सका। कुछ साल बाद वह मर गया। उस ने अपने लड़के को जो

अभी दस-ग्यारह साल का था। अपने व्यवसाय की कुछ बातें बताकर कहा था कि आगे यदि कभी राज दरबार से उसे बुलावा मिले तो वहाँ कदापि न जाय। उसे अपने लोगों के बीच ही रहना चाहिये। अपनी धरती पर रहने में सुख है। उसे यह पूरा विश्वास था कि उसका लड़का उसकी कला को जीवित रखेगा।

नेपालियों ने तेजी से हमला किया था और राजा की सेना लगातार हार रही थी। एक दिन नेपाली वहाँ भी पहुँच गये और राजा भाग गया था। फिर वहाँ कई साल तक नेपालियों का राज्य रहा। पुन्ना के पिता को नेपालियों ने बुलाकर उसे राज दरबार में सम्मान देना चाहा, पर उसने अपने पिता की बात याद रख कर उसे ठुकरा दिया। वह नेपाली सेनापति के बुलाने पर भी उससे मिलने नहीं गया। वहाँ से उपहार स्वरूप जो चीजें आयीं उनको लौटाते हुए बताया था कि उसके पिता ने एक मुसीबतजादा नारी की रक्षा की थी। वह नेपालियों की इस विजय तथा उन के अत्याचारों के खिलाफ़ था। उसकी इसी गुस्ताखी पर सेनापति ने उसे गिरफ़्तार कर लिया था। लेकिन नेपाल के राणा ने उसे माफ़ कर दिया।

फिर उसका पिता कुछ नौजवानों के साथ भाग गया और वे राजा की फौज के साथ मिल गये थे।

२

पुन्ना ने अपने पिता से राज दरबार की कहानियाँ सुनी थीं। गोरखों के आतंक की कुछ स्मृतियाँ, बहुत धुँधली-सी उसे याद हैं जो उसने बचपन में सुनी थीं। उसी को पाकर उसने जीवन में आगे बढ़ना शुरू किया था। राजा और नेपालियों की लड़ाई में राजा मारा गया था। उन दिनों दिल्ली में फिरंगियों का राज हो गया था। फिर राजा को गोरों ने मदद दी थी और नेपाली हार गये। अंग्रेजों ने आधा राज्य ले लिया था। उसके पिता ने उसे बताया था कि आज तक उसे उसके दादा के बताये

हुए राजकुमारियों के पाँवों के नाप याद थे। पिता से उसने सब नमूने सीखे थे, पर अब अच्छे परिवार के लोग ही तो सलीमशाहियाँ पहनते थे।

गंगा की बाढ़ की पूरी याद उसे थी। उन दिनों काफी हलचल वहाँ रही। किसी को आशा नहीं थी कि शहर बह जायगा। लोग इसीलिये वहाँ अपना सारा सामान छोड़ आये थे। पहली बाढ़ तो निकल गयी थी, पर फिर पुल पर जहाँ कि गंगा संकरी-सी बहती है वहाँ पेड़ों के तने उलझ गये और फिर वहाँ एक बाँध-सा बन गया था। पानी वहाँ रुका और फिर पीछे की ओर पलटकर उस सारे शहर पर छा गया था। धीरे-धीरे वह सारा शहर पानी में डूब गया, इमारतें टूट गयीं और सदियों पुराना वह नगर प्रकृति के आगे हारकर घुटने टेक बैठ गया था। आज वहाँ बिल्कुल वीरान है। पुन्ना का पिता चाहता तो फिर राजधानी में जा सकता था। लोगों ने उसे सलाह दी थी कि वहाँ उसका रोजगार चमक उठेगा। पर विशाखू ने अपने पुत्र को बताया था कि अपना देश नहीं छोड़ना चाहिये और पिता की भावना थी कि वह राज दरबार का कोई काम न करेगा। राजाओं की बातों से उसे इसीलिए घृणा हो आयी थी।

अपने गाँव के पास इस बरगद के पेड़ के नीचे झोपड़ी बनाकर उसका पिता रोजगार करता था। जब शहर बह गया तो फिर उसने वह झोपड़ी खड़ी कर दी और वहीं अपना रोजगार करता रहा। अंग्रेजों ने वहाँ से दो मील की दूरी पर एक नया शहर बसाया था। वहाँ स्कूल, अस्पताल, डाकखाना, कोतवाली, तहसीलदार की कचेहरी आदि दफ्तर खोले थे। पुन्ना का पिता वहाँ नहीं गया और उसके मर जाने पर पुन्ना भी वहीं रहकर अपना रोजगार करता रहा। पुन्ना के पास अपने बाप और दादा की वसीयत थी और वह खुद भी एक होशियार कारीगर था, इसीलिए उसके पास काफी काम रहा करता था।

पुन्ना का पिता कई पुराने खान्दानों के यहाँ बँधा हुआ काम करता था। जहाँ से नकद मजदूरी के अलावा फसल पर अनाज, त्योहारों में इनाम और शादी आदि अवसरों पर कुछ न कुछ मिल जाया करता

था। पुन्ना को वह काम तो मिला ही, साथ साथ अंग्रेजी अमलदारी के अफसर तहसीलदार, थानेदार, डाक्टर, कानूनगो, पोस्टमास्टर, हेड-मास्टर आदि अफसरों के परिवार का काम भी करना पड़ता था। उसकी बनाई जूतियाँ बहुत मुलायम होती थीं, उनका रंग पक्का होता था और वे आसानी से फटती नहीं थीं। वे बहुत हल्की भी होती थीं।

...हम लोग अधिकतर मैदान में अपने पिताजी के साथ ही रहते थे। वे एक अच्छे ओहदे पर थे और हमारी पैदाइश भी वहीं हुई थी। लेकिन उनकी मृत्यु के बाद जब हमारे परिवार का आर्थिक ढाँचा टूटा तो हमें अपने गाँव जाना पड़ा। वह आश्रय हमें पहले-पहल भला नहीं लगा, फिर भी हम विवश थे। तब मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। हम लोग मैदान में विलायती बूट पहनते थे। उसके टूट जाने पर जब नये जूते का सवाल उठा तो पुन्ना बुलाया गया था। वह साठ पार कर चुका था। ठिगना कद और बार-बार खाँसता था। उसके बाल सुफेद थे। वह बहुत अस्वस्थ लगता था। उसने बताया था कि अभी-अभी मलेरिया के रोग से छुटकारा पाकर आया है। उसने अपनी छोटी पर पैनी आँखों से उस पुराने बूट को देख नाक-भौं-सिकोड़ कर कई नुक्स निकाले थे। फिर नाप लेकर वह चला गया था। वही उससे मेरा पहला परिचय था। उस रोज उसने हमारे ही यहाँ खाना खाया और पिताजी की बड़ी देर तक याद करता और उनके गुणगान करता रहा। जब वह जूतियाँ बनाकर लाया तो मुझे हँसी आ गई। मुझे लगा था कि इतिहास की पोथियों में जो राजाओं की तसवीरें छपती हैं, वे ऐसी ही जूती पहने हुये तो होते थे।

पुन्ना से परिचय हो जाने के बाद मुझे उससे सहानुभूति हो गई। वह तो मुझे एक जीता जागता इतिहास मिला था। जब वह आता तो घंटों बैठ कर पुरानी कहानियाँ सुनाया करता था। उसके पिता ने सन् १८५७ की ग़दर में एक अंग्रेज को पीटा था। सबूत न मिलने के कारण वह कुछ

दिन हवालात में रहा था। लोग यह अनुमान न लगा सके थे कि उसीने वह किया था। उन दिनों सभी अंग्रेजों से नफरत करते थे। पुन्ना स्वयं परेशान था कि विलायती जूतों से बाजार पट रहा था और उसके खरीददार घट रहे थे। वह अपने पिता की बात दुहराता था कि अंग्रेज बहुत चालाक हैं। पहले उन्होंने आधा राज्य लिया और आगे अपना रोजगार फैलाने लगे।

हमारे गाँव के नीचे किसी अंग्रेज कलक्टर की कब्र है, उसने बताया था कि वह आधी रात में मय घोड़े के एक खड्ड में गिरा था। मौत के बाद महीनों तक वह अपनी कब्र के आसपास रात को घोड़े पर चढ़ा दिखलाई देता था। मैंने वह कब्र देखी थी। उसका चूना छूट गया था। नाम के अक्षर मिट गये थे। और वह बताया करता था कि सामने जो गङ्गा के किनारे पत्थरों वाली ढलुआ जमीन है वहाँ एक औरत ने अपनी नौजवान सौत को नदी में बहा दिया। वह औरत रात को उस ढलान पर चढ़ना चाहती है पर पत्थरों के साथ नीचे आ जाती है। इसीलिये अमावस की रात को वहाँ भारी गड़गड़ाहट सुनाई पड़ती है।

वह रानीहाट की बातें बताता था कि सुना है वहाँ रानियों के लिये खास बाजार लगता था और वहीं वजीर ने पहले पहले उस नेपाली युवती को देखा था। उसी रानीहाट में गोरखों का पड़ाव था और एक नौजवान ने रात को मकान की छत पर चढ़ कर ऊपर से आग की चिनगारी फेंककर बारूद पर आग लगाई और खुद शहीद हो गया था।

गोरखों के अत्याचार की कहानियाँ सुनाते हुए उसकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगती थी। वह बताता था कि गोरखों ने गोदी के बच्चे तक छीनकर अपनी खुकरी से उनके दो टुकड़े कर दिये थे। उनके अत्याचारों की बातें सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते थे। वे सभी घरों में घुस कर मनमाने अत्याचार करते थे। ऐसे खूंखार लोग उसने कम देखे थे।

पहले उसे विश्वास था कि जमाना बदलेगा और वह वही सल्मे-सितारों वाली जूतियाँ बना कर इतना पैसा कमा लेगा कि उसकी गुजर आसानी से

हो जायगी, लेकिन दुनिया की हालत देखकर उसे नाउम्मेदी होती थी। अब उसकी जूतियों के खरीददार घट रहे थे और बाजार में नये-नये डिजाइन के जूते आ गये थे। उसका कहना था कि पहले तो तीन आने में पूरे परिवार की गुजर दस रोज हो जाती थी, जब कि आज के रुपये पर बरकत नहीं रह गई है। मैंने जब उसे अपना फुटबाल खेलने का बूट दिखाया तो वह बड़ी देर तक उसे ताकता-ताकता रह गया था। उन दिनों कैनवस के रबड़ के जूते चले थे। यह रबड़ के ऊपर कपड़ा लगाना उसके लिए एक आश्चर्यजनक घटना थी।

उस का लड़का ईसाई हो गया था और उससे उसने सम्बन्ध तोड़ दिया था। उसका ख्याल था कि अपना मजहब नहीं छोड़ना चाहिये। उसकी पोती किसी स्कूल में पढ़ती थी और उसने अपना फोटो उसके पास भेजा था जिसे कि उसने मुझे दिखलाया था। वह बार-बार जानना चाहता था कि गोरे क्यों उनके बच्चों को बहका कर अपने मजहब का बना लेते हैं। वह अपने लड़के पर बहुत नाराज था कि उसने उसके खानदान का नाम मिट्टी में मिला दिया है।

लगभग पाँच साल तक मैंने पुन्ना को बहुत समीप से देखा था। मैट्रिक पास करने के बाद मैं कालेज चला आया और फिर गर्मियों की छुट्टियों में ही उससे मिल पाता था। हर बार मैं उसका मन रखने के लिए एक जोड़ी सलीमशाही उससे खरीद लाता था। अक्सर संध्या को हम घूमने के लिए उसकी झोपड़ी की ओर चले जाते थे, वह मायूस होकर बताता था कि अब वह सलीमशाही बहुत कम बनाया करता है, केवल मरम्मत करके जो पैसा मिलता है, उसी से अपनी गुजर करता है। वह बताता था कि अंग्रेज़ों के आने के बाद ही वहाँ तबाही आई। अब तो खरा सिक्का तक बाजार में नहीं रह गया है। जिन्दगी में ऐसे बुरे दिन उस ने कभी नहीं देखे थे। वह पेचिस का मरीज था और उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। जमाना बदला और उसके साथ इनसानियत भी बदल गई।

मैं नौकरी पर चला आया और उसे भूल सा गया था कि घर से चिट्ठी आई कि उसे हैजा हुआ और वह मर गया है। तो मुझे लगा कि सामन्ती कला का एक महान स्तम्भ टूट गया है। एक शहर बहा तो दूसरा बसाया गया। लेकिन पुन्ना के साथ उसके परिवार की कला भी लोप हो गई, वह जो कि कभी स्पर्धा की चीज थी!

वैसे तो पूंजीवाद के आगमन के साथ टेहरी के सामन्ती राजाओं का परिवार भी आज कहीं नहीं दीख पड़ता है। वह टेहरी रियासत की धरती आज राजा के अधीन नहीं है। भविष्य जब सही इतिहास लिखा जायगा तो शायद राजाओं के नाम हम भूल जायं, लेकिन पुन्ना के परिवार ने सभ्यता को जो एक नई देन दी उसे कोई नहीं भूल सकेगा।

नई कहानी का प्लाट

"तुम नौजवान लड़ाई की बातें क्या जानो। आज तो हरएक आदमी आसानी से भरती हो जाता है। हमारे जमाने में अफसर रंगरूट काफी समझ-बूझ कर चुना करते थे। सैकड़ों नौजवानों में से पाँच सात ही ऐसे निकलते थे कि डॉक्टरी इम्तहान पास करलें और अफसर बनना तो बहुत मुश्किल होता था। बड़ी होड़ लगी रहती थी। सुबेदार होना मामूली बात न थी। उस जमाने में चौड़ी छाती के पक्के दिल वाले लोग फौज में जाया करते थे। आज तो जिसे देखो फौज़ में भरती होने चला जाता है, मानो कि किसी बाबू बनने वाले महकमें में चला जा रहा हो।"

यह कह कर वह बूढ़ा सुवेदार मेजर ध्रुपद में खिलखिला कर हँस पड़ा। उसकी वह हँसी दालान में बड़ी देर तक गूँजती रही। मैंने उसके चेहरे की ओर देखा, वह पैंसठ साल से ज्यादा उम्र का था। सिर के बाल और बड़ी बड़ी मोछें खिजाब से रंग कर काली की गई थीं। उसके बाल संवारे हुए थे। और आँखों में सुरमा पड़ा हुआ था। उसके चेहरे पर लाली थी और बड़ी बड़ी आँखों में एक अजनबी चमक मिली। उसकी आँखों की सुफेदी में कुतूहल मिला। वह सिलेटी रंग की फलालेन की

पूरी बांह वाली कमीज और नीली गरम पतूलन पहने हुए था। कमीज पर लाल नेकटाई लटक रही थी।

सामने दीवार पर हिरन, बारहसींघे आदि जानवरों के सींग लटके हुए थे और अन्दर कमरे में उनकी खालें बिछी हुई थीं। वह सफरी कुरसी पर लधरा हुआ हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। उस शौकीन तबीयत वाले व्यक्ति के लिए भला किसके मन में कुतूहल नहीं उठेगा। फिर उसके तो कई किस्से उस पर्वत प्रदेश में प्रचलित थे। सबसे दिलचस्प बात यह थी कि अब तक सब मिला कर उसकी नौ शादियां हो चुकी थीं। जब कभी उसे फौज में कोई रुतबा मिला तो तुरंत ही छुट्टी पर आ उसने पंडित को बुलवा कर कहा कि तीन चार सौ या कुछ अधिक खर्च करने पर कोई गरीब लड़की मिल जाय तो वह उसे उबारने के लिए तैयार है। उसकी छै पत्नियाँ मर चुकी थीं और तीन जीवित थीं। सबसे नई नवेली पत्नी की आयु इस समय बीस साल की थी और पुरानी की पैंतालीस। नई देवीजी ने पिछले ही साल उस परिवार को एक पुत्र प्रदान किया था। यह शादी पांच साल पहले हुई थी तथा समाज में साधारण घटना की भाँति इसकी भी चर्चा हुई थी। वह एक गरीब किसान की लड़की थी। उसके पिता पर इनका कर्जा था। पिता के मर जाने पर अदालत में नालिश हो जाने के डर से पंडितजी ने समझौता करवाया था कि लड़की इस घर में आ जायगी और पट्टा फाड़ दिया जायेगा। सच ही एक रोज लड़की अपने भाई के साथ आई थी और पंडितजी ने आग की साक्षी देकर यहीं वह शादी करवाई थी। हंस हंस कर कहा था, 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं।'

वे उस पत्नी को 'छोटी' कह कर पुकारा करते थे। अब हुक्का गुड़गुड़ते हुए ही उन्होंने पुकारा, "छोटी, साहब के लिए चाय और नाश्ता जल्दी भिजवा दो।" फिर उसी तरह हुक्का गुड़गुड़ाते रहे। कुछ सोच कर एकाएक पूछा कि मैं हुक्का तो नहीं पीता हूँ। फिर कहा कि नए लड़के हुक्के से दूर भागते हैं, पर इसका जो आनन्द है वह दुनियाँ में कहीं

नहीं मिलता है। लाम पर तो एक एक चिलम के लिए तरसते थे। एक सिपाही एक बार नारियल पीते पकड़ा गया था तो उसका कोर्ट मार्शल हुआ था। फिर पुकारा, "बड़ी, सिगरेट का टिन ले आना।"

इस पर बिना किसी हिचक के मैंने अपना पाईप निकाला और तम्बाखू भर रहा था कि वे बोले, "ठहरिए जनाब, इस घर में मेहमान को सब चीज मिल जायगी, तीस साल नौकरी की है। सब रसूकात जानता हूँ।" फिर जोर से पुकारा, "देखना जो परसों पारसल से तम्बाखू का टिन आया था लेती आना। वहीं आलमारी पर रक्खा हुआ है।"

कुछ देर के बाद एक काफी उम्र की औरत सगरेट का टिन और पाईप का तम्बाखू ले कर आई। मैंने पाईप भरा और लाइटर से सुलगा कर पीने लगा। वे कुछ देर के बाद बोले, "साहब यदि हमारे यहाँ कई शादियाँ करने का रिवाज न होता तो घर गृहस्थी चलनी मुश्किल होती। नौकर चाकरों से काम नहीं चलता है। सब हरामखोरी करते हैं। फिर सच बात तो यह है कि औरत को पालने में कुछ ज्यादा खर्चा नहीं होता है। ये तीनों मिलजुल कर सब काम कर लेती हैं और बाहर इधर उधर का काम भी देख लेती हैं। इनकी देह बड़ी मजबूत होती है। हलवाहा कस्बे से सौदा-पत्ता ले आता है और पिनशिनी साहब की गुजर हो जाती है। आप तो हँसेंगे पर सब मिला कर अब तक बीस बालक बालिका हो चुकी हैं।'

वे उठे और भीतर जाकर आदेश दिया कि चाय फौरन लगाई जाय, ब्रेक फास्ट का समय निकला जा रहा है। बुड़बुड़ाते रहे कि किसी को समय की पाबन्दी नहीं आती है, मिलिटरी में यदि इस तरह बेपरवाही बरती जाय तो दुश्मन किसी भी समय धावा बोल सकता है। और भी न जाने क्या क्या समझाते रहे, लौट कर बाहर आ बताया, "जब मैं पहले-पहल फौज से पेन्शन लेकर लौट था तो घर का सारा काम वक्त पर चलाने के लिये कड़ा नियंत्रण शुरू किया था। कभी कभी तो बड़ी सुबह मैं अपनी पाँचों पत्नियों को लेकर दूर मैदान में कवायद करवाता था। लेकिन धीरे धीरे आदत छूट गई। एक की बीमारी के कारण सब प्रोग्राम चौपट हो गया।

उस के मर जाने के बाद फिर किसी को कवायद करने का उत्साह ही नहीं रहा।

नाश्ता आ गया था। आमलेट, कबाब, भुने हुए बादाम-पिश्ते व गरम गरम प्याज की मिर्चें मिली पकोड़ियाँ। मैं चुपचाप चाय पीता रहा। वे तेजी से खाने पर जुटे हुए थे, मुझे चाय ही पीते देख कर कहा, "आप आज के नौजवान तो अजीब हैं। आपकी उम्र में तो मैं आधा भुना हुआ बकरा अकेला ही खा जाया करता था। सच बात यह कि जवानी का खाया पिया ही आगे की उम्र में काम आता है। आज तो खाने-पीने का जमाना ही चला गया है। कोई चीज नहीं मिलती है। पुराने दिनों में तो घी तीन सेर तक का लिया है। आज तो यदि अपनी दो भैंसे न होंती तो घी देखने तक को नहीं मिलता। जहाँ देखिये डालदा चलता है। मैं तो इसीलिए कहीं दावत या शादी व्याह में नहीं जाता हूँ। डालदा का खाना ऐसा लगता है कि गले में कुछ चिपट गया हो। और साहब पिछली लड़ाई के जमाने में भी मंहगाई हुई थी पर ऐसा चौपट नहीं हुआ था। चीजों के दाम धीरे धीरे घट गये थे। मुझे तो ऐसा लगता है कि आप के इन कांग्रेस वालों में राजपाट चलाने की तमीज नहीं है। अंग्रेज की बात ही कुछ और थी। उसका रोब दाब देखकर हरएक घबरा उठता था। साहब, एक अकेला अंग्रेज हमारे सारे जिले पर हुकूमत करता था और किसी की चूं करने की हिम्मत नहीं थी। आज तो कांगरेसियों की चांडाल चौकड़ी जमती है और अफसर उनकी चापलूसी करते रहते हैं। जिसने जितनी चापलूसी की उसे वैसा ही रुतबा मिल जाता है।

न जाने क्या सोच कर उन्होंने पुकारा, "छोटी, यहाँ आना। और कुछ देर के बाद एक युवती आकर वहाँ खड़ी हो गई तो वे हंस कर बोले, "देखिए साहब यही मेरी नई नवेली है। ऐसी औरत इधर सौ दो सौ गाँवों में ढूंढे नहीं मिलेगी। यह तो पंडित जी की मेहरबानी से यहाँ आ गई। यहाँ के नौवाजनों ने इस शादी पर कई रुकावटें डालने की कोशिसें कीं। एक मीटिंग करके प्रस्ताव पास किया, लेकिन जो लिखा होता है कभी नहीं

मिटता। मैंने भी कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। एक गायक को बुलवा कर अपना और इसका गीत लगवा दिया है। आज गाँव गाँव में फौजी की नवेली दुलहिन का वह गीत युवतियाँ गाती हैं।

वह फिर खिलखिला कर हँसा और बोला, "आप इससे जान पहचान कर लिजिए जनाब। और छोटी इन डाक्टर साहब से दस साल पहले मेडिकल कालेज में पहले मुलाकात हुई थी। तब से कई बार इनको न्योता दिया, आज तब से आये हैं।"

उस युवती ने झुक कर मुझे नमस्कार किया और जाने को थी कि उसने रोक कर कहा कि वहीं बैठ कर चाय पिये। वह कुछ उलझी थी कि बात सुलझाई कि मैं कोई पराया तो नहीं हूँ। वह युवती काफी झिझक के साथ बैठ गई। उसने चाय पीने के लिये प्याली उठाई थी कि हड़बड़ी में प्याली हाथ से छूट गई और चाय उसकी साड़ी पर गिरी ही थी, साथ साथ प्याली फर्श पर गिर कर चकना चूर हो गई। वह कुछ देर रुंआसी सी खड़ी रही और फिर एक बार उनकी ओर देख कर चुपचाप चली गई। मैं उस युवती की सहायता की बात सोच कर भी चुप रह गया। मन में एक अजीब उथल पुथल होने पर भी चुपचाप चाय पीता रहा। इस युवती की चर्चा और उसका गीत मैंने सुना है। वह एक फौजी नौजवान से प्रेम करती थी। पिता के ऋण चुकाने के लिये वह इस तरह न बिकी होती तो अपने उस प्रेमी के परिवार में खुश हो कर रहती। वहां उसका जीवन निखरता और पुरुष की दासता का यह उपहास न सुनना पड़ता। अपनी बेड़ियों की भावना भले ही वह व्यक्त नहीं करती, पर उस की आँखों की सुफेद डेवलियों में एक खोखलापन मैंने पाया था।

लेकिन वह तो फिर आकर गरम गरम पकोड़ियाँ प्लेट पर डाल कर तेजी से भीतर चली गई। उस के चले जाने पर वे मुस्करा कर बोले, "साहब ये लड़कियाँ भी अजीब होती हैं। चाहता हूँ कि यह नए जमाने की लड़कियों वाला व्यवहार सीख जाय पर वह नहीं होता है। कुछ

समझाऊँगा तो रोने लगेगी। आप ही बताइये इस उम्र में मान मनोबल कहाँ तक चल सकता है? इधर इसकी सेहत ठीक नहीं रहती है। आप तो डाक्टर हैं। कोई ऐसा उपचार कीजिए कि इसका यह फीकापन दूर हो जाय। इसे मैंने कभी हँसते हुए नहीं पाया है। मैं इसे सब सहूलियत देना चाहता हूँ, पर पाता हूँ कि इसकी उदासी नहीं मिटती है। डर सा लगता है कि कहीं इसे टी० बी० न हो जाय। वैसे इसको सभी टानिक दे रहा हूँ। उसकी चिन्ता न जाने क्यों मुझे परेशान किये रहती है।

चार प्याले चाय पी कर वे उठे और हाथ मुंह धो कर फिर बैठ गये। और अब हुक्का गुड़गुड़ाने लगे। मैं चुपचाप चाय की आखरी बूंट पीकर अब सिगरेट फूंक रहा था। रह रह कर मुझे अपनी पत्नी की याद आ रही थी। वह भी उम्र में इस युवती के ही बराबर होगी। उसकी शिकायत है कि डाक्टर सहृदय नहीं होते हैं। वह कहती थी कि अपनी किसी सहेली को सलाह नहीं देगी कि डाक्टरों से शादी की जाय। सारी दुनिया की परवाह करके भी घर की ओर उदासीन रहते हैं। परिवार में वे पत्नी से भी ऐसे ही बातें करेंगे मानों कि अपने किसी मरीज से कर रहे हैं। यह सारी जाति रूखी होती है। उसका भी एक छोटा लड़का है। उसकी पत्नी ने पत्र लिख कर पूछा था कि उसका क्या नाम रखा जाय। कई नाम सुझाए थे! उस बालक के बाद उसने पत्नी का सौन्दर्य निखरता हुआ पाया था। आज अब वह खास सी कोई शिकायत नहीं करती है। एक यह पत्नी है। प्याले के टूटे टुकड़े ऐसे बिखरे पड़े थे, मानों कि उसके जीवन के टुकड़े बिखरे पड़े हों। लेकिन वह पत्नी थी और अपने व्यक्तित्व की किसी भावना से उसको तोलाना गलत लगा।

उसका भावी पति जो कि न जाने कब से उस से प्रेम करता था; और जिसके साथ उसने पहाड़ की ऊंची ऊंची चोटियों पर गाय चराते हुए गीत गाए थे और भविष्य के सपने गुंथे थे; वे सब चकनाचूर हो गए थे। वह एक दिन ऊब कर चला गया था। वह फौज में नौकरी करता है और कभी घर लौट कर नहीं आता है। इस बूढ़े ने ही बताया था कि

वह अच्छा सैनिक है और कभी जरूर अफ़सर बनेगा। फिर हँसी उड़ाई थी कि साले की माँ तो गाँव भर के भले परिवारों में मेहनत मजदूरी करती थी और वह चला था इस परी से शादी करने। शादी के बाद इतना कायर निकला कि फिर गांव में लौट कर नहीं आया। इसने पहले एक बार गांव के एक लड़के से चिट्ठी लिखाई थी कि वह आकर बुड्ढे से उसकी रक्षा करे। वह चिट्ठी लौट आई थी। पता ठीक नहीं लिखा था। इसकी चर्चा महीनों तक उस गाँव में रही थी। सब लोग इसकी हिम्मत पर दंग रह गए थे। वहाँ की सदियों पुरानी परम्परा के प्रति यह पहला विद्रोह था। आज यह पति उस बात को भी हंसी हंसी में बताता है। वह पत्नी चुपचाप सुनती है। लेकिन वह तो उस युवती को प्राणों से भी अधिक प्यार करने का दावा करता है। और मुझे यह बात कब्र में पांव लटकाए हुए व्यक्ति का दंभ लगता है। जो दो चार साल में मर कर एक युवती का जीवन बुझा देगा। उसका वह प्रेम नारी का शोषण लगा जो कि पुरुष अपना अधिकार आदि काल से मानता चला आया है।

मैंने देखा कि वे उसी भांति हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। मैं चुपचाप उठा और दालान पार कर बाहर आया। और आगे बढ़ कर देवदारु के पेड़ों के बन को पार किया। हवा के झोंके तेजी से चल रहे थे और उन पेड़ों के नोकीले लम्बी सीकों से पत्तों को छेद कर सर्द पीड़ा पहुँचा रहे थे। आगे मैं एक ढलुआ चट्टान पर बैठ कर घने जङ्गलों के बीच से बहती हुई नदी का शोर सुनता रहा। लगता था कि वह नदी भी उस नारी के प्रति अपनी सहानुभूति बखेरती हुई, नीचे मैदान की ओर बह रही थी।

२

दोपहर का खाना खा कर मैं लेट गया और न जाने कब नींद आ गई। बड़ी देर तक सोया ही रहा। फिर बाहर शोरगुल सुन कर नींद टूट गई। लगा कि कुछ औरतें आपस में लड़ रही हैं। खिड़की से बाहर देखा तो पाया कि उनकी पहली पत्नी नई बहू को भद्दी गालियाँ दे

रही थी। उसका कहना था कि जब से वह आई उसने न जाने क्या मोहनी फेर दी है कि उनकी हैसियत नौकरानियों की बन गई है। वह तो राजरानी बन कर मौज करती है और सर्दी, गरमी, बरसात सब मौसमों में उनको कमरतोड़ कर मेहनत करनी पड़ती हैं। पहले छोटी चुप रही, लेकिन उन दोनों ने तो सारा मोहल्ला इकट्ठा कर लिया था। अब तो छोटी भी ताव में बोली कि इतनी जलन है तो पेड़ से फांस लगा कर मर क्यों नहीं जाती हो। वह तो फफक कर रोती हुई कह रही थी कि इस घर में मुझी को क्या सुख है। उस पंडित को कोस रही थी, जिसने कि उसकी जिन्दगी से जुआ खेला था। रोते रोते वह तो अपने बाल नोचने लगी और फिर अपना सिर पकड़ कर जमीन पर पटक पटक कर मारने लगी। कई औरतों ने उसे पकड़ने की चेष्टा की पर असफल रहीं। मैं स्वयं परेशान था कि हमारे फौजी अफ़सर इस समय कहाँ चले गये हैं। कुछ देर के बाद मैंने पाया कि उसकी मुट्ठियाँ ढीली पड़ गई हैं। वह थक कर वहीं फर्स पर लेट गई थी। कुछ औरतें पंखा कर रही थीं और तब तक गाँव के पंडितजी भी आ गये थे। जिनको देख कर औरतों ने घूंघट डाल लिया था। उन्होंने कोई मंत्र पढ़े तथा कुछ चाँवल चारों ओर बिखेरे। उस युवती की नींद अब खुल सी गई थी। उसकी आँखें फीकी मिलीं और वह बहुत थकी सी लगती थी। बड़ी देर तक चुपचाप मैं उसे देखता रहा और फिर लौट कर आराम कुर्सी पर लधर, लेट गया। मन ही मन उस युवती की जिन्दगी पर सोचता रहा।

पंडितजी कमरे के भीतर आए और खटके के कारण मैंने आँखें खोलीं। बिना कोई उत्साह दिखाए चुपके पाइप भरा और सुलगा कर पीने लगा। पंडितजी बिना किसी तकल्लुफी के अपने हुक्के के साथ मोढ़े पर बैठ गये थे। कुछ देर के बाद बताया कि साहब तहसील एक जमीन के झगड़े के सिलसिले में गए हुए हैं और अब आने ही वाले होंगे। फिर बताया कि उस युवती की सौत भूत बन कर अक्सर उसे परेशान किया करती है और जल्दी ही वे भूत झाड़ने वालों को बुलवाकर उसे भगा देंगे। मैं

मन ही मन सोचने लगा कि वह भूत तो शायद अब इस जिन्दगी में नहीं भागेगा और भविष्य में जब दुनियाँ बदलेगी तो नारी को यह अधिकार मिल जायगा कि वह अपनी इच्छा से युवक चुन कर जीवन का निर्माण करे। तब ये भूत समाज में नहीं बनेंगें और नारी हिस्टीरिया की मरीज़ नहीं होगी। शायद पंडितों की यह जाति भी तब इस तरह मानव का शोषण नहीं कर सकेगी। यह धर्म भी तो नारी को बेड़ियाँ पहनाता है कि उसकी अपनी सीमाएं हैं। ये पुरोहित हज़ारों सालों से शोषण के हथियार रहे हैं।

मैं चुपचाप था कि पंडितजी ने बात चालू की, "आप लोग तो भूत नहीं मानते हैं। और हमारे आयुर्वेद में तो इस रोग का कोई उपचार नहीं है।"

वे पुरोहिती ही नहीं करते हैं उनका पेशा वैद्य का भी है। वैसे गाँव में इंजीनियर का काम करते हुए वे मकान का नक्शा भी तैयार करते हैं। साहूकार के साथ मिल कर वे गरीबों की जमीन तथा और सामान सस्ता दिलवा दिया करते हैं। पंडितजी इस जन्म से अधिक दूसरे जन्म का विधान बनाया करते थे, जहाँ कि स्वर्ग मिलने की उम्मेद वे सब को दिलाया करते हैं। लेकिन इस समय तो पंडितजी मुझे अपना हमपेशा समझ कर बराबरी के दर्जे से बातें कर रहे थे।

लेकिन पंडितजी के श्राप से मुझे उस युवती ने उबार लिया। वह एक बड़ी प्लेट पर खुबानी, प्लम, आड़ू आदि फल ले आई। पंडितजी से पूछा कि चाय तैयार हो गई है। वे तो शाम को देर से आवेंगे। मैंने कुछ नहीं कहा तो वह चली गई। अब मैंने एक किताब उठाई और पढ़ने लगा। पंडितजी ने एक दो बार अपनी विद्वतापूर्ण बातों से मुझ पर रोब गालिब करने की चेष्टा की और मुझे उदासीन या, पक्का नास्तिक समझ कर चुपचाप खिसक गए। जाते जाते वे बोले कि शाम को आवेंगे। मैंने फिर भी कोई आग्रह नहीं किया था। जब वे चले गये तो मुझे न जाने क्यों बहुत खुशी हुई थी। शायद ये ही वे पंडितजी

हैं जिसने कि उस युवती का जीवन नष्ट करने का षड़यंत्र रचा था। मैं अब अपने को खाली सा पा रहा था। फिर मैंने फल खाने की कोशिश की पर वे नीरस से लगे। वह युवती भी तो आज जीवन को नीरस पाती है और यह नारी का आपसी संघर्ष। ये तीनों पत्नियाँ आपस में कुत्तों की भाँति झगड़ती हैं। वह पुरुष एक का नहीं है। वह नवयुवती आज पुरानी पत्नियों की रोष-भाजन बनी हुई है। पर उसका कसूर क्या है?

वह युवती तो फिर आई थी एक प्लेट पर नमकीन तथा दूसरी पर फल लाई थी। मेज पर ठीक तरह लगा कर चली गई। मैंने उस सबको देखा पर भूख तो लगी नहीं थी। पपीता उठाया और खाने लगा। वह भी फीका लग रहा था। उस नारी की तरह जो आज जीवन में खोई खोई रहती है। उसे बन्धनों से जकड़ा गया है। उसे श्राप मिला है कि वह इस बूढ़े फौजी की पत्नी बन जाय। उसे वह निभा रही थी किसी से शिकायत नहीं करती है। आज अब हार कर चुप भी हो गई है। उसका सहारा शायद वह पुत्र होगा। क्या वह उससे कभी मांग करेगी कि इस अन्याय का बदला समाज से ले।

प्लम का दाना लाली के साथ हल्का कालापन लिए हुए था। उसमें मैंने दाँत गड़ा दिए। कुछ खट्टा और कुछ मीठा था। तभी वह युवती फिर आई थी और चाय की केतली वहाँ रखदी। जाने को थी कि मैं पूछ बैठा, "आपकी तबीयत अब कैसी है। आपको आराम चाहिए। व्यर्थ तकलीफ न करें। मुझे भूख नहीं है।"

यह सुन कर वह युवती पहले तो आगे बढ़ गई। फिर ठिठक कर रुक गई और खड़े हो कर एक बार मुड़ कर देखा। खड़ी ही रही। मैं कुछ साहस कर बोला, "देखिए, आपकी तबीयत सुना अच्छी नहीं रहती है। आपको क्या तकलीफ है। आज दिन को भी आप बेहोश हो गई थीं।"

वह कुछ देर उसी तरह खड़ी रही, फिर उसकी सिसकियाँ सुनाई पड़ीं और मैं तेजी से उठ कर उसे पकड़ न लेता तो शायद वह वहीं गिर

पड़ती। मैंने चुपचाप उसे वहीं फर्स पर लिटा दिया और क्षण भर उसके रूप को निहारता रह गया। आँखें मुंदी हुई थीं। मैंने तेजी से पुकारा, "पंडितजी, इनकी तबीयत फिर खराब हो गई है।"

अपनी पत्नी की याद मुझे आई। वह भी तो ऐसी ही रूपवती है। मैं इस रमणी के प्रति वाले अन्याय पर सचता ही रह गया। वह उसी भाँति निर्जीव सी पड़ी थी। एक बार उसने दाँत किटकिटाए और आँखें खोलीं; फिर जोर जोर से रोने लगी। नीचे से कोई कह रही थी कि कैसी वेहया है। मैं चाह कर भी कोई परिचर्या करने में अपने को असमर्थ पा चुपचाप उठा। कोट पहिना और बाहर निकल गया। मन में बार बार सवाल उठता था कि क्या मैं अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। यह नारी की कैसी परवशता है। यह भी संभव हो सकता है कि मुझे देख कर उसे अपने प्रेमी की याद आ गई हो। वह भी तो उसी की उम्र का युवक होगा। यह नारी आज उसके बिना मुरझा रही थी।

मैं पहाड़ी की चोटी की ओर बढ़ रहा था। वह टेढ़ी मेढ़ी पगडंडी ऊपर की ओर जा रही थी। देवदारु के घने जंगल के बीच में रुक गया। मैंने जमीन पर पड़ी हुई एक टहनी उठाई और उसकी नोकीली पत्तियाँ को अपनी उँगलियों पर चुभाने लगा कि एक नई चेतना आ जाय। सामने कुछ पेड़ों पर लाल-लाल फूल के गुच्छे लटक रहे थे। लुन के ऊँचे ऊँचे पेड़ों के भारी भारी से स्वस्थ तने सीधे आकाश को छूते से लगे। वहाँ की हरियाली मन में पैठ कर एक गुदगुदी पैदा करती लगी। मैं चुपचाप वहाँ की जमीन पर उगी घास पर लेट गया। बड़ी देर तक उसी भाँति लेटा हुआ रहा।

संध्या हो आई थी। चिड़ियों का कलरव चारों ओर गूँज उठा था। मन लौटने को नहीं करता था, उस पत्नी की बेबश आँखें बार-बार सामने आती थीं। यदि उसका पत्र प्रेमी को मिल गया होता तो क्या वह सच ही भाग गई होती। उसके साहस पर मैं दंग रह गया था।

वह तो असफल रही और आज उस परिवार में क़ैद सी है। अपनी भावना को किसी के आगे व्यक्त न कर सकने के कारण मन ही मन मुरझा कर जीवन नष्ट कर रही है। मानो कि इस समाज में आज उसका कोई उपयोग नहीं है।

गायें गाँव की ओर लौट रही थीं। गौधूली में मैं उठ बैठा, एक बार चारों ओर नज़र डाली। पहाड़ी की शृंखलाएँ दूर-दूर तक फैली हुई थीं। नीचे की घाटी पर धुँध छाया हुआ था। मैं चुपचाप गाँव की ओर वाली पगडंडी पर उतरने लगा। कहीं कोई पक्षी दुखपूर्ण स्वर में बोल रहा था। उसका वह स्वर चारों ओर गूँज उठता था। और उस घने जंगल को चीर कर मैं गाँव के पास पहुँच गया था।

३

रात को भीतर कमरे में बैठ कर पंडितजी के साथ रम की चुस्कियाँ लगाते हुये सूबेदार मेजर अपनी लड़ाई की कहानियाँ सुना रहे थे। उनको बहुत दुख था कि मैं पीता नहीं हूँ। उनकी धारणा थी कि जीवन में यह पदार्थ सर्वश्रेष्ठ है। पंडितजी बात बात में उनकी चापलूसी करते हुए गाँव वालों को कोस रहे थे कि जरा जरा बातों के लिये झगड़ते हैं। जमाना बदल गया है। उनके अहसानों को सब भूल गये हैं। पहले इस गाँव को कौन जानता है। जब से वे अफ़सर हुए हैं, तभी से अहलकार इस गाँव में आकर टिकते हैं और उनकी कलम में यह ताकत है कि बड़े से बड़े अधिकारी उसे मान लेते हैं। वे बता रहे थे कि पटवारी इस कोशिश में है कि नदी के पास वाले खेत उनको सस्ते में मिल जावें। अभी उनके कुल की मर्यादा के लायक जायदाद जमा नहीं हुई है। बीच बीच में पंडितजी दो चार घूँट पी कसम खाकर कहते थे कि ऐसी उम्दा विलायती शराब आज तक उन्होंने किसी यजमान के यहाँ नहीं पी है। छोटी पत्नी की अस्वस्थता का कारण पंडितजी ने बताया कि अभी चार साल तक शनी की दशा है। यह सा सुझाव दिया था कि पूजा करके देवियाँ नचाई जाँय, जिससे कि भूत भाग जायगा।

सुबेदार मेजर की आँखें गुलाबी पड़ गई थीं। वे बोले, "डाक्टर साहब, पहले मैं कभी नहीं पीता था, पर १६१८ की लड़ाई में हमें कई-कई रातों तक खाइयों में रहना पड़ता था और वहाँ थक जाते थे। ठंड बहुत पड़ती थी। वहाँ की फुहारेदार बरसात में मैंने भी धीरे-धीरे लाचारी पीना शुरू कर दिया था। उन दिनों की लड़ाई भी क्या थी। ढाई फुट चौड़ी खाई पर कई सप्ताह गुजर जाते थे। वहाँ रेंक कर चलना पड़ता था। जरा सिर ऊपर हुआ कि गोली सिर पर लगी। रात को रिलीफ आकर खाना दे जाती थी और घायलों तथा मुरदों को ले जाती थी। घायल अस्पताल भेज दिये जाते थे और मुरदे एक जगह इकट्ठे किये जाते। एक डेढ़ सप्ताह में डाक्टर आता और मुरदों की परीक्षा लेता था। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि किसी की छाती गरम मिलती और फौरन उसे हटाकर उसकी दवा की जाती थी। कई मुरदे जीकर फिर दुश्मन से लड़ने को तैयार हो जाते थे। मुर्दों की वर्दी, पट्टियाँ व और सामान निकाल कर जमा कर दिया जाता था। सब से ज्यादा उनके बड़े बूट की ओर नजर जाती थी। कभी-कभी तो अपने मरे साथियों के बूट सिपाही खाई में ही निकाल लेते थे। खाई की जिन्दगी से कभी कभी ऊब जाया करते थे। आधी रात के करीब खा पीकर कुछ आराम करते थे तथा खूब पीते थे। सुबह होने से कुछ पहले जब गुलाबी नशा रहता तो नया जोश आता था और हम चुपचाप खाई के ऊपर रेंक कर चढ़ते थे। राइफिल पर संगीन चढ़ी रहती थी। और चुपचाप रेंकते हुए दुश्मन की खाई की ओर बढ़ते थे। वह खाई सौ डेढ़ सौ गज की दूरी पर होती थी। यदि दुश्मन होशियार होता था तो मशीनगन से गोलियों की बौछार करता था। सावधानी से रेंकते हुए उस ओर बढ़ते थे और उनकी खाई पर धावा बोल देते थे। फिर संगीन भोंक कर, अपनी कुक्करी से उनकी गरदन काट देते थे। हमारी इस कुक्करी से दुश्मन उन दिनों इतना डरता था कि शायद उतना डर आज एटमबम से नहीं होता होगा। उस मौत की घाटी को मैंने अपनी टुकड़ी के साथ सैकड़ों बार पार किया था। गोरे

और जर्मन वाले तो पुट पुट गोलियाँ ही चलाना जानते थे। सामने की लड़ाई में वे हमेशा हार जाते थे। उन खाइयों का जाड़ा आज भी मैं अपनी हड्डी हड्डी पर कँपकँपी पैदा करता पाता हूँ। चारों ओर बरफ पड़ी रहती थी। ऐसा जाड़ा सच ही हमने कभी नहीं देखा था। खाइयों में हम लोग ऊब जाते थे। लेकिन एक रोज मैं एक घायल साथी को उठा रहा था कि एक गोली मेरे कान के पास से निकली। मैंने सर की आवाज सुनी पर गोलियाँ चलने की वह सर, सर, की आवाज तो रोज ही सुना करते थे। जब उस घायल को ठीक तरह परिचर्या करके उठाया तो मालूम हुआ था कि एक गोली कान के आर-पार हो गई थी।"

यह कह कर सुबेदार मेजर ने अपना कान दिखाते हुए कहा, "डाक्टर साहब जर्मन वाले काफ़ी अच्छे निशानेबाज होते हैं। बहुधा वे राइफल की नलियों का निशाना बाँधते थे और हमारे सिपाहियों की राइफलों की नली फट जाया करती थीं। ज्यादा सिपाहियों की हथेलियाँ टूट जाती थीं। सुबह के धुंध में दुश्मन पर हमला करना सच ही बहादुरी का काम था। खाइयों में ठीक खाना महीनों तक नहीं मिलता था। इसके बाद हम कुछ महीने पेरिस में रहे थे और वहाँ की औरतें हमें अपना रक्षक मानती थीं। हम उनके अतिथि भी बनते थे।"

पंडितजी की जबान अब लड़खड़ाने लगी थी। वे होश में नहीं थे और अनर्गल बकने लगे तो वे बोले, "पंडितजी अब जाइए ऐसा न हो कि कहीं रास्ते में भूत फिर दिखाई दे और इस बार कहीं आपको फिर अपने दरबार में ले गये तो जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

पंडितजी चले गए तो वे न जाने क्या सोच कर चुप रह गए। मैं उठ रहा था कि मुझे बैठने का इशारा करते हुए बोले, "आपको शायद यह नहीं मालूम होगा कि मेरे पाँच लड़के इस पिछली लड़ाई में मारे गए हैं। आज तो अब लड़ाई नहीं होती है, उसमें बहादुरी का सवाल नहीं उठता है। और फिर इन लड़ाइयों से हमारे देश में कभी खुशहाली नहीं आई है। हमारे यहाँ तो नौजवान सच ही बिल्कुल नष्ट

हो जाते हैं और फिर ये लड़ाइयाँ तो लगता है कि कभी समाप्त नहीं होंगी। इससे हमारी जिन्दगी तो नहीं बदली है। सिपाही का बेटा आज भी तो सिपाही ही बनता है और न जाने कब लड़ाई हो और वह बम का शिकार बन जाय। सुना कि तरह तरह की गैसें निकाली जा रही हैं और यहाँ पेट भर खाना नहीं मिलता है। डाक्टर साहब मैं एक फौजी हूँ और मुझे कई रिबन और खिताब मिले हैं। लेकिन मुझे सदा अपने उन नौजवान बच्चों की याद आती है, जो कि खिलने से पहले ही मुरझा गये। एक पिता का दिल आज अपने बेटों के मौत के घावों से छलनी बन गया है। मैं नहीं चाहता कि लड़ाइयाँ हों। अंग्रेज ने हमारे बच्चों को ब्रम्हा, इटली, टोब्रुक तथा और न जाने कहाँ कहाँ कटवाया है। आज सुना कि फिर हमारे बच्चों पर उनकी नजर पड़ी है। यदि वह लड़ाई हुई तो हमारी सभ्यता नष्ट हो जायगी।"

उनकी आँखों से टप टप कर आँसू की बूँदें टपक पड़ीं। उन आँसुओं को पाकर मेरे मन में सवाल उठा कि लाखों ऐसे पिता दुनिया में हैं, जिनको अपने बच्चों का बिछोह सहना पड़ा है। वह घाव सब के दिल पर हरा है। फिर भी क्या लड़ाई होगी? मानो कि पिछली लड़ाई की बातें आज इन सैनिकों के परिवारों में रोज आँसू नहीं बहाती हैं। इनके बिछोह के गीत; नवयुवतियों की वह निराशा जो कि लड़ाई ने सौंपी; आज उनके गीतों में करुणा भर देती है। जिन प्यारों की वे प्रतीक्षा करती रहीं हैं, वे लड़ाई से लौट कर नहीं आए थे। लड़ाई का वास्तविक रूप मैंने इस पर्वत प्रदेशों में पाया था। जहाँ कि हर एक परिवार ने अपना एक न एक स्नेही खोया था। हरएक परिवार में कोई न कोई चुपचाप आँसू बहाया करता था।

सुबेदार मेजर ने फिर अपने छोटे गिलास पर रम ढाली और नीट पी गए। आँसू पोंछ कर बोले, "डाक्टर साहब आप नौजवान हैं। आप कसम खालें कि कभी लड़ाई में नहीं जावेंगे। आज भी मुझे सन् १६१८ की याद आती है, जब कि फ्राँस की माँयें भी हमारी माँओं की तरह आँसू बहाती

थीं। किसी भी देश की माँ या बाप नहीं चाहते कि उनके लड़के लड़ाइयों में जाकर मरें। इस दुनिया में किसी भी देश के सच्चे लोग नहीं चाहते कि लड़ाई हो। मैं आपसे अपने दिल की बात कह रहा हूँ।"

वह व्यक्ति जिसके लिये मेरे मन में कोई श्रद्धा नहीं थी, उसके हृदय की भावना ने मेरा हृदय द्रवित कर दिया। सोचा मैंने कि जब सभी सच्चे लोग लड़ाई नहीं चाहते हैं तो फिर लड़ाई नहीं होगी। वह लड़ाई जहाँ कुंकरी से भाई भाई का गला काटता है और मानवता भी नष्ट होती है। मैं उनकी बातों को बार बार तोल कर पा रहा था कि यदि ये लड़ाइयाँ न होतीं तो मानव का जीवन आज कितना खुशहाल होता।

वे कह रहे थे, "आप अभी नौजवान हैं, इसीलिये सोचते होंगे कि यह बूढ़ा क्या बक रहा है। पर आज मेरे आगे लड़ाई की वे सारी तसवीरें आती हैं जो कि मैं भुगत रहा हूँ। फिर इस उम्र में और सोचने के लिये कुछ बचता भी तो नहीं है।"

खूब पीकर वे भीतर चले गये थे। मालूम हुआ कि वे शाम को बहुधा खाना नहीं खाते हैं। उनके चले जाने पर बड़ी देर तक मेरे मस्तिष्क में उनकी बातें गूँजती रहीं। छै बच्चों का पिता वह था। वे बच्चे मानवता की सही देन थे। आज वे पाँच जीवित होते तो समाज को आगे बढ़ने में मदद देते। इस बूढ़े सैनिक ने जो कि अपने युग का एक बहादुर योधा रहा है, आज मुझे नई रोशनी दी थी कि, वे सैनिक भी लड़ाई से घृणा करते हैं। और यदि सब अपनी सही भावना व्यक्त कर दें तो कोई ऐसी ताकत नहीं है कि उनकी सामूहिक शक्ति के आगे जीत जाय।

खाना खाकर मैं लेट गया, पर नींद नहीं आई। मैं बहुत परेशान था। मन में विचारों का उथल पुथल मचा था। और मैं उठ बैठा। चुपचाप खिड़की खोली और बाहर देखने लगा। धुंधली चाँद की रोशनी फैली थी, जिसमें कि सारी बाहरी दुनिया कैनवस पर खींचा हुआ एक सुन्दर चित्र सा लगता था। ऊँचे ऊँचे देवदारु के पेड़ों वाला जंगल

मौन खड़ा था और हवा चलती तो एक अजीब साँय साँय कानों में पड़ती थी। दिल में पीड़ा होने लगी। यह परिवार आज तक न जाने अपने कितने बच्चे लड़ाई की भेंट चढ़ा चुका है। कभी उन बच्चों की किल-कारियाँ इस घर में प्रतिध्वनित हुई होंगी। कहीं डंगरों के गले की घंटियाँ बज रही थीं। कोई पक्षी वेदना पूर्ण स्वर में रुदन कर रहा था। नीचे घाटी शान्त सी फैली हुई थी। ठंढी हवा का एक तेज झोंका आया और मेरे शरीर को कंपा गया। मैंने चुपचाप खिड़की बन्द करदी और कुछ देर खड़ा रहा। आँखों में नींद भरी थी। मैं बहुत थक गया था। चारपाई पर लेट गया। तकिये को मोड़ कर सिरहाने लगाया। फिर तकिया निकाल कर फैलाया और उस पर अपना हाथ फैला कर सिर टिकाया।

मैं उनींदा था कि किसी के रोने की सिसकियाँ सुन कर चैतन्य हो गया। कुछ देर तक सावधानी से जान लेने की चेष्टा की कि बात क्या है। लगा कि कहीं वह युवती सिसक रही थी। वह भ्रम नहीं था। लेकिन अब वे सिसकियाँ बन्द हो गई थीं। मैं उलझन में ही पड़ा रहा कि फिर वे सिसकियाँ सुनाई दीं...वह युवती सच ही कहीं सिसक रही थी। और उसकी वे सिसकियाँ? क्या वह आजीवन इसी भाँति रोती रहेगी। उसका यह रोना इस समाज का एक भारी श्राप उसके लिए है। उसका बूढ़ा पति इस समय रम पी कर सो रहा था। यह पत्नी उसके साथ जीवन नहीं पाती है। वह उसका सच्चा साथी नहीं है। समाज का पुरुष को यह अधिकार की वह कब्र की ओर बढ़ता हुआ भी अपनी यादगार में एक नवयुवती को उसकी स्मृति को जगाये रहने को छोड़ जाय - कुछ सही सा नहीं लगा।

लेकिन वे सिसकियाँ तो अभी चालू ही थीं। मैं उठ बैठा और कमरे में टहलने लगा। खिड़की के पास खड़ा हुआ और उसे खोला। सर्द हवा का एक तेज झोंका आया और मेरी नजर पहाड़ की चोटी पर चमकते हुये तारे पर पड़ी। कुछ देर तक मैं टकटकी लगा कर उसे देखता ही रहा। फिर नीचे खुबानी के पेड़ की ओर देखा जो कि पीले फलों से लदा हुआ था। आठ दस रोज में खुबानी की मौसम समाप्त

हो जायगी और फिर यह पेड़ साल भर के लिये अपना आकर्षण खो बैठेगा। उस पेड़ से पकी खुबानी टपक रही थीं। और वह नाशपातियों का गिरोह! वहीं कहीं से तो वे सिसकियाँ आ रही थीं। सच ही वह युवती एक पेड़ के तने के सहारे खड़ी थी। नाशपातियों के फूल पिछले दिनों झड़ चुके थे और अब छोटे छोटे दाने निकल आये थे। आज उन पेड़ों पर मधुमक्खियाँ चक्कर नहीं काटती हैं। जो कि पिछले दो महीने वहाँ से मधु इकट्ठा करती हुई, थकती नहीं थीं। वे तो अब इस बाग को छोड़ कर जंगलों में सुन्दर फूलों की तलाश में जाती हैं। नियति की इस परम्परा पर मुझे बड़ी हँसी आई थी।

और वह युवती तो उसी भाँति वहाँ खड़ी थी। वह साधारण कपड़े पहने हुये थी। सारी का छोर सिर से गिरा हुआ था। मुझे भय हुआ कि वह अस्वस्थ न हो जाय। उसकी सेहत भली नहीं थी और आसानी से ही निमोनिया हो सकता था। पर मैं विवश था। उस पत्नी से कुछ भी कहने का अधिकार मुझे कब था। उसके दुख का निवारण करना मेरी शक्ति के बाहर था। कुछ देर तो मैं खड़ा ही रहा, फिर अपने कर्त्तव्य की याद आई। क्या एक डाक्टर की हैसियत से मैं अपना कर्त्तव्य निभा रहा था। नहीं वह मुझे उस युवती के प्रति अपनी उपेक्षा लगी। मैंने दरवाजा खोला और बाहर निकला।

लगा कि मानो वह मेरी प्रतीक्षा कर रही हो। मुझे देख कर वह भय-भीत नहीं हुई। टकटकी लगा कर मुझे देखा और फिर एकाएक मेरे गले पर दोनों हाथ डाल कर बोली, "मुझे ऐसी दवा दीजिये कि मैं मर जाऊँ। आप यह कर सकते हैं।"

मैं इस बात का उत्तर नहीं दे सका। उसके हाथ उसी भाँति मेरे गले में पड़े हुए थे। वह तो कुछ उत्तेजित सी होकर बोली, "वह भी आपकी ही उम्र का है। फिर लौट कर नहीं आया। उसकी प्रतीक्षा करते करते थक गई हूँ। अब कोई उम्मेद नहीं है। क्या वह लड़ाई में मर गया होगा?"

उसके हाथ बहुत गरम थे! वह न जाने क्या सोचकर हट गई और फिर एक बार मुझे छू कर देखा और मेरे ओठों को चूम लिया। लेकिन उसके ओठ तो जल रहे थे। उसे कम से कम एक सौ चार डिगरी बुखार था। मुझे चेतना आई और सावधानी से उसे उसके कमरे तक पहुँचा दिया। बाहर से दरवाजा ढक रहा था कि सुबेदार मेजर की आवाज सुनाई दी। अब तक मैं अपने कमरे में आकर चारपाई पर लेट गया था। उस युवती के गरम ओठों की जलन अभी तक मुझे उत्तेजित किए हुए थी। और मेरी पत्नी के ओठ भी तो ऐसे ही सुन्दर थे, पर मैंने कभी उनको इस भाँति जलते हुये नहीं पाया। मेरी पत्नी तो इस युवती से बहुत स्वस्थ थी। मेरी पत्नी की एक अपनी दुनिया है जहाँ कि वह अपने पति के साथ रहती है। वह जिन्दगी से प्रेरणा पाती है। वह जिन्दा रह कर इस दुनिया में चाँद सितारों का खेल देखना पसन्द करती है। बहुधा उसने मेरे गले में अपनी बाहें लटकाते हुए सवाल पूछे हैं कि क्या मैं उसे उतना ही प्यार करता हूँ जितना कि वह। और बहुधा वह शरारत करती हुई सी पूछती है कि मुझे तो कोई भी और रिझा सकती है। लेकिन वह कभी मेरे प्यार में शक की कोई गुंजायश नहीं पाती है।

सोचा मैंने कि यह प्यार करना हमने प्रकृति से पाया है। फिर हम गुमराह हो गये और अपने दंभ में इसे संवार कर नहीं रख सके। अन्यथा समाज में इतना विषाद नहीं फैलता। हम आपस में ईर्षा, द्वेष को न अपनाते और हम में प्रभुत्व की भावना नहीं आती। लेकिन यह सब तो केवल मन का पाप लगा। एक बूढ़े की पत्नी ने मुझे अपना अछूता चुम्बन दिया था। या यह मान लूँ कि मेरे मार्फत वह चुम्बन उस नौजवान को अर्पित कर दिया था जिसको कि वह प्राणों से भी ज्यादा प्यार करती है। उसका मुझ से कोई लगाव नहीं है। इस पति ने उसे एक गुलाम की भाँति कुछ रुपयों में खरीद लिया था। ताजिन्दगी वह उसकी गुलामी करती रहेगी और उसके मर जाने के बाद भी गुलामी का वह पट्टा उसके माथे पर विधाता की रेखाओं की भाँति सदा अमिट

रहेगा। मुझे अपनी एक मरीज वेश्या की याद आई जिसे कि टायफाइड हुआ था और उसके प्रेमी उसके चारों ओर मँडराते अपने को श्रेष्ठ प्रेमी घोषित करते थे। वह तो हँस कर बोली थी, "यदि इनको विश्वास हो जाय कि मैं मरने वाली हूँ तो ये सब आना बन्द कर दें, पर इनको विश्वास है कि मैं जिन्दा रहूँगी और आगे अपनी जवानी इनको लुटा सकूँगी। एक साहूकार की भाँति ये सब आज अपना रुपया भावी किसी शोषण के लिये लगा रहे हैं। फिर सच बात तो यह है कि आठ दस साल कमाने के बाद फिर हमारी दूकान फीकी पड़ जाती है सुना कि बुढ़ापा भार सा हो जाता है।"

नारी की वह तुलना करना क्या मेरे लिये उचित है? वह वेश्या यह युवती और मेरी पत्नी.....मैं न जाने क्यों इस भाँति बेकार ही उलझ रहा था। अधिक न सोचकर मैंने उस आधी रात को फिर सोने की चेष्टा की तो लगा कि कोई फिर सिसक रहा था। मैंने सावधानी से सुना तो पाया कि वह मेरा भ्रम है। वे तो मेरे हृदय में उस युवती की सिसकियाँ गूँज रही थीं। और उसके ओंठों का स्पर्श अभी तक मेरे मन को भर रहा था। लेकिन उसकी उदासी को बिना भुलाये ही शायद मैं सो गया था।

४

सच ही उस युवती को डबल निमोनिया हो गया था। उसकी परिचर्या करते करते बहुधा मैंने सोचा था कि माना वह स्वस्थ हो गई तो क्या उसे जीने में कुछ सुख मिलेगा? लेकिन एक बीस साल की युवती का अनायास ही नष्ट हो जाना मन को परेशान करता था। यदि वह जीवित रही तो कौन जाने कभी वह अपने प्रेमी को पा जाय। उसके मर जाने के सवाल का उत्तर जब मैंने एक दिन यही दिया तो पाया कि वह स्वस्थ हो रही है। लेकिन उसने फिर सवाल पूछा था कि क्या वह आगे कभी उसके साथ रह सकेगी। क्या यह समाज कोई रुकावट नहीं डालेगा?

मैंने बताया था कि कौन जाने चन्द सालों में क्या तब्दीलियाँ हो जावेंगी। मेरी बात को सुन कर उसे बड़ी खुशी हुई थी।

मैं बहुधा उसके छोटे बच्चे को गोदी पर लेकर उसकी चारपाई के पास वाली कुरसी पर बैठ जाता था। वह बच्चा अपनी माँ के पास जाने के लिए मचलता था और वह माँ उसे देख कर पुलकित होती थी। उस युवती में एक नये सौंदर्य का उभार आ रहा था। कभी तो मैं यह देख कर दंग रह जाता था कि वह कितनी निखर आई है। लेकिन जब पति उसके पास बैठता तो मैं पाता कि निराशा के काले बादल उसे घेर लेते हैं। कई बार मैंने सोचा कि इस युवती की रक्षा का एक मात्र उपाय यही है कि वे उसे मुक्त कर दें। पर यह सम्भव नहीं था, फिर भी एक रोज मैंने उनसे सारी बातें कहीं तो वे हँस कर बोले, "आप आज के नये ख्यालों के नौजवान हैं। हमारी जाति में यह कभी नहीं होता है। वह मर जायगी तो कोई बात नहीं है। आज भी मैं शादी कर सकता हूँ। आपका यह नया धर्म हमारे यहाँ नहीं चल सकता है। आपका मैं आदर करता हूँ, नहीं तो अब तक आप मेरी राइफिल के शिकार हो गये होते। और अब छोटी को जिन्दा रहने का कोई हक नहीं है। आप कल सुबह चले जाइये, मैं सब इन्तजाम करवाए देता हूँ।"

फिर मैं चाह कर भी उस युवती से नहीं मिल सका था। वैद्य जी ने उस युवती का इलाज शुरू कर दिया था। मेरे और उस युवती के बीच 'पति के सामाजिक अधिकारों' वाली सीमा थी। अपनी असहायता पर मुझे बहुत दुख हुआ था।

अगली सुबह को मैं वह गाँव छोड़ रहा था तो पता चला कि उस युवती को कै और दस्त शुरू हो गए और मैं समझ गया कि वैद्यजी ने पति का इशारा पाकर उसे नष्ट कर दिया है। मेरे मन में बात उठ रही थी कि मानव में कहानी कहने और सुनने की बहुत पुरानी प्रथा है। इस 'नई कहानी का प्लाट' लेकर कभी कोई कहानी लिखे तो मैं उसे रोकूँगा नहीं।

जीवन की दूरी

सरकारी अस्पताल में डाक्टर के कमरे में पहुँच कर पाया कि वह मरीजों से खचाखच भरा हुआ था। बड़ी मेज़ पर एक ओर हटा सा छोटा डाक्टर बैठा मरीजों से बातचीत करता, नाम और अवस्था तथा रोग का साधारण विवरण पूछ रजिस्टर की खानापूरी कर, बेमन सा पर्ची पर कोई दवा लिख देता था। आज सोमवार था अतएव कुछ असाधारण भीड़ जमा हो गई थी। वह डाक्टर मसीन की तरह कुछ सवाल पूछता और बुदबुदाता कि रोज ही मरीजों की तादाद बढ़ रही है। इनके लिए कहाँ से दवा आवेगी। सरकारी बजट तो बीस साल पुराना ही है। कुछ मरीजों को देख कर तो हँस पड़ता और बिना कुछ पूछे ही परची पर तारीख डाल कर कह देता कि अभी पन्द्रह दिन यही दवा चलेगी। इससे पहले कि वह सवाल करे चटपट दूसरे मरीज़ से बातें शुरू करते हुए कहता, "क्या हुआ है। सात दिन से बुखार है। सेठजी कुछ नावा खर्च करो। बिना मरीज़ को देखे हुये भला क्या दवा दी जाय! हजारों रुपया चोर बाजारी में कमाया है। इसी वक्त के लिये तो है।"

सेठजी मैली धोती और कुरता पहने थे। कुछ गिड़गिड़ाए थे कि डाक्टर बोला, "एक ही सप्ताह तो हुआ, आपने अस्सी हज़ार में बंगला खरीदा है। लड़की को टाइफाइड, निमोनिया या और कोई रोग हो

सकता है। भला क्या दवा दी जाय। कोई डाक्टर इस झगड़े में फँसना चाहे ठीक है, हमारे तो हाथ बँधे हुये हैं।"

अब दूसरे मरीज़ को देखकर कम्पाउडर को बुला इंजक्शन देने का आदेश दिया। कुछ देर तक थका सा आँखें मूँदे रहा और फिर मुझे देख कर बोला, "आप बैठिये, असिस्टेन्ट सर्जन अभी अभी आते होंगे।" और फिर एक गरीब औरत की गोद से चिपके हुये बच्चे को देख कर बोला, "लिवर ठीक नहीं है। सीसी लाई हो। तीन साल का है; पाँच साल का? इसे खाना बिल्कुल न दिया जाय।" एक परची लिख कर उसे दे दी।

वह बूढ़ा डाक्टर लगता था कि एक बड़ी दुनिया को देखे हुए हो। उसकी आँखें काफी अनुभवी लगती थीं। सरकारी मनोवृति वाला पूरा प्रभाव उस पर था। उसके हृदय की मानवता सूख चुकी थी। वह मरीज़ को ऐसे देख रहा था कि मानो प्रति दिन सैकड़ों मरीज़ों को देखना उसका धन्धा हो और सुबह आठ बजे से बारह बजे तक तथा शाम को चार से पाँच बजे तक यहाँ वह नौकरी के कारण बैठने के लिए विवश है, अन्यथा उसका सही जीवन तो शाम को पाँच बजे के बाद शुरू होता है जब कि वह लोगों के घरों पर जाकर मरीजों को देखा करता है। ये खास मरीज़ उसे फीस देते हैं और वह उनको दवा के नुस्खे लिख कर देता है। इन मरीजों को वह कामधेनु कहता है और वहाँ से लौट आने पर ज्यादा उन पर नहीं सोचता है। जब कोई खास मरीज मर जाता है तो कहता है कि जब प्राण निकलने वाला होता है तभी डाक्टर बुलाया जाता है। न जावें तो अपने पेशे के प्रति वफादारी नहीं होगी। फिर लड़ाई के बाद न खाना ठीक मिलता है और न दवा ही अच्छी आ रही है। डाक्टर भला क्या कर सकते हैं।

मैं चुपचाप पीछे एक कुरसी पर बैठा हुआ था। इस अस्पताल में महीने भर से आ रहा हूँ और रोज ही पाता हूँ कि सैकड़ों मरीज यहाँ आते हैं। कितने रोग मुक्त होते हैं यह कोई नहीं जानता, पर इस बात

का ब्योरा यहाँ मिल जायगा कि डाक्टर कितने व्यस्त रहे हैं और साल भर में कितने मरीज वहाँ आये हैं। डाक्टर आते हैं और चले जाते हैं। मरीज भी रोज नए नए आते हैं। इस अस्पताल को बने हुए ७५ साल हो चुके हैं। पहले यह सिविल लाइन्स में रहने वाले सरकारी अधिकारी, जो कि अधिकतर अंग्रेज ही होते थे उनके उपयोग के लिये था। तब तो केवल ऊँचे तबके के मरीज ही यहाँ आते थे और डाक्टर काफी सतर्कता के साथ मरीजों को देखते थे। उन दिनों यह अस्पताल साधारण नागरिकों के लिये केवल कल्पना की बात थी। वह सिविल सर्जन भी गोरी हुकूमत के प्रतीक स्वरूप कलक्टर तथा पुलिस कप्तान के साथ रोज़ शाम को बैठ कर साजिस किया करता था। तब यह अस्पताल गोरी हुकूमत की मजबूती का एक स्तम्भ था और न्यायालय में सिविल सर्जन के बयान पर ही साधारण नागरिक को फाँसी की सजा तक दी जा सकती थी। उसके बयान पर कोई सवाल करने का अधिकार किसी को नहीं था। उपनिवेश की जनता ने गुलामी के पट्टे के रूप में मानों कि इस अधिकार को भी पाया था।

सामने एक बड़ा लाउन है। उसकी हरी हरी दूब पर जाड़ों की धूप फैल रही थी। वहाँ कुछ गंधहीन सुन्दर फूल भी खिले हुए थे। वे फूल भी लगता है कि अस्पताल की नीरसता का वातावरण पाकर मुरझा रहे हैं। एक अधेड़ नर्स जिसकी बांई गाल पर काला बड़ा तिल उभरा हुआ है इधर उधर आ जा रही है। लगता है कि मानो बहुत व्यस्त हो। अस्पताल के नौकर उसे आते जाते देख चुपचाप आदेश सुनने को तैयार लगते हैं। वह तो अजीब खिचड़ी सी अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी में भङ्गी को डाँट कर कह रही है कि वह कामचोर है। उसे बरखास्त कर दिया जायगा। वह गिड़गिड़ा रहा है। वह मेम साहिबा कुछ सुनने को तैयार नहीं है। फिर वह कम्पांउडर से पूछ रही है कि आपरेशन का सामान तैयार हुआ है या नहीं। फिर कमरे के भीतर आ डाक्टर को बताती है कि यहाँ का आदमी बहुत जंगली है। लाठी से उसका सिर तोड़ डाला

है। सबको फाँसी लगनी चाहिए। वह दरोगा भी बड़ा बदमाश मालूम पड़ता है। झूठ बोलता है कि लाठी नहीं चली। और फिर चली जाती है।

उसके चले जाने पर डाक्टर मुझे देख कर हँसता हुआ कहता है कि जनाब इसका भी एक जमाना था। बाप कोई अंग्रेज सिविल सर्जन था और माँ एक भङ्गी की लड़की। उस अंग्रेज ने इसे पढ़ाया है। आज तो ढल गई है। वरना किसी से बात नहीं करती थी और जिस अस्पताल में रही वहाँ का सर्जन इसकी मुट्ठी में रहा है। कालों को गालियाँ देती थी और अपने को मेम ही समझती थी। जब अंग्रेज चले गये तो जरा इसका दिमाग ठिकाने आया है। वैसे दिल की बहुत साफ है। मरीज के साथ काफी हमदर्दी रखती है। किसी लड़के से बचपन में इसका प्रेम हो गया था। उसने धोखा दिया तो इसने फिर शादी नहीं की और जब तक चला उच्छृंखल जीवन व्यतीत करती रही है। सन् बयालीस में कालेज के एक नौजवान को गोली लगी थी। उसके सीने को चीर कर गोली निकली गई थी। उसे यहाँ लाया गया था। उसके पोस्ट-मार्टम के बाद यह एकाएक बदल गई है। तब से इसे किसी ने हँसते हुए नहीं पाया है। इसका स्वभाव भी बदल गया है। इसके दिमाग पर उसका काफी सदमा पहुँचा है। अन्यथा यह अब तक काफी तरक्की कर गई होती।

और वह डाक्टर एक बच्चे को देखकर, उससे एक ट्यूब पर पेशाब करवा कर उसमें कोई तरल पदार्थ डाल कर देखने लगा। उस ट्यूब पर गंदला सफेद-सफेद सा कुछ तैरने लगा था। और वह सिर हिला हिला-कर उसके पिता को बताने लगा कि इसे इंजक्सन लगेंगे और एक परची पर कुछ लिख कर कहा कि हर दूसरे रोज लाइएगा और पीने की दवा चार चार घंटे के बाद दी जायगी। जब कि वह पिता अपने बच्चे के साथ चला गया तो वह मेरी ओर देख कर मुस्कराता हुआ बोला कि आप ही बताइए तीन घंटे में कितने मरीज देखे जा सकते हैं। कुछ मरीज तो ऐसे हैं कि जिनको यहाँ आने का शौक हो गया है। मानों कि

वे कहीं मेला देखने चले जा रहे हों। अड़ोस-पड़ोस के बच्चों को लेकर यहाँ चले आवेंगे। और सच बात तो यह है कि यहाँ हम मौसमी बीमारियों की खास खास दवाएँ ही रख पाते हैं। हरएक मरीज को भली भाँति देखने के लिये समय चाहिये। लेकिन सरकार भी केवल रजिस्टरों की खाना पूरी चाहती है। सप्ताह में वह स्टेटमेंट चाहिये। महीने में दूसरा स्टेटमेंट जायगा, तीसरे महीने अलग, छै महीने में एक और। यह सरकार तो बस स्टेटमेंटों पर ही जिन्दा है। यही नही अंग्रेज के जमाने में कम से कम सरकारी अफसरों की इज्जत तो थी। आज त हरएक ऐरा गैरा नत्थू खैरा आकर हुकूमत चलाता है कि वह किसी मिनिस्टर का भानजा है तो फिर किसी एम० एल० ए० का भतीजा। भला इस तरह कभी कोई काम चला। आज सरकारी नौकरी तो बनिए की नौकरी से भी गई बीती हो गई है। उधर छोटे कर्मचारी तो घूसखोरी के मामले में पकड़े जाते हैं। उन पर मुकदमा चलता है और जो इन मंत्रियों व एम० एल० ए० के भाई भतीजे परमिट बेच कर लाखों रुपये कमा लेते हैं, उसका कोई लेखा जोखा नहीं है। ऐसी सरकार तो न कभी देखी और न सुनी है।

उस डाक्टर की बातें कुछ दिलचस्प जरूर लगीं और उसने पिछले दिनों बताया था कि वह तो आज तक कभी का किसी अस्पताल का स्वतन्त्र इंचार्ज होता यदि उसके पास भी कोई तगड़ी सिफारिश होती। आज तो जिसकी ऊपर पहुँच है उसी के छक्के पंजे हैं। लेकिन अभी तक बड़ा डाक्टर नहीं आया था और मुझे बैठे हुये काफी अरसा हो गया था। यह देखकर वह बोला कि आज सुबह-सुबह एक पोस्टमार्टम और एक आपरेशन करना है। आपको क्या इंजक्सन लगेगा? आप लोग भी अजीब ही जवान हैं। किसी का पेट खराब तो किसी के सिर में दर्द। कुछ कसरत किया कीजिये व सुबह शाम घूमने निकलिए। आपकी मेडिकल रिपोर्ट आ गई है। डाक्टर साहब आते ही होंगे। आप एक प्याला चाय पीजिए। लीजिए सिगरेट के लिये तो पूछा ही नहीं है। कह कर उसने मुझे सिगरेट दी और नर्स को चाय लाने के लिये कहा। फिर इतमिनान

से परचियाँ लिखता रहा और वही रजिस्टर की खानापूरी। फिर भी मरीजों की तादाद कम नहीं हो रही थी तो वह ऊब कर बोला कि देखिए सब को दवा देना इस समय संभव नहीं हैं। कुछ शाम को आइएगा।

उस बातूनी डॉक्टर पर मैं सोचने लगा। वह इसी तरह बातें करता हुआ परचियों पर रोज नुस्खे लिखता रजिस्टर की खानापूरी करता है। उसे किसी मरीज के साथ हमदर्दी नहीं है। वह किसी की बीमारी से भी दिलचस्पी नहीं लेता है। कुछ गिने चुने हुए मौसमी बीमारियों के मिक्सचर बने हुए हैं और उसकी मेज पर सलफर ड्रग की तरह तरह की दवाइयों की सीसियाँ रखी हैं, जिनसे कि वह चार, छै, आठ अथवा कुछ अधिक गोलियाँ निकाल करके मरीजों को दिया करता है। सुना है कि अमरीका ने इन गंधक की गोलियों का आविष्कार किया था और वहाँ अनुभव से पता चला कि वे मानव शरीर के लिये हितकर नहीं हैं, अतएव एशिया तथा और ऐसे देशों में बेची जाती हैं जहाँ कि आज भी सरकारें अमरीका का मुँह ताकती हैं।

नर्स ने चाय का प्याला मुझे सौंपा। मैंने प्याला ले लिया और एक बार उस युवती नर्स की ओर देखा। वह स्वस्थ और बहुत सुन्दर थी। उसकी आँखों में एक चमक मिली। वह मस्ती से बाहर चली गई। बाहर बैठी बुरके में सिकुड़ी सी बैठी एक मुसलमान औरत को समझा रही थी कि यहाँ उसे दवा नहीं मिलेगी। उसे जनाना अस्पताल जाना चाहिए। उस औरत का पति समझा रहा था कि जनाना अस्पताल चार मील दूर है। वहाँ वह उसे कैसे ले जाय! लगता था कि वह युवक कहीं मजदूरी करता होगा। उसकी आँखें धँसी हुई थीं। गाल की हड्डियाँ उभरी और चेहरे का रंग स्याह पड़ गया था। वह बहुत बेचैन मालूम पड़ता था। साहस करके उसने भीतर आ डाक्टर से कहा कि उसकी बीबी को भरती कर लिया जाय तो वह हँस पड़ा और बोला कि यहाँ बच्चे जनने का कोई इन्तजाम नहीं है। बाहर वह औरत पीड़ा से चीखने लगी तो

डॉक्टर ने उसे दुत्कार कर कहा कि क्या देख रहा है। जल्दी रिक्शा करके जनाना अस्पताल ले जा। नहीं तो क्या सड़क पर बच्चे को पैदा करने की ठहराई है।

वह बेवश युवक चुपचाप खड़ा था कि उस युवती नर्स ने भंगी के लड़के से रिक्शा मँगवा कर उस औरत को बैठाया और उसे पैसा देकर बोली जनाना अस्पताल ले जा, फिर चुपचाप भीतर आ गई। वह मुसलमान युवती चली गई थी। मैंने उससे कहा कि आप बहुत रहमदिल हैं तो वह मुस्करा कर बाहर चली गई। तो वह डाक्टर अंग्रेजी में बोला कि यह आज कल एक युवक से प्रेम करती है। उसका इस प्रकार काम करना ठीक ही है। वह नवयुवती है और अस्पताल के इस नीरस वाता-वरण में जहाँ कि मानवता आप बन कर फैली हुई हो, वहाँ से थक कर अपनी ड्यूटी पूरी करने के बाद यदि यह युवती किसी के प्रेम करती है तो उचित ही है। इस उम्र में अपने मन चाहे युवक से उसे अपने हृदय की छलकती हुई उमंगों को कहने का पूरा पूरा अधिकार है। इसमें प्रेम करने की भावना की आलोचना करने का सवाल उठाना सही नहीं लगता है, नारी प्रेम करे। वह स्वस्थ प्रेम करे; नियति ने कभी इसमें रुकावट नहीं डाली है। लेकिन वह बूढ़ा डॉक्टर न जाने उस प्रेम की बात पर व्यंग क्यों करना चाहता था। माना कि वह उस युवती का ऐसा करना उसका नैतिक अधिकार मान लेने के लिये तैयार नहीं हो। उसके कहने की ध्वनि से लगता था कि आप सब नौजवान अंधे होते हैं जनाब ?

अब तो वह डॉक्टर एक मरीज से हँस-हँस कर बातें कर रहा था और फिर मुझसे परिचय कराते हुए बोला, देखिए आप.........पार्लिया-मेंटरी सिक्रेटरी के भानजे हैं। फिर उनसे बोला कि आप वाले इंजक्शन कल बाजार से मँगवाये हैं, लेकिन नहीं मिले। आज दोपहर को खुद लेकर आऊंगा। यहाँ बड़ी परेशानी है। इधर उधर के खर्चे में से ही बाहरी दवा मँगवा सकते हैं। बात यह है कि आप लोगों के लिए तो यहाँ कोई दवा ही नहीं हैं। पहले अंग्रेज मरीज आते थे, तो कोई रुकावट

बाहर से खरीददारी करने में नहीं पड़ती थी। अब तो कोई दवा मँगवाई जाती है तो झूठे खातों में उसके पैसे भरे जाते हैं। आपकी सरकार चाहती है कि हम लोग झूठ बोलें। आप लोगों की खातिर यह सब करना पड़ता है। अब तो यहाँ खास वार्डों का खर्चा भी घटा दिया गया है। अब तो यह बिलकुल स्वदेशी अस्पताल बन गया है। वरना एक जमाना था कि यहाँ घुसते हुये साधारण आदमी घबराता था। अब तो अब अच्छे मरीज यहाँ नहीं आते हैं। हम लोग भी दिन भर इन जाहिलों के पीछे वक्त काटते हैं।

उनके चले जाने पर डॉक्टर फिर वही परचियाँ लिखता हुआ रजिस्टर भरता रहा। आठ दस मरीजों को विदा करके बोला कि, ये सब लोग चाहते हैं कि इनका सारा इलाज मुफ्त हो। घर पर भी ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो हम इनके खरीदे हुये गुलाम हों। एक प्याला चाय तक के लिये नहीं पूछेंगे। लेकिन क्या किया जाय, एक एम० एल० ए० साहब से थोड़ी कहा सुनी हो गई थी तो डेढ़ साल तक गोरखपुर के एक देहात की हवा खानी पड़ी। अब तो काफी समझदारी से चलना पड़ता था। इस पेशे का भी क्या हाल हो गया है?

अब कोई सज्जन आये थे और लगता था कि कुछ खास बात करना चाहते हैं। उनको देखकर तो डाक्टर खड़ा हो गया और कहा कि सब कुछ ठीक हो गया है। देखिये मैंने पते की बात बताई थी न! आप बड़े साहब को घर पर मरीज दिखलाने ले गये कि आज सुबह ही सोलह नम्बर वाले मरीज को विदा करने की बात तय हो गई है। चपरासी को बुलवा कर आदेश दिया कि कमरा खाली करवा कर उसका हिसाब कर ले। फिर उनसे कहा कि आप बारह तक मरीज को ले आइए। घर से यहाँ आराम रहेगा। आप चिन्ता न करें मरीज अब हमारा हो गया है। भय की कोई बात नहीं है। पेनसिलीन आपने ले ली है। अच्छा आइ-एगा; हम साढ़े बारह तक आपका इन्तजार करेंगे।

उनके चले जाने पर वहाँ खड़े एक फौजी नौजवान से बोले कि, भाई कह दिया है, यहाँ झूठे बीमारी के सार्टिफिकेट नहीं दिये जाते हैं। यह सरकारी अस्पताल है। बड़े साहब के पास जाओगे तो वे तुम्हारे साहब को लिख देंगे कि सरकार को धोखा दे रहे हो। नौकरी भी चली जायगी। अजीब हाल है। शादी की और बीमारी की छुट्टी पर हैं। भला कौन डाक्टर था जिसने पहले झूठा सार्टिफिकेट दिया है। यहाँ गिड़गिड़ाने से कुछ नहीं होना। दफ़्तर में जाइये और बड़े बाबू से मिलिये, शायद कोई रास्ता बता सकें। लेकिन साहब बड़े ही सख्त हैं। जाइये वहीं; बड़े बाबू आ गए होंगे।

२

अब असिस्टेंट सर्जन आ पहुँचे थे। वे थके से लगते थे। उन्होंने हाथ धोये और फिर बैठ कर कई फाइलों पर दस्तखत किये। उनके चारों ओर कर्मचारियों की एक भीड़ सी लग गई। रोजाना की कागजी कार्यवाही पूरी करके वे उस युवती नर्स से अंग्रेजी में पूछ बैठे कि कल सिनेमा कैसा रहा है। फिर यह भी कहा कि दावत के मौके पर उनको न भुला दिया जाय। वह युवती तो चुप रही मानो कि यह सुनने की आदी हो। जब सब चले गये तो डॉक्टर ने उनकी ओर सिगरेट बढ़ाई और पूछा कि कल का आपरेशन कैसा रहा। डॉक्टर की बात का कोई खास सा उत्तर न देकर बोले, यहाँ तो रोज ही चार पाँच ऑपरेशन करने पड़ते हैं। फिर ये पुलिस के मामले काफी पेचीदा होते हैं। आज तो कोई भी काफी छानबीन नहीं करता है। हम तो पुलिस के कहने पर कभी नहीं आये। सच बात लिखते हैं।

इस बीच एक कार बाहर आई और एक युवती कार से उतरी, तो उसे देखकर हँसते हुये बोले कि क्या साहब अभी दौरे से नहीं लौटे हैं। जब आवें तो भेज दीजियेगा। हमारा ख्याल है कि आपको टेम्परेचर किसी रोग का नहीं, अपनी परेशानियों का है। फिर इंजक्शन देते हुए

कहा कि अब आगे से कोई इलाज नहीं चलेगा, दो महीने तक। अपने साहब से कह दीजिएगा।

जब वह युवती चली गई तो मुझसे कहा—बेकार ये शक शुबहे करके रोगी बन जाती हैं। जिनके पास पैसा है उनको बीमार रहना भी एक ऐयाशी सी लगती है। सभी खाते पाते घर की औरतों को हल्का टेम्परेचर रहता है। खास करके आजकल की पढ़ी लिखी लड़कियों को तो यह रोग जल्दी लग जाता है। आपका क्या हाल है। देखिए आपके लिए भी वही नुस्खा है। आप भी कुछ दिन दवा दारू छोड़ दीजिए और कहीं अपने दोस्त के यहाँ चले जाइए। ऐसा सभी का हाल है कि थोड़ा काम करने पर थकान हो आती है। आराम सब से जरूरी है। आखिर इन्सान मशीन तो है नहीं कि जितना चाहिये काम लीजिएगा। लड़ाई के बाद वाइटीलिटी कम हो गई है। अब दवाएँ भी अच्छी नहीं आ रही हैं। पहले सब दवाई बाहर से आती थीं, अब तो सुना कि यहीं दवाओं में मिलावट की जाने लगी है। हमारी सरकार इस ओर ध्यान ही नहीं देती है। दो आने का इन्जक्शन हमें दो रुपये में पड़ता है और अमेरिका की दवाओं की कीमत तो एकदम दुगनी हो गई है। भला किसके पास इतना पैसा है कि आज कल ठीक तरह से इलाज कराए।

अब वह असिस्टेंट सर्जन फिर वही रोजाना की फाइलों को निपटाने में व्यस्त हो गया था। खास कमरों के मरीजों के बारे में वह अपनी सम्मति लिख रहा था। दो बिस्तर खाली करवाने जरूरी थे। लेकिन वहाँ बिस्तर ही के हैं और फिर वे भी चुने हुये सिफारिसी लोगों के मरीजों को दे दिये जाते हैं। अब तो वह मुझे देखकर बोला, आप जाइए। पीने की दवा भी बन्द की जाती है। देखिये एक्सरे में भी कुछ नहीं है। अब डाक्टरों के पास कुछ दिन रोगी की हैसियत से न जाइयेगा, यह मेरी दोस्ताना सलाह है।

मैं चुपचाप उसे अभिवादन करके लौट रहा था। रास्ते में वह युवती नर्स मिली तो मैंने उसे बधाई दी और उसने मुस्करा कर मुझे धन्यवाद

दिया। अब मैं अस्पताल के हाते से बाहर आ गया था। वह अस्पताल, वहाँ आने वाले मरीज, वह डाक्टर और वह युवती नर्स? लगता था कि मैं बहुत थक गया हूँ। वह युवती नर्स क्या इसी भाँति प्रेम के जीवन में अपना साथी पाकर सदा स्वस्थ रहेगी? कुछ ऐसा सा विश्वास हो रहा था कि जीवन से प्रेम कर उसे सबल बनाकर चलना ही ठीक है, अन्यथा?

रमेश की माँ

बड़ी सुबह को मोहल्ले में नल पर पानी भरती हुई औरतों ने यह बात सुनी कि कल रात रमेश की उसकी माँ ने खूब पिटाई की और वह आधी रात से चंपत हो गया है। आज अब रमेश का भाग जाना कोई कौतूहल की बात नहीं रह गई है। चार साल पहले वह अपनी माँ के गहनों का डिब्बा चुरा कर रासलीला की एक मंडली के साथ भाग गया था। उन दिनों तो झूठ ही उसकी माँ ने सब से कहा था कि वह अपने मामा के यहाँ चला गया है। इसकी अधिक चर्चा न करके पति को समझाया था कि तुरन्त उसे ढूँढ़कर ले आओ। पन्द्रह रोज के बाद वह अपने पिता के साथ लौटा था तो उसकी माँ ने मोहल्ले में मिठाई बाँटकर दिखलावा किया था कि मायके वालों ने रुपये भेजे थे। जानकर भी सब चुप रहे थे।

रमेश ने अलबत्ता अपने साथियों को बतलाया था कि वह रासमंडली में काम करने लगा था। गुरू जी ने उसे 'भृतहरी' में रानी की सहेली का पार्ट दिया था। माँ के गहने फूँक फाँक कर उसने कई सबक भी सीखे थे। चरस सिगरेट में भरकर पीने के अलावा, वह कई दुनियावी बातें बताकर लड़कों को प्रभावित करने में सफल रहा था। वह लड़कियों की भाँति हाव भाव करता, आँखें मटकाता हुआ चटपटी गजलें गाता

था। गुरु जी की तरह अकड़-अकड़ कर चलता और अपने से कम उम्र के लड़कों की एक टोली बनाकर उसने मोहल्ले में ही एक रासमंडली का निर्माण किया था। बूढ़ी औरतों को आश्वासन दिया था कि वे जल्दी ही 'हरिश्चंद्र' की लीला दिखलावेंगे और सच ही बीस दिन के बाद उसने सफलतापूर्वक वह लीला दिखलाई थी।

उस बार रमेश के भाग जाने पर उसकी माँ ने दो रोज निराहार रखा था। पति के बहुत समझाने पर तीसरे रोज खाना खाया था। जब रमेश लौटकर आया तो एक रोज उससे नहीं बोली; लेकिन आगे सब कुछ भुला दिया था। दूसरी बार उसने केवल पथ प्रदर्शन का भार स्वीकार किया था। जब कि दूसरा लड़का पिता की तिजोरी से सफलतापूर्वक दो सौ रुपया निकाल लाया था। अर्थ भार से मुक्त होकर वह उसे आगरा, दिल्ली आदि घुमाकर लौटा लाया था। आज तक मोहल्ले में इस बात का निपटारा न हो सका कि कसूर किसका था। रामू की माँ की दलील थी कि गरीब के लड़के की हैसियत कहाँ है कि वह भाग सके। वे तो एक-एक पैसे के लिए मोहताज हैं। रमेश अब इस मोहल्ले ही नहीं आसपास कई मोहल्लों का नेतृत्व करने लगा था। उसने इस बीच एक 'क्लब' का निर्माण भी किया, जो कि सभी तरह की हरकतों के लिये प्रसिद्ध था।

लेकिन इस बार तो स्वयं ही उसकी माँ ने रमेश से कहा था कि वह घर छोड़ दे। आधी रात को जब कि वह जा रहा था, उसे रोका नहीं। इतना तक न सुझाया कि सुबह चला जाय। जो माँ अपने एकलौते लड़के को कभी कुछ नहीं कहती थी, उसका इस भाँति विमुख होना सच ही एक आश्चर्यजनक घटना थी। यह सच बात है कि वह आठ महीने से बहुत बीमार है। इधर घर की हालत इतनी गिर गई है कि सप्ताह में बहुधा आठ-दस जून खाना बनता है, जिससे कि आधा पेट भी तो नहीं भरता। रमेश इसलिये घर पर नहीं रहता है, दूसरे-तीसरे रोज घर पर आना वह सीख गया है। एक तरह घर पर कच्ची रोटी और दाल खाते-खाते

वह ऊब गया। जब राशन चुक जाता है तो दोस्तों के यहाँ अथवा होटलों में उधार खाता है। जब होटल वाले के पैसे चढ़ जाते हैं तो वह तकाजा सुनते ही दूसरा होटल तुरन्त बदल लेता है। वह किसी का पैसा मारना नहीं चाहता है और सोचता है कि जब नौकरी लगेगी तो पाई-पाई चुका देगा। खोमचे वाले पहले उसका रौब नहीं मानते थे, पर एक बार ताव में आकर जब उसने एक खोमचा लुटवा दिया तो फिर अब उसकी साख उनमें भी जम गई है।

उसकी अवस्था अठारह साल की है। नवीं कक्षा में दो बार फेल हो जाने पर उसने पढ़ना फिलहाल छोड़ दिया है। वह एक बार और कोशिश करता, पर पढ़ने के खर्चे का भार उठाने के लिए पिता तैयार नहीं था। आज तो घर की व्यवस्था बिल्कुल ही टूट गई है और इसीलिये उसके प्रति उसके हृदय में कोई मोह नहीं बचा हुआ है। जो रमेश सात आठ साल की उम्र तक अपनी माँ को कभी नहीं छोड़ता था, और वह माँ भी तो उसे गले दर लटकाए रहती थी; भले ही सब औरतें उसकी हँसी उड़ाती थीं। वह सरल-सा उत्तर देती थी कि एक ही तो बच्चा है। वह जानकर भी कि उसका अधिक दुलार उसे बिगाड़ रहा है, उसे अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देती थी। शुरू में सभी स्कूलों के बारे में पूछ कर कि वहाँ मास्टर पीटते तो नहीं हैं, उसे अपनी पसन्द के स्कूल में रखवाया था। यही नहीं साल भर तक तो उसे स्वयं पहुँचाती भी थी; लेकिन पंख लगते ही रमेश माँ से दूर हट गया। माँ की बीमारी और उस घर की व्यवस्था गड़बड़ होने के कारण वह घर न आया, तो कोई एतराज की बात नहीं थी; पर पास पड़ोस की औरतें कहती थीं कि वह बदचलन हो गया है, ऐसे शोहदों का मोहल्ले में रहना शुभकर नहीं है। एक लड़की ने शिकायत की थी कि वह उसे देखकर गजल गाता है। माँ उलाहने सुनते-सुनते थक गई। कुछ रोज और सहती पर रात को तो वह शराब पीकर आया था। इस घटना से माँ का दिल टूट गया। उसने उसको मारने के लिये लकड़ी उठाई थी पर असफल रही। गुस्से

में इतना ही कहा था कि वह उसका मुँह देखना नहीं चाहती है। रमेश पहले तो चुप रहा, पर फिर गरज पड़ा कि वह स्वयं उस घर को छोड़ने की सोच रहा था। जो माता-पिता दो जून पेट भर खाना नहीं दे सकते, उनके यहाँ रहकर क्या किया जाय ? अब वह नौकरी करेगा।

रमेश एकाएक घर नहीं छोड़ता, यदि उसे रामलीला कमेटी ने इस वर्ष राम का पार्ट न दिया होता; आजकल 'तालीम' चल रही थी। रामलीला में बचपन से बन्दर, राक्षस, सहेली, व और छोटे मोटे पार्ट तो वह कई बार खेल चुका था। पहले पहल उसे प्रमुख पार्ट मिला था। अब डेढ़ महीने तो खाना पीना आराम से चलेगा। उसके बाद राशन कार्यालय के एक बाबू से उसकी दोस्ती है, वहाँ नौकरी की कोशिश करेगा। एक बात रह-रह कर याद आती थी, उसकी माँ ने उसे गुंडा कहा था। वह अपनी माँ की आँखों में क्या इतना गिर गया था ? माँ ने झूठी शिकायतों पर अभियोग लगाया था कि, वह लड़कियों से छेड़खानी करता है। आज तक किसी भी लड़की की ओर उसने आँख उठाकर नहीं देखा है। वह तो उनके साथ भाई-बहन का नाता अपनाता आया। सच तो यह था कि बड़े घर की दो तीन लड़कियाँ उसे देखकर न जाने क्या-क्या गुनगुनाती थीं, और उसे 'उस्तादजी' कह कर सम्बोधित करती थीं। एक दो तो यह भी उकसाती थीं कि एक रास मंडली बनाकर उनको राधा का पार्ट दिया जाय; लेकिन उसे तो अपनी फुटबाल, वालीबाल आदि की टीमों के संगठन के बाद और समय ही नहीं मिलता था।

और यह शराब का पीना ? वह स्वयं जानता था कि, यदि उसके पिता पर यह लत न होती तो उनकी गृहस्थी ठीक तरह चलती। शराब पीने वालों के प्रति उसकी अच्छी भावना नहीं है। पर आज एक अमीर दोस्त ने उसके 'राम' होने की खुशी में एक पार्टी दी थी और उसमें उसे भी पीने के लिये विवश किया गया था। दोस्त ने कहा था कि, यदि उसने ठीक तरह से पार्ट खेला तो शहर की हजारों लड़कियाँ उस पर जान निछावर कर देंगी। सच ही पीकर मन में एक नई उमंग उठी थी।

अपनी बुद्धि पर खास भरोसा नहीं रह गया था। माँ की ताड़ना पाकर इसीलिये घर छोड़ना हितकर लगा।

उस समय रमेश के पिता घर पर नहीं थे। वे बहुत देर करके आते हैं। लगभग एक मास पहले वे पत्नी को लेकर सरकारी अस्पताल गये थे कि उसे भरती करवादें। वहाँ उत्तर मिला था कि कोई बिस्तर खाली नहीं है और फिर ऐसे रोगी वहाँ नहीं लिये जाते हैं। उसका इलाज घर पर करना चाहिये। दवा और इन्जक्शन का नुस्खा लेकर वे घर लौटे थे। लोगों ने बताया था कि बड़ी डाक्टरानी को खुश किये बगैर वह काम नहीं बन सकता है। जिसका कि कोई साधन उनके पास नहीं था; जान पहचान, हमदर्दों आदि से वे काफी कर्जा ले चुके थे। फिर भी चाहते थे कि पत्नी को जीवित रखा जाय। अपने खाली हाथ होने पर गुस्सा आता था। इसीलिये घर से बहुधा बाहर रहते और गपशप में दिन काटते थे। कभी सोसलिस्ट तो फिर कम्यूनिस्टों के पास जाकर पूछते थे कि कब तक यह सरकार चली जायगी। इस सरकार पर से उनकी आस्था हट गयी थी। यदि किसी ने एक ठर्रे का पव्वा पिला दिया तो शुद्ध स्वदेशी गालियाँ चोर-बाजारी करने वालों, सेठों, और न जाने किसे किसे देते थे।

मोहल्ले की सहृदय नारियाँ रमेश की माँ की देखभाल कर लेती थीं। पति को निकम्मा कहकर वे पथ्य आदि की व्यवस्था कर देती थीं; कभी कभी कोई अमीर घराने की रुपया-पैसा भी दे जाती थी। जो कि अधिकतर पति के पीने में चला जाता था। वह स्वयं चिन्तित थी कि इधर पति को क्या हो गया है, पहले तो वे ऐसे नहीं थे। यह घर गृहस्थी ठीक चलती थी। छठी छमाहीं कभी पी ली तो कोई बात न थी और जुआ तो केवल दीपावली पर ही खेला करते थे। आज तो उनको इस घर की कोई परवाह नहीं। वह मर भी जाय तो कुछ बनना बिगड़ता नहीं है। पति पर उसे आज कोई भरोसा नहीं है। पड़ोस की औरतों से वह कहती है कि यह पुरुष जाति ऐसी ही है, इस पर कोई विश्वास करना भूल होगी। पहले कभी वह पति की बुराई नहीं करती थी। आज तो कई

बातें कह कर अपने मन में जमा हुआ मवाद बहाया करती है। सब औरतें उसकी बातें सुनकर दंग रह जाती हैं कि, जिस नारी ने कभी कोई विद्रोह आज तक व्यक्त नहीं किया, उसे एकाएक यह क्या हो गया है।

रमेश का पिता भी तो पागलों की भाँति रहता है। बढ़ी हुई दाढ़ी के सफेद बालों से भास होता है कि असमय ही बुढ़ापा आ गया है, अन्यथा अवस्था चालीस के करीब है। आज तो शहर में कई जगह बैठ कर वे इस सरकार को कोस-कोस कर गालियाँ देते हैं कि सब सत्यानाश कर दिया है। अंग्रेज इन लोगों की तरह बेशरम नहीं था। लड़ाई की कठिनाइयों से ऊब कर विश्वास हुआ था कि यह सरकार उनकी कठनाइयाँ हल कर देगी, जो कि नहीं हुआ उल्टे आज पशुओं की भाँति जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। कन्ट्रोल के जमाने में चोर-बाजार की चीजें आज के खुले बाजार से सस्ती थीं। आज तो चौगुने पैसे देकर चीजें मिलती हैं, जब कि पैसा एक दम लापता हो गया है। यह कालाबाजार सच ही हैजे की बीमारी की भाँति लाखों आदमियों के प्राण आसानी से ले रहा है और आज तो मनुष्य की कीमत सब से गिर गई है।

वे सुबह उठकर दतून करते हुये वाचनालय चले जाते हैं और हिन्दी का दैनिक पढ़ते हैं। कोरिया की लड़ाई से उनकी दिलचस्पी है। अमेरिका को वे दुनिया का सबसे बड़ा दुश्मन मानते हैं, जो कि सात समुद्र पार करके चीन हथियाने की बात सोचता है; और यह चीन जो कि अफीमचियों का देश था, वह तो अमेरिका के छक्के छुड़वा रहा है। इधर चुनाव आ रहा है, काँग्रेस को कोई वोट नहीं देगा। लेकिन लखपती उसे रुपया दे रहे हैं और नेता लोग ताव में कहते हैं कि काँग्रेस गाँधी जी के सिद्धान्तों पर चल रही है। यह चुनाव सच ही चपले की बात लगती है। समझ में नहीं आता है कि कौन जीतेगा ? सभी कहते हैं कि वे जनता का दुःख दूर करेंगे, लेकिन यह कांग्रेस वाले तो बहुत झूठ बोलते हैं और आज अंग्रेजों की सारी निकड़मबाजियाँ सीख गये हैं।

अपनी पुलिस पर बहुत भरोसा रखते हैं। जनता से दूर रहते हैं और झूठ ही बढ़-बढ़ कर बातें बनाया करते हैं। लेकिन सब बातों पर विचार करके भी समस्या हल नहीं होती है। वह राजनीति तो आज गांधीजी के सत्याग्रह की भाँति नहीं लगती है कि जेल चले गये। इतना उनको विश्वास है कि उनकी हैसियत के लोगों के लिये आज जिन्दा रहना असम्भव सा है। चुनाव के बाद क्या होगा, यह भी वे नहीं जानते हैं। कभी-कभी तो अखबार में किसी के भूख से मर जाने या आत्महत्या करने का समाचार पढ़कर उनका सारा शरीर रोमांचित हो उठता है। किसी भी नरक में वे चले गये हों या यमराज जो चाहे यातना दे, पर इस मृत्यु लोक के साक्षात् नरक से तो छुटकारा मिल जायगा।

उनको मौत की बात फिर भी नहीं भाती है। पिछली लड़ाई ने तो समझ का दायरा बढ़ा दिया है। आज तो अब दुनिया केवल उनके शहर या देश तक ही सीमित नहीं रह गई है। कौन जाने कि चुनाव के बाद वाली सरकार सब समस्याएँ हल करदे। चीन में सुना कि सब बेकारों को रोटियाँ सरकार देती है। इस सब से जिन्दा रहने की भावना बढ़ जाती है। पत्नी भी तब तक किसी न किसी तरह जिन्दा रह जायगी और यह रमेश ? लड़का था तो होनहार पर गरीब के घर में पैदा हुआ है। अच्छे साधन होते तो वह भी कल को जरूर ही बड़ा नेता बन जाता। रमेश एक बार राष्ट्रीय सेवक संघ के सत्याग्रह में जेल हो आया था। जेल में उसकी दोस्ती कई बड़े घरानों के लड़कों से हुई थी और उसने पिता को बताया था कि कुछ बड़े घराने वाले ही उसका संचालन करते हैं, वहाँ भी गरीब केवल वालंटियर ही है। इससे उनको बड़ी निराशा हुई थी। यह रमेश अब अधिक से अधिक किसी जगह चपरासी की नौकरी या किसी महाजन की दूकान पर नौकरी पा सकता है। इन छोटी नौकरियों से अच्छा तो यह होता कि वह किसी डाकुओं के गिरोह का नेता बनता। वह क्यों पिता की गरीबी का फल भोगे ? उनको यह पूरा विश्वास था कि वह एक रोज तरक्की करेगा। आज भी वह अमीरों के लड़कों पर

शासन करता है। फिर भी तो मोहल्ले के बड़े घरानों के लड़के समझते हैं कि रमेश को वे अपने पैसे से खरीदे हुए हैं। यह बड़े ही अपमान की बात थी? यदि वे उसे रासलीला वालों के चंगुल से छुड़ाकर नहीं ले आये होते तो वह आज तक ज़रूर ही कुछ न कुछ करने में सफल हो गया होता। वह फिल्म कम्पनी में ही चला गया होता, तो भी ठीक रहता। यहाँ तो उसको कोई रोजगार नहीं मिल सकता है। अब खोंचे के काम से भी उनकी आस्था हट गयी थी। दस साल तक खोमचा लगाकर भी तो कुछ हासिल नहीं हुआ था। पेट तक नहीं भरता था। जब पत्नी स्वस्थ थी तो खोमचा तैयार करके दे देती और कहती कि खाली निठल्ले बैठने से तो यह अच्छा है कि कुछ काम किया जाय, चार पैसे की ही आमदनी सही। जब तक उसने खाट नहीं पकड़ ली, वह सब चीजें तैयार करके उनको भेज देती थी। पर ग्राहकों को माल बेचने से अधिक वे उनसे राजनीति पर बहस शुरू कर देते थे और चार पैसे का एक पत्ता खानेवाला एक घंटे तक गपशप करता रहता, जिससे कि और ग्राहक नहीं आ पाते थे।

—घर लौट कर पत्नी ने बताया कि रमेश चला गया है। वे चुपचाप बीड़ी फूँकते रहे, मानो कि यह होनहार ही था और वे इस भविष्य की बात को जानते थे कि वह इस तरह चला जायगा। वे भी तो अपने परिवार से इसी भाँति निकल कर आये थे। उनका परिवार फैल गया था और गाँव के खेतों से खाना न मिलता था; लेकिन वे तो पाँच भाई थे और रमेश एकलौता बेटा! रमेश का जाना एक नयी घटना थी। वह परिवार का बिखर कर फैल जाना नहीं था। वह तो इसी शहर में रहेगा और उनके सामने ही परिवार से टूटा हुआ लगेगा। लोग कहेंगे कि एक लड़के की परवरिश तक ठीक से नहीं कर सके। रमेश को जाना ही था तो फिर भाग कर कहीं दूसरे शहर चला गया होता। उसे आज कोई नहीं रोकता। वे फिर भी चुपचाप रहे।

रमेश की माँ को इस परिवार में बाईस साल हो गये हैं। अभी

उसकी अवस्था सैंतीस साल की है। ससुराल में आकर उसने कभी कोई सुख नहीं देखा। पहले जमाना अच्छा था गुजर हो जाती थी; लेकिन भगवान भी तो उससे रूठा ही रहा है। पहले दो लड़के मरे और रमेश के जन्म के बाद से न जाने क्या रोग लगा कि उसकी हालत सुधरी ही नहीं। इस लड़के को पाकर आशा का संचार हुआ था। उसे उम्मीद थी कि वह पढ़ लिख कर कहीं नौकरी करेगा, पर वह नहीं हुआ। लड़के का मन पढ़ने पर कभी नहीं लगा था। वैसे वह पास होता रहा, पर जब घर की हालत खराब हुई तो उसने पढ़ने की ओर से मन हटा लिया। बाहरी बातों में वह लगा रहता था। वह फिर भी यह मानने के लिये तैयार नहीं है कि उनका लड़का आवारा है। यह लांछन सुनने के लिये वह कदापि तैयार नहीं है। पति से वह रमेश की पैरवी करते-करते रो पड़ी थी। उसके लड़के को कोई ऐसी बात कहे यह उसके लिये असह्य था। लेकिन जिस मोहल्ले में रहना है, वहाँ के लोगों की बातें भले ही झूठी हों आसानी से बिसारी नहीं जा सकती हैं। एक तरह से वह पड़ोसिनों के तानों से छुटकारा पा गई थी। उन पड़ोसिनों के तानों से कि जिनके आँचल के दाग कभी धुले नहीं हैं और उनकी कहानियाँ मोहल्ले में प्रचलित रहकर सालों गूंजती रहीं।

इस मोहल्ले में रमेश की माँ का प्रमुख स्थान रहा है। शादी के बाद जब वह आई तो पति एक बिसाती के यहाँ काम करता था। उसने आते ही मोहल्ले की बूढ़ियों की सेवा शुरू करदी। वह मोहल्ले के सभी कामों में शरीक होती थी। वहाँ ऐसी दिलचस्पी लेती थी कि मानो उसका अपने घर का काम हो। शादी तथा अन्य कार्यों में वह अटूट परिश्रम करती थी। वह असाधारण सुन्दरी थी, पर उसके प्रति कभी किसी को आँख उठाने का साहस नहीं होता था। शुरू में एक बिगड़े रईस ने अपनी खान्दान की परम्परा को निभाने के लिये कि 'गरीब की बहू' के तारनहार बनें, उससे छेड़खानी की थी तो वह उसका हाथ पकड़ कर उस परिवार में ले गयी और बूढ़ियों के आगे रोई थी कि न्याय करें। इस घटना की

मोहल्ले में महीनों चर्चा रही। कुछ रईसजादियों ने इस पर नाक भौं सिकोड़ कर कहा था कि बड़ी सती-सावित्री बनी फिरती हैं, यह घमंड बहुत दिनों तक नहीं चलेगा। वह इस सबके प्रति उदासीन रही, जान कर कि उन नारियों की स्थिति परिवार में रंगीन गुड़ियों के अलावा कुछ भी नहीं है, लेकिन जो कुछ भी हो उसका सम्मान मोहल्ले में बढ़ गया था। और धीरे-धीरे तो वह उस मोहल्ले में अपना एक स्थान बना कर रहने लगी। बुढ़िया उससे रामनाम की गोलियाँ अथवा दिये के लिये लक्ष बत्तियाँ बनवातीं, कोई अपनी रुद्राक्ष की माला पटक जाती थी कि बना दे और जो आँखें कम देखती थीं वे उसके पास आकर गीता, भागवत या रामायण का पाठ सुनाने का आदेश देतीं। अधेड़ उससे खाने की बानगी सीखतीं और रोज किसी न किसी घर में वह छोले, समोसे, गुलाब जामुन आदि का सबक पढ़ाकर आती थी। नवयुवतियाँ उससे कई भेद की बातें पूछती थीं और कुछ उससे अपने पतियों के लिये वशीकरण यंत्र लाने की फरमायश भी करती थीं। इसके बाद छोटे बच्चों की माँग होती थी कि उनके लिये कागज के तोते, चरखी, आदि बनाई जायें। उसका गला बहुत सुरीला था और बहुधा युवती समाज में उसके गाने काफी चाव से सुने जाते और शादियों में तो वह ढोलक के गीतों के साथ नाच भी लेती थी।

उसने इस परिवार में आते ही सारी घर-गृहस्थी को नये सिरे से जमाया। पति की वह नौकरी उसे पसन्द नहीं आई कि सुबह नौ बजे चले जाते और फिर लौटकर रात को नौ बजे आते थे। एक दो साल तो वह चुप रही, पर फिर उसने सुझाया कि अपनी कोई छोटी दूकान चलाई जाय। पान की दूकान का काम वह स्वीकार न कर सकी। मोहल्ले में एक छोटी बिसातखाने व परचून की दूकान चालू की गई पर पति की उदारता के कारण चार साल में ही सारी पूँजी उधार में फँस गई। अब सच ही एक नई समस्या आ खड़ी हुई और पति ने विवश होकर एक सिन्धानी के यहाँ फिर नौकरी कर ली थी। वेतन तो कम मिलता था पर

पति बताता कि ऊपर से आमदनी हो जाया करती है। वह रोज शाम को उसके लिये कोई न कोई उपहार लाता था और कभी कभी तो ऐसी बेढंगी चीजें लाकर कहता था कि 'उनको' विलायत में मेमें पहना करती है। वह उसके लिये विलायती मिठाई की गोलियाँ और 'चाकलेट' वगैरह भी लाता था। वह तो पहले न समझ सकी कि क्या बात है; पर जब एकाएक नौकरी छूट गई तो पति ने बताया कि सेठ के लड़के ने नई-नई दूकान खोली थी, संभाल नहीं सका और नौकरों ने काफी माल इधर-उधर कर दिया था। अब उसे पति के सब उपहार याद आये। उनकी वे सिगरेटें फूँकना तथा उतना सामान लाना। पति ने बताया था कि और नौकर तो पुलिस को दे दिए गये, पर वे पुराने नौकर थे अतएव सेठ ने केवल उनको निकाल दिया है।

इसके बाद कई महीने बेकारी चली। आखिर उसे एक बात सूझी कि पति दूकान करलें तो कम से कम घर का खर्चा तो चलेगा। अब पति सिगरेट, यदा-कदा चरस और कभी शराब भी पीने लगे थे। कोई कहता था कि और कई अवगुण भी आ गये हैं। खाना अच्छा न बना तो वे चट से तुनक कर उठ जाते और कहते थे कि अब उनको कहीं होटल की शरण लेनी पड़ेगी। उधर रमेश की पैदायश के बाद से उसकी तन्दुरुस्ती बहुत खराब हो गई थी। दो बार निमोनिया हुआ और एक बार टाइफाइड; लेकिन तीन प्राणियों के पेट भरने के लिये कोई धन्धा आवश्यक था और इधर छोटा-मोटा कर्जा भी हो गया था। अतएव चाट की दूकान चालू हुई। शायद पति फिर कुछ गोता खाते, पर उसने पैसे पर सीधा नियंत्रण रखना शुरू कर दिया। रोज रात को हिसाब माँगती थी और स्वयं ही बाजार से सौदा पत्ता ले आती थी। इसके अलावा मोहल्ले की औरतों के हाथ तो वह स्वयं ही सौदा बेचती व पैसा वसूल करती थी। इससे आमदनी अच्छी होने लगी थी।

लड़ाई के जमाने में उसने देखा था कि रुपया इतना फैल गया कि चीजों के दाम दुगने तिगुने होने पर भी उनको पोस्ट आफिस में

अपनी आमदनी रखने के लिये विवश होना पड़ा था। लगता था कि रुपया चारों ओर से बरस रहा है। सभी व्यापार फल-फूल रहे थे। उसे अब पहले से तिगुनी मेहनत करनी पड़ती थी और साथ ही साथ अब पति भी आसानी के साथ किसी न किसी बहाने कुछ पैसे उड़ा जाता था और वह चुप रहा करती। अब तो पति दूकान पर देर तक न बैठता था। शाम को तीन चार घंटे में सारा माल बेच-बूचकर जल्दी-जल्दी उसे हिसाब सौंप कर चला जाया करता और रात को बड़ी देर करके लौटता। अक्सर वह पीकर आता था और वह काम से थकी होने के कारण चुप रहती। फिर सच बात तो यह थी कि अब रमेश बड़ा हो गया था और वह उसकी ओर अपना सारा ध्यान लगाकर सोचती थी कि भविष्य में उसके दिन भली भाँति कटेंगे। वह रमेश को अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाती और मोहल्ले में उसकी सजावट देखकर सभी चकाचौंध हो जाते थे। कुछ औरतें तो हँसी उड़ातीं, ताना मारती थीं कि चार पैसा क्या हो गया कि समझती है हमारी बराबरी करेगी। चाट वाले के लड़के की भी भला कोई हैसियत होती है। लड़ाई में तो, चूड़ी-चमार भी कमाते हैं। लेकिन उन दिनों उस मोहल्ले में कई मध्यवर्ग के परिवार आ गये थे। मकानों की किल्लत हो गई थी और उन परिवारों के युवक दफ्तरों में क्लर्की करते थे। लड़ाई की मँहगाई के कारण उन लोगों को काफी कठिनाई पड़ रही थी। राशन और चोर-बाजारी से पार पाना उनकी शक्ति से बाहर की बात थी। उन परिवारों से उसने अपना नाता जोड़ लिया था और अब अधिकतर वह वहीं जाती और उनकी कठिनाइयों को हल किया करती थी।

लड़ाई के समाप्त होने पर कुछ दिनों तक, तो कारोबार उसी तरह चलता रहा, पर फिर न जाने कैसे मद्दी आ गई। चीजों के भाव बढ़ते चले गए और पैसा कहीं नजर नहीं पड़ता था। पति का हाथ खुला था। काफी चेष्टा करके भी खर्च पूरा नहीं पड़ता था। इतना ही नहीं जमा की हुई पूँजी भी पेट भरने में लग जाती थी। लड़ाई के दिनों में मेहनत के

कारण शरीर निर्बल हो गया था और लड़ाई के तीन चार साल बाद वाली मही ने तो कमर तोड़दी। कमर में दर्द रहने लगा, फिर शक हुआ कि खून बनना बन्द हो गया है। एक वैद्य की दवा महीनों चली और फिर डाक्टर के इंजक्शन पर सब कुछ छोड़ दिया गया; पर जो कोई भी कारण हो रोग बढ़ता ही गया और अब तो वह ज्यादातर पलंग पर ही लेटी रहती थी। पति पहले ही किसी बात की चिन्ता नहीं करता था, उधर वह घर की ओर से बिलकुल उदासीन हो गया। अधिकतर निठल्लों के साथ बैठता और यदि किसी ने पिलादी तो फिर उसका गुलाम ही बन गया। वह ज्यादा किसी बात पर नहीं सोचा करती है। लेकिन मोहल्ले की औरतें रोज ही उसके पति की बुराइयाँ करतीं, जिनके प्रति कि वह उदासीन रहती है। फिर भी रमेश की बुराइयाँ वह नहीं सुन सकती। वह जानती है कि रमेश ने उसकी कोख में जन्म न लिया होता तो आज उसे मारा-मारा नहीं फिरना पड़ता। सारा कसूर यह है कि वे गरीब थे अन्यथा रमेश की ओर कोई इस तरह इशारा नहीं करता। फिर सारा कसूर तो पति का है, यदि वे मर्यादा के साथ रहते तो किसी का साहस नहीं था कि कुछ कहता। वह तो उन बातों से छुटकारा पाने के लिये ही रमेश को निकालने विवश हुई थी।

जब रमेश चला गया तो उसे लगा था कि वह शक्तिहीन हो गई है। वह बड़ी देर तक बेहोश पड़ी रही, जब आँखें खोलीं तो पाया था कि पति उसके सिरहाने खड़े हैं। उसे विश्वास हो गया कि आज की चोट के बाद अब वह बहुत दिनों तक जीवित नहीं रहेगी। वह तो केवल उस दिन को देखने भर के लिये जीवित थी, जब कि रमेश कमा-वेगा और वह घर में बहू लावेगी। लड़ाई के बाद वह तसवीर चकनाचूर ही नहीं हो गई थी, उसका सारा भविष्य भी मिट गया था। पति से वह कुछ क्या कहती! वह तो अब तक चुपचाप खड़ा उसे निहार रहा था। उसे ऐसा सा भास हुआ कि रात गुजर गई है। सुबह का उजाला कमरे में प्रवेश कर रहा था। लेकिन वह सुबह तो फीकी थी। यह पति शायद

रात को बड़ी देर से लौट कर आया होगा। लगता है कि रात भर सोया नहीं है।

पति ने साहस करके पूछा, "क्या रमेश से तुमने कुछ कहा है?"

वह चुप रही। बोलना चाहती थी पर मुँह नहीं खुला।

पति तो उसे निहार ही रहा था। उसका पति जो कि शराब पीता है, जुआ खेलता है और सुना कि रंडियों के कोठों पर चढ़ते हुये भी उसे शर्म नहीं आती है।

रमेश चला गया है, यह बात तो सभी जानते हैं। रात जब कि वह उसे डाँट रही थी तो उसकी चुगली करने वाली औरतें ही तो आकर समझा रही थीं कि वह अभी लड़का ही है। और जब वह चला गया तो वे सब कह रही थीं कि उसका माँ का दिल नहीं है। भला इतनी छोटी बात पर भी कोई अपने लड़के को घर से निकाल देता है।

पर वह तो निश्चय कर चुकी है कि अब कभी उसका मुँह नहीं देखेगी और यह भी जानती है कि रमेश-सा हठी लड़का अब लौटकर उस घर में कभी पांव नहीं रखेगा। फिर भी न जाने क्यों उसका दिल उमड़ आया और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

रमेश घर से बाहर निकला तो उसे लगा कि आज वह जीवन में सब से प्यारी वस्तु खो चुका है। उस माँ को सदा उसने समझने की चेष्टा की थी। वह स्वयं चाहता था कि माँ को सुख दे। इसी के लिये तो वह नौकरी की तलाश करता आया है। आज रामलीला के पार्ट मिलने की बात सुनाने को वह माँ के पास गया था। वहाँ तो पाया कि माँ किसी के बहकाने में आ गई है। वह कसम खाकर भी कहता कि वह गुंडा नहीं है तो भी माँ नहीं मानती। वह समझ गया था कि किस लड़की ने वह बात की है। उसने एक बार चेतावनी दी थी कि वह जादू-टोना जानती है। माँ पर वह जादू सवार था, लेकिन वह भी उससे बदला लेगा। वह उसके कई साथियों पर डोरे डाला करती है। लेकिन कुछ देर के बाद

उसका गुस्सा ठंडा हो गया और उसने सोचा कि वह उसके मोहल्ले की लड़की है, जिसका अपमान करना कि उसके अपने मोहल्ले का अपमान है। जहाँ कि वह बचपन भर रहा है। लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे ?

लेकिन वह तो घर तथा उस मोहल्ले को सदा के लिये छोड़ चुका है। वह बहुत थक गया था। वह वहाँ पहुँचा जहाँ कि रामलीला की 'तालीम' हो रही थी। वहाँ भी उसका मन नहीं लगा। घंटे भर वहाँ बैठ कर वह बाहर निकला और निरुद्देश्य सा सड़क पर घूमता रहा। कल तक की बात होती तो वह किसी भी दोस्त के यहाँ आसानी से चला जाता, पर आज स्थिति बदल चुकी थी। अब तो सच ही वह आवारा था। वह घर से निकाल दिया गया है। कल यह बात सब को मालूम हो जायगी। फिर तो उसे विवश होकर यह शहर छोड़ देना पड़ेगा। आज न जाने क्यों वह इस शहर को नहीं छोड़ना चाहता है।

उसे नींद आ रही थी। वह चुपचाप आगे बढ़ा, एक जगह उसे एक खाली तख्त दिखलाई दिया तो वह वहीं लेट गया और न जाने कब उसे नींद आ गई।

—बड़ी सुबह उसकी नींद टूटी तो लगा कि वह बीमार है। न जाने क्यों उसे बार बार माँ की याद आती थी। वह चुपचाप आगे बढ़ा और रामलीला कमेटी के मंत्री के घर पर पहुँचा। मंत्रीजी दतून कर रहे थे। उसे देखकर पूछा कि बात क्या है ? तो उसने कहा कि उसके घर की हालत ठीक नहीं है, यदि उसे कहीं नौकरी नहीं मिल जाती तो वह शाम की गाड़ी से शहर छोड़ने का निश्चय कर चुका है।

मंत्रीजी हँसे और बोले कि यहीं नौकरी मिल जायगी; दिन को वह उनसे दफ्तर में मिल ले। रमेश ने चार-पाँच घण्टे बड़ी बेचैनी से काटे और दिन को मंत्रीजी ने बताया कि उसको राशन के दफ्तर में कल से नौकरी पर जाना होगा। साठ रुपया वेतन मंहगाई भत्ता मिला कर मिलेगा,

तो उसे बड़ी खुशी हुई थी। ऐसा लगा कि अब वह माँ के आगे खड़ा होकर माफी माँग सकता है, लेकिन दिन को वहाँ जाने का साहस उसे नहीं हुआ।

धुंधली संध्या थी। वह चुपचाप घर की ओर बढ़ा। कई गलियाँ पार कर घर पहुँचा और देखा कि उनके घर पर लालटेन की धुंधली रोशनी थी। उसकी माँ भूमि पर लेटी थी और पिता उसके पास बैठे हुये थे। वह चुपचाप आगे बढ़ा और बोला : "माँ!"

उसके पिता ने आँखें ऊपर उठाईं पर चुप ही रहे।

उस स्थिति से रमेश घबड़ाया और माँ के पास बैठ कर फिर बोला, "माँ!"

इस बार उसकी माँ ने आँखें खोलकर अचरज के साथ उसे देखा और फिर आँखें मूँद लीं!

—रमेश को यह ज्ञात नहीं हुआ कि वह उसकी माँ की अन्तिम दृष्टि थी और आगे अब वह उससे कुछ नहीं कह सकेगी।

नारी की आकांक्षा !

पहाड़ों का अपना जीवन होता है। वहाँ का मानव सदा प्रकृति से संघर्ष करता हुआ कभी थकता नहीं है। वहाँ की चोटियाँ सदा बर्फ से ढ़की रहती हैं। जिनके नीचे देवदारु, रांगारासो, बांज, चीड़ आदि के वन मन को मोह लेते हैं। पहाड़ी टेढ़ी मेढ़ी बटियाएँ साँप की भाँति रेंगती मिलती हैं। कहा जाता है कि वहाँ की नारियों के चेहरों पर सदा ताजिगी रहती है और वहाँ के बच्चे कुदरत से नई जिन्दगी पाकर फलते फूलते हैं। शायर और लेखक वहाँ की रंगीन बातें लिखते लिखते थकते नहीं हैं। सुना जाता है कि आज से लाखों साल पहले इन चोटियों पर देवता वास करते थे। आज वहाँ देवता नहीं मानव रहते हैं। वे मानव जो सदियों से उस धरती को प्यार करते आये हैं।

पहाड़ी की ढाल पर वह बूढ़ी माँ भेड़ें चरा रही थी। उसकी अवस्था साठ की होगी। उसके चेहरे पर झूर्रियाँ पड़ी थीं और आँखों से साफ नहीं दिखलाई पड़ता था। सामने चीड़ का घना वन था। पेड़ों के तनों पर छोटे छोटे गड्ढे कर उस पर सिगरेट के टिन लटकाए हुए थे। उन टिनों का गोंद जमा करवा कर ठेकेदार नीचे मैदान की कम्पनी के पास भेज देता है जहाँ कि तारपीन बनाया जाता है। चीड़ की सूखी पयाल पर कुछ लड़के लधरे हुए सुन्दर गीत गा रहे थे। वह गीत गूँजता

हुआ दूर सा खो जाता था। भेड़ों के गले की घंटियाँ डिंग, डिंग, डिंग, टन, टन, न न न बज रही थीं। अब दो लड़के भेड़ के बच्चों से खेलने लगे। कभी भेड़ का कान उमेठते तो फिर उसे पुचकारते। वह भेड़ का बच्चा भी मिमयाता हुआ कुदालें ले रहा था।

नीचे घाटी में वेगवती पहाड़ी नदी बह रही थी। जिसके बहने की आवाज कभी कभी हवा के ऊपरी बहाव के साथ सुनाई पड़ती थी। फिर वह हवा चीड़ के जंगलों को चीरती हुई दर्दनाक आवाज करती खो जाती थी। नीचे नदी के पास वाले मैदान के खेतों पर धान की रुपाई बहुत से लोग कर रहे हैं। वे सब खिलौने की भाँति लगते। वहाँ से कुछ दूरी पर पन्द्रह बीस मकानों का एक गाँव दीख पड़ता है। उसके चारों ओर सीढ़ी की तरह वाले छोटे छोटे खेत हैं। उनमें हरियाली थी। गाँव के दो तीन धनी किसान नीचे घाटी वाले खेतों के मालिक हैं। वहाँ के बाकी लोग इन खेतों को खोदते हैं और आधा पेट खाना खाते हैं। बच्चे भेड़ें चराते हैं और कुछ समझदार हो जाने पर मैदान भाग जाते हैं। माँ बाप उनके इस प्रकार चले जाने पर उदासीन नहीं मिलते हैं। वे सोचते हैं कि उनके चले जाने पर परिवार का भार कम तो हुआ ही है। नियति का पुराना सा नियम कि चिड़िया के बच्चे पँख उग आने पर उड़ जाते हैं, वे मानव सन्तान भी विवश होकर निभाते हैं।

वह बुढ़िया तो पचास साल से इसी भाँति बकरियाँ चराया करती है। दस साल की उम्र में बधू बन कर इस परिवार में आई थी। उनके पास खेत नहीं थे। उसका पति मसूरी में रिक्शा चलाया करता था और बहुधा फसल काटने की मौसम में वे गाँव के धनी किसानों के खेतों पर काम करते और मजदूरी में कुछ अनाज पा जाते थे। वह तब उसे उस वैभवशाली नगरी की बातें सुनाया करता था। वादा करता था कि कभी उसे वहाँ अवश्य ले जावेगा। वह रिक्शे पर बैठा कर उसे घुमावेगा। कभी वह कहता था कि एक धनी सौदागर के बंगले की चौकी-दारी करता है। कभी कभी वह चौका बरतन का काम किसी होटल में

करता था । यदाकदा वह उसके लिए छोटी छोटी सौगातें भी लाता था । उसकी बातें समझ में न आती थीं, पर उसका सामिप्य कुतूहल लाता था । उसे वह चाहे कितनी ही रंगीन तसवीरें बताता था, पर मन में सदा साहूकार का कर्जा भारी पत्थर की भाँति हृदय पर धरा हुआ रहता था । चाहे वह कितना ही कमाकर साहूकार के आगे रखदे, मुनीमजी लाल बही खोलकर बताते कि वह ठीक तरह सालाना कर्जा तक नहीं चुका पाता है । हर तीसरे साल स्टाम्प पर सही कराना नहीं भूलते थे । यह कर्जा लेना उस परिवार के लिए नई बात कब थी । उसका दादा, पिता भी तो इसी तरह कमा कर मर गए और पट्टा चुकाने के लिए अगली पीढ़ी को सौंप गए थे ।

अब वे लड़के एक सुन्दर गीत गा रहे थे । वह दो योधाओं की बहादुरी की कहानी थी । जो कि राजा के आदेश पर सेनाओं को लेकर नेपालियों से युद्ध करने के लिए गए थे । उनकी सेना का वर्णन था । उनकी राजपूती शान का जिक्र था । उनकी पोषाकों और हथियारों का उल्लेख था । वे बादल के समान गर्जन करते हुए आगे बढ़ रहे थे । कई रमणीक घाटियों और पहाड़ी शिखरों को पार कर वे नेपालियों से मुकाबिला करने के लिए आगे बढ़े । लेकिन जो भगवान के प्यारे होते हैं, भगवान उनको जल्दी अपने पास बुला लेता है । वे नौजवान उस युद्ध में खेत रहे । देवताओं ने उनके ऊपर फूल बरसाए । लड़ाई में मरा हुआ सैनिक स्वर्ग जाता है । उन वीरों की आत्मा को स्वर्ग ले जाने के लिए भी अप्सराएँ आईं । भगवान उनको सद्गति प्रदान करे । देश की रक्षा करना सभी नौजवानों का पहला कर्त्तव्य है ।

वह बुढ़िया चुपचाप उस गीत को सुनती रही । फिर उसका हृदय भर आया । टप, टप, टप, करके आँखों से आँसू की धारा फूट निकली । उसका मन विकल हो उठा । वह गीत उसको रोमांचित कर उठा । पति के साथ उसने आठ साल काटे थे । गरीबी के वे दिन काफी सुखद थे । मेहनत मजूरी करके वे अपना पेट किसी भाँति भर लेते थे । पति जब

मैदान से लौटता तो सदा उसे नए समाचार सुनाया करता था। साथ ही साथ उसके लिए कई उपहार भी लाता था। कभी तो वह निराश हो कर कहता था कि गरीब का जीवन बेकार सा है। वह बहुत मुरझाया हुआ मिलता था। जब कि वह एक नया जीवन पाकर खिल रही थी। अकाल पड़ा और एक नया आगन्तुक साथ साथ परिवार में आया था। साहूकार से कर्जा लेने के लिए वह विवश हो गया। वह जान गया था कि वह पट्टा वापिस लेना आगे उसकी शक्ति की बात नहीं है। इधर तो वह कई साल से साहूकार को सूद तक नहीं दे पाया था। पत्नी का मातृत्व फिर फला और उसने दूसरे लड़के को जन्म दिया था। लेकिन साहूकार ने नोटिस देकर उस पर अदालत में मुकदमा चलाया था और डिगरी लेकर मकान तथा तरकारी का बाड़ा कुड़क करवा दिया था। वे विवश हो कर एक धनी परिवार की गौशाला में शरण पा गए थे और वहाँ पशुओं के साथ रहा करते। जाड़ों में वहाँ कड़ी सरदी पड़ती थी। उस सर्दी को बरदाश्त न कर सकने के कारण उसका छोटा लड़का मर गया था। वह अकेले उस दुखः को झेलती रही।

पति उस साल घर नहीं आया था। उसने लिखा था कि सरकार ने भरती खोलदी है। और अब वह सरकारी फौज में नौकर है। माहवारी तनखा वह उसको भेजा करेगा। लड़के की मौत पर धीरज दिया था कि बुरे दिन कट गए हैं। उसने उस दिन नरसिंह के नाम का रोट काटा था और कई देवताओं के पूजने की मनौती मनाई थी। उसने तो यह भी लिखा था कि जल्दी ही उनको अपना मकान वापिस मिल जायगा और वह साहूकार अब उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। उसने वह सब पाकर चैन की सांस ली थी। अपने एक मात्र बच्चे की हिफाजत की और जब कभी दूसरे बच्चे की याद आती तो यह मन बुझा लेती थी कि उसकी अवस्था ही क्या है। भविष्य की बात वह सोचती और खुश होती थी। यह उनके जीवन में एक नया जोश लाया था।

एक दिन मध्यरात्रि को उसका पति आया और उसने बताया था कि पाँच दिन की छुट्टी मिली है। दो रोज आने और दो जाने में कट जाते। इसीलिए वह पचास मील का सफर एक दिन में ही तय करके आया है कि कम से कम दो दिन तो घर पर व्यतीत कर सके। उसने तो यह सा बताया था कि लड़ाई शुरू हो गई है और एक सप्ताह के भीतर उनको हिन्दुस्तान छोड़ कर चला जाना है। वह बहुत खुश था और कहता रहा कि गरीबी की जिन्दगी में कभी नहीं सोचा था कि रिक्शा चलाने, घरेलू नौकरी तथा चौकीदारी करने से छुटकारा मिलेगा। आठ रुपया तनखा और राशन-वर्दी मुफ्त ! भला यह सब किसको मिलता है। यहाँ तो दो तीन रुपया माहवारी भी नहीं मिलता था। रोज ही कुछ न कुछ मुसीबत रहती थी। यह भी उसने बताया था कि फौजी डाक्टर ने उसे सौ नौजवानों में से चुना था। हजारों नौजवान भरती के दफ्तर में आए थे, पर उसका सा चौड़ा सीना किसी का नहीं निकला। डाक्टर को शक था कि उसकी ऊँचाई कम निकलेगी और उसका चुनाव न हो सकेगा। लेकिन वह सब बातों में ठीक निकला। वह एक मौका था कि वह चुन लिया गया, वरना जिन्दगी भर किसी बंगले की चौकीदारी करता होता या फिर किसी रईस परिवार के जूठे बरतन माँजता होता।

और उस नवयुवती ने पति को पहचान लेने की भलीभाँति चेष्टा की तो पाया कि उसके उस उत्साह में वह भी साथ है। उनका बाहर चला जाना अखरा, पर छै महीने की बात थी और इधर भी तो वे साल डेढ़ साल में आया करते थे। अब वह अपने जीवन की उमंगों को पूरा करेगी और यह बच्चा कम से कम माँ बाप को कोसेगा तो नहीं। वह जल्दी ही एक मकान बनवा कर कुछ भेड़ें रखेगी, अपने भाई को यहाँ बुलवा लेगी और सब काम ठीक चलेगा। मेहनत करने में तो वह गाँव की सभी औरतों की अगुवा रही है। पति की योजनाओं पर वह हँसती थी और एक नवयुवक जिस भाँति अपनी प्रेमिका को फुसला कर भावी जीवन की

सुनहली तसवीर बनाया करता है, वह सब पा कर वह कृतार्थ हो गई थी। वह पति इतना भला और मस्त है, यह उसको पहले पहल ही ज्ञात हुआ था।

पति ने तो उसे फौज की कई बातें बताई थीं। वह तो साहब लोगों की तरह गालियाँ तथा आदेश देना भी सीख कर आया था। एक बार तो उसने अपनी वह वरदी पत्नी से पहन लेने का आग्रह किया था और अपनी चुरट उसे पीने को दी थी। वह उस उत्साह में बह गई थी। पति जब चला गया, कई बातें याद आती थीं। इधर महीनों तक कोई समाचार नहीं मिला। पहले भी तो पति का समाचार नहीं मिला करता था। अब तो प्रति मास आठ रुपया आ जाता और वह अपनी आवश्यकता की चीजें आसानी से मँगा सकती थी। वह बच्चा माँ के नए उत्साह के साथ पनप रहा था। पति की याद को भी वह भुला सा देता था। लेकिन जाड़ों की रात को जब कि वह आग के पास बैठ कर गीत गाती थी तो न जाने क्यों मन उदास हो उठता था। रात को पति की याद आती थी और वह बहुत परेशान हो जाती। उसने महीने गिने तो पता चला कि ग्यारह महीने बीत गए हैं और वह छुट्टी पर नहीं आया। लेकिन इस सबके बाद जो बात उसने सुनी, वह था पड़ोस के गाँव के दो नौजवानों का लड़ाई में मर जाना। यह लड़ाई मानव को नष्ट कर देती है, इसका अनुमान उसे पहले नहीं था। अब तो उसका मन सदा परेशान रहता था और वह सोचती थी कि चुपड़ी गेहूँ की रोटियों से तो उसकी रूखी सूखी मंडवे की रोटियाँ ही भली थीं। अपने बच्चे के माथे पर हाथ रख कर वह उससे बिनती करवाती थी कि उसका पिता इस बार घर लौट आवेगा तो वह फिर उसे नहीं जाने देगी। कभी उसकी बाँई आँख फड़कती तो वह अनुमान लगा लेती कि कोई अशुभ समाचार आने वाला है।

लेकिन पति का समाचार तो दो साल तक नहीं आया था और गाँव के नौजवान यह जान कर भी कि यह लड़ाई मौत की घाटी है,

भरती हो जाते थे और किसी को मौत का डर नहीं लगता था। पंडित बताते थे कि उनके राजा पर किसी ने हमला कर दिया है और वीरों का काम है कि राजा को मदद दी जाय। कभी तो खबर फैलती थी कि सैकड़ों नौजवान एक दिन में ही मर गए हैं। लेकिन वह मौत का भय भारी पत्थर की भाँति उसके दिल पर स्थायी हो गया था और वह जमे खून की भाँति डला बन कर अब दुखता नहीं था। उसका विश्वास था कि पति लौट कर आवेगा और वे आगे सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। लेकिन वह पति लौट कर नहीं आया था। वह तो पहली ही लड़ाई के झोंके में मर गया था। उसे स्वयं यह ज्ञात नहीं हो पाया था कि वह क्यों फ्रांस के मैदान में मरा, जो कि उसका देश नहीं था। मरते समय वह अपनी धरती से बड़ी दूर था। मरते समय कैन्टोनमेंट, जहाज और युद्ध का मैदान सब याद आया था। उसे अपनी पत्नी की याद भी आई जो कि उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। यह कल्पना पति ने ही की होगी। शायद पति ने वह सब सोचा ही होगा। पति शायद पत्नी को युद्ध की वे बातें भी सुनाता जो कि गाँव के और नौजवानों ने सुनाई थीं। उन सब बातों को सुन कर पीड़ा होती थी। इस लड़ाई ने तो उसका सारा जीवन ही नष्ट कर दिया था।

—२—

नीचे की वह घाटी दोपहर की धूप में चमक रही थी। उसी से लगा जो कस्बा है, वहाँ नेपालियों ने हजारों नौजवानों की हत्या की थी। गोरखों की वह जाति केवल वहाँ विजय करने ही नहीं आई थी। उनका फौजी अफसर तो वहाँ हुकूमत करता था। देश के हजारों नौजवान उस गोरखा-युद्ध में मरे थे। फिर उसके बाद जो जर्मन की पहली लड़ाई हुई थी उसमें भी हजारों नौजवान खेत रहे। वे नौजवान संगठित होकर यहाँ की प्रकृति से युद्ध करते तो यह देश इतना कंगाल न होता। युवक तो सदा से मैदान नौकरी पर चले जाते हैं और यहाँ की नारियाँ खेतों व

बनों की रक्षा करती हैं। यहाँ की गरीबी का श्राप है कि बाहरी शोषण में यहाँ का युवक नष्ट हो जाता है। वह घरेलू नौकरी, चौकीदारी तथा पुलिस और फौज की सिपाहीगिरी उसे कभी पनपने नहीं देती। अपनी धरती से दूर वह अपनी जवानी नष्ट कर देता है और यह कभी नहीं समझ पाता कि वह जीवित किसलिए है। उसकी नौकरी तो कभी उसे महाजन के चंगुल से छुटकारा नहीं दे पाई। वह तो रोज व रोज गरीब होता जाता है। उसकी भावी सन्तान कभी भी आर्थिक दासता से छुटकारा नहीं पा सकेगी

वह बूढ़ी भी उसी शोषण की आग में इन लम्बे सालों झुलसी है और आज भी जब कि जीवन की अन्तिम किरणें उसके जीवन को छू रही हैं, वह उसकी प्रतीक है। वह स्वयं अपना इतिहास किसी को बताना नहीं चाहती है। उसका पति फ्रान्स की लड़ाई में सन् १९१६ में खेत रहा था। उसे मरे लगभग पैंतीस साल हो चुके हैं। उस युद्ध के बाद एक तबाही आई थी उस गाँव में। अपने बच्चे को जीवित रखने के लिए वह अठारह बीस घन्टे मजदूरी करती थी और फिर भी पेट भर कर खाना नहीं मिलता था। गाँव में कोई ऐसा काम नहीं था कि पैसा मिले। इसीलिए एक बार वह गाँव से पाँच मील दूर जो सरकारी सड़क बन रही थी, उसके ठेकेदार के पास नौकरी की तलाश में गई थी। उस अधेड़ ठेकेदार ने सावधानी से उस युवती को भाँप कर पत्थर ढोने की नौकरी दी थी। कहीं वह काम पर आने से मुकर न जाय और वह उसे अपने चंगुल से छुटकारा नहीं देना चाहता था; अतएव उसने उसे पेशगी सप्ताह की तनखा का एक रुपया दे दिया था। वह उस नौकरी को पा कर बहुत खुश हुई थी। उसने निश्चय किया था कि पेंशन और मजदूरी की कमाई से वह अपने पति के घर को छुड़ा लेगी।

लेकिन ठेकेदार के यहाँ अधिक दिन तक वह टिकी न रह सकी। ठेकेदार अपने पेशे के गुणों में माहिर था और उस रूपवती नारी की हैसियत को पैसे से खरीद कर उसे अपमानित करना चाहता था। लेकिन

उस युवती ने ठेकेदार की नाक पर दाँत का ऐसा घाव बनाया था कि वह नारी के उस रूप को पाकर दंग रह गया। फिर भी जीवन सूना सूना लगता था। कई उसके साथ की अन्य नवयुवतियाँ दूसरा घर बसा चुकी थीं। यह तो एक साधारण प्रथा सी थी। उसे कई ने सलाह दी थी कि वह व्यर्थ ही अपना जीवन नष्ट कर रही है। कई तो कहती थीं, यह जवानी सदा नहीं आवेगी। यह भी कुछ का कहना था कि बिना पति के घर का सही ढाँचा नहीं बनता है। जीवन की गाड़ी चलाने के लिए पति और पत्नी दोनों की ही आवश्यकता है। उसकी बातों की वह हंसी उड़ाती थीं कि इस समय सभी युवक उसे अपनाने को तैयार हैं। भविष्य में तो उसकी ओर कोई ताक कर भी नहीं देखेगा। लेकिन ये सब बातें मन में पैठती नहीं थीं। पति के बिना जीवन में रुकावट तो मिलती थी, पर वह उसका पुत्र तो पति की यादगार सा लगता था। गाँव की बूढ़ियाँ कहती थीं कि वह अपने पिता पर पड़ा है। उसके पिता की आँखें बचपन में ऐसी ही थीं। उसका चेहरा हूबहू ऐसा ही था। वह बड़ा होकर अपने पिता के समान ही बलवान बनेगा। उस बच्चे का आधार तो एक भविष्य का प्रश्न था, जो कि न जाने कभी पूरा भी होगा या नहीं। उस गाँव में तो सैकड़ों बच्चे पैदा होते थे पर अधिकतर अकाल मृत्यु पाते। उनकी रक्षा का कोई सवाल कब हल होता था। उस आशा पर कभी उसका मन नहीं टिकता था। वह बच्चा एक सांत्वना भर था जो कि पति की सबल यादगार था और वह उसकी हर तरह से रक्षा करना चाहती थी।

उसकी माँ ने आकर सुझाया था कि अभी उसकी कच्ची उम्र है और उसे सहारा चाहिए। नारी अकेले अपना जीवन नहीं काट सकती है। वह भी कुछ ऐसा ही अनुभव कर रही थी। गाँव के बुरे लोग तरह तरह के इशारा किया करते थे और मंदिर का पुजारी कई बार उसके घर पर धरना दे चुका था। मालगुजार का लड़का भी उसके दरवाजे पर एक गाय बाँध गया था कि बच्चे को ठीक सा दूध मिल जाया करे।

इस सबसे उसका मन मुरझा जाता था। वह बड़ी बूढ़ियों से कुछ कहती थी तो वे हँसी उड़ाती थीं कि तो क्या आजीवन वह इसी भाँति रहेगी। उसकी अवस्था अधिक नहीं है और उसको तो किसी पुरुष के साथ रहना ही होगा। यह आदि काल से चला आया है। उसकी और सहेलियों ने नए घोंसले बना लिए और वे वहाँ मस्ती से नई जिन्दगी शुरू कर चुकी थीं। वे उसे रंगीन बातें सुनाती थीं और यह तो पाती थी कि युद्ध समाप्त होने के पाँच साल बाद, फिर वहीं पुरानी जिन्दगी चालू हो गई थी। सब काम ठीक चल रहा था।

लेकिन एक नौजवान ने उसके हृदय में भी अनायास प्रवेश किया था। एक दिन वह जंगल से लौट रही थी कि पाया एक साँड खेतों में उछल कूद मचाता हुआ, एक जगह संकरी बटिया पर उसके आगे खड़ा हो गया। उसकी आँखें लाल थीं और उसने पाया कि वह पूंछ ऊपर उठा कर पिछली टाँगों के सहारे खड़ा हो गया था। उसके पैने सींघों को देख कर वह काँप उठी और विश्वास हो गया कि अब वह मर जायगी। उसे अपने बच्चे की याद आई, और भी पिछली यादगारें आँखों के आगे से गुजरीं। तभी एकाएक एक मुसाफिर आगे आया और उसने उसके सींघ पकड़ कर उसे पीछे धकेल दिया। वह साँड नीचे ढ़ाल की ओर था और जितना ही आगे बढ़ने की चेष्टा करता उतना ही नीचे की ओर चला जाता था। साँड ने एक बार अन्तिम चेष्टा की। उसकी आँखों की लाली उभरी और उसकी नाकों से फुफकार का गर्जन हुआ। अपने को फिर भी विवश पाकर वह नीचे की ओर भाग गया। वह कुछ देर तक स्तब्ध सी खड़ी रही। जब जरा होश आया तो पाया कि आगन्तुक खड़ा का खड़ा उसे निहार रहा था। अब उसने पूछा था कि चोट तो नहीं आई है!

वह उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दे सकी थी। पाया कि उस युवक के शरीर से पसीना टपक रहा था। उसकी हथेलियों पर खून जम गया था और वह बहुत थका लगता था। वह उसको अपनी कृतज्ञता का

आभार सौंपना चाहती थी, पर नारी थी। क्या कह सकती थी ? लाज से भर कर चुपचाप गाँव की बटिया पर अपने घर की ओर रवाना हो गई थी। कई बार मुड़ कर उसने पीछे देखा और पाया था कि वह तो उसी के पीछे पीछे आ रहा है। उसका इस प्रकार पीछा करना भला नहीं लगा और गुस्सा भी चढ़ा कि क्या सभी पुरुष एक से होते हैं। यह कैसी जाति है जो कि नारी का आदर करना नहीं जानती। जरा कहीं उसे असहाय पाया तो अपने चंगुल में दबा लिया। नारी की उस असहायता पर उसे बहुत दुख हुआ था। कुछ सोचती मन को बुझाती थी कि यह वैसा नहीं हो सकता है। उसने तो अपने प्राणों का मोह विसार कर उसकी रक्षा की थी। उसका ऋण वह आजीवन नहीं चुका सकेगी। वह वैसा कदापि नहीं हो सकता है, जैसे कि और नौजवान होते हैं। उसकी आँखों में उसने समानभूति पाई थी। और वह तो अपने घर पहुँच चुकी थी।

शाम को उसका बच्चा खेलने से लौट कर आया तो उसने उसे बहुत प्यार किया और अनायास उसकी आँखों से आँसू बरस पड़े थे। मन में हूक उठी थी कि वह कभी किसी की प्रतीक्षा इस जीवन में नहीं कर सकती है। बच्चे को उसने कई बार खूब चूमा, पर मन की अज्ञेय तृष्णा नहीं मिटी थी। वह न जाने क्यों सोच रही थी कि वह उसका ही मेहमान है, जो कि उसका सुख दुख पूछने के लिए आया है। मन की बेकली के बीच सवाल उठा था कि यदि वह उसके पास आ कर सवाल करे कि वह उसके साथ चलेगी तो वह कदापि आनाकानी नहीं करेगी। ऐसा ही आश्रयदाता वह चाहती थी जो कि फौलाद की भाँति बलवान हो। जिसे कि कोई तोड़ नहीं सके। वह उसकी सदा रक्षा कर सकता है। उसके आग्रह को वह कदापि नहीं ठुकरावेगी। उसका रूप मन में पैठ गया था। यह नई भावना आज अनायास उदित हुई थी। ऐसा बलवान कोई भी व्यक्ति इधर उसके जीवन में नहीं आया था। लेकिन तभी पति की याद आती। उनका कहना था कि वह फौजी डाक्टर

उनकी चौड़ी छाती देखकर बोला था कि ऐसे ही जवान फौज के लिए चाहियें। पति इसी तरह शक्तिशाली थे। पति की याद मन में पीड़ा पहुँचाने लगी। वह अपने दिल को टटोलती हुई रो पड़ी।

रात को वह बिना खाए ही लेट गई। आज चूल्हा जलाने की इच्छा नहीं हुई। उसने बच्चे को छाती से चिपका लिया और व्यर्थ सोने का प्रयास करती रही, पर नींद नहीं आई। बचपन के मायके की कई स्मृतियाँ आगे आती थीं। वह उनको समझ लेने की चेष्टा करती भी विवश थी। तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया और आवाज वह पहचान गई कि उसकी सहेली की है। दरवाजा खोला तो उसने सवाल किया कि चोट तो नहीं आई है। फिर बताया कि उसका भाई फौज से छुट्टी पर घर आया तो उससे भी मिलने के लिए चला आया। भाग्य की बात थी कि उसने उसकी समय पर रक्षा की थी। यह सा सुझाया था कि उसका भाई शादी नहीं करता है और आजीवन क्वांरा रहना चाहता है। उसका तो कहना है कि सैनिकों का कोई जीवन नहीं होता है। कौन जाने कब लड़ाई पर जाने का परवाना मिल जाय और वह वहाँ मर जाय।

एक भेद की बात बताई थी कि उसका भाई उससे बहुत प्रभावित है। वह चाहे तो उसे उबार सकती है। यदि उसका भाई उससे इस सम्बन्ध में कुछ कहे तो उसे उसकी बात स्वीकार करनी ही पड़ेगी। दोनों के हित में यह ठीक होगा। उस सहेली ने तो पति के मरने के आठ महीने बाद ही नया सुहाग जुड़ा कर नवजीवन आरम्भ किया था। वह बहुत सरल थी और बहुधा वह उससे अपने मन की बातें किया करती थी। उसकी सहेली ने समझाया था कि उसका हठ जान कर भी वह उसके हित में यह कहने के लिये आई है। वह अपने भाई की वकालात करने नहीं आई है। उसकी धारणा है कि वह उन दोनों का एक सफल परि-वार होगा। उनके पास खेत हैं और वहाँ उसका जीवन सुख से बीतेगा तथा बुढ़ापे में कोई कठिनाई नहीं होगी। उसकी माँ इस रिश्ते से बहुत खुश होगी। सच है। ऐसी अच्छी जोड़ी आसपास किसी गाँव में नहीं

मिलेगी। यह भी कहा था कि एक सैनिक की पत्नी का अपना अधिकार है कि वह अपने भविष्य का निर्माण करे।

वह चली गई तो उसके आगे एक ऐसी पहेली सुलझाने को छोड़ गई थी कि वह रात भर उस पर सोचती ही रह गई। मध्यरात्रि के बाद उसको नींद आई थी तो उसने एक सुपना देखा कि वह मर रही है और उसके समीप कोई नहीं है। उसकी नींद टूट गई। मौत के भय से उसके शरीर पर पसीना छा गया। वह अभी मरना नहीं चाहती है। लेकिन यदि उसे जीवित रहना है तो अकेले गृहस्थी चलाना भी उसके वश की बात नहीं थी। उसे अपनी सहेली की बात पर गंभीरता से सोचना होगा। कहीं वह युवक सुबह आकर उससे यह सवाल पूछेगा तो वह क्या उत्तर देगी ? वह उससे कुछ नहीं कह सकेगी और अपनी सहेली के मार्फत सन्देश देगी कि अभी उसे सोचने का अवसर दिया जाय। अभी वह परेशान है। अधिक वह न सोच पाई। मन खाली-खाली हो गया था और नींद भी फिर आ गई थी।

सुबह उसे सहेली झरने के पास मिली तो उसने उससे विनती की थी कि उनसे कहदे कि उसके घर पर न आवें। वह उनका आदर करती है। लेकिन झरने से पानी भरने के लिये आई हुई और युवतियों ने तो चुटकी ली थी कि कब तक दावत मिलेगी। जैसे कि कल की घटना के बाद सबको यह विश्वास हो गया था कि उनका रिश्ता पक्का हो जायगा। कुछ तो उसके भाग्य की सराहना करने लगी थीं। वह जल्दी से अपना बरतन भर कर घर लौट आई। कलेवा करके जंगल लकड़ी लेने को चली गई। वह दूर के एकान्त जंगल में गई थी जहाँ कि उसकी कोई सहेली नहीं पहुँच सकी थी। वहाँ वह ऊँची जगह पर बैठ कर दूर वाली बरफ से ढकी चोटियों को देखती रही। उसका हृदय उमड़ा और वह बड़ी देर तक रोती ही रही। संध्या को वह घर लौटी थी। उसके बच्चे ने बताया था कि वह दिन भर चाचा के साथ खेलता रहा है। वे बहुत अच्छे हैं। वे यहाँ कब से आकर रहेंगे।

लड़के की किसी बात का उत्तर वह नहीं दे पाई थी। उसने जल्दी-जल्दी खाना बनाया था और सोने की तैयारी कर रही थी कि उसकी सहेली ने आकर बताया कि उसका भाई कल सुबह चला जायगा। वह चुप रही और सच तो यह था कि वही कोई निर्णय कहाँ ले पाई थी। सहेली की बात का कोई उत्तर पाए ही चली गई थी। अब उसने निश्चय किया था कि कल सुबह को वह तड़के उठेगी और जंगल जाकर पगडंडी के पास उसकी प्रतीक्षा करेगी और उससे बातें करके कहेगी कि वह असहाय और दुखी है। वे उसको सहारा देकर उबार लें। अब और कोई चारा नहीं था। वह मौत नहीं चाहती है। वह अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहती है और उसके लिये एक साथी की जरूरत है।

वह सच ही सुबह पगडंडी पर दूर घने जंगल में उसकी प्रतिक्षा करती रही। लेकिन वह नारी थी। सदियों से उसने कुछ संस्कार अपनाए थे। जब वह उधर से गुजरा तो वह पेड़ की आड़ में हो गई थी। जब वह आगे बढ़ गया तो वह उसे पुकार कर रोकना चाहती थी। लेकिन मूक ही चुपचाप वहाँ खड़ी की खड़ी उसे जाती हुई देखता रह गई। वह तो अब बड़ी दूर चला गया था और चाह कर भी वह उसे नहीं बुला सकती थी। अपनी असहायता पर उसे बहुत दुख हुआ। अपनी इस कमजोरी का उसे बहुत दुख हुआ और बड़ी देर तक वह रोती रही। जंगल में धूप छा रही थी। गाय चराने वाले लड़के पशुओं के साथ आ गए थे। दूर नीचे घाटी की ओर जाकर वह पगडंडी खो गई थी। उसका वह साथी जिसके साथ आजीवन रहने का उसने मन ही मन संकल्प किया था, वह चला गया था। वह उसे अपना बनाने में सफल नहीं हो सकी थी। उसे अपना निश्चय कल ही बता देना चाहिए था। अब तो मन में फिर एक नया सवाल उठा था कि उसके भाग्य में यही लिखा है।

अपने भाग्य पर उसने सोचा। उसका पति लड़ाई में नहीं मर गया होता तो क्या यह सवाल उठता? अपने पति को पहुँचाने भी वह बहुधा यहाँ तक आया करती थी। आगे कई संध्याओं को वह यहां पर पति

के लौट आने की बाट जोहती रही। जिस दिन उसने सुना था कि पति मर गया है, उस दिन भी वह न जाने क्यों बड़ी देर तक उसके आने की बाट जोहती रही थी।

अब तो उसे गाँव के लड़कों ने घेर लिया था। सोचा उसने कि उसका लड़का भी कुछ बड़ा होने पर इनकी ही भाँति भेड़ें चराने आवेगा और एक दिन फिर चुपचाप इसी पगडंडी से नीचे घाटी की ओर भाग कर नौकरी तलाश करेगा। फिर शायद लड़ाई होगी और वह फौज में भरती होकर मर जायगा।

वह उठकर तेजी से घर की ओर बढ़ी थी। कुछ देर के लिये वह उस स्थान पर ठहरी जहाँ पर कि सांड ने उस पर हमला किया था। ढाल की ओर उस समय भी पत्थर नीचे की ओर लुढ़के से थे... उसकी आँखों के आगे वह सारी तसवीर आई और वह अब विवश सी अपने को पाने लगी। उस पुरुष की बातें वह सुनना चाहती थी। उसकी पहली ही दृष्टि ने तो उसके जीवन में एक भूचाल खड़ा किया था। अपने स्वार्थ के लिये उसने उसकी उपेक्षा की थी। अब उसका हृदय पिघल रहा था और वह अपना जीवन सूना सूना पाने लगी। परवशता तो नारी को जीवन में दान सा मिला है और वह उसी जाति की थी जो कभी कुछ कह नहीं सकती है और उसकी मूकता पर रूठ कर कभी कभी पुरुष चला जाता है।

इसी भाँति कई दिन और फिर महीने कट गए। एक दिन अपने पुत्र की आँखों में पिता का पूरा रूप पाकर उसने प्रण किया कि वह पति की यादगार उस पुत्र की रक्षा कर पति के प्रति वफादार रहेगी। अपनी सहेली से जब उसने यह बात कही थी तो वे अवाक् रह गईं और गाँव की और औरतों ने तो घोषणा की थी कि वह पागल हो गई है। अन्यथा इस प्रकार अपना जीवन नष्ट नहीं करती। वह सब बातें सुनकर अपने बेटे से कहती थी कि वही उसका सही आधार है। वह बच्चा माँ की बातें कहाँ समझ पाता था।

३

वही पहाड़ी ढाल, वही भेड़ों के गले की डिंग, डिंग, डिंग, ग ग ग, वह बुढ़िया तो अब जंगल में सूखी लकड़ियाँ बिन रही थी। वह किसी से ज्यादा बातें नहीं करती है और कभी किसी ने उसे हँसते हुये नहीं पाया है। गाँव का ढाँचा वही पुराना है। वही लड़कों का बड़ा होकर मैदान नौकरी की तलाश में जाना, वही पुलिस, फौज, चौकीदारी की नौकरी! वही अकालों का पड़ना, वही भुखमरी!! कहीं कोई जीवन वहाँ के लोगों में नहीं मिलता है। लगता है कि उस बुढ़िया के इस बड़े जीवन में गाँव कोई खास तबदीली नहीं लाया था। लेकिन एक बार फिर गाँव ने बड़ी करवट ली थी। वह फिर जर्मनी की दूसरी लड़ाई की बात थी। उसका लड़का उसमें भरती होकर गया था। वह चाह कर भी उसे रोक नहीं सकी थी। यही क्यों कई गाँवों के नवयुवक भरती हो गये थे। पहले भरती कहीं दूर किसी शहर में होती थी, पर अब तो अफसर गाँव-गाँव आकर जवानों को भरती करते थे। यदि कोई आनाकानी करता तो पटवारी और अफसर बताते थे कि सरकार उसे कैद कर लेगी। भेड़ और बकरी की भाँति भरती होती और वे सब बाहर भेज दिये जाते थे। उसे लड़के का जाना अखरा था और वह उसे पहुँचाने के लिये भी आई थी। नीचे घाटी में वह भी खो गया था। उस लड़के ने एक बार छुट्टी पर आकर माँ को लड़ाई की कई बातें बताई थीं, तो उसका हृदय घृणा से भर आया था। वह भगवान से मनाती थी कि लड़ाई बन्द हो जाय। लेकिन उसका वश क्या था। और वह लड़का तो एक महीने बाद चला गया था। फिर वह भी लौट कर नहीं आया। लोगों का ख्याल था कि इससे बुढ़िया का दिल टूट जायगा। लेकिन उसने उस समाचार को इस भाँति सुना जैसे कि किसी ने सुनाया हो कि उसकी गाय को जंगल में बघेरे ने मार डाला है।

बुढ़िया ने फिर चुप रहना शुरू कर दिया था। वह बच्चों को बहुत प्यार करती थी। वे रिश्ते में उसे दादी कह पुकारते तो वह कहती थी

कि उसे माँ कह कर पुकारा जाय । उसके पागलपन पर बच्चे उसे चिढ़ाने के लिये बूढ़ी माँ कहा करते हैं । वह घर की सारी चीजें उनके बीच बाँट देती है । वे लड़के भी सहानुभूति के साथ उसके साथ बातें करते हैं । वह नारी कभी सोचती थी कि वह तो बुढ़िया हो गई है; पर वह गाँव तो उसी भाँति है । वहाँ आज भी बच्चों की एक बड़ी तादाद थी जो वहाँ के जीवन में हरियाली लाते थे । फिर वह सोचती थी कि कौन जाने कल लड़ाई हो जाय और फिर सब को भरती हो कर लाम पर जाना पड़े । उस स्थिति से पहले ही वह चाहती है कि मर जाय । पिछले दो युद्धों के भारी भारी घाव आज तक उसके हृदय में दुखते हैं । उनकी पीड़ा आज बासी घाव की भाँति रोज ही बेचैन कर देती है । वे घाव मानवता के श्राप से वहाँ हैं । लेकिन वह तो उनकी प्रतीक है । हजारों माँ और पत्नियाँ आज उस श्राप से पीड़ित हैं जिसे कि मानव अपने स्वार्थों के लिये अपनाता है । नहीं, मानव युद्ध नहीं चाहता है; स्वार्थियों का एक गिरोह उसे अपना कर सब को युद्ध की आग में झोंक देता है । उन लोगों से मानवता की रक्षा करनी है ।

अब तो संध्या हो आई थी । नीचे की घाटी धुँधली पड़ गई थी । वह बुढ़िया अपलक उस ओर की बटिया पर देख रही है, मानो कि उसे विश्वास सा हो रहा हो कि उसका पति और पुत्र उधर से लौट कर आ रहे हों । सच ही अनजाने वह तो प्रति दिन संध्या को इस स्थान पर खड़ी होकर बड़ी देर तक किसी की प्रतिक्षा सी करती खड़ी रहती है । फिर उसकी आँखों की पलकें गीली हो जाती हैं और वह तेजी के साथ घर की ओर लौट आती है ।

गाँव के नवयुवक और बच्चे उस बुढ़िया की बातें चाव से सुनते हैं । वह तो बार बार सुझाती है कि लड़ाइयाँ उनके बच्चों को नष्ट करती हैं । नौजवान चाव से उसकी बातें सुनते हैं । उस बुढ़िया की मूक मूर्ति उन सब के दिलों पर युद्ध के प्रति घृणा भरती है ।